

आगमोद्वारक-ग्रन्थमालायाः द्विपञ्चाशं रत्नम्
णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

आगमोद्वारक-आचार्यप्रवर-
श्री आनन्दसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

खमासमणसिरिसंघदासगणिविरायं

पंचकल्पभासं

(पञ्चकल्पभाष्यम्)

संशोधकः—

प० प० गच्छाधिपति—

आचार्य श्रीमन्माणिक्यसागरसूरीश्वरशिष्यः
शतावधानी मुनिराज-लाभसागरगणि:

वीर सं. २४२८ विक्रम सं. २०२८ आगमो. सं. २३

प्रतयः ३००]

[अमूल्यम्

आगमोद्धारक-ग्रन्थमालायाः द्विपञ्चाशं रत्नम्
णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

आगमोद्धारक-आचार्यप्रवर-
श्री आनन्दसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

खमासमणसिरिसंघदासगणिविराङ्य

पंचकर्त्पभासं

(पञ्चकर्त्पभाष्यम्)

— * — * —

संशोधकः—

प० प० गच्छाधिपति—

आचार्य श्रीमन्माणिक्यसागरसूरीश्वरशिष्यः

शतावधानी मुनिराज-लाभसागरगणिः

वीर सं. २४२८ विक्रम सं. २०२८ आगमो. सं. २३

प्रतयः ३००]

[अमूल्यम्

प्रकाशक :

आगमोद्धारक-ग्रंथमालाना एक कार्यवाहक
शा. रमणलाल जयचन्द्र
कपडवंज (जि. खेडा)

द्रव्यसहायक

- ५००-०० ग. भा. रतनबाई रतनचंद पटणी येवलावालाना
श्रेयार्थ.
- हा. डॉ. कांतिलाल रामचंद शाह नंदरबार.
- ५००-०० मुनिराजश्री अमीसागरजी महाराजना सदुपदेशार्थी
- २५०-०० सरसपुर जैनसंघ ज्ञानखातामांथी
- २५०-०० डभोइ जैनसंघ ज्ञानखातामांथी.

मुद्रक :

वसन्त श्रीपाद सातवलेकर,
भारत-मुद्रणालय, स्वाध्याय-मण्डल,
पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी) '
पारडी [जि. बलसाड]

प्रतावना

आदि- वर्तमान दशवशान जगतना नक्षाना विशाल फलक उपर नजर करतां ज्ञाशे के स्थानिक वस्ती तरीके जैनो हिंदुस्तान सिवाय हालमां क्यांय देखाता नथी. भारतमां पण जैनोनुं प्रमाण थोड़ुं छे, परंतु विश्वने अपाएल सूक्ष्मतप तच्चव्वान, उच्चतम आदर्शों, कठिनतम आचारो, अन् श्रेष्ठतम संस्कृति. आ चार महान् वारसाथी अल्पसंख्य जैनो आजे पण गौरवान्वित छे, अने सदा रहेशो कारण विश्वने अपाएल आ अत्युत्तम वारसो ए अव्वान अने अशांत जगतने भौगिक विलासना क्रूर पंजामाथी छोडावी निरव शाश्वत स्थानि रूप आध्यात्मिकताना उच्च शिखर पर स्थान करवानुं सामर्थ्य धरावे छे. आ सामर्थ्यनी प्रतीती आजे पण थइ शके छे.

रहस्य- सूक्ष्मदृष्टिथी अवलोकन करतां समजाशे के- उपरोक्त वारसामां जे सामर्थ्य रहेल छे, तेनी पश्चाद्भूमां एक रहस्य समाप्तनुं छे, ने रहस्य ए छे के- आ कल्याणकारी उच्चतम एवा वारसाने विश्व समक्ष सौ प्रथम रजुं करनार परमतारक जगत्पूज्य तीर्थकर परमात्माओ छे. आ तीर्थकर परमात्माओ सर्वज्ञ हता तेथी जगतना सर्व पदार्थने यथार्थ रूपे जाणीने अने जोइने पछी जगत् समक्ष रजुं कर्या छे. तेमां तेमना मानसतरंगाने कोई स्थान नथी. नेमज तेओए निर्देशोल आचारोना आदर्शोमां भेदभावनुं पण स्थान नथी, कारण तेओ वीतराग छे. भगवंतो द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तोमां क्यांय अपूर्णता नथी, कारण तेओए जणवेल मुख्य सिद्धांत अनेकान्तवाद ए सनातन सत्यनी पीठिकाज छे. आ बधुं त्यारे ज समजावी शकाय ज्यारे तेना प्ररूपक सर्वज्ञ होय.

सर्वज्ञत्व वीतरागत्व- तीर्थकरों सर्वज्ञ होवाना अनेक पुरावा
छे. तेमांमो एक आ पण छे के- तेओए जणावेल तत्त्वज्ञानने
जाणवा अने संपूर्णपण समजवानो सौं कोइने अधिकार छे. इतरो
माने छे तेम एक व्यक्ति पूरता ईश्वरत्व-सर्वज्ञत्वने नहिं. जैनदर्शन
माने छे अने जणावे छे के- जगतनों कोइपण प्राणी ईश्वर-सर्वज्ञ
थह शके छे, अने आ तत्त्वज्ञानने प्रत्यक्ष जोइ शके छे. सवाल छे
तेना माटे करवी पडती कठोर साधनानो. सर्वज्ञ थवा माटे
अनादिकालीन कर्मोने आत्मार्थीं दूर करवा पडे छे अने ते माटे
कर्मबंधना हेतुरूप काम, क्रोध, राग, द्वेष अने विषय विकारली
दीर्घकालीन वासनाओ त्यागवी पडे छे. आ बधुं एकदम नष्ट नथी
थतुं परंतु प्रथम मार्गनुसारीपणुं, बोधिबीजप्राप्ति, सम्यक्त्व प्राप्ति
देशविरति, सर्वविरति विगोरेनी प्राप्ति बाद क्रमशः आ वासनाओ
नष्ट थाय छे. आत्मानुं शुद्ध स्वरूप प्रगट थतुं जाय छे. आखरे
चार घाती कर्मो- प्रथम मोहनीय कर्म पछी अंतर्मुहूर्तमां ज्ञाना-
वरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय मूलधी नष्ट करी केवलज्ञान
प्राप्त करे छे. अने साथेज सर्वज्ञ थाय छे. आत्मिक सुखरूप
आध्यात्मिकताना उच्चशिखरने प्राप्त कर छे. सर्वज्ञत्व प्राप्तिना
प्रयासोमां मुख्यरूप सर्वविरति छे आनी प्राप्ति बाद कठोर
साधनानी शरूआत थाय छे. तेमां वारंवार स्खलना न थाय ते
माटे मुनिओना आचारो विगोर सर्वविरति स्वीकारनारे बगावर
समजवा जाइए. एना माटे जैनदर्शनमां घणां शाळ्हो छे. आगममां
निर्दिष्ट चार अनुयोगमां पण महत्त्वनुं स्थान चरणकरणानुयोगनुं
छे. बाकीना त्रणे अनुशेषो पण आना माटे ज छे. छेदसूत्रो
बहुलताए मुनिजीवनना आचारने आश्रयीने चौद पूर्वधरो ए रचेला
छे. आमानुं एक छेदसूत्र छे- 'वृहत्कल्पसूत्रम्' आ छेदसूत्रेना
अर्थने विस्तारथी समजाववा नियुक्त-भाष्य- चूर्णि- टीका विगोर
रचाया छे तेवी रीते वृहत्कल्पसूत्र (छेदसूत्र) ना नामनिशेपाने

आश्रयने 'द्रव्यकल्प' आ शब्द उपर वे भाष्य रचायां के
१ लघुपंचकल्पभाष्य २ वृहत्पंचकल्पभाष्य.

माहीनी— लघुपंचकल्पभाष्य ए कोई स्वतंत्रकृति जणाती
नथी. परंतु वृहद्भाष्यमांनो उद्धृत संक्षिप्त भाग जणाय छे. १८
गाथात्मक लघुभाष्यनी एक प्रति श्री जैनानंदपुस्तकालय सुरतमां
छे. तमानी १८ गाथाओ छे तेनो आ वृहद्भाष्यमां समावेश यह
जाय छे. प्रस्तावनाने अंते १८४ गाथाओनो वृहद्भाष्यांतर्गत
क्रमांक जणावोश. ते उपरथी ख्याल आवा शक्शे. वृहद्भाष्यनी
२६७४ गाथा छे श्लोकात्मक ग्रंथाग्र ३२८८ छे. जैनानंदपुस्तकालय
सुरतनो एक प्रति अनुसार ३१५ ग्रंथाग्र छे. श्रुतदेवीनी स्तुति-
युक्त एक गाथा घणी प्रतोमां देहुङ जोवा मल छे. पंचकल्पनुं
प्रमाण ११३२ छे. आ टीप्पनकमां पंचकल्प सूत्र मूल अने भाष्य
बने अलग जणावाया ले. परंतु खरखर आम नथी बने एक छे.
भाष्यकार संघदासगणि २५७३ श्लो. ३०२५ तया चूर्णि ३००० ।
३१३६ नुं जणावायुं छे.

विषय— मुनि जीवन ए कठीन साधनानी भूमिका छे.
अनादिलालीन विषयवासनाथी विस्त्र संयमजीवननी अवस्था
घडाएलो छे. संयम साधनानी पगदंडीए पग मांडना आत्माने
रस्ताबां भोगादि पुष्योनी सुकोमलता प्राप्त थती नथो. प्राप्त
थाय छे विघ-गरिघह रूप कंटकनी तीक्ष्णता. कर्मसत्ता पण
तेनी सामे पडे छे, अने दरेक रीते ते माँगेथी पाछा हठाववानो
प्रयास करे छे. अनेक जातना प्रलोभनो तेनी सामे मूके छे. आवा
समये संयमजीवनमां दृढ रहेबुं ने आगल वधबुं मुद्रेल बनी
जाय छे. आ वयानी सामे जो मुनित्व स्वीकारनार व्यक्ति दृढ
होय येग्य होय तो स्वीकार्या बाद पोताना कल्पो-आचारोनुं
झान मेल्ये अने तेमां-पालनमां सजाग बने उत्सर्ग-अपवादने

गुरुनिश्राप समजे, अपवादना अवसरे अपवादनुं आचरण करी प्रभु आज्ञामां स्थिर रही आत्मकल्याणमां उद्यत बने. प्रस्तुत आच्यमां पण आ हार्द रजु करवामां आवयुं छे.

प्रथम गाथामां अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामिने नमस्कार, पछी ११ गाथाओमां आद्यागाथाना विवरणात्मक पुनः शासनना प्रभावक जणावी भद्रबाहुस्वामिना ‘बहूभद्र’ ‘सुभद्र’ विगरे विशेषणो युक्तस्तुति, त्यारबाद आठ गाथामां ए गाथाना अब्जोनुं विवरण, तेमने नमस्कार करवानुं कारण, तेनो प्रत्युत्तर, नवमा पूर्वमांथी त्रण छेड सूत्र उद्भृत कर्द्यानो उल्लेख, सूअगडांगनी पहेलां आना अध्ययननुं कारण, भावी मुनिओं विरे अनुकंपा, हितवुद्धि, दुष्षमकालना प्रभावनुं वर्णन, सत्रग्राहकनी योग्यता, कलद्वार, जिनकल्प, स्थविरकल्प, पुलाकादि पांच प्रकारना चारेरत्रीओ, सामाधिकादि चारीत्र, मिथ्यात्वना पट्टप्रकार, कलशाब्दना अनेकार्थी, मनुष्य जीवकल्पना भेदा, दीक्षाने अद्योग्य, याल प्रब्रज्याना कामणो, शिष्य चोरीना दोषो, छेदा रोषादि प्रब्रह्म आदि विषया छे अंत वीस प्रकारना कुलो छेल्ले स्थापनाकुलना वर्णन साथे ग्रंथ समाप्त थाय छे. आच्यमां पांच प्रकारे १७-१०-१०-४२ प्रकारथी कल्पनुं विस्तारथी वर्णन करवामा आवयुं छे. आ बायत गाथा १७४मां जणाववामां आवयुं छे.

‘विशेषता— तीर्थकरनी स्तुतिने बदले भद्रबाहुस्वामिनीज स्तुति छे. जे एक नविनता. जोके एम करवाना हेतुनो उल्लेख गाथामां भाष्यकारे स्वयं कर्यो छे.

२ प्रसंगोपात ए पण जणावुं छुं के- लघुभाष्य पर रुचाएल छे के पंचकल्प चूर्णिनी जैनानंद एस्तकालय सुरतनीएकप्रतिनिना पत्रांक २-१ उपर सिद्धमेन क्षमाश्रमण नामानिर्देशपूर्वक तेमने रचेली एक गाथा ‘बालाइयणुकंपा.’ चूर्णिकारे जणावी छे. पत्र ५-१

गाथा १३२५ मां चतुर्दश पूर्वधरने पण तीर्थ तरीके जणाव्या छे. भाष्यकारे जने गाथासूत्र तरीके जणावी छे ते ५५८-५५९-५६० मी गाथाओमां निर्दिष्ट प्रवज्याना प्रकारो अन्यत्र क्यांय प्राप्त-शास्त्रोमां जोवा मलता नथी.

गाथा १६३ नुं उत्तरार्थ ‘आसज्ज उ सोयारं’ आ पद आवश्यक-निर्युक्तिनुं छे (गाथांक २२८)

१ ली गाथा दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्तिनी आद्य गाथा छे. एम न होइ शके क— आ गाथा प्रस्तुत या अन्य भाष्यादिनी गाथा होय अने ते पाछलथी निर्युक्तेमां मिथ्रित थइ गइ होय ? कारणके भद्रबाहुस्वामि स्वयं तो पोतानी स्तुति न ज करे ?

भाष्यकार— भाष्यकारतरीके सामान्यतया संघदासगणि-क्षमाश्रमण अने जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण अति सुप्रसिद्ध छे. तेमां पण जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणानी ख्याति महाभाष्यकार तरीकेनी छे. एक संघदासगणि वाचक थया छे. त वसुदेवहिंडिना प्रथमखंडना प्रणता छे. तेनाथी भाष्यकार संघदासगणिक्षमाश्रमण जुदा छे प निर्विवाद ल्ले क— वसुदेवहिंडिकार वाचक छ अने भाष्यकार क्षमाश्रमण छे. भाष्य अथवा चूर्णिमां क्यांय भाष्यकर्ता तरीके संघदास नाणि क्षमाश्रमणाना नामनो तेमज अन्यकोइ नामनो निर्देश मलतो नथी. भाष्यनो हस्तलिखित प्रतिओने अंते कर्ता तरीके संघदासक्षमाश्रमण आवो निर्देश प्राप्त थाय छे.

‘षण्यहावता’ आवा उल्लेख छे तथा ७-१. — उपर ‘सिरिअज्जख-मासमण धम्मगणि खमासमण वाचकखमासमण (?) तथा ११-१ उपर ‘जहा अज्जगोविंदा’ विं० उल्लेख प्राप्त थाय छे. ५६० मी ‘पल्लिसूरा’ गाथाने चूर्णिकारे संग्रहणीनी गाथा तरीके जणावी छे

२ मारी पासे ब्रण प्रति हस्तलिखित छे. तेमां अंते ‘संघदास-क्षमाश्रमण’ शब्द लख्यो छे परंतु अने ग्रंथादिमां गणिशब्द

आ महापुरुषनी विद्यमानतानो समय निर्देश पण चोकसे प्राप्त होतो न होवाथी तथा ते पूज्यश्रीना जीवन कवन विषे कोइ खास नौंधो-उल्लेखो प्राप्त न होवाथी आ महापुरुषो विषेना घणी बाबतो अनिर्णीत रहे छे. तेथी ए पण निर्णीत थइ शकतुं नथी. सखा नामना रचयिताप रचेला भिन्न भिन्न ग्रंथोना कर्ता एकज क अन्य? जेम कल्पलघुभाष्यना कर्ता तरीके पण संघदाम गणिक्षगाथ्रमणानु नाम आवे छे, अने प्रस्तुत भाष्यना कर्तानुं नाम पण आज छे. हबं प्रश्न थाय छे के- बंनेना कर्ता पक के अन्य? समयनिर्देश प्राप्त न होतो होवाथी आ बधुं अनिर्णीत रहे छे. .

सामान्यतया तीर्थेकरो सिवाय कोइ जन्मथी महान् हातुं नथी. व्यक्तिओ महान् बने छे, नामथी नहि पण कार्यथी. आयो महान् पुरुषोना जीवनमां नाम नहि पण काम वणाइ गपलुं होय छे. ए कामज विश्वनी अन्य व्यक्तिओना हृदयसिंहासन उपर नैमना नामने सम्राट् तरीके स्थापे छे, अने चिरस्थायी बनावे छे.

आज प्रमाणे भाष्यकार भगवाने पण भाष्यमां क्यांय पोतानो नामनिर्देश सुद्धां कर्यो नथी तो पोताना जीवनने लगती बाबतो उल्लेख ज क्यांथी होय? तेमनी पड्हीना ग्रंथकारो या हतिहास-कारोए पण एमना विषनी विगतो जणावी नथी, अने जणावी होय तो आपणने प्राप्त नथी एमले पटलुं मानबुं रह्युं छे के- आ महापुरुषना जीवन विषे अंधकारमां छीए. अलबत्त प्रस्तुत

उमेयो छे. ते 'क्षमाश्रमण गण वाचक दिवाकर' पूर्वना अभ्यासी आचार्यो माटे वपराता एकार्थिक शब्दो छे. तेथी मैं आ शब्दप्रयोग कर्यो छे. छतां पण ग्रंथना अंते तो ह. प्र. मां 'संघदासक्षमाश्रमण' शब्द उल्लेख्यो छे. जेथी विद्वानो विचारी शाके के आनी पाळ्हल कोइ रहस्य छे के लेखकदोष छे.

भाष्यनी ६०२ मी गाथा उपरथी तेमना सत्तासमय माटे एक प्रकाशनुं आछुं किरण प्राप्त थाय छे. जे किरणने आधारे एम मानी शकाय के- तेओ जिनदासगणिमहत्तर (निशीथ सूत्र उपर विशेष चूर्णिका) ना समकालीन छे. अने भाष्यनी रचना आवश्यक चूर्णिनी पछीनी अने पंचकल्पचूर्णिं के जे लघुभाष्य उपर छे. तेनी पहेलां धरली छे. जुओ- पृ. ६७

‘एगि जुण्णसा भाणिता सुविणे देवीप पुण्फचूलाप ।

नरगाण दंसणण यब्बज्ञाऽऽवस्सत बुत्ता ॥ ६०९ ॥

आमां भाष्यकार पुष्पचूलाना दृष्टांत माटे आवश्यकनो निर्देश करे छे. आ दृष्टांत आवश्यक निर्युक्ति के भाष्यमां क्यांय नथी. आवश्यक चूर्णिमां छे. त्यां पण अर्णिकापुत्र आचार्यनुं दृष्टांत छे तेमां अवांतर प्रसंग आवे छे. जो चूर्णि पहेला आनी रचना होय तो आ निर्देश न होय. आथी सिद्ध थाय छे के- आनी रचना आवश्यकचूर्णि पछी थइ छे. आ गाथा उपरथी आटली कडी प्राप्त थाय छे अने ए कडी मने पवी संभावना उपर लइ जाय छे के- भाष्यना रचयिता^१ आवश्यकचूर्णि पंचकल्पचूर्णि (लघु) निशीथ- विशेषचूर्णि, ओघनिर्युक्तिचूर्णि, पिङ्डनिर्युक्तिचूर्णि, बृहत्कल्पचूर्णिना कर्ता श्री जिनदासगणि महत्तर जहोय ? जो के आ तो एक संभावना छे, अने ते पण खास महत्त्वना प्रमाण वगरनी छे. माटे आनी उपर घण्णु संगोष्ठन जस्ती छे. उपरोक्त प्रकाशनुं आछुं किरण आटलाथी वधु महितीदर्शक बनी शकतुं नथी... दुंकपां घटलुं ज के- आना कतौ संघदासगणिक्षमाश्रपण के संघदास क्षमाश्रमण के अन्य कोइ ते निर्णित करी शकतो नथी.

१. (जनानंद पु० सु०) हस्तलिखित पंचकल्पचूर्णिनी प्रतिना पत्रांक ३३। २. उपर ‘ एतदुपरिष्टात्तास्मिन्नेव कल्पे प्रथमोद्देशके मासकल्पद्वितीयसूत्रे व्याख्यास्यामः ’ तथा ‘ व्यवहारवस्मे

उपान्ते— जगतने अहिंसाना सुक्षमतम आदर्शों द्वारा संसारना तमाम प्राणीने अभयदान आपवानो संकल्प करावनार जगतमां आ एक मात्र जैन धर्म दुःष्मकालनी अनेक पछडाटने सहन करीने पण प्रेरणा आपो रहेल छे. आनुं कारण शुं? आनुं कारण एज छे के- आ धर्मना पायाना सनातन सिद्धांतोमां आज पर्यंत कोइ सडो लाभ्यो नथी... कारणके- आ धर्मना मुख्य आधार रूप श्रमणोए आनी रक्षा ने जालवणी माट श्रेष्ठतम प्रयासो कर्या छे, अने आत्मभोगसहित तमाम बलिदानो पण आप्या छे. आ श्रमणसंघनी इढ मान्यता छे के- जीवनना क्षुलुक आदर्शों करतां धर्मना आदर्शों भहान् छे.

आ हकीकतनो प्रतीति आमजनताने आ महापुरुषनी उपलब्ध कृति अने अनुपलब्ध धता जीवनक्वनथी थाय छे.

अंते— आवी महान् कृतिओ गीतार्थ मुनिप्रवरो द्वारा प्रसिद्ध थाय ए आकांक्षा सहित मारी क्षतिओने उदारता पूर्वक क्षमा आवी कृतार्थ करदो.

एज अभ्यर्थना

प० प० आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरगिरिज्य
मुनिराज श्री पुण्योदयसागर.

उद्देशे व्यवहारस्य वक्ष्यामः' (५०७-१) तथा व्यवहारचूर्णिसां 'उक्तः कल्पः, अधुना व्यवहारस्याध्यमः प्राप्तः' (५०१-१) जहा आवस्तुए भाण्या' (५०२१-१) 'आवस्तुगादीहि दारेहि पुव्वभणितहि' (२५-२) 'एयं पिङ्डनिज्जुत्तीप व्याख्यातं' (७२-२) 'जहा णिसी हे व्याख्यातं' (७२-२) 'पूर्वं पंचकल्पे व्याख्याता' (१००-१) 'पुव्वभणिया ओहनिज्जुत्तीप, कपोय' (१६७-१) 'जहा णिसीहे' (१७३-१) आ उपरथा स्पष्ट निर्णित थाय छे. के- निशीथ विशेषचूर्णिकार श्री जिनदास-गणिमहत्तर आ बधी चूर्णिओना कर्ता छे.

लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक	लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक
१	१३	२५	८५९
२	३५	२६	८६०
३	३६	२७	८६१
४	३७	२८	८६२
५	३८	२९	८६३
६	१५४	३०	८६४
७	१८६	३१	८६५
८	१८७	३२	८६६
९	१८८	३३	८६७
१०	५५८	३४	८६८
११	५९९	३५	८६९
१२	५६०	३६	८७०
१३	७४४	३७	८७१
१४	७४५	३८	८७२
१५	७४६	३९	८७३
१६	७४७	४०	८७४
१७	७८०	४१	८७५
१८	७८१	४२	८७६
१९	७८२	४३	८७७
२०	७८३	४४	८७८
२१	८२४	४५	८८०
२२	७२३	४६	८८१
२३	७२४	४७	८८२
२४	८५८	४८	८८३

लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक	लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक
४९	८८४	७३	११२१
५०	८८५	७४	११२७
५१	८८६	७५	११२८
५२	८८७	७६	११२९
५३	८८८	७७	११३२
५४	८८९	७८	११३३
५५	८९०	७९	११३४
५६	८९३	८०	११३६
५७	८९५	८१	११४७
५८	८९६	८२	११४५
५९	८९४	८३	११४९
६०	९६८	८४	११६१
६१	९७६	८५	११६२
६२	९७७	८६	११६३
६३	९७८	८७	१२१६
६४	९७९	८८	१२६१
६५	९८०	८९	१३३८
६६	९८२	९०	१३४०
६७	९८४	९१	१३४४
६८	९८९	९२	१३४५
६९	१०४२	९३	१३४६
७०	१०४३	९४	१३४७
७१	१११९	९५	१३४८
७२	११२०	९६	१४०८

लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक	लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक
१०	१४०९	१२१	१७८५
१८	१४१०	१२२	१७९०
१९	१४१४	१२३	१७९१
१००	१४१५	१२४	१७९३
१०१	१४२२	१२५	१७९७
१०२	१४५७	१२६	१७९८
१०३	१४६५	१२७	१७९९
१०४	१४८४	१२८	१८०१
१०५	१५११	१२९	१८०३
१०६	१६००	१३०	१८२४
१०७	१६०१	१३१	१८२७
१०८	१६०२	१३२	१८२८
१०९	१६१४	१३३	१८३४
११०	१६१७	१३४	१८४६
१११	१६१६	१३५	१८८८
११२	१६१७	१३६	१८९१
११३	१६४०	१३७	१८९६
११४	१६६१	१३८	१९१६
११५	१६६४	१३९	१९१७
११६	१६६५	१४०	१९१८
११७	१७४३	१४१	१९१९
११८	१७४४	१४२	२०६६
११९	१७६५	१४३	२०७८
१२०	१७८४	१४४	२०७९

लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक	लघु भाष्यांक	महत् भाष्यांक
१४५	२१७४	१६७	२५२८
१४६	२१७५	१६८	२५२९
१४७	२१७६	१६९	२५८८
१४८	२२८५	१७८	२५८९
१४९	२२६१	१६९	९३
१५०	२२६२	१७०	९४
१५१	२२६३	१७१	९५
१५२	२२६४	१७२	९६
१५३	२३४१	१७३	९७
१५४	२३४२	१७४	९८
१५५	२३४३	१७५	९९
१५६	२३४४	१७६	१००
१५७	२३४५	१७७	१०१
१५८	२३५७	१७८	११२
१५९	२३६७	१७९	११४
१६०	२३६८	१८०	११५
१६१	२४१२	१८१	११६
१६२	२४१३	१८२	११७
१६३	२४१४	१८३	११८
१६४	२४२७	१८४	११९



प्रकाशकीय-निवेदन

पू० गच्छाधिपति आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी
महाराजनी निश्रामां वि. सं. २०१० वर्षे आगमोद्धारक-ग्रंथमालानी
स्थापना थइ हती. आ ग्रंथमालाए त्यारबाद प्रकाशनोनी ठीकठीक
प्रगति करी छे.

सूरीश्वरजीनी पुण्यकृपाए खमासमणसिरिसंघदासगणि-
विइयं ‘पंचकप्पभासं’ नामनो महान् ग्रंथ आगमोद्धारक-
ग्रंथमालाना ५२मा रत्न तरीके प्रगट करतां अमोने बहु हर्ष थाय छे.

आना संशोधनमाटे ‘जैनानंद पुस्तकालय’ नी एक हस्त-
लिखितप्रत तथा छाणी प्रवर्तक श्री कान्तिविजयजी शास्त्रसंग्रहनी
सोमचंद्रभाई द्वारा प्राप्त थएल तेमज श्री जैन श्वेतांबर ज्ञानमंदिर
दर्भावतीनी मफतभाई द्वारा प्राप्त थएल हस्तलिखित प्रतनो
उपयोग करवामां आवेल छे.

आनी प्रेसकोपी गणिवर्य श्री सौभाग्यसागरजी महाराजे करेल
छे तेमज संशोधन पू० गच्छाधिपति आचार्य श्री माणिक्यसागर-
सूरीश्वरजी म० नी पवित्रदृष्टि नीचे शतावधानी मुनिराज श्री
लाभसागरजीए करेल छे. ते बदल तेओश्रीनो तेमज जेओए द्रव्य
तथा प्रति आपवानी सहाय करी छे ते महानुभावोनो आभार
मानीए छीए.

विषयानुक्रम

पृष्ठ

विषय

- १ भद्रबाहुस्वामिने नमस्कार ।
- २ 'भद्रबाहु' पदनो अर्थ ।
- ५ दुःषमाकालनो अनुभाव ।
- ७ कल्पाध्ययनना अभिधेयो ।
- १० चारित्रना भेदो ।
- ११ पांच निर्ग्रंथो अने संयतो ।
- १३ निर्ग्रंथोनो समवतार ।
- १४ संयतोनो समवतार ।
- १६ संयतोमां निर्ग्रंथोनो अने निर्ग्रंथोमां
संयतोनो समवतार ।
- १८ देशभंग अने सर्वभंगनुं स्वरूप ।
- २८ कल्पशब्दना अनेक अर्थ ।
- २१ 'कल्प' ना नामादि छ निष्क्रेणा अने 'द्रव्यकल्प'
ना भेद अने प्रभेद ।
- २३ थी ६० बाल-वृद्ध आदि दीक्षाने अयोग्य वीस प्रकारना
जीवो अने पञ्चोनी दीक्षामां लागता दोषो तेमज्ज
एओने दीक्षा आपनारने प्रायश्चित्त ।

- ५६ थी ७६ छंदा, रोषा आदि सोल प्रकारनो प्रवर्जया
अने एना उदाहरणो ।
- ७७ उपस्थापनाविधि ।
- ८० अढार प्रकारनो लोकपिण्ड ।
- ८२ भोजनविधि ।
- ८५ पूतिविशेष ।
- ८७ थो ९४ उपधिकल्प, जिनकल्प, स्थविरकल्प अने साध्वीनी
उपधिनुं प्रमाण ।
- ९५ वीस प्रकारना उपधिना उपशातो ।
- १०७ साडी पचीस आर्यदेश ।
- १०८ विद्वारयोग्य क्षेत्रना गुणो ।
- ११० अनायतनो ।
- ११३ थी १२३ कालकल्पमां मासकल्प, पर्युषणासामाचारी,
ब्रुद्धवास, पर्याप्तिकल्प, कायोत्सर्ग, प्रतिक्रमग,
कृतिकर्म अने पडिलेहणानुं स्वरूप ।
- १२७ भावकल्पमां दर्शनकल्प ।
- १३० थी १४० ज्ञानकल्पमां सूत्रकर्ण, उद्देशकल्प, वाचनाना
गुणो, वाचनाविधि, प्रचलनाकल्प अने अध्यापन-
योग्य आचार्य उपाध्यायनुं स्वरूप ।
- १४१ थी १६७ स्थितकल्प, अस्थितकल्प, जिनकल्प, स्थविरकल्प,
लिंगकल्प, उपधि कल्प अने संभोगकल्प, एम सात
प्रकारनो चारित्रकल्प ।
- १६८ कल्प, प्रकल्प आदि दश कल्पनुं निरूपण ।
- १८६ नामकल्प, स्थापनाकल्प आदि वीस प्रकारना
कल्पनुं निरूपण ।

१८६ थी २४० द्रव्यकल्प, क्षेत्र, काल, दर्शन, सूत्र, अध्ययन,
चारित्र, उपधि, संभोग, आलोचन, उपसंपदा,
उद्देश, अनुज्ञा, अध्व, अनुवासणा, स्थित, अस्थित,
जिन, स्थविर अने अनुपालनाकल्प ए वीस
प्रकारना कल्पनुं निरूपण ।

२४१ थी २९५ द्रव्य, भाव, तदुभय, विरमण, साधारण,
निर्विशन, अंतज्ञ, नय, नयांतर, स्थित, अस्थित,
स्थान, जिन, स्थविर, पर्युषणा, सूत्र, चारित्र,
अध्ययन, उद्देश, वाचना, प्रतीच्छना, परावर्त्त,
अनुप्रेक्षा, जात, अजात; आचीर्ण, अनाचीर्ण,
संघान, चरण, उपपात, निशीथ, व्यवहार, क्षेत्र,
काल, उपधि, संभोग, लिङ, प्रतिसेवना,
अनुवासना, अनुपालना, अनुज्ञा अने स्थापना ए
बेतालीस प्रकारना कल्पनुं निरूपण ।
उपसंहार ।



॥ णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

॥ आणंदसायरगुरुं पणमामि सूरिं ॥

॥ खमासमणसिरिसंघदासगणिविरइयं ॥

पंचकपभासं

(श्री बृहत्कल्पीयनामनिक्षेपान्तर्गतम्)

बंदामि भद्रबाहुं पाईणं चरिमसगलसुयनाणीं ।
सुत्तत्थ (स्स) कारगमिसिं दसाण कप्पे य ववहारे ॥१॥
कप्पं ति णामणिप्फणं महत्थं वन्तुकामतो ।
णिज्जूहगस्स भत्तीय मंगलट्ठाए य संथुतिं ॥२॥
तित्थगरणमोऽशारो सत्थस्स तु आइए समक्खाओ ।
इह पुण जेणऽज्ज्ञयणं णिज्जूढं तस्स कीरति तु ॥३॥
सत्थाणि मंगलपुरस्सराणि सुहसवणगहणधरणाणि ।
जम्हा भवंति जंति य सिस्सपासिस्सेहिं पचयं च ॥४॥

भत्ती य सत्थकत्तरि तं कयउवओगगोरवं सत्थे ।
 एएण कारणेण कीरइ आदी णमोङ्कारो ॥५॥

वद अभिवाद-थुतीए सुभसद्दो णेगहा तु परिगीतो ।
 वंदणपूयणणमणं थुणणं सक्कारमेगद्धा ॥६॥

भइं ति सुंदरत्ति य तुल्लत्थो जत्थ सुंदरा बाहू ।
 सो होति भहबाहू गोणणं जेणं तु बालत्ते ॥७॥

पाएणं (ण) लक्खिखज्जइ पेसलभावो तु बाहुजुयलस्स ।
 उववण्णमतो णामं तस्सेयं भहबाहुत्ति ॥८॥

अणो वि भहबाहू विसेसणं गो (त्त) णण गहणपाईणं ।
 अणोसिं पिय सिद्धे विसेसणं चरिमसगलसुतं ॥९॥

चरिमो अपच्छिमो खलु चोहसपुच्वा उ होति
 सगलसुतं । सेसाण बुदासद्धा सुत्तकरज्ञयणमेयस्स
 किं तेण कयं सुन्त ? जं भण्णति तस्स कारतो सो उ ।
 भण्णति गणधारीहिं सन्वसुयं चेव पुच्वकतं ॥ ११ ॥

तत्तो चिय णिज्जूढं अणुगगहद्धाए संपयजतीणं ।
 तो सुत्तकारओ खलु स भवति दसकप्पववहारे ॥ १२ ॥

वंदे तं भगवंतं बहुभद सुभद सन्वओभइं ।
 यवयणहियसुयकेउं सुयणाणपभावगं धीरं ॥ १३ ॥

वदिसहो पुन्वभाणि ओ तदिनी तं चेव णामगोत्तेहिं ।
इसरियाइगुण भगो सो से अतिथिति नो भगवं ॥१४॥

भद्र कल्पाणि ति य एगटठं तं च सुबहुयं जस्स ।
सो होति सुबहुभद्रो सोभणभद्रो सुभद्रोति ॥१५॥

खीरासवभादीणि तु सुभाणि भद्राणि नस्स सुबहूणि ।
सवओ इहपरलोए भद्रं तो सव्वतो भद्रो ॥१६॥

आमोसहादि इह भद्र परलोए होतउत्तरसुरादी ।
सुकुलुप्पत्ती य तओ ततो पच्छा य गेव्वाणि ॥१७॥

भातिति भद्रमहवा भाई णाणादिएहिं सो जम्हा ।
सो होति भहणामो कुव्वति भद्राणि वा जम्हा ॥१८॥

पवयण दुवालसंगं तस्स हितो जं करेतउवोच्छित्ति ।
संघो तु पवयणं त् हितोवदेसं अतो तस्स ॥१९॥

केतूसहो उसिए ऊसियं तुंगं तु तस्स तु सुहं तो ।
हहलोए परलोए सो भगवं होति परमसुही ॥२०॥

वायणपभावणया सुतणाणगुणा य जे वदति लोए ।
विउसपरिसाए मज्जे सुतणाणपभावणा एसा ॥२१॥

किं कारण तस्स कओ महया भत्तीय त् णमोकारो ।
जम्हा तेण जूढा अम्ह हियट्ठाय सुत्त इमे ॥२२॥

आयारदसाकप्पो ववहारो णवमपुब्बणीसंदो ।
 चारित्तरक्खणट्ठा सूयकडसूपरि ठविता ॥२३॥
 अंगदसा अणावि हु उवासगादीण तेण तु विसेसो ।
 आयारदसा उ इमा जेणेत्थं वणिणयाऽयारा ॥२४॥
 दसकप्पपब्बवहारा एम सुतक्खंध केइ इच्छंति ।
 केर्ह व दसा एङ्गं कप्पववहार बीयं तु ॥२५॥
 रयणागरथाणीयं णवमं पुब्बं तु तस्स णीसंदो ।
 परिगाल परिस्सावो एते दसकप्पववहारा ॥२६॥
 किं कारण णिजजूढा चरित्तसामरस्स रक्खणट्ठाए ।
 खलियस्स तर्हि सोही कीरइ तो होति निरुवहयं ॥२७॥
 सूयकडुवरि ठविता जम्हा तं पंचवासपरियाए ।
 सूयकडमहिज्जति तू तो जोगगो होति से तेसि ॥२८॥
 अणुकंपाबुच्छेदो कुसुमा भेरी तिगिच्छ पारिच्छा ।
 कप्पे परिसा य तहा दिट्ठंता आदिसुत्तमि ॥२९॥
 ओसप्पिणि समणाणं हाणिं णाऊण आउगबलाणं ।
 होहिंतुवग्गहकरा पुब्बगतम्भी पहीणमि ॥३०॥
 खेत्तस्स य कालस्स य परिहाणी ग्रहणधारणाणं च ।
 अलवीरिए संघयणे सद्वा उच्छाहता चेव ॥३१॥

किं खेत्त कालो च्चा सकुपती औग्ने तेण परिहाणी ।
भव्वइ य सकुपती परिहाणी तेसि तु गुणेहिं ॥ ३८ ॥

भणियं च दूसमाए गामा होहिति तू बसाणसमा ।
इय कारण (खेत्त) गुणहाणी काले विउ होहिमा हाणी
समए भवएऽणन्ता परिहायते उ वण्णमादीया ।
दव्वार्दीपज्ञाया अहोरत्तं नतियं चेव ॥ ३४ ॥

दूसम अणुभावेण साहूजोग्गा उ दुल्लभा खेत्ता ।
कालो वि य दुष्किमक्खा अभिक्खणं होति डमरा य ॥
दूसम अणुभावेण य परिहाणी होति ओसहिवलाणं ।
तेण मणुधाणं पि तु आउग्नेहादि परिहाणी(दा) ॥ ३६ ॥

संघयणं पि य हीयति इनो य हाणी य शिनिवलस्स
भवे । विरियं सारीरबलं तपि य परिहाति सत्तं च ॥
हायति य भड्डाओ गहणे परियद्धणे य भणुधाणं ।
उच्छाहा उज्जोग्गो अणालसत्तं च एगद्धा ॥ ३८ ॥

इय णाउ परिहाणि अणुग्नहद्धाए एस साहूणं ।
णिज्जूड्डणुकंगाए दिझ्ठनेहिं इमेहिं तु ॥ ३९ ॥

पगरण चडणुकंपा दझ्डविद्धेहिं होयडगारीणं ।
जह ओमे वीयमत्तं रण्णा दिण्णं जणवयस्स ॥ ४० ॥

एवं अप्पत्तांच्चिय पुब्वगतं केइ मा उ मरिहंति ।
 तो उद्धरिज्ञ ततो हेट्ठा उत्तारियं तेहिं (दा.) ॥४१॥
 मा य हु वोचिछज्जिहती चरणऽणुओगोत्ति तेण
 णिज्जूदं । वोचिछणे बहुतस्मी चरणाभावो
 भवेज्जाहि (दारं) ॥४२॥

कह पुण तेण गहेउं दिण्णाइं तत्थिमो तु दिट्ठंतो ।
 जह कोइ दुरारोहो सुसुरभिकुसुमो तु कप्पदुमो ॥४३॥
 पुरिसा केइ असत्ता तं आरोहूण कुसुमगहणट्ठा ।
 तेसिं अणुकंपट्ठा कोइ ससत्तो समारुज्ज्ञे ॥४४॥

घेत्तुं कुसुमा सुहगहणहेतुगं गंथिउं दले तेसिं ।
 तह चोइसपुब्वतरुं आरूढो भहबाहू तु ॥४५॥

अणुकंपट्ठा गथितुं सूयगडस्सुप्परि ठवे धीरो ।
 तं पुण सुतोवएसेण चेव गहितं ण सेच्छाए । (दा.) ॥

अण्णह गहिए दोसो असाहगं होति णाणमाईंणं ।
 केसवभेरीणातं वक्खातं पुब्वसामइए ॥४६॥

अहवा तिगिच्छओ तू ऊणहियं वावि ओसहं दिज्जा ।
 तेहिं तु ण कज्जसिद्धी सिद्धी विवरीयए भवति । (दा.)

गरिच्छ परिच्छित्तं पक्षपभादी दलंति जोग्गस्स ।
पश्चिमादीणं तृ दारुगभादीहिं णातेहिं ॥४९॥

गरिच्छ आदिसुत्ते पुव्वं भणिया तु जा उ विहिसुत्ते ।
मलघणादी परिसा पूरंता ईय भणिनहिती ॥५०॥

परिसादारं भणितं कप्पहारं कमेण हु इदाणि ।
किं पुण उक्षमकरणं बहुवत्तव्वं ति णाऊणं ॥५१॥

किं पुण कप्पज्ञयणे वणिनज्जति ? भण्णती सुणसु
ताव । जे अभिहिता उ अत्था तहियं ते ऊ समासेणं ॥

कप्पं य कप्पिए चेव कप्पणिज्जेत्ति आवरे ।
फासुए एसणिज्जे य संजमे त्ति य यावरे ॥५३॥

वालए वागए चेव चम्मपद्वेति आवरे ।

पम्हए किमिए चेव धातुए मीसतेति य ॥५४॥

उवसंपथा चरित्तस्स चरित्ते कइविहे ईय ।

णियंठा कति पण्णत्ता कह समोतारणाति य ? ॥५५॥

बवहार कस्स पण्णत्ते कहं पडिसेवणावि य ? ।

देसभंगे कहं बुत्ते ? सब्बभंगे त्ति यावरे ॥५६॥

पच्छित्ते कइविहे बुत्ते ? छट्ठाणे त्ति यावरे ।

पंचट्ठाणे चतुट्ठाणे तिट्ठाणे त्ति यावरे ॥५७॥

छट्ठाणे दंसणे बुत्ते संजमेत्ति यावरे ।

गाहणा य चरित्तसस एमे ता पडिवत्तीओ ।

एताओ दारगाहाओ ॥५८॥

कप्पो य होइ दुविहो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य ।

दुविहो उ कप्पिओ खलु दब्बे भावे य णायब्बो ॥५९॥

आगम णोआगमओ दब्बम्भी कप्पिओ भवे दुविहो ।

आगमतो णुवउत्तो णोआगमओ इमो होति ॥६०॥

जाणगसरीर भविए तब्बतिरित्ते य होति णायब्बो ।

जाणग मयगसरीरं भविओं पुण सिरिकहि जो तु ॥६१॥

बतिरित्तो एग भवी बद्वाउ अभिमुहो य बोधब्बो ।

भावेऽवि होति दुविहो आगम णोआगमे चेव ॥६२॥

आगमओ उवउत्तो णोआगमओ य पिंड माईणं ।

गहणामि कप्पिओ खलु पव्वावेतुं च सेहाणं ॥६३॥

जं जं जोग जतीणं आहारादी तहेव सेहा य ।

एयं तु कप्पणिज्जं अपरिग्गहणा अकप्पम्भि ॥६४॥

आहारे पलंबादी सलोममजिणादि होति उवहीए ।

सेज्जाए दगसाला अकप्पसेहा य जे अणे ॥६५॥

केरिसयं कप्पणिज्जं ? फासुयगं फासुयं तु केरिसिं ?

जीवजडं जं दब्बं तंपि य जं एसणिज्जं तु ॥६६॥

दसदोसविष्टमुक्कं गहियं च सदेण उग्गमादीवि ।
 एयं तु साहुजोग्गं गिह्नतो संजतो होनि ॥६७॥

अहवा सत्तरसविहो संजमो जं वावि सुत्तञ्छेण ।
 मुंजनि आहारानी विवरीयधसंजमो होनि । (दा.)॥

आहारस्त उ भेदा असणादी उवहिणो उ वालादी ।
 एतोसिं तु पर्ववणया वालयमादीणिभा होनि ॥६८॥

वालेहिं णिष्फण्णं वालयमोण्णोद्वियादिगं होनि । (दा.)
 वक्षेहि तु णिष्फण्णं वागजंसणवक्षमादी (गं) णं ॥७०॥

चम्मं च चम्मपडिए पट्टो उण होनिमो मुणेयव्वो ।
 पल्लत्थोग्गहपट्टो तिरीडपट्टो य एमादी ॥७१॥

पम्हजं हंसगडभादि अहवा कप्पासियं मुणेथव्वं । (दा.)
 कोसेज्जपट्टमादी जं किमियं तू पवुच्चत्ति । (दा.) ॥७२॥

छुःभति वंसकरिल्लो कम्मिवि देसम्मित तहणतो घडए ।
 वट्टो पूरयती तं घडयं विष्पिए तम्मि ॥७३॥

संकोहे तूणयतो तेहिं तुन्हारूणहिं कि (ज)-
 विए सुत्तं । तेण बुयं जं वत्यं भण्णति तं धातुतं णाम
 दुगसंजोगादीहिं एएसिं चेव वालयादीयं ।
 तं मीसयं ति भण्णति जह ऊम (दुणहं) कखोम्हियादीयं

वक्तव्य च सहेणं भेय पभेदा उ जेत्तिया तेसि ।
 सुद्धेहिं तेहिं तु उवसंपणो हु सुचरित्ते । (दा.) ॥७६॥
 अहवा पंचविहाओ उवसंपय होतिमा समासेण ।
 सुय सुहदुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य बोधव्या ॥७७॥
 अहवा तिविहुवसंपय णाणे तह दंसणे चरित्ते य ।
 चरित्तं च कतिविहं तू पंचविहं तं इमं होति ॥७८॥
 सामाइय छेदुवद्धावणं च परिहारसुद्धियं चेव ।
 तत्तो य सुहुमरागं अहखायं चेव बोधव्यं ॥७९॥
 अहवा वयसमितादी सराग तह वीतरागमहवावि ।
 खाइग खओवसमितं उवसमियं चा भवे तिविहं । (दा.)
 भेदा उ च सहेणं होति इमे णाणदंसणाणं तु ।
 खाइयखओवसमियं दुविहं णाणं सुणेयव्यं ॥८१॥
 खइयं केवलणाणं खओवसमियाइं सेसणाणाइं ।
 खइयं खओवसमियं उवसमियं दंसणं तिविहं ॥८२॥
 कस्सेतं चारित्तं णियंठ तह संजयाण ते कतिहा ?
 पंच णियंठा पंचेव संजया होतिमे कमसो ॥८३॥
 पुलए बउस कुसीलो होति णियंठे तहा सिणाए य ।
 एएसि एकेको पंचविहो होति बोधव्यो ॥८४॥

गाणपुलाए तह दंसणे य चारित्त लिंग अहसुहुमे ।
 एसो पंचविहो खलु पुलगणियंठो मुणेयव्वो ॥८५॥

आभोगमणाभोगे तह संबुडमसंबुडे अहासुहुमे ।
 एमो पंचविहो तृ षउसणियंठो मुणेयव्वो ॥८६॥

दुविहो होति कुसीलो पडिसेवणया तहा कसाए य ।
 एको एको पंचविहो परूपवणा तेसिना होइ ॥८७॥

गाणपडिसेवणाए दंसणचरणे य लिंग अहसुहुमे ।
 पडिसेवणाकुसीलो पंचविहो एस णायव्वो ॥८८॥

गाणकसायकुसीले दंसण चरणे य लिंग अहसुहुमे ।
 एस कसायकुसीलो पंचविहो तू मुणेयव्वो ॥८९॥

पढमगममयणियंठे अपढम-चरिमे य तह अचरिमे य ।
 ततो य अहासुहुमे पंचमए होति णायव्वो ॥९०॥

पंचविहसिणाए ऊ अच्छवि तह असबले अकम्मंसे ।
 मंसुद्धणाणदंसणधरे य होती चउत्थे तु ॥९१॥

अरहा जिणे य केवलि अप्परिसावी य होति पंचमए ।
 एते पंच विकप्पा सिणायस्स तो होति णायव्वा ॥९२॥

पंचविह संजता वी सामाइय-छेउवट्ठ-परिहारे ।
 सुहुमे य अहकखाए एकेके ते पुणो दुविहा ॥९३॥

इत्तरिए आवकही सामाइयसंजए भवे दुविहे ।
 दुविहे छेओवद्ठे सतियारे णिरतियारे य ॥१४॥
 परिहारविसुद्धीए णिविसमाणे तहेव निविद्ठे ।
 दुविहे य सुहुमराणे संकिससंते विसुज्ज्ञते ॥१५॥
 अहखाओ वि य दुविहो छउमत्थो चेव केवली चेव ।
 एसो तु संजतो खलु पंचविहो होनि णायब्बो ॥१६॥
 सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं ।
 तिविहेण फासयंतो सामाइयसंजनो स खलु ॥१७॥
 छेत्तूण तु परियागं पोराणं तो ठवेति अप्पाणं ।
 धम्मम्मि पंचजामे छेओवद्ठावणो स खलु ।(दा.) १८
 परिहरति जो विसुद्धं पंचज्जामं अणुत्तरं धम्मं ।
 तिविहेण फासयंतो परिहारियसंजतो स खलु ॥१९॥
 लोभमणु वेदितो जो खलु उवसामओ व खवओ वा ।
 सो सुहुमसंपराओ अहखाया ऊणओ किंचि ॥२०॥
 उवसंते खीणम्मि व जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि
 छउमत्थो व जिणो वा अहखाओ संजतो स खलु ॥
 एतेसि समोतारो दुविहो सद्ठाण तह परद्ठाणे ।
 बोच्छामि आणुपुर्णिय जो जत्थ सभोयरति तेसि ॥

जहणुवसंपज्जनता सन्वेसिं चेव पुच्छयन्वाओ ।
 वाकरण जहाकभसो तेसिं इणमो उ बोच्छामि ॥
 पुलगो तु पुलागत्तं जहमाणो जहइ से पुलागत्तं ।
 उवसंपज्जेऽमजद अहवावि कसायसीलं तु ॥
 यउमो य वउस्सत्तं जहती पडिसेवणं कसावं वा ।
 मंजमसंजम असंजम च पडिवज्जती सो तु ॥१०५॥
 पडिसेवणाकुसीलो विजहनि पडिसेवणाकुसीलत्तं ।
 यउमकसायकुसीलं पडिवज्ज अमंजम वावि ॥१०६॥
 अहवावि मंजमासंजम तु पडिवज्जती ततो सो उ ।
 जोऽवि कसायकुसीलो विजहनि मो त् कसायत्तं ॥
 पुलगं यउसं वा अहवा पडिमेवणाकुसीलं तु ।
 पडिवज्ज गियंठ वा अहवावि अमंजम वावि ॥१०७॥
 अहवा मंजमसंजम उवसंपज्ज तु सो चुनो तत्तो ।
 गियंठे उ गियंठत्तं विजहनि मत्तो चुनो मंत्तो ॥१०८॥
 उवसंपज्जे कलायं सिणाय अहवा अमंजम वावि ।
 विजहनि सिणायगत्तं सिणायगो उ चुनो तत्तो ॥
 उवसंपज्जनि तत्तो सिद्धिगति सो पर्हिणकम्मंसो ।
 एसो तु गियंठायं स्वभोवारो संजवाणेत्तो ॥१०९॥

सामादिसंजतो तू सामाइयत्तं जहति किं जहति ।
 किं वा उपसंपज्जे एवं पुच्छा उ सव्वेसि ॥११३॥
 सामाइयत्तं जहती सामाइय संजते चूते तत्तो ।
 छेदुवद्धावणियं वा पडिवज्जति सुहुमरागं वा
 अहवावि संजमासंजमं च असंजमं च पडिवज्जे ।
 छेदुवद्धावणिए पुण वि जंहति से छेदुवद्धवणं ॥११४॥
 परिहारविसुद्धीयं अहवा वी सो तु सुहुमरागं तु ।
 असंजमं संजमसंजमं च पडिवज्जती अहवा ॥११५॥
 परिहारविसुद्धीओ विजहति व तत्तो चुतोऽवि तं चेव ।
 उवसंपज्जति छेदं अहवावि असंजमं सो तु ॥११६॥
 विजहति सुहुमसरागो तत्तो चुन्नो सुहुमसंपरायत्तं ।
 उवसंपज्जति सामाइसंजमं छेदमहवा वि ॥११७॥
 अहव अहक्खायत्तं तू असंजममहव सो उ पडिवज्जे ।
 अहखायसंजतो पुण अहखायत्तं विजहमाणो ॥११८॥
 जहति अहक्खायत्तं उवसंपज्जे तु सो चुतो तत्तो ।
 सुहुमं च संपरायत्तं असंजमसिद्धिगतिमहवा ॥११९॥
 एस समोतारो खलु अहवावि णियंठसंजएसुं तु ।
 संजयनिग्गंथेसु अवरोप्परतो समोतारो ॥१२०॥

पुलगबउसाण दुणहवि सामइयछेदेसु तू समोतारो ।
 ओतरति कुसीलो पुण आदिल्लेसुं चउसुंपि ॥१२१॥
 निगंथसिणाता पुण समोतरंते तु ने अहकखाते ।
 एवं तु णियंठा तू उत्तरिया संजतेसुं तु ॥ १२२ ॥

पुलबउसकुसीलेसुं सामइछेदा समोतरंती तु ।
 परिहारसुहुमरागा ओतरति कुसीलएसुं तु ॥१२३॥
 ओतरति अहकखाओ णिगंथसिणातएसु दोसुंपि ।
 एमेते समोतरिता अण्णोऽण्णेसुं जहाकमसो ॥१२४॥
 उत्तारे सञ्चमहव्वयाणि णियमा तु सञ्चदव्वेसु ।
 ण तु सञ्चपज्जवेहिं जम्हा सामादिए उदितं ॥१२५॥
 पहमस्मि सञ्चवजीवा धीते चरिमे य सञ्चदव्वाहं ।
 मेसा महव्वता पुण (खलु) तदेकदेसेण दव्वाणं । दा॥
 एतेसि णियंठाणं आवण्णाणं तु संजयाणं च ।
 ववहारो होनि दुहा पच्छित्ते आभवंते य ॥ १२७ ॥
 पच्छित्ते पंचविहो आगममादी उ होनि णायव्वो ।
 कस्सा भवति ण वावी सचित्तादी तु आभव्वो ॥१२८
 सावराहिस्स ववहारो अवहारो पडिसेवणा ।
 पडिसेवणा य कतिहा तीसे भेदा इमे भवे ॥१२९॥

दप्पिया कप्पिया चेव दुविहा पडिसेवणा ।
 जयणा अजयणा कप्पी जयणामुद्धो तु सेवतो ॥३०
 जयणासेवी कप्पो दप्पो जयणाए अजयणाए य ।
 आवज्जति सट्टाणं वणिणज्जति वित्थरो कप्पे । दा ॥
 पडिसेवगस्स होती देसबभंगो य सब्बभंगो य
 अवराहे केरिसए देसे सब्बेऽवि सो होति ॥१३६॥
 पणगादी जा छेदो एसो खलु होति देसभंगो तु ।
 मूलादिउवरिमेसु णायब्बो सब्बभंगो तु ॥१३७॥
 नस्स उ विसुद्धिहेउं पच्छित्तं तस्स केत्तिया भेदा ।
 छट्टाणादीया खलु परुवणा तेसिमा होति ॥१३८॥
 छसु काएसु वएसु य छविह एर्गिंदियादि पंचविहं ।
 मंघट्टण परितावण उहवणे चेव निप्फण्णं ॥१३९॥
 चउहा तु णाणवंते दंसणवंते चरित्तवंते य ।
 तन्तो चियत्तकिच्चो अहवा दव्वाइयं चउहा ॥१४०॥
 अहवा अतिक्रमादी चउहा कोहाइयं च चउहा तु ।
 णाणादियारमादो होति तिविहं च पच्छितं ॥१४१॥
 अहवा आहारोवहि सिज्जतियारे य होति तिविहं तु ।
 उग्गम उप्पायण एसणा य तिविहं तु एकेके ॥१४२॥

आलोयणपडिक्कमणे तदुभयमेवं तु होति तिविहं तु ।
सच्चित्तअचित्तमीसग तिविहं चेदं मुणेयवं ॥१३९॥

अहवा सत्तटविहं नव दसहा वावि होति पञ्चित्तं ।
आलोयणपडिक्कमणे मीसविवेगे य वोसग्गे ॥१४०॥

छट्ठं तवे य तत्तो सब्बे उवरिल्ल सत्तमं छेदो ।
अट्ठविह छेद दुविहो देसे सब्बे य बोद्धवो ॥१४१॥

णवविह सब्बच्छेदो दुह संजमुवट्ठ विज्ञती मूले ।
कालंतरमितरे पुण खेत्तंतो बहिं च दसभेदं ॥१४२॥

अह वण्णह दुविहेदं एगविहं वावि होज्ज णायवं ।
रागहोसा दोणणी एगविहोऽसंजमो होति ॥१४३॥

छट्ठाणे दंसणेत्ती जो काए छविहे ण सहहति ।
णत्थ ण णिच्चादी वा छविहमेयं तु मिच्छत्तं ॥१४४॥

धम्मत्थिकायमादी कालंतादिं तु छत्तु दव्वाइं ।
जो ताइं न सहहति छविहमेयं तु मिच्छत्तं ॥१४५॥

संजमो सत्तरसविहो तु सामाइयमादी अहव पंचविहो
(दा) गाहण तव चरित्तस्सा गहणं चिय गाहणा होति
किह पुण चरित्तगहणं होज्जाहि ? भण्णती इमेहिं तु ।
वेरगेण अहवा मिच्छत्ता होइ सम्मत्तं ॥१४७॥

सम्मत्ता उ चरित्तं अहवा होज्जा इमेहिं गहणं तु ।
सवंणे णाणविणाणे एमादी गाहण चरित्ते ॥१४८॥

अहवा वी उवएसो एगट्ठं होति गाहणाउत्ति ।
 तह उवदिस्सति जह ऊचारित्तं गेणहती सो तु ॥१४१॥
 अविराहणमिम् य गुणा दोसा य विराहणा चारित्तस्स ।
 तह गाहिज्जति जह तू ओगाहो होति चारित्ते ॥१५०॥
 णाणे य चेव तह दंसणे य जातिगहणेण संसूया ।
 एयातिं गाहिन्ति गाहणता वणिणता एसा ॥१५१॥
 एमेता जा भणिता अहवा अवहारणे चसहो तु ।
 पडिवत्ती उवगारो वागरणं वावि पडिवत्ती ॥१५२॥
 एवं कप्पे वणिज्जती उ अणे य बहुविहा अत्था ।
 अत्थेसु अणेगेसु य कप्पडभिधाणं मुणेयन्वं ॥१५३॥
 सामत्थे वणणाणा काले छेयणे करणे तहा ।
 ओवम्मे अहिवासे य कप्पसहो वियाहिओ ॥१५४॥
 सामत्थे अठमासे य वत्तीकप्पो तु होति गबभगतो ।
 वणणे अज्ज्ञयणं तू कप्पिय जहमेग साहूणं ॥१५५॥
 काले हेमंताणं जह तू दसराय कप्प अतिकंते ।
 छेदण जह केसे तू चउरंगुलबज्ज कप्पेहि ॥१५६॥
 करणे वित्ती कप्पिय अहो ! इमेणं जहा तु पुरिसेणं ।
 आइच्चचंदकप्पा हवंति जह साहुणो धम्मे ॥१५७॥
 सोहम्मकप्पवासी अहिवासे जह तु होति देवा तु ।
 एते सामत्थादी जोएयव्वा इहं कप्पे ॥१५८॥

कर्पज्ञयणमधीतुं अतियारविसोहणे समत्थो उ ।
 क्षतिविह पायच्छित्तं परूपवणे वणणणा होंति ॥
 काले उद्गुवद्वाणं वासावासं च बुड्डवासं च ।
 वसती जहाविहिं खलु उस्सगगववायसंजुत्तं ॥१६०॥
 तवसोहिमतिक्षंतं छिंदनि पणगादिएहिं परियागं ।
 कुण्ड य तहा पयत्तं जह तं दिणणं वहइ सम्म १६१
 आवध्मे जिणकर्पणो जाणण गहणे य सो हवति गतिं ।
 अहिवासे मासादिसु ऊणतिरित्ते विभासा तु ॥१६२॥
 सब्वेसिं कर्पणाणं परणवणे परूपवणा उ नवभम्मि ।
 आसज्ज उ सोयारं पुञ्चगते वा इहं वावि (अधिकं)
 एतेसिं सब्वेसिं छविवह कर्पणाइयाण कर्पणाणं ।
 पणवण परूपवणता णवये पुञ्चम्मि णिहिद्धा ॥१६४॥
 सोतारं पुण आसज्ज होउज इह कर्प अहव णवम्मि
 धारण गहण समत्थे तहि तं असमत्थे इहइं तु ॥१६५॥
 कर्पणाणं वकखाणं पुञ्चगते बणिणतं सभत्तं तु ।
 इह थोवयंति काउं ण छु वहुभाणो ण कायव्वो १६६
 दव्वे खेत्ते काले उग्गह भंघयण धारण गुरूणं ।
 तंपि वहुमणियव्यं जं एगपदे पदं अतिथ ॥१६७॥
 दुस्समअणुभावेणं हाणी विरियस्स ओसहीणं तु ।
 दुलभाणि य दव्वाइं जइ जोग्गाइं तदणुभावा ॥१६८॥

खेत्ताणि य हायंती विहारजोग्गाइं तदणुभावेण । दा.
 दुष्क्रियपउरकालो तेणङ्गुभावेण मणुयाणं १६९
 लद्धी उग्गहणम्मि संघयणं धारणा य परिहाति ।
 ण य सीसायरियाणं सत्ती वत्तुं व सोतुं वा ॥१७०॥
 ण य संति बहू गुरुवो जे वत्तारो य हुंति अत्थस्स ।
 तेवि ण सव्वस्स लहुं पसादसुमुदा भवंती तु । दा ॥
 इयाणिं परिहाणिं जं एगपदे वि एगमत्थपदं ।
 षहु मंतव्वं तंपि हु किं पुण संतेसुङ्गेसु ॥१७२॥
 तो ण पमाएयव्वं ण य भत्ती तू तहिं ण कायव्वा ।
 सुद्दुतरं उज्जोगो कायव्वो तम्मि धित्तव्वे ॥१७३॥
 सो पुण पंच विकप्पो कप्पो इह वणिणओ समासेण ।
 वित्थरतो पुव्वगतो तस्स इमे होंति भेदा तु ॥१७४॥
 छविह सत्तविहे या दसविह वीसतिविहे य बायाले ।
 जस्स तु नतिथ विभागो सुव्वव्त्त जलंधकारो से १७५
 विभयण विभागो भण्णति जहेरिसो छविहो य सत्त-
 विहो । णामादिविभागो वा जस्सेसो ण विदितो होति
 सुव्वव्त्त सुद्दु वत्तं तस्स निबुड्हस्स वा जलमगाहे ।
 होती सचकखुयस्स वि जहंधकारो मणुस्सस्स ॥१७६॥
 अहवा जलंधकारो मेहोछइयम्मि होति गगणाम्मि ।
 अहवा जलंधकारो जत्थादिचो ण दीसति तु ॥१७८॥

एवं तु अंधकारो कर्पणकर्पणं पदुच्च तस्स भवे ।
 अहवा सो चेव जलो भवइ य मे अंधकारं तु ॥१७९॥
 छन्विह कर्पणस्तिषयमो णिकखेवो छन्विहो मुण्यव्वो ।
 णामं ठवणा दविए खेत्ते काले तहेव भावे य ॥१८०॥
 ज्ञेण परिग्निहिएणं दव्वेणं कर्पण होति णाऽकर्पणो ।
 तं दव्वमेव कर्पणो कारणकज्जोवयारातो ॥१८१॥
 सो तिविहो बोधव्वो जीवमजीवे य मीसितो चेव ।
 एतेसिं तु विभागं बोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१८२॥
 तिविहो य जीवकर्पणो दुपयचउप्पय तहेव अपदेहिं ।
 अहिगारो दुपदेहिं तत्थवि य मणुस्सदुपदेहिं ॥१८३॥
 तत्थवि य कम्मभूमगसंखिज्जगवासआउएहिं तु ।
 पव्वइतुकामएहिं तत्थवि तू होति अहिगारो ॥१८४॥
 सो होति छन्विहो तू बोधव्वो मणुयजीवकर्पणो तु ।
 बोच्छामि तस्स इणमो भेदविकर्पणं समासेण ॥१८५॥
 पव्वावण मुंडावण सिकखावणुवद्ध भुंजसंवसणा ।
 एसो तु जीवकर्पणो छबेदो होति णायव्वो ॥१८६॥
 अब्सुवगमो पव्वावण मुंडावण होति लोयकरणं तु ।
 गहणासेवण सिकखं सिकखाविन्तम्मि सिकखवणा ॥
 वयठवणमुवद्ववणा संभुंजण मंडलीए सह भोगो
 एगततो सहवासो संवसणा होति णायव्वा ॥१८८॥

णाऽपव्वाविते मुंडावणा तु णाऽमुंडिए तु सिक्खवणा।
 एमादी तु विभासा पव्वावयंती तु केरिसगा ॥१८॥
 सुत्तत्थतदुभयविसारयस्स संगहउवायकुसलस्स ।
 कप्पति पव्वावेतुं संवेगमुवद्वितमतिस्स ॥१९॥
 सुत्तत्थेण विसारए चउभंगो एत्थ होति कायब्बो ।
 तं चेव तदुभयं खलु विसारतो जाणतो तस्स ॥२०॥
 दब्बे भावे संगहो दब्बे आहारमादिणहिं तु ।
 सिक्खवावणमगिलाए गेलणे यावि करणं तु ॥२१॥
 भावम्मि संगहो खलु णाणादी तं तु होति बोधब्बो ।
 जाणइ बद्वावेतुं गच्छं तु उवायकुसलो तु ॥२२॥
 संसारभउच्चिगगो संविगगो सो तु होति णायब्बो ।
 एतेसिं तु पदाणं चउभंगा होति एक्केक्के ॥२३॥
 तदुभयविसारदो खलु ण संगहे कुसलो एत्थ चउभंगो
 तदुभयउवायकुसलो एत्थंपि तु होइ चउभंगो ॥२४॥
 तदुभयसंविगगोहि वि चउभंगो एव होति कायब्बो ।
 एव गुणजातियस्सा पव्वावेतुं तु कप्पति तु ॥२५॥
 पव्वाविंता भणिता अहुणा पव्वाविंजज वोच्छामि ।
 पवज्जाए जोगगा जे वा होति अजोगगा तु ॥२६॥
 पव्वावणारिहा खलु जातीकुलरूपविणयसंपणा ।
 तच्चिवरीय गुणा खलु होति अपव्वावणाजोगगा ॥२७॥

तेसिं तु जे विवक्खा तविवरीया हवंति ते णियमा ।
 अहवावि इमे वीसं बजिज्ञता सेसगा जोग्गा ॥१९९॥
 थाले बुड्हे नपुंसे य जङ्गे कीवे य वाहिए ।
 तेण रायाऽवगारी य उम्मत्ते य अदंसणे ॥२००॥
 दासे दुट्ठे य मूढे य अणत्ते जुंगिते इय ।
 ओबद्धए य भयए सेहनिष्फेडिया इय ॥२०१॥
 गुविणी वालवच्छा य पञ्चावेतुं न कप्पए ।
 एसि पर्खवण दुविहा उस्सग्गाववायसंजुत्ता ॥२०२॥
 कारणमकारणे अहव कारण जयणेतरा पुणो दुविहा ।
 एस पर्खवण दुविहा एतो वालादि वोच्छामि ॥२०३॥
 तिविहो य होति वालो उझोसो मज्जिमो जहण्णो य ।
 एतेसिं तिणहं पी पत्तेय पर्खवणं वोच्छं ॥२०४॥
 सत्तद्गम्मुझोसो छप्पण मज्जो य चतु तिय जहण्णो ।
 एवं वयणिष्फणं सभावओ होति णव भेदा ॥२०५॥
 जहण्णो जहण्णसभावो मज्जसभावो तहेव उझोसो ।
 एवं मज्जिम तिणणी उझोसावि भवे तिणिण ॥२०६॥
 छिंदतमछिंदता निन्निवि हरितादि वारिता संता ।
 पुणरविय छिंदभाणा जइ दिट्ठ गुरुणवङ्णणेण ॥
 उझोसो दद्धूणं मज्जिमतो ठानि वारिलो संतो ।
 जो पुण जहण्णवालो हत्थे गहिओअवि णवि ठानि ॥

दाहिणकरम्मि गहितो वामकरेण स छिंदती ताइ ।
 मंडलगंमिव धरिता चिट्ठह एवं च भणिता तु २०९
 जह भणितो तह तु ठितो पढमो बीएण फेडियं ठाणं ।
 तइओ न ठानि ठाणे अह रुब्भति विस्मरं रुयति २१०
 एतेसिं बालाणं पञ्चाविंतस्सिमं तु पच्छित्तं ।
 तिणहंपि कमेणं तू वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥२११॥
 अउणत्तीसा वीसा इगुवीसा चेव तिविह बालम्मि ।
 तव छेद वीसु पढमे बिति मिस्सा ततिय छेदाइ २१२
 अउणत्तीसं दिवसे सिकखाविंतस्स मासियं लहुयं ।
 उक्कोसगम्मि बाले सो चेव असिकखणे गुरुगो २१३॥
 अणे अउणत्तीसं गुरुओ सिकखे असिकिख चउल-
 हुया । पुणरावि अउणत्तीसं गुरुगा सिकखे य छल्लहुया ॥
 अणे अउणत्तीसं सिकखाविंतस्स होति पच्छित्तं ।
 छल्लहुगा सिकखम्मि य असिकख गुरुगा अउणत्तीसं ॥
 अणे सिकखे छगुरु (असिकख) तवो छेदो छगुरु
 चंव । मूलणवट्ठ पारचिंगं च एकेक्कगं तज्जा ॥२१५॥
 अहवा सो चेव तवो छेदादी मासमादिया होति ।
 सिकखाविंतमसिकखे मूलेक्कदुगं तहेकेकं ॥२१६॥
 अहवा सो चेव तवो छेदो पणगादि जावु छम्मासा ।
 सिकखाविंतमसिकखे लहु गुरु एकेक्क इगुतीसो २१७

मूलणवट्ठं च तओ पारंचियमेव होति एकेकं ।
 सिक्खामिक्खपगारा उझोसे होन्ति बालेते ॥२१९॥
 अहवा सो चेव गमो दिणंहिं सिक्खतरवज्जिए होति ।
 मासादि तव छेदा मूलाईया दिणेकेकं ॥२२०॥
 ऐमेव मज्जिमे वी णवरं दिवसा तु वीस वीसं तु ।
 ऐमेव जहण्णे वी उगुवीसु गुवीस दिवसा तु ॥२२१॥
 अहवा मज्जे मीसा जहण्णे छेदादी अन्नपरिवाडी ।
 तवछेदेगंतरिया मज्जे जहण्णे तु भयणाए ॥२२२॥
 मज्जिमि वीसं लहुओ सिक्खमसिक्खस्स मासिओ
 छेदो। वीसण्णछेदो लहुओ सिक्खमसिक्खणे गुरुगो॥
 तवो अड्डोकंती एवं तवछेदेगंतरा तु णेयव्वा ।
 जा छम्मासा ना चतु परओ मूलादि एकेकं ॥२२४॥
 अउणावीस जहण्णे सिक्खाविंतस्स मासिओ छेदो ।
 सो चिय सिक्खे गुरुओ जा छगुरु तिणिण परओ तु
 अहवा ण होइ छेदो ठाणे चिय मूलतह य अणवट्ठो ।
 पारंचिए य नत्तो एवं भयणा जहण्णस्स ॥२२६॥
 अहवा पढमे छेदो तहिवसो चेव हवइ मूलं वा ।
 ऐमेव होनि वीए तइए पुण होति मूलं तु ॥२२७॥
 किं कारण सोधेसा दोसा तहियं इमे समक्खाता ।
 पव्वाविएसु तेसुं उड्डाहाई मुणेयव्वा ॥२२८॥

वंभस्स वयस्स फलं अयगोले चेव होंति छक्काया ।
 णिसिभत्तमंतराए चारग अजसो य पडिबंधो ॥२२९॥
 लोगो बेती पेचछह इणमो वंभवईण तु फलं तु ।
 अयगोलो विवतत्तो डहती सो जिन्तिए मुक्को ॥२३०॥
 भत्त णिसि मग्गमाणा दिंते तू राइवत्तभंगो तु ।
 हवइ अदिंतम्मि तु अंतराइयं बेह लोगो य ॥२३१॥
 चारगपाला हु इमे जे बालाइं तु एव रुंभंति ।
 लोगे जायति अजसो अहह इमो णिरणुकंपत्ति २३२
 तेण य पडिबंधेण पडिबद्धा णवि कहिंचि विहरंति ।
 जे दोसा णीयवासे ते पावंते य अच्छंता ॥२३३॥
 ऊणट्ठे णात्थि चरणं पब्बाविंतो वि भस्सई चरणा ।
 मूलावरोहिणी खलु णारभते वाणिओ चेट्ठं ॥२३४॥
 उग्घायमणुग्घायं णाऊणं छविहं तवोकम्मं ।
 एमेव छेदछविह जिण चोहसपुविए दिक्खवा ॥२३५॥
 उग्घायमणुग्घातो मासो चउ छच्च छविह तवे सो ।
 एमेव छविहो च्छिय छेदो सेसाण एकेकं ॥२३६॥
 एयं पायच्छित्तं णाउं पब्बावए तओ बालं ।
 णवरं पब्बाविंती जिण चोहसपुविअतिसेसी २३७
 ते जाणिउं गुणागुण बहुगुण णाऊण तेण दिक्खंति ।
 के पुण जिणमादीहिं दिक्खिय बाला इमे सुणसु ॥

सत्थाए अतिमुक्तो मणओ सिज्जंभवेण पुच्चविदा ।
 अतिसंसिणा य वतिरो छम्मासो सहिगीरिणावि ॥
 एते अच्चवहारी पञ्चाविंतीह गच्छवासी तु ।
 एयं हत्यं णाउं भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२४०॥
 उवसंते व महाकुले णातीवग्गे व सन्निसिज्जतरे ।
 अजाकारणजाने बाले पञ्चज्जञ्जुण्णाया ॥२४१॥
 पञ्चज्जाए यरिणए विउलकुले तत्थ बाल होज्जाहि ।
 मा सब्बे तेसि कते अच्छंतू तेण पञ्चावे ॥२४२॥
 णातीवग्गे य तहा थेरगमादीमयमिम संतमिम ।
 जणवाहरक्खतो सारवेइ आसण्णवालाइ ॥२४३॥
 एवं सण्णितरण वि अज्जाथव डिंडिबंधपडिणीए ।
 कञ्जं करेमि सचिवो जदि भे पञ्चाव तह बाल ॥२४४॥
 एतेहि कारणेहिं पञ्चाविज्जाहि गच्छवासी तु ।
 पञ्चाविग्याण नेसिं इमेण विहिणा उ सारवणा ॥२४५॥
 भत्ते पाणे धोवण सारणया वारणा निउंजणता ।
 चरणकरण सज्जायं गाहेयञ्चो पयत्तेण ॥२४६॥
 निद्रमहुरेहिं आउं पुस्सति देहिंभि पाढवं मेहो ।
 अच्छति जत्थण णज्जति सङ्घादिसु पीहगादीया ॥
 शावत्ती सालवाडा पडिलेहणमादि सारणमभिकर्खं ।
 वारिज्जए अभिकर्खं हरियादी छिंदमाणो य ॥२४८॥

सामायारि सब्वं सज्ज्ञायं चेव उ पयत्तेणं ।
 गाहिज्जति सो एवं जयणा एसा तु बालस्स । दा ॥
 तिविहो य होइ बुड्ढो उक्कोसो मज्जिमो जहणो या
 एतेसिं तिणहंपी पत्तेय परुवणं बोच्छं ॥ २५० ॥
 दस आउविपागदसा दसभागे आउयं विभतिज्ञं ।
 दसभागे दसभागे होति दसा ता इमे होंति ॥ २५१ ॥
 बाला किड्डा मंदा बला य पण्णा य हायणि पवंचा ।
 पब्भार मुम्मुही वि य सयणी दसमा य णायव्वा ॥
 तहियं पढमदसाए अट्ठमवरिसादि होति दिक्खा तु
 सेसासु छसुवि दिक्खा पब्भारादीसु सा ण भवे ॥
 बुड्ढदृठ दसुक्कोसो मज्ज्ञो णवमि दसमी य तु जहणो
 जं उवरिं तं हेट्ठा भयणाऽप्पब्लं समासज्ज ॥ २५४ ॥
 केसिंचि एववादी बुड्ढो उक्कोसगो उ जा सतरि ।
 अट्ठदसाए मज्ज्ञो णवमी दसमीसु य जहणो ॥
 कुरुकुयमादि णिसिद्धो जह मा बीयं करेहि एवंति ।
 पुणरवि य करेमाणो दिद्धो साहूहिं ताहे तू ॥ २५६ ॥
 उक्कोसो दट्टूणं मज्जिमओ ठाति वारिओ सतो ।
 जो पुण जहणबुड्ढो हत्थे गहिओ णवरि ठाति ॥
 ठाणे य चिट्ठसुत्ती जह भणिओ तह ठिओ भवे पढमो
 बीएणं केडियं तं तइओ णवि ठायई ठाणे ॥ २५८ ॥

एण्णतीसा वीसा अउणावीसा य तिविह वुड्डमि ।
पत्तेयं तवछेदा पढमे वितिमीसतवछेदा ॥२५९॥

तह चेव विभागो तू जह बालाणं तु होति तिणहंपि ।
किं पुण एसा रूवणा ? भण्णति इणमो निसामेहि २६०
आवसय छक्काया कुसत्थ सोए य भिकख पलिमंथो ।
धंडिल अपपडिलेहा पमज्ज पाढे करणजड्हो ॥२६१॥

आवसयं न सक्को गाहेतुं जड्हयाए सो वूढो ।
छक्काय ण सद्दहनी ण तरति ते यावि परिहरितं २६२
कुहिद्धिकुसत्थेहिं तु भावितो नेच्छए नगं घोत्तुं ।
लोगसस अणुगगहकरा चिरपुराणति अम्ह मो ॥२६३॥

अतिसोयवायणं पुढविं गेणहति वहु दवं छड्हे ।
अपरीहत्थो भिकखायरियं पलिमंथ पातवहो ॥२६४॥

धंडिल्लं णवि पासइ दुब्बलगहणी य गंतु ण चएइ ।
अणस्सवि वक्खेवा चोदण इहरा विराहणया २६५
पहिलेहणं ण गिणहइ पमज्जणे यावि सो भवति जड्हो ।
णवि तीरति पाढेतुं दुम्भेहो जड्हवुद्धी य ॥२६६॥

भंजति अभिकखमालावगं च अणोसि यावि पलिमंथो
उवहिं वीसारेती छड्हेइ व पंथि वच्चतो ॥२६७॥

उद्धिंतिणवेसिते चंकंभते अ वाउडियदोसा ।
चरणकरणसज्जाए दुकखं वुड्डो ठवेतुं जे ॥२६८॥

उग्रायमणुग्रायं छविह पच्छित्त कारणे तेणं ।
 तम्हा बुद्ध० ण दिक्खे जिणचोहसपुच्विए दिक्खे ॥
 पच्चाविंति जिणा खलु चोहसपुच्ची य जे य अतिसेसी
 जिणमादीहिं तेहिं कयरे ते दिक्खिखया बुद्धा ॥२७०॥
 सत्थाए पुच्चपिता चोहसपुच्चीण जंबुणामपिता ।
 तं मग्गेणं जणतो तु दिक्खिखतो रक्खिखयज्जेणं ॥२७१॥
 एते अच्चवहारी इच्छामी णातु अणतिसेसीया ।
 जह दिक्खिंते भण्णति सुणसू जहं तेऽवि दिक्खिंति ॥
 उवसंते व महाकुले णातीवग्गे व सण्णिसेज्जतरे ।
 अज्जाकारणजाते बुद्धस्सेवं भवे दिक्खा ॥२७२॥
 जहं चेव य बालस्सा विभास तहं चेव होति बुद्धस्सा ।
 णवरं इमो विसेसो अज्जाणं कारणा होति ॥२७३॥
 अज्जाण णत्थि कोती संचारितो तु खेत्तमादीसु ।
 तेणं तेसद्धाए बुद्धं हनसंक पच्चाए ॥२७४॥
 एतेहिं कारणेहिं जति णाम होज्ज दिक्खिखतो बुद्धो ।
 ताहे य तस्स सारण कायच्च इमीइ तु विहीए ॥२७५॥
 भत्ते पाणे सयणासणे च उवही तहेव बंदणए ।
 चरणकरणसज्जायं अणुयत्तणया य गाहणता ॥२७६॥
 जारिसत्भत्तपाणेण णिच्चाहो दिज्जते से तारिसगं ।
 सयणीयसमा भूमी पाउँछणमादि आसणंयं ॥२७७॥

जन्तिय तरए बोहुं सीयत्ताणं व जन्तिएणं सो ।
 तत्तियमेत्तो उवही दिज्जति सेऽणुगगहठाए ॥२७९॥
 वंदणए अणुक्कपा कीरति न श सारियम्म चंदावे ।
 चरणकरणभज्जायं अणुक्कलेउ चरणगाहो ॥२८०॥
 उवउंजिउ णिमित्ते दोणहंपि य कारणा दुवग्गाण ।
 होहिंति जुगप्पवरा दुणहंवि अट्टा दुवग्गाण ॥२८१॥
 ओहिमणा उवउंजिय परोक्खणाणी णिमित्त धेच्छूणं ।
 जदि पारगनो दिक्खा जुगप्पहाणा व होहिंति २८२
 दोणित्त वालबुइटा पुणरावि दो वग्ग इत्थि पुरिसा य
 मुत्तल्यदुगद्धाए कालियपुञ्चवग्गयअट्टा वा ॥२८३॥
 पुणरावि दो वग्गा खलु समणा समणी य होहिंति
 णायव्वा तेसि अट्टा दिती आहारा तेसि होहिंति दा.
 एतो बुच्छ णापुंसे सो किह णज्जेज्ज जह णपुंसोत्ति ।
 भण्णति ण चंच कप्पति दिक्खेतुं यिहि अजाणंतो ॥
 तम्हा दिक्खा गीते दिक्खिखंते चउगुरु अगीयस्स ।
 गीतेऽवि अपुच्छित्ता गुरुगा पुच्छा उवाएणं ॥२८५॥
 अम्हं णपुंसगादी ण कप्पने एव भणिते साहेज्जा ।
 को वा णिच्चेदो ते भणिज्ज भगवं अहं ततिओ २८७
 अहवावि य मित्ता से णिच्चेदं पुच्छिया हु साहेज्जा ।
 अहवा वि लक्खणेहिं इमेहिं णाउं परिहरेज्जा २८८

महिलासहावो सरवण्णभेदो मेंढं महंतं मउया य वाणी
ससहगं मुत्तमफेणगं च एताइं छप्पंडगलकखणाइं ॥

गती भवे पञ्चवलोइयं च, मिउत्तया सीतलगन्तया य
धुवं भवे दुकखरणामधेओ, संकार पञ्चतरिओ ढकारो ॥
गतिहत्थवच्छकडि भमुयभास दिडि य केसलंकारे ।
पञ्चष्णमज्जणाणि य पञ्चष्णतरं च णीहारो २९१

मंदा गती विकिखवे वामहत्यं, लंबं णियंसेति जहेव
इत्थी । कडिथंभगं वा विकरे अभिक्खं सविद्भमं
उकिखवए भुमाओ ॥ २९२ ॥

भासंतो या वि करं वच्छे णिवेसेति इत्थिया चेव ।
हीणस्सरो य जायइ दिड्डी य सविद्भमा तस्स ॥ २९३ ॥
केसे इत्थी व जहा आमोडति इत्थिमंडणं चेव ।
णहायति एगंते या पञ्चन्ने आयरुच्चारं ॥ २९४ ॥

पुरिसेसु भीरु महिलासु संकरो पमयकम्मकरणो य ।
एवं वाहिरलकखण णापुंसवेदो भवे अंतो ॥ २९५ ॥

सो पुण णापुंसवेदो लिंगे तिविहो वि होति वोधव्वो ।
कह लिंग तिए? भण्णति एत्थं एकेक्ष वेदतिगं ॥ २९६ ॥
उस्सग्गलकखणं तु त्थीपुरिसणपुंसगाण वेदाणं ।
फुंकुमदवग्गिमहणगरदाहसरिसा जहाकमसो २९७

एकेके तिह भयणा इत्थी थीसरिस पुरिस अपुमे य ।
इय पुरिसणपुंसेथा एकेके होति वेदतिगं ॥२९८॥

सो पुण णपुंसगो तू सोलसहा होति तू मुणेयव्वो ।
पंदग कीवि वानिय कुंभी ईसालु मउणी य ॥२९९॥

तक्षम्मसेवि पक्षिखयमपक्षिखए तह मुगंधि आसित्ते ।
षट्टिन चिप्पिय भंतोमहीहिं वा उवहए जे य ॥३००॥

इसितत्तदेवसत्ते एनेसि परूपणा इमा होति ।
तहियं पंडो लियिहो लक्खणदूसी य उवघाओ ३०१

पंदगलक्खण जससा जाया अवलोयणेण तु गहाणं ।
सो लक्खणतो पंडो दूसीपंडो इमो होति ॥३०२॥

दूसियवेदां दूसी दोसु य वेदेसु सज्जए दूसी ।
दो सेवइ वा वेदो दोसु व दूसिज्जई दूसी ॥३०३॥

दूसेति सेसण वा सो दुह आसित्तो तह य जसित्तो ।
सावचो आसित्तो अणवचो होति असित्तो ॥३०४॥

उवघाओवि य हुविहो वेदे य तहेव होति उवकरणे ।
वेदांवघाशाडा इणमो तहियं मुणेयव्वो ॥३०५॥

गुर्विं दुर्बिण्णाणं कम्माणं अकुहफलविवागेणं ।
तो उवहम्मनि वेदां जीवाणं पावकम्माणं ॥३०६॥

जह हेमकुमारो ऊ इंदमहे बालियाणिभित्तेण ।
 मुच्छिय गिद्धो अतिसेवणेण वेदोवघातमतो ॥३०७॥
 एयस्स वि भास इमा जह एगो रायपुत्तो वणेण ।
 तवियवरहेमसरिसो तो से णामं कतं हेमो ॥ ३०८॥
 सो अण्णदा कदाई इंदमहे इंदठाणपत्ताओ ।
 णगरस्स बालियाओ पुष्फादीहित्थ दद्धूण ॥३०९॥
 पुच्छति सेवगपुरिसे किं एया आगताउ इह इंति ? ।
 ते विंती सोहगं मग्गंते ता वरत्थीओ ॥३१०॥
 तो वेई एयासि इंदेण वरो हु दिण्ण अहमेव ।
 घेन्तूण ता तेण छूढा अनेउरे सन्वा ॥३११॥
 तो णागरगा रणो उवडिना भोयवेह एताओ ।
 तो वेति मज्ज्ञ पुत्तो किं जामाता ण रुचनि भे ॥३१२॥
 तो तासु अतिष्पसत्तस्स तस्स णिगलियसब्बवीयस्स
 वेदोवघातो जातो सागारीयं ण उडेति ॥३१३॥
 तो ताहि रुसियाहिं सो अहागेहिं घातितो ताहे ।
 वेदोवघातपंडो एसोऽभिहितो समासेण ॥३१४॥
 उवहत उवगरणम्मी सेज्जातरभूणियाणिभित्तेण ।
 तो कविलगस्स वेदो ततिओ जातो दुराहियासो ॥३१५॥

उवहय उवगरणस्मी एवं होज्जा णपुंसवेदो हु ।
 दोसा सवेदुदिणं धारेतु णचाइ णायमिणं ॥३१६॥

जह पढमपाउसम्मी गोणो धातो तु हरियगतणस्स ।
 अणुसज्जति कोटिंबि वावणं दुष्टिभगंधीयं ॥३१७॥

एवं तु केह पुरिसा भान्नूणं भोयणं पतिविसिद्धं ।
 ताव ण भवति तुट्ठा जाव ण पडिसेविओ वेदो ३१८

लक्खणदूसियउवघायपंडगं तिविहमेव जो दिकखे ।
 पञ्चत्त तिसुवि मूलं दोसा तहियं इमे होंति ॥३१९॥

तरुणादीहिं सह गओ चरित्तसंभेदिणी करे विकहा ।
 इथिकहाउ कहित्ता तो सि यडवणं पगासेह ३२०

समलं साविलगंधिखेदो य ण तागि आसए होंति ।
 सागारियं पिरिकखेह मलेत्तु हत्थेहिं जिरघइ य ३२१

पुच्छति सेवियपुञ्चो णपुंसगो णवित्ति अतिसुहं एवं ।
 आसयपोसे य तहा दुविहवि सेवी अहं चेव ॥३२२॥

एवं पुच्छत्तु तओ अहवावि अपुच्छउण सहसेवे ।
 गेहेज्जा ही समणं तेण कहेयव्वतो गुरुणं ॥३२३॥

छंदिय कहिय गुरुणं जो ण कहेति कहिएवि य उवेहं ।
 परपकख सपकखे वा जं काहिति सो तमावज्जे ३२४

सो समणसुविहिएहिं पवियारं कत्थती अलभमाणो
 तो सेवितुं पवत्तो गिहिणो तह अणनित्थी य ३५
 अजसो य अकित्ती या तं मूलागं तहिं पवश्यणस्स।
 तेष्मिपि होति संका सब्बे एतारिसा मणो ॥३६॥
 एरिससेवी एतारिसा वी एतारिसो चरतिसहा।
 सो एसो णवि अण्णो असंखडंघोडमार्दीहिं ॥३७॥
 जम्हा एते दोसा तम्हा णवि दिक्खणिज्जो पंडोउ।
 एसो पंडोऽभिहिओ एत्तो किलियं पवक्खान्वि ॥३८॥
 किलियस्स गोण्ण णामं तदभिप्पाओ कलिज्जए जस्स
 सागारियं से गलती किलिवोत्ती भण्णती तम्हा ३९
 सो हूणिरुभमाणो कम्मुदएणं तु जायए तइओ।
 तम्मिवि सो चेव गमो पच्छत्तं चेव जह पंडे ॥३१॥
 उदण्ण वानियस्सा सविगारं जा ण होती संपत्ती।
 तच्चणिय असंवुडिते दिट्ठंतो तत्थिमो होति ॥३१॥
 णावारुढो तच्चणितो तु दट्ठुं असंवुडपगारिं।
 ओवतिओ पुरिसेहिं उद्विडिति आरिज्जामाणोवि ३१
 एसोऽवि बातिगो हु अलभंतो सेवितुं अणारार।
 कालंतरेण सोऽवि हु णपुंसगत्तेण परिणशलि ॥३३॥

दुविहोय होति कुंभी जातीकुंभी य वेदकुंभी य ।
जातीकुंभी वायंडिओ हु सो भइय दिक्खाए ॥३३४॥
होइ पुण वेदकुंभी असेवओ सुज्जते स सागरियं ।
सोऽवि य णिरुद्धवत्थी णपुंसगत्ताए परिणमति ३३५
वेकडना ईसालुगो हु संविज्जमाण दद्धूणं ।
ण चएती थोरउ णिरुद्धममाणो भवे ततिओ ॥३३६॥
सउणी उ छवेओ चडउच्च अभिक्ख सेवए जो उ ।
सोऽवि य णिरुद्धवत्थी णपुंसगत्ताए परिणमति ३३७
तक्षमसेवि जां खलुं सेविय त चेव लिहति साणो च्च ।
सोऽविय अपाडियरंतो णपुंसगत्ताए परिणमति ३३८
ए पक्खं बुद्धओ एगे पक्खम्नि जस्स अप्पो उ ।
सो पक्खपक्खियओ हू सोऽवि णिरुद्धो भवे अपुमं ॥
सागरियस्त गंधं जिंघति सागंधिओ भवे स खलु ।
कालंनरेण सोऽवि अलभंतो परिणमे अपुमं ॥३४०॥
विगहअणुप्पत्रेसिय अच्छनि सागारियंसि आसित्तो
ण य से भावोस्तमो अलभंतो सोवि अपुम भवे ।
गालियदोसा भाऊगा जस्स हु सो बद्धिओ मुणेयब्बो ।
चिप्पियबालसेव तु चिप्पित्तु विराहिता जस्स ३४२

मंतेणुवहतवेदो अहवावी ओसहीहिं जस्स भवे।
 इसिसत्तदेवसत्ता इसिणा देवेण वा सत्ता ॥३४३॥
 वाद्धियमादि उवरिमा छच्च णपुंसा हवंति भयणिज्जा
 जदि तो सेवि ण दिक्खे अह णवि पडिसेवि तो दिक्खे
 आदिल्लेसु दसस्सु वि पञ्चाविंतो हु पावए मूलं।
 जो पुण पञ्चावेहा वदनेवं तस्स चउगुरुगा ३४४
 जे पुण छ तूवरिमा पञ्चाविंतस्स चउगुरु तेसुं।
 वदमाणेऽवि य गुरुगा किं वदते सो इमं सुणसु ३४५
 थीपुरिसा जह उदयं धर्मिंति ज्ञाणोववासाणियमेहि
 एवमपुमंपि उदयं धरेज्ज जदि को तहिं दोसो ? ३४६
 अहवा ततिए दोसो जायति इयरेसु किं न सो भवति
 एवं तु नत्थि दिक्खा सवेदगाणं ण वा तित्थं ॥३४७॥
 भण्णति थीपुरिसा खलु पत्तेयं दोसरहियठाणेसु।
 णिवसंती इयरो पुण कहि छब्भति दोसु वी दोसा॥
 संवासफासदिद्ठी दोसा हू तस्स उभयसंवासे।
 अपत्थंबगदिद्ठंतो जह रायमतो अवारंतो ॥३४९॥
 एत्थंबगदिद्ठंतो अहवा जह वच्छो मातरं दट्ठुं।
 अभिलसती मायावि य वच्छं दट्ठूण पणहुयति ३५१

थं वा खजजंतं दद्धुं अहिलासो होति अण्णस्स ।
 सागारियादि दद्धुं एव णपुंसे भवे दोसा ॥३५२॥
 तम्हा हु ण दिक्खिखज्जा एवं णाऊणमेत दोसगणं ।
 वितियपदे दिक्खिखज्जा इमेहिं अह कारणेहिं तु ३५३
 असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए य आगाढे ।
 गेलण उत्तिमट्ठे णाणे तह दंसण चरित्ते ॥३५४॥
 रायदुट्ठभएसुं ताणद्ध णिवस्स चेव गमणद्धा ।
 वैज्ञो व सयं तस्स व नपिपस्सनि वा गिलाणस्स ३५५
 पडिचरागस्सऽसनीए एगागी उत्तिमट्ठपडिवणो ।
 अहवा वी कुसहाए वेयावच्छुना दिक्खे ॥३५६॥
 गुरुणो व अप्पणो वा णाणादी गिणहमाण तपिपहिती ।
 अचरणदेमा णेंते तप्पे ओमासिवेहिं वा ॥३५७॥
 एतेहिं कारणेहिं आगाढेहिं तु जो तु णिक्खामे ।
 पंदादी सोलसगं कयक्कज्ज विग्निचणद्वाए ॥३५८॥
 तस्स विही होति इमा दिक्खिखजंतस्स कारणज्जाए ।
 सो पुण जाणिमजाणी जाणति जाणी जहा ततिओ ॥
 णवि कप्पति दिक्खेतुं तमुवद्वित पण्णवेति अह एवं ।
 तुज्ज्ञ ण कप्पति दिक्खा नाणादिविराहणा मा ते ॥

जो पुण ण जाण एवं तस्स विही होति मा करेयव्वा।
 जणपचयद्गुताए जाणन्तमजाणए वावि ॥ ३६१॥
 कडिपद्व भंड छिहली कत्तरि खुर लोय परमतं पादे।
 धम्मकह सणिण राउल ववहार विगिंचणं कुज्जा॥
 कडिपद्वभंडछिहली कीरति णवि धम्म अम्ह चेवासी
 कत्तरि खुरेण पिन्च्छे हाणी एकेक्क जा लोओ ॥ ३६२॥
 लोएवि कए पच्छा भिकखुगमादीमताइं पाहिंति।
 तंपि य अणिच्छमाणे पाहिंति छलियकब्बाइं ३६४
 ताणिवि अणिच्छमाणे धम्मकहा ता वि हू अणिच्छते।
 परतित्यथवत्तव्वं दिज्जति ताहे ससमए वि ॥ ३६५॥
 तंपि य अणिच्छमाणं उक्कमतो तस्स दिज्जए सुतं।
 अणणोणणसुत्तपल्लव पुव्वावरओ असंबद्धं ॥ ३६६॥
 वीयारगोयरे थेरसंजुनो रक्ति दूरि तरुणाणं।
 गाहेह मर्मपि ततो थेरा जुत्तेण गाहिंति ॥ ३६७॥
 घेरगगकहा विसयाण णिंदणा उट्टणिसयणेगुत्ता।
 चुक्कखलितमिम बहुसो सरोसमिव तज्जए तरुणा॥
 कतकज्जा से धम्मं कहिंति मुंचाहि लिंगमेयंति।
 मा हण दुएवि लोए अणुव्वता तुज्ज्ञ णो दिक्खा॥

इय पण्णविओ संतो जइ मुंचइ लिंग तो उ रमणिज्जं ।
 अह णवि मुंचति ताहे भेसिज्जति सो इमेहिंतो ३७०
 सण्ण खरकम्मितो वा भेसेइ कओ इहेस कं चिच्चो ।
 ते सासनि रायकुले यदि सो ववहार माणिगज्जा ३७१
 एतेहिं दिक्खिखओऽहं जति वि य लोगो ण याणते कोति ।
 एतेहिं दिक्खिखतोऽहं तो ते विंती ण दिक्खेमो ॥३७२॥
 अज्ञानिओवि एतेहिं चेव पडिसेहो किं व धीयं ते ।
 छलियकहादी कड्ढाति कत्थ जती कत्थ छलिताइ ३७३
 पुव्वावरसंजुत्तं वेरगंगकर सतंतमाविरुद्धं ।
 पेराणभद्रभागह भासाणियतं हवति सुत्तं ॥३७४॥
 जे सुत्तगुणाभिहिता तन्विवरीयाइं गाहिओ पुर्विं ।
 तेहिं चेव विंगो जह एरिसयं भवति सुत्तं ॥३७५॥
 णिववल्लह वहुपक्खम्मिं वाविं बुद्धुं व गम्मिं पववइए ।
 वोसिरणं वोच्छामी विहिए जह कीरए तस्स ॥३७६॥
 भिण्णकहाओभट्टुं विंती ण घडति इइं खु एरिसयं ।
 परतित्थिगादि वयसू जति वेती तुज्ज्ञ समयत्ति ३७७
 इय होउती वोन्नूण णिगगतो भिक्खुभादिलक्खेण ।
 भिक्खुगमादी छोद्धुं विपलायंती पुणो तत्तो ॥३७८॥

कावालिए सरक्खे तच्छिणय लिंगमादि वसभा तु।
 तं पिंतु देउलादिसु सुत्तं छड्हेत्तु वसहि इंति ॥३७॥
 तिविहो य होति जड्हो भाससरीरे य करणजड्हो य।
 भासाजड्हो चउहा जलएलगममणदुमेहो ॥३८॥
 जह जलबुड्हो भासनि जलमूओ एव भासइ अवत्तं।
 जह एलगो वव एवं एलगमूगो वलवलेंति ॥३९॥
 ममणमूओ बोब्बडो खलेइ वायाहु अवि सदा जस्त
 दुम्मेहसस ण किंची घोसंनस्सावि ठायइ हु ॥३१॥
 दंसणणाणचरित्ते तवे य समितीसु करणजोगे य।
 उवइङ्गिण गेणहति जलमूगो एलमूगो य ॥३१॥
 णाणादिड्हा दिक्खा भासाजड्हो अपच्चलो तस्स।
 सो य बहिरो य णियमा गाहणे उड्हाहो अहिकरणं
 तिविहो सरीरजड्हो पंथे भिक्खे तहेव वंदणए।
 एतेहिं कारणेहिं सरीरजड्हुण दिक्खेज्जा ॥३५॥
 अद्धाणे पलिमंथो भिक्खायरियाए अपरिहत्थो य।
 उड्हुसासऽपरक्म अहियग्गि उदगमादीसु ॥३६॥
 आगाढगिलाणस्स य असमाही वावि होज्ज मरणं वा
 जड्हे पासेवि ठिए अण्णे य भवे इमे दोसा ॥३७॥

सेदेण कवखमादी कुच्छण धुवणुपिलावणे दोसा ।
 णत्थि गलभोय चोरो पिंदिय मुंडा य जणवादो ॥
 णेगे सरीरजडे एमादीया हवंति दोसा तु ।
 तम्हा तं णवि दिक्खे गच्छे महल्ले वऽणुण्णाओ ६८९
 हरियासमिई भासेसणासु आदाणसमिइगुत्तिसु ।
 णवि ठानि चरणकरणे कम्मुदएण करजणडो ३९०
 जलभूग एलभूगो अइथूरसरीर करणजडे य ।
 दिक्खंतस्सेते खलु चउगुरु सेसेसु यासलहु ॥३९१॥
 भासाजडुं भम्मण मरीरजडुं च णातिथूरं च ।
 जावंज्जियपरियटे करणे जडुं तु छम्मासा ॥३९२॥
 मोतुं गिलाणकजं दुम्मेहं वावि पाहि छम्मासे ।
 ताहे तं दुम्मेहं जाविय करणमिम सो जडो ॥३९३॥
 छण्हुवारिं ते दोणहवि आयरिओ अणण गाहि छम्मासा ।
 पच्छा अणणो तनिओ सोऽवि य छम्मास परियटे ३९४
 जो वि तं गाहेती सिस्सो तस्सेव सो हवति ताहे ।
 तहवि ण गिणहइ जदि हू कुलगणसंघे विगिंचणता ॥
 हुविहो य होति कीवो अभिभूओ चेव अणभिभूओ य
 अभिभूतोऽवि य दुविहो आलिद्वनिमंतणाकीवो ॥

दुविहो य अणभिभूओ दिङ्गीकीवो य सहकीवो य ।
 एतेसि विसेसमिणं बुच्छामि अहाणुपुञ्चीए ॥३९७॥
 आलिद्वो जो णिवडति इत्थीहिं एस पढमओ कीवो ।
 जो पुण पडति णिमंतिओ सो होति णिमंतणाकीवो
 दुञ्चियडदुणिणसणं णिगिणमणायारसेवणं वावि ।
 दद्धूण जो खुबभति दिङ्गीकीवं तयं चिंति ॥३९९॥
 अह साहम्मीण तहणणधमिमणं अहव वावि गिहि-
 याणं । इत्थीओ दद्धूणं खुबभति दिङ्गीय कीवो सो ४००
 भासा भूलण तह गीयसहपरियार सहमहवावि ।
 सोउणं जो खुबभति सो भण्णाति सहकीवोत्ति ४०१
 मोहुकडताएते करेज दोसे इमे णिरुभंता ।
 सज्जं इत्थिगगहणं मरणं अहवावि ओहाणं ॥४०२॥
 आलिद्वणिमनणदिङ्गीसहकीवाण होति आरुवणा ।
 चउगुरु छगुरु छेदो मूलं च जहक्कमेणं तु ॥४०३॥
 एत्थं दो आदिल्ले जदि दिक्खे तो हु एव परियटे ।
 जावज्जीवं णियमिय चरित्तसंघातसहिएहिं ॥४०४॥
 दिङ्गीयसहकीवा णवरं दिक्खेज उत्तिमटमिम ।
 अणह ण तेसि दिक्खा एवं कीवो समक्खातो ४०५

रोगेण व वाहीण व अभिभूयसस ण कप्पती दिक्खा ।
 गडीकोढादीओ सोलसहा हवति रोगो उ ॥४०६॥
 वाही पुण अद्विहो कासादिओ य होति णायब्बो ।
 ते रोगवाहिघत्यं दिक्खते ऊ इमे दोसा ॥४०७॥
 शायसमारंभो णाणचरित्ताण चेव परिहाणी ।
 धंसण पीसणपथण दोसा एवंविहा होति ॥४०८॥
 जाना अणाहसाला समणावि य दुकिखया तिगिच्छंता
 तेवि य पउणा संता होज्ज व सन्नणा ण वा होज्जा ॥
 अक्षनिओ य तेणो पागइओ गामदेसअद्वाणे ।
 तकरखाणगतेणो पर्खवणा तेसिमा होति ॥ ४१० ॥
 अक्षनिओ अडा (डा) णो पागइओ घिरा य अहव पाग-
 इण । हरनी गामाईण अंतर अहवावि तेसिं तु ॥४११॥
 तेणेव तु कम्मेण जीवति णाडणेण तरो स खलु ।
 खत्तरु जो खणती खाणगतेणो भवे स खलु ॥४१२
 सो एुग नेणो अउहा एवे खिले य कालभावे य ।
 एतेसिं चउगहं थी चतेव पर्खवण बोच्छं ॥४१३॥
 सविने अविते व्रसि वि य होति दव्वतेणो हु ।
 सवित्त दुष्यादी दुरदे दाताइयं होति ॥४१४॥

गोमादी य चउप्पय अपदं फलधण्णमादियं होति ।
 अच्चित्त हिरण्णादी दुपयादि सभंड मीसाम्भिम ४१५
 एमादि दब्बतेणो साहम्भिय अण्णधम्भियगिहीणं ।
 तेणितो सो तिविहो उझोसो मज्जिम जहणो ॥४१६॥
 हयगतमाणिक्षादि य तेणितो तेणितो उ उझोसो ।
 खत्तखणकण्हवन्निय गोणी तेणो तु मज्जिमओ ॥
 गंठी भेदग पहियजणदब्बहारी जहण तेणो तु ।
 एकेक्षस्स य एत्तो पडिच्छग पडिच्छगो चेव ॥४१७॥
 सगदेस परविदेसे अंतरतेणे य होति खित्तम्भिम । दा ।
 राइंदिया वि काले भावम्भिय णाणतेणादी ॥४१९॥
 गोविंदज्जो णाणे दंसण सुत्तट हेतुसङ्गा वा ।
 पारंचिग उवचरगा उदाइवहगादओ चरणे ॥४२०॥
 दब्बादि तेण एसो पब्बावेतुं ण कप्पए सब्बो ।
 समणाण व समणीण व पब्बाविंते इमे दोसा ४२१
 बंधण रोहण तालण दासत्तं मारणं च पविज्जा ।
 णिविसयं च णारिंदो करेज्ज संधंपि सो रुद्धो ॥४२२॥
 अजसो य अकित्ती या तं मूलागं ताहिं पवयणस्स ।
 ठाति गिहीण वि एवं सब्बे एयारिसा मण्णे ॥४२३॥

सग्गाम परग्गामे सदेस परदेस अंतो वाहिं वा ।
 दिट्ठमदिट्ठुक्कोसा मज्जम जहणे इमा सोही ॥४२४॥
 मूलं छेदो छग्गुरु छल्लहु चत्तारि लहुग गुरुगा य ।
 गुरुग लहुगो य मासो एएसिं चारणा तु इमा ॥४२५॥
 सग्गामंतो दिट्ठे उझोसे मूल छेदो अदिट्ठे ।
 वाहिं दिट्ठे छेदो अदिट्ठे होंति छग्गुरुगा ॥४२६॥
 परग्गामंतो दिट्ठे उझोसे छेदो छग्गुरुमदिट्ठे ।
 वाहिं दिट्ठे छग्गुरु अदिट्ठे होंति छल्लहुगा ॥४२७॥
 सदेसंतो दिट्ठे छग्गुरु अदिट्ठे होंति छल्लहुगा ।
 वहि दिट्ठे छल्लहुगा आदिट्ठे होंति छग्गुरुगा ॥४२८॥
 परदेसंतो दिट्ठे छल्लहुगा अदिट्ठि होंति चउगुरुगा ।
 वाहिं दिट्ठे चउगुरुआ अदिट्ठे होंति चउलहुगा ॥४२९॥
 एवं ता उझोसे मज्जे छेदादि ठाति गुरुमासे ।
 छग्गुरुगादि जहणे ठायइ अंताम्मि लहुमासे ॥४३०॥
 वितियपदसुक्तमोइ य अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं ।
 अद्वाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥४३१॥
 त्नो उवरोहादिसु संबद्धे तह य दव्वजोगम्मि ।
 अब्भुट्ठिओ विणासाय होइ रायावकारी तु ॥४३२॥

सचित्त अचित्त मीसगमवकारे दूतलेह उवकरणं ।
 समणाण व समणीण व ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥
 आसो हत्थी खरिया वाहीतं कतकतं च कणगादी ।
 अहवा सभंडमत्ता खरियादी अवहिता होज्जा ४३४
 दोच्च विरुद्धं य कतं होज्जाहि पउत्तकूडलेहो वा ।
 पितुपुत्तभाउगादी कोई वहिओ व से होज्जा ४३५
 तं तु अणुद्वियदंडं जो पञ्चावेति होति मूलं से ।
 एगमणेगपओसे होज्जा पत्थारदोसा वा ॥४३६॥
 वितियपद मुक्कमोऽइ य अहवा विसज्जितो णरिंदेणं ।
 अद्वाणपरविदेसे दिक्खा से उत्तिमद्धे वा । दा ४३७
 उम्मादो खलु दुविहो जक्खादेसो य मोहणिज्जो य ।
 दुविहं पि ण दिक्खिखज्जा दोसा तु भवे इमे तस्स ॥
 अगणी आलीवणता आयवयविराहणा य उड्हाहो ।
 छक्काय ण सद्हती सज्जायज्ज्ञाणजोगे य ॥४३९॥
 पडिलेहणादि वितहं करेति समितीमु असमितो
 आवि । उवदिदंठपि ण गिणहति तम्हा णवि दिक्ख
 उम्मत्तं । दा ॥ ४४० ॥
 दुविहो अदंसणो खलु जातिउ उवघाततो य पायब्दो
 उवघातो पुण निविहो वाहि उवघाउ अंजणता ४४१

एष पसंगेण चिय अवरो थीणद्विओ मुणेयव्वो ।
 एतैसिं सोहि इमा जहक्कमेण मुणेयव्वा ॥४४२॥
 उद्दियणयणे तह सेसएसु थीणद्वितो नु कमसो तु ।
 गगुरु चउगुरु चरिमं दोसा तहिं दिकिखते इणमो ॥
 छङ्गायविउरमणता आवडणं खाणुकंटमादीसु ।
 शंडल्लअपडिलेहा अंधस्स ण कप्पती दिकखा ४४४॥
 आवहति महादोसं दंसणकम्मोदएण थीणद्वी ।
 एगमणोगपओसे जं काही तं तु आवज्जे ॥४४५॥
 गव्वमे कीए अणए दुबिभक्खे सावराहि रुद्धे य ।
 एमाइ होंति दासा ण कप्पती तारिसे दिकखा ॥४४६॥
 राया व रायमच्चो कितिकम्मं संजताण कुब्बतो ।
 दद्दूण दुवक्खवरयं सव्वे एयारिसा मणे ॥४४७॥
 वहवंधं उद्ववणं खिंसण दासत्तमेव पावेज्जा ।
 णिन्विसयंपि णरिंदो करेज्ज संघंपि सो रुद्धो ॥४४८॥
 अजमो य अकित्तीया तंमूलागं तहिं पवयणस्स ।
 लोगस्स होति संका सव्वे एयारिसा णूणं ॥४४९॥
 मुझो व मोइओ वा अहवा वीसजिजतो णरिंदेण ।
 अद्वाण परविदेसे दिकखा से उत्तिमद्धे वा । दा ४५०

दुविहो य होति दुद्धो कसायदुद्धो य विसयदुद्धो य
दुविहो कसायदुद्धो सपकख परपकख चउभंगो ॥४१॥

सासवणाले मुहंतए य उलुगच्छि सिहरिणि सपक्खे
सासवणाल सुसंभिय एगेण गुरुणमुवणीयं ॥४२॥

सब्बं गुरुणा खइयं इयरे कोबो य खामणे गुरुणा ।
अणुवसमंते उ गणे गणि ठवेत्ताऽन्नहिं परिन्ना ॥४३॥

पुच्छंतमणकखाए सोब्बण्णतो गंतु कथ से देहं ।
गुरुणो पुब्बं कहिते दाढ़ य पडियरण दंतवहो ॥४४॥

मुहंतगस्स गहणे एमेव य गंतु णिसि गलग्गहं
संमूढेणियेरण वि गलए गहितो मया दो वि ॥४५॥

अत्थं गते वि सिब्बसि उलुगच्छी उक्खणामि तुह
अच्छी । पढमगमो नवरि इहं उलुगच्छीउ त्ति ढोकेह ॥

सिहरिणि लच्छु णिवेदे गुरुणं सब्बादि तं ते उग्गिरणा
भत्तपरिणा अण्णहिं ण गच्छती सो इहं णवरि ॥

परपकखमि सपक्खे उदाइणिवमारतो जह पदुद्धो
सो पवयणरकखद्धा णिच्छुभति लिंग हातृणं ॥४७॥

परपक्खि सपक्खे पुण जउणाराय व्व सो तु भयणिज्जो
तं पुण आतिसयणाणी दिक्खेंतिऽधिगारिणं णाउं ॥४८॥

परपक्खे परपक्खे दंडियमादी पदुद्धठ परदेसे ।
 उवसंते वा तत्थ उ दमगादि य दुड्ह भइतो वा ॥४६०
 तिविहो य विसयदुड्हो सलिंग गिहिलिंग अण्णलिंगे य ।
 अहवा सच्चोऽवि दुहा सपकख परपकख चउभंगो ॥
 सपकखे विसयदुड्हो सपकख पारंचिओ तु आउट्टो ।
 अठियम्मि लिंगहरणं एमेव सपकखपरपकखे ॥४६२॥
 परपकखं तु सपकखे विसयपदुड्हं ण तं तु दिकखंति ।
 सैज्जयमादि पदुड्हं ण य परपकखं तु तत्थेव ॥४६३॥
 दब्बदिसखेत्तकाले गणणा मारिकख अभिभवे वेदे ।
 बुगाहणमणणाणे कसायमत्ते य मूढपदा ॥ ४६४॥
 दब्बे दुह बाहि अंतो अंतो धन्तूरगादि बहि धूमो ।
 जाव दवियं ण याणति घडियाबोहो व दिङ्ठंपि ४६५
 दिसमूढो पुब्बमवरं मणणति खेत्तम्मि खेत्तवच्चासं ।
 दियरातिविवच्चासो काले पिंडारदिङ्ठंतो ॥ ४६६॥
 जह कोई पिंडारो खीराणिसद्वाए रत्ति (पाउ) पासुक्तो
 अभच्छणे उठिओ मणणति जह बद्वाए रत्ती ॥४६७॥
 महिसीओ पविसंतो दिड्हो लोएण हसियतो ताहे ।
 किएयं ति य भणियं एमादी कालमूढो सो ॥४६८॥

ऊणऽहियं मण्णंतो उद्धारूढो य गणणातो मूढो ।
सारिक्खथाणुपुरिसो महतरसंगामदिङ्गंतो ॥४६॥

जह एके गाममी चोरा पड़िया तु तथ जुद्धमि ।
सेणावती तहिं वहिओ सारिक्खो महतरो वणितो ॥

सो णीओ चोरपल्लि इयरो दद्ठो य तेण गमेण ।
वेती य चोरे महतरो णाहं सेणावती तुज्जं ॥४७॥

ता ते चोरा विंति तो (णियमा) गहिओ एसो
तरुणापिसाईए । तो णासिऊण तत्तो गामगतो
विणियतो णियमा ॥ ४७२ ॥

दट्टोसी अम्हेहिं किं देवेहिं जियावितो तंसी ।
इय सारिक्खविमूढा दोणिणवि गामेल्लचोरा य ४७३
अभिभूतो संमुज्ज्ञति सत्थगीचोर(वात)सावयादीरि
अब्सुदयऽणंगरती वेदमी रायदिङ्गंतो ॥४७४॥

जह कोति रायपुत्तो बालो अच्छीसु दुक्खमाणासु ।
मादुगहसारियसंफुसणठितो तु तुणिहक्को ॥४७५
लद्धोवाउत्ति तओ एवमभिक्खं तु ताहे सा कुणति ।
सो वि य विवद्धमाणो सत्तो तीए तु पासमिम ॥४७६॥
तीयवि अणुपियं चिय पितु उवरमणे य तस्स रायतं
तह वि य तं पडिसेवति सचिवादिणिसिज्ज्ञमाणोवि ॥

बुग्गाहितो परेणं कञ्जमकञ्जं च ण सुणती जो तु ।
सो बुग्गाहणमूढो दिङ्कंता दीपजातादि ॥४७८॥

वणिदारग पियमहिलो तीय समं गमण वारिजाणेण ।
गठभणी पोतविवक्ती समुद्रमज्ज्ञे फलगलग्गा ४७९

अंतरदीवुत्तिष्णा पसूय दारग विवड्डहितो कमसो ।
तेण सह लग्ग वितिरिच्छपोतरूढा गता सपुरं ॥४८०

बुग्गाहिय तीय सुतो ण सुणति लोगेण भण्णमाणो
जवि । जह जणणि तवेस ती अगम्मगमणं ण वद्वनि उ
जह वा अणंगसेणो ण सुणति बुग्गाहियच्छराहिं तु
मित्तवयणं हियं पी जह वावि सुवण्णगारिणं ४८२

बुग्गाहितो तु बोहो मा हीरेज्जा सुवण्णकारेण ।
तुज्जं तु मोरगाइं छाएमी तंबएण अहं ॥ ४८३ ॥

लोगो य तुमं भणिहिति हरिथाइं मोरगाइं बोह ! तुहं
तं मा हु पत्तियाही एवं च भणिज्जसी लोगं ॥४८४॥

जो एत्थं भूतत्थो तमहं जाणे कलाय ! मा सोय ।
सोजवि य एवं भणती बुग्गाहिय अहय अंधलया ॥

अंधलगभन्तणिवे सयणासणभन्तवसहिमादीहिं ।
सुपरिग्गहिअंधलगा तेऽवि य धूत्तेण भणिया य ॥

अहयम्मि अंधदासो अम्हं राया य अंधलगभत्तो।
इह दुक्षिखत तहिं बच्चह जह कयपुण्णो च दियलोग
इय होतु त्तिय णेहिं णीणेतुं रत्ति डोंगरे तेण।

वेहेऊण पुरिल्ला लाविओ मणिगल्लपट्टीए ॥४८८॥

आणेह भे जं अत्थ एत्थ चोराण पतिभयं ठाण।

मेणहह पत्थर मा हु य कासनि देहित्य अल्लिगितुं ॥

भणिहिंति चोर तुझ्मे केणेते अंधला वरागा तु।

मिरिडोंगरे वेहाविय पहणह ते पत्थरेहिं तु ॥४९०॥

इय वोत्तुण पलाओ धित्तूण अत्थजातयं तेसि।

ते य पभाते दिढ्ठा गोवादीएहिं भणिता य ॥४९१॥

केणेते एव कता इय बुत्ते पत्थरेहिं ते पहया।

णवि दिंति अल्लियावं बुग्गाहिय एवमादीया ॥४९२॥

बणिमहिल मूङु दब्बे वेयम्मि य मूङु होति राया ऊ
बुग्गाहणमूढा पुण दीवादी सेस सद्वेऽवि ॥४९३॥

अणणाणमूढ इणमो दाहजंतंपि कारणसतेहिं।

जो सप्पहं ण याणति जच्चंधो चेव जह चंदं ॥४९४॥

कोहादिकसाओदयमूढो णवि जाणती मणूसो तु।

इह य परम्मि य लोए हिताहितं कज्जकज्जं वा ॥

दव्वेण य भावेण य दुविहो मत्तो तु होति णायव्वो ।
मञ्जमदादी दव्वे माणटुविहेण भावमिम् ॥४९६॥

मोत्तूण वेदमृढं आदिल्लाणं तु णत्थि पडिसेहो ।
बुगाहण अणणाणे कसायमृढा य पडिकुडा ॥४९७॥

मचित्तं व अचित्तं मीसगं जो अणं तु धारेति ।
समणाण व समणीण व ण कप्पते तारिसे दिक्खा ।

अयसो य अकित्तीया तंमूलागं तहिं पवयणस्स ।
अण चांपपडङ्गंज्ञाडिया सव्वे एतारिसा मणे ॥४९९॥

वितियपद दाणतोसिय अहवा वीसज्जितो पभूणं तु ।
अद्वाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमठे वा । दा ५००

चउरो य जुंगिया खल्दु जाती कम्मे य सिप्प सारीरे ।
जाती य पाण वरुडा ढोंचा णिक्कारमादीया ॥५०१॥

पीसगमंवरणडलंखवा हसोथरियमच्छिगा कम्मे ।
एडकारा य परीसह रजगा कोसेज्जगा सिप्पे ॥५०२॥

करणादकणणा सियओटुविहूणा य वामणा बडभा ।
खुज्जा पंगुल कुंटा काणा एते अदिक्खा य ॥५०३॥

फच्छा य होंनि विगला आयरियत्तं ण कप्पए तेसिं ।
सीसो ठावेयव्वो काणगमहिसो य णिप्पणमिम् ५०४

जे पुण जाती जुंगित जाती कम्मे [सिप्पे] य तिणि
वि ण दिक्खे । बितियपदे दिक्खेवज्जा इमेहिं अह
कारणोहिं तु ॥ ५०५ ॥

जाहे य माहणेहिं परिसुत्तो कम्मसिप्पपडिविरतो ।
अद्वाण परविदेसे दिक्खा से अबभणुण्णाया । दा ५०६
कम्मे सिप्पे विज्जा मंते जोगेण चेव ओबद्धे ।
समणाण व समणीण व ण कप्पए तारिसे दिक्खा ॥

कम्मं तु उङ्गुमादि सिप्पं सिक्खिज्जते गुरुवदेसा ।
लोहारादी तं पुण विज्ज कला लेहमादीओ ॥ ५०८ ॥
अहवा विज्ज ससाहण मंतो पुण होति पढियसिद्धो तु
वसिकरणपादलेवादिता त जोगा मुणेयन्वा ॥ ५०९ ॥

गोवालादी कम्मे ओबद्धा छिणणछिन्नकालेण ।
दिणणा अदिणण भतिया दिणणभतीया ण कप्पंति ॥
सिप्पादी सिक्खंतो सिक्खाविंतस्स देंति जा सिक्खे ।
गहिताम्मि वि सच्चं पी जच्चिरकालं तु ओबद्धो ॥ ५११ ॥
बंध वहो रोहो वा हविज्ज परिताव संकिलेसो वा ।
ओबद्धगम्मि दोसा अचण सुत्ते य परिहाणी ॥ ५१२ ॥
मुक्को व मोइओ वा अहवा वीसजितो णरिंदेण ।
अद्वाण परविदेसे दिक्खा से अबभणुण्णाया । दा ५१३

दिवसभयए व जन्ता भर्तीय कव्वालभतग उब्बत्ते ।
भयओ चउन्निहो खलुण कप्पते तारिसे दिकखा ॥

दिवसभयओ उघिप्पह छिणेण धणेण दिवसदेवासि-
यं जन्ता तु होनि गमणं उभयं वा एत्तियधणेण ॥५१६॥

कव्वाल उडुमादी हत्थमितं कम्ममेत्तियधणेण ।
एव्रिकालोवत्ते कायच्चं एत्तियधणेण ॥५१६॥

कतजन्तगहियमोल्लं दिकखेज्ज कया य होनि पडिसेहो
एव्वाविंते गुरुगा गहिए उडुहमादीणि ॥५१७॥

छिणमछिणे य धणे वावारे काल इस्सरे चेव ।
सुत्तत्यजाणएणं अप्पाबहुयं तु णायच्चं ॥५१८॥

वावारे काल धणे छिणमछिणे य होनि भंगटा ।
साहियगहिते अ कते मोत्तु सेसेसु दिकखंति ॥५१९॥

गहिए व अगहिए वा छिणगधणे साधिते ण दिकखंति ।
अछिणगधणे कप्पति गहिते वा अगहिते वावि ॥५२०॥

जत्युण होनि छिणणं थोवो कालो य होनि कम्मस्स ।
तत्थ अणिस्सर दिकखा इस्सरो बंधंपि कारेज्जा ॥५२१॥

थेतुं समयसमत्यो रायकुले अत्यहाणि कङ्घंते ।
फेल्लस्स तेण कप्पति रोहेरसवीरिए भयणा । दा ॥५२२॥

सेहस्रा णिष्केडिय जो सेहं घेतु आसियाडेति ।
 सो पुण व तेण केरिसो ण कष्टती आसियाडेतुं ॥२३
 अप्पदुपण्णो बालो सोलसवरिसूणो अहव अणिविद्वे
 अम्मापितु अविदिणो ण कष्टती तत्थ वडणन्त्य ॥
 ततियवतअतीयारो णिष्केडिण तेणसद्भ भइणिज्जो ।
 नेणे य तेणतेणे पडिच्छगपडिच्छगे चउहा ॥७२५॥
 ततियवतसद्यारो निकखार्वितस्स सेहमविदिणं ।
 भयणा तेणगसद्होती इणमो समासेण ॥७२६॥
 जो सो अप्पदुपण्णो विरडुवरिसूण अहव अणिविद्वे
 तं दिकिंखत अविदिणं तेणो परतो अतेणो तु ॥७२७॥
 अहवा मुंडित ससिहे भइयब्बो होति तेणसद्होतु ।
 एकेक्कस्स य इत्तो चउभंगो हो इमो कमसो ॥७२८॥
 मुंडपभुपेल्लाया चउभंगो पढमततिय अणुण्णाया ।
 ते हरमाणो अतेणो सेसेसु तु तेणओ होति ॥७२९॥
 एव पभुससिहपिल्लग चउभंगो णूण एत्थ वि तहेव ।
 एतेण कारणेण तेणगसद्हो तहिं भजितो । दा ॥७३०॥
 अहवडणे चउभंगा ससिहेगं एको तेणि इति एको ।
 असिहम्मि होति वितिओ तेणा चतारि तत्थ इमे ॥

जो तं तु सयं णेती सो तेणो होति लोगउत्तरिओ ।
भिक्खादिगते तम्मि तु हरमाणो तेणतेणो तु ॥५३२॥

ते पुण पडिच्छमाणो पडिच्छओ तस्स जो पुणो मूला ।
गिणहनि प्रगंतरियो पडिच्छगपडिच्छओ स खलु ॥

तद्यवताहयारो एवं णिंतस्स होइ सेहं तु ।
अणे य इमे दोसा गहणादीया भवे तस्स ॥५३४॥

अम्मापितरो कस्सह विपुलं घेन्तूण अत्थसारं तु ।
गयादीणं कहते काहेयम्मि य गिणहणादीया ॥५३५॥

विष्णरिणमे व सण्णी केर्ह संबंधिणो भवे तस्स ।
विष्णरिणया य धम्मं मुएज्ज कुञ्जा व गहणादी ॥५३६॥

आयरियउवज्ञाया कुल गण संघो तहेव धम्मो य ।
सञ्चे वि य परिचत्ता सेहं णिष्केडयंतेण ॥५३७॥

तम्हा तु ण हायव्वो वितियंपदेण हरेज्ज व कथाइ ।
होही जुगप्पहाणो ण य दोसा तत्थ केइ भवे ॥५३८॥

तो अतिसेसी दिक्खे ओहीमादी अमूढहत्थो वा ।
यिरहत्थो व अमूढो दिक्खेज्जा सो तहिं चेव ॥५३९॥

केर्ह पुण मंदधम्मा वितियपद णिसेविय ववदिसंति ।
वडपादवो विव जहा मूलविणद्वा णहविलग्गा ॥५४०॥

णिष्फेडियमिच्छंता रक्षितयमालंबणं ववदिसंति ।
 मूलविणद्वो व वडो जह चिद्गुति लग्गपादेसु ॥५४१॥
 एवं तु मूलसुत्तं छडेतुं ते तु लग्गसाहासु ।
 साकारणणिष्फेडी णिक्कारणओ य पडिकुद्वा ॥५४२॥
 जे केई सेहस्सा बालादीता मए समक्खाया ।
 ते चेव य सविसेसा गुविवणि तह बालवच्छासु ॥५४३॥
 कह ते तु संभवंती गवभम्मी तम्मि चेव बाले य ।
 दिद्वा तु बालदोसा होजज कदादी णपुंसो वी ॥५४४॥
 एवं अवसेसा वि णवरं मोन्तूणिमे तहिं अणले ।
 बुझदं जडुसरीरं तेणं रायाऽवकारिं च ॥५४५॥
 दासमणत्तं च तहा ओबद्वं भतग सेहणिष्फेडिं ।
 अविसेस अणलदोसा भइयवा गुविवणीए उ ॥५४६॥
 अहवा वि गुविवणीए अणे दोसा इमे भवंती हु ।
 कायभवत्थो विंबं वतिकितिविणयम्मि व मरेज्जा ।
 कीवे तेणे रायावकारि दुडे य सेहणिष्फेडे ।
 गुविवणीए य जहक्कम वोच्छं आरोवणं इणमो ॥५४७॥
 मूलं चतुगुरु पारंचिया दुवे चउगुरुं तओ मूलं ।
 अहवाऽवकारि मोन्तुं सेहं वा सेस मूलं तु ॥५४९॥

परंची मूलं वा अवकारिए सेहे होति चउगुरुगा ।
सेसेसु ठाणएसुं चउगुरुगा हृ मुणेयव्या ॥५५०॥

वालं बुड्डे कीवे जड्डे मत्ते अदंसणे चेव ।
करमादिजुंगिए वा जदि पच्छा होज्ज णिकखंतो ॥
गच्छे संगहियाणं संवासो नोसि होति णिदिढ्डो ।
ण विउत्ताण णियमा एगट्टाणे य पाएण ॥५५२॥

होज्जाहि गुद्विणीय वि जह पउमवतिव खुड्डमाया
वा । तं तू उवस्सपम्मी भावियसड्डेसु वा गोवे ॥

जिणपवयणपडिकुड्डो जो पव्वावेति लोभदोस्तेण ।
चरित्तिनो तवससी लोवेइ तमेव तु चरित्तं ॥५५४॥
पव्वाविओ सियत्ती सेसं पणगं अणायरणजोगगं ।
अदुवा समायरंते पुरिमपदणित्वारिया दोसा ॥

पव्वावण मुंडावण सिकखायणुवड्डभुंज संवसणा ।
पढमपदहीण सेसा पंच पदा तेहिं वज्जेति ॥५५६॥

पव्वज्जा तु अभिहिया सा मुण होज्जा कहं तु पच्चज्जा
तं वन्नुमणायरिओ गाहासुत्तं इमं आह ॥५५७॥

छंदा रोसा परिजुणा मुविणा णाणं पडिसुता ।
सारणिया रोगिणिया अणाडिया देवसणित्ति ५५८

पच्छाणुबंधिया अजणयकणिण्या बहुजणस्म संमु-
दिया । अक्खाता संगारा वेयाकरणा सयंबुद्धा ॥ ५५९ ॥

पल्लि सुरा भायि देवी वड तेतलि मूग वासुदेवे य
उद्दायण मण केसी जंबु पभव मल्लि सोम जिणा ॥ ५६० ॥

गामेगो चोर पडिया वत्थहिरण्णादि गेणिहतुं ते य ।
संपट्टिते य पल्लि रूचवती महिलिया भणति ॥ ५६१ ॥

किं ण हरह महिलाओ चोरा चिंतेति इच्छिया महिला ।
णेतुं पल्लिवइणो उवणीता तंण पडिवणा ॥ ५६२ ॥

तीए धवो सयणेण भणितो किं बंदिगं ण मोणसि ।
गंतूण चोरपल्लि थेरी ओलगगए पयओ ॥ ५६३ ॥

किं ओलगगसि पुत्ता ! चोरेहिं भारिया इहाणीया ।
विरहे तीए कहेती इहागतो तुज्ञ भत्तति ॥ ५६४ ॥

कहिते तु चोरअहिवम्मि पउत्थे भणति अज्ज रत्तीए
पविसतु चोरहिओकं पविट्ठे पच्छा सेणावती आओ ।

हेडा आसंदिपवेसो चोरहिवं भणति धुत्ति इणमो तु
जदि एज्ज मज्जभत्ता तस्स तुमं किं करिज्जामि ॥ ५६५ ॥

चोराहिवाह सक्कारइत्तु तुमं देज्ज तो करे भिउडिंग
आह ततो चोराहिवो दारे थंभम्मि उल्लेहिं ॥ ५६६ ॥

वद्धेहिं वेङ्गेज्जा तुट्टा सणोति हेड्डसंदीए ।
णीणेरु चोरहिवो खंभे वद्धेहिं वेहेइ ॥५६८॥

मुणएण खइयवद्धे पासुक्ताणं च चोरअहिवस्स ।
सगअसिणा छेत्तूणं सीसं गहि इच्छिओ भणति ५६९
णीणिज्जंती सीसं चोरहिवस्सा तु सागहेऊणं ।
गालंती ऊहिरं अह गच्छति भग्गतो तस्स ॥५७०॥

जाहे जातबासं ताहे सीसं तयं पमोत्तूणं ।
वसिया चीराईणि य मादिंति य जातिचिंधट्टा ५७१
जाहे य णिट्टिनाइं ताहे नणपूलियाओ वंधंती ।
वचति अवयक्खंती एुणो एुणो भग्गतो सा तु ॥५७२॥
गोसे य पभायम्मी सेणहिवं घाइयं ततो दट्टुं ।
लगा कुहेण चोरा पासंति य ताणि चिंधाणि ॥५७३॥
रहिरदसिगादियाइं अणिच्छिया णिज्जइत्ति मण्णंता
तुरियं धावे कुहिया ताणि वि य पभायकालम्मि ५७४
पंथस्स एगपासे ठिया णि कुहिएण जाव दिट्टाइं ।
तंखीलेहि विताहुय भहिलं घेत्तूण ने य गता ॥५७५॥
ते चोरा तं णेउं चोराहिवभाउगस्स उवणिंति ।
सा तेण पडिवणा चोराहिवपट्टवंधम्मि ॥५७६॥

इतरोवि खीलएहिं विनाहुओ अच्छती तु अडवीए।
जूहाहिवणिज्जूढो अह एति अणीहुतो तहियं ॥५७५॥

तो कुवितो दट्टूण कहिं मणे एस दिट्टपुच्चोत्ति।
चिंतेऊण सुचिरं संभरिता पियगजाती उ ॥५७६॥

अहमेतस्स तिगिच्छी आसि विसल्लोसही य तं मोऽ।
संरोहणीइ य तओ संरोहेत्ता वणे तस्स । ॥५७७॥

लिहितकखराणिहुओ सोऽहं चेज्जो तवासि पुच्चभवे।
संभारियसंभिण्णाणतो उ तो वाणरो कहने ॥५८०॥

जह जूहा णिच्छूढो साहिजं मज्ज्ञ कुणसुं वरामित्त।
आमं ति तेण भणितो जूहं गंतूण ते लग्गा ॥५८१॥

दोणह विसेसमणातुं ण किंचि कासी य सो हु साहिजं
णडो लुत्तविलुत्तो लिहनि ततो अकखरा पुरतो ॥५८२॥

किं साहिजं ण कतं पुरिसाह ण जाण दोणहवि विसेसं
तो तुडो वाणरतो वणमालं अप्पणो विलए ॥५८३॥

लग्गे सेगपहरेण मारितुं चोरपल्लिमतिगंतुं।
रत्ति मारिय चोराहिवं तु तं गिणिहतुं इत्थं ॥५८४॥

सग्गामं आणेत्ता इत्थं उवणेति सयणवग्गस्स।
बेरग्गसमाजुत्तो धिरत्थु इत्थीहि जे भोगा ॥५८५॥

मज्जत्तं (त्यं) अच्छेनं सयणो जंपति तु ज्ञायसे किणु?।
किं वासे कज्जकामो भणती काह अप्पणो छंदं ५८६

थेणांनिय धम्मं सोतुं पवज्जमब्लुवेसी य ।
एसा छंदा भणिना अहुणा रोसा तु पवज्जजा ॥५८७॥

सीमारक्खो रणणो धम्मं सोउण सावओ जातो ।
मा मारेहिं किंचि वि उज्जित्तु असिं हरे दारुं ॥५८८॥

तप्पडिणि रायकहिए पिच्छामि असिं ति सावएणुत्तं ।
सम्महिट्टिदेवय सारक्खिवज्ज त्ति तो रुट्टो ॥५८९॥

दिवप्पभावमायसमयं तु दद्धूण कुद्ध तो राया ।
णिज्जाने पञ्चणीए सड्हो तेसिं तु रकखट्टा ॥५९०॥

बेति णरिंदं अह सो मा एनासिं तु रुसहा तुब्भे ।
जं जंपियमेनेहिं तं सब्बं णरवर ! तहेव ॥५९१॥

ताहे छाद्धूण पुणो णिकुट्ट असी तु णवरि दारुमओ ।
दिट्ठा णरवसभेण तवम्हइओ बेति किं एयं ? ॥५९२॥

जंपति सड्हो नाहे णरवर ! देवप्पसाद इच्चेसो ।
पावक्षिवज्जीउ णरा हवति देवाण वि पुज्जा ॥५९३॥

तो तुट्टो भणति णिवो सेवसु एमेव दारु असिणा उ ।
कडगादीहि य पूजितो पावितो सुमहत्तमिस्सरियं ॥

कालगयमिम य सङ्घे पुत्तो णामेण चण्डकण्होत्ति ।
पडिवण्णो तं भोगं सामंते णाणमंतमिम ॥५९५॥

पेसेति चण्डकण्हं गंतूण धेत्तु सजियमाणेति ।
तुट्ठो य भणति राया किं देमि अहाह सो इणमो ॥

जं खज्जपेज्जभोज्जं गेणहेज्ज पुरांमि तं तु सुगगहियं ।
इय होतुत्ति य भणिए वारुणिपाणे पमादेण ॥५९७॥

रात्तिं चिरस्स सगिहं आगच्छति भज्जमातरो तस्स ।
दुहिया जग्गांतीओ उण्णिहा अण्णदा रात्ति ॥५९८॥

चिक्खिखतदारं पिहए अह वदती आगतो तु सो दारं ।
उग्घाडेंतो जणणिं वऐसु जत्थेरिसे वेले ॥५९९॥

उग्घाडिय दाराइं तहियं वच्च त्ति मातु रुसितो तु ।
साहुग्घाडिय दारत्ति गंतू साहूणमल्लियओ ॥६००॥

पव्वावेह लवेईं ते विय मत्तो त्ति कातु वकखेवं ।
बिंती गोसग्गम्भी पभाते पव्वावइस्सामो ॥६०१॥

सथमेव कुणति लोयं ताह लिंगं दलंति जतिणो तु ।
पव्वाविंती विहिणा एसा रोसा तु पव्वज्जा । द । ६०२

दमगं भइयं कम्मं कुणमाणं दट्टु सावओ पुच्छें ।
केवतिभतीय कम्मं करोसि पाएण पच्चाह ॥६०३॥

दाहामी पतिदिवसं तव पादं गंतु साहूणो बूहि
सावेण पेसिओऽहं करेऽज जं आणवे साहू ॥६०४॥

साहू भणाति दमगं जो पञ्चवइतं करेति कम्मम्हं ।
तं कारवेसु न गिहिं पञ्चवइओ दञ्चवओ ताहे ॥६०५॥

साहू भणाति दिवसं पढियव्वं जं च देसु उवएसं ।
एयं कम्मं अम्हं सिक्खं दुविहं पि गाहिंति ॥ ६०६॥

कतिवयदिवसगतेहिं अह सङ्घो भणाति तं भतिं
गिणह । उक्कोसगभतेण सुहितो रक्तो लवे हणमो ॥६०७॥

अच्छतु तुब्भं हत्थे जाति ना मग्गे तदा दलेज्जाहि ।
कतिवयदिवसेहिं ततो अभिगयधम्मो उवठाविओ । दा

परिज्ञणेसा भणिता सुविणा देवीए पुण्फचूलाए ।
नरगाणं दंसणेणं पञ्चज्जाऽवस्सए बुत्ता । दा ६०९

चतुरो तु गोणपाला सत्थाहीणं जतिं तु अडविए ।
पडिलाभिंति पहट्ठा दोहि दुगुञ्छाइयं तहियं ॥६१०॥

दियलोगगता तत्तो चहतुं दुगुञ्छी दसणे दासत्तं ।
तत्तो मिगा य हंसा सोवागा चित्तसंभूता ॥६११॥

अदुगुञ्छी तित्थगरं पुच्छति किं सुलभदुलभवोहि म्हे ।
तित्थंकराह विग्धं अम्मापितरो करेहिंति ॥६१२॥

तो ओहिणा पासित्ता माहणपुत्तत्त णगरमुसुगारो।
सो माहणो अपुत्तो पुच्छति णेमित्तिए बहवे ॥६१३॥

ते काउ समणरूबं उसुगारपुरम्मि आगता कहए।
षहुजण तीतादीणि तो पुच्छे माहणो ते उ ॥६१४॥

होजजऽम्ह किं वडवच्चं पच्चाह चुया दिया तु होहिंति।
दो जमलदारगा तू कुमारणा पव्वहस्संति ॥६१५॥

मा तेसि करेज्जासी विघ्मवस्सं च तेसि पव्वज्जा।
होही वोन्नूण गता चइन्नु उववन्नया तेसिं ॥६१६॥

बालत्तऽम्मापितरो भर्णति समणाण सरिसरूबेण।
रक्खस माणुसखाता भर्णति दद्धूण ते पुत्ता ॥६१७॥

मा तेसि अर्छ्लएज्जह दूरंदूरेण परिहरेज्जाह।
मा भक्खेज्जा ते भे तेवि य तेसिं पडिसुणेंति ॥६१८॥

रत्थादि जत्थ पासंति संजए ते तओ पलायंति।
अह अन्नया नगरबहिं चेडे पासंति वंदंते ॥६१९॥

विंति य अम्मापितरो दिट्ठाऽम्हे चेड वंदमाणा तु।
णवि समणरूबं रक्खस भर्क्खिति च चेडरूबाइं ६२०

चिंतेन्तऽम्मापितरो अतिवीसत्था इमे तु जाय त्ति।
मा पव्वएज्ज इहति अल्लियमाणा तु समणाणं ६२१

सउवज्ञाया एते वद्यं णिज्जंतु तत्थऽहिज्जंतु ।
इय संचिंतेऊण वद्यं णीता ततो तेहिं ॥६२२॥

वद्याए समीवम्मी मणाभिरामो तु अतिथ वडरुकखो ।
अह अन्नदा कदाई ते तु रमंता गता तहियं ॥६२३॥

सत्थाहीणा य जती तिसियकिलंता तु आगता तहियं ।
एत्थ करेमो भिकखं वडहेद्धा पट्ठिता तत्तो ॥६२४॥

तो ते भयाभिभूता चेड विलग्गा तमेव वडरुकखं ।
जतिणोऽवि य तस्साहे ठातुं पविसंति भिकखद्धा ॥

णवरि पवत्तिंति गुरु तहियं अज्ञयण णलिणगुम्मंनि ।
तो ते सरंति जातीं ओयरितुं वंदिउं बिंति ॥६२५॥

अम्मापितरो पुच्छित पववज्जं अबभुवेमोऽसेसं तु ।
जह उमुगारज्ञयणे वकखातं सुत्तआलावे । दा ६२७

एसा पडिस्सुता खलु पववज्जा सारणी य णातेसु ।
चोदसमे अज्ञयणे जह तेतलिपोष्टिलावोहे । दा ६२८

पतिठाणे जुवराया राहायरियाण पासि णिकखंतो ।
तगराए तस्स भगिणी दिण्णा जितसन्तुरायस्स ६२९

तगरगताण कदायी उज्जेणीओ य आगतो साहू ।
राहगुरु पुच्छणा बाह बिंति वाहेति रायसुतो ॥६३०॥

पुत्तो पुरोहियस्स य दोऽवि ते णिवधरम्मि वाहंति।
तं सोतुं जुवणिवसुणी वेति मम नन्तुओ सोतु ॥६३१॥

सासेमि तं दुरप्पं आपुच्छत्ता गुरुं तु उज्जोर्णि ।
णिरुवस्सग्गं पुट्ठा तं चेव कहिंति से जतिणो ॥६३२॥

भिक्खट्टणिग्गम्मि य भणितो अच्छाहि आणइस्सा-
मो । भत्तट्ट अत्तलाभीमि वेति दंसेह णिवओकं ६३३

दंसेतूण णियत्तो खुड्हो इयरो वि गंतुं णिवओकं ।
सद्वेण महंतेण अह कुणती धम्मलाभं तु ॥६३४॥

तो तेहिं सोतु दिड्हो परितुट्टहिं चउणेहिं सो गहिओ ।
भणितो तं नचसुक्ती इय होतु तेण तो भणिता ६३५

गायह तुब्भेत्ति ततो ते तु पगीता पणच्चिओ साहू ।
ता ते उवहविता साधूणा खिजिजया दोवि ॥६३६॥

पुणरवि बेंती गायसु तुमं तु अम्हे उ णच्चिमो इणिंह ।
इय होतुक्ति य भणिते पणच्चिता ताहे ते दोवि ॥६३७॥

पुणरवि य विद्वेत्ता गोवालग विद्वेह किं एयं ।
भणिता ते साधूणं चिंतिय किं सवासि तं अम्हे ६३८
देही जुद्धं अम्हं लविता साहूण दोणह वी समगं ।
आगच्छह क्ति सिग्धं तोते आधाविता तुरितं ६३९॥

आधावेत्ता य ततो घेत्तुं बाहासु दोवि साहूणं ।
 तह विधुताऽणेण दुतं जह संधिविसंधिता सच्चे ६४०
 उत्ताणए महीए पाडेतुं णिगगतो तु सो तत्तो ।
 उज्जाणं गंतूणं आयति आणं गुणसमग्गो ॥६४१॥
 अह ते दद्धुं णिहते संभंतो परिजणो कहे रण्णो ।
 रायावि य संभंतो आगंतु णियच्छती ते तु ॥६४२॥
 पुच्छावेइ य जतितो विंति य णेत्यथंम्ह पविसते कोइ ।
 णवरिक्को पाहुणओ आगतो ण तं तु जाणामो ॥६४३॥
 ताहे उज्जाणादिसु रण्णा गवेसाविओ य दिट्ठो य ।
 गंतूण सयं राया चलणेसु णिवडिओ जतिणो ॥६४४॥
 वैइ य जम्मिमेहिं अवरद्धं तं खमाहिसी भंते ! ।
 जंपति साध् जदि णिकखमंति मोकखामि तो णवरि ॥
 सण्णाओ अवरेहिं एस कुमारस्स मातुलो सो उ ।
 बहुमो णिव्वंधकते पडिवण्णो जाहे ते दोऽवि ॥६४६॥
 ताहे गंतूण तहिं दोणिवि घेत्तूण तेण बाहासु ।
 तह ण खलंखलीकत जह संधी सिं पुणो लग्गा ६४७
 णिकखामेउं दोणिवि सूरिसगासं णीणिया तेणं ।
 चिंतेइ रायतणओ साधुकतं मातुलेण ममं ॥६४८॥

मम हियमिच्छतेणं रुदमाणे पीहको व्व बालस्स।
तह मज्ज्ञं सेयांति अतियारविवजितो विहरे ॥६४१॥

इतरो जातिमदेणं अविणयमादीणि अविगडेत्ताणं।
दुल्भभबोहीयत्तं बंधित्तु गतो तु दियलोयं ॥६५०॥

कोसंबीए इणमो सेट्टी णामेण तावसो णामं।
मरिऊण सूयरोरग जातो पुत्तस्स पुत्तो तु ॥६५१॥

जातो जातिं सरंतो चिंतयति किं नु सुणह अम्मोत्ति।
पुत्तो वि य बप्पो ती भणामि मूयत्तण वरं मे ॥६५२॥

मरुदेवो तित्थकरं पुच्छति किह सुलभदुलभबोहीहं।
भणितो दुल्भभबोही तंसि गुरु परिभवकएण ॥६५३॥

कह बुज्ज्ञेज्जामित्ति य भणितो कोसंबिमूगमाऊए।
उववज्जिहसी तहियं मूगो अबभत्थितो बोहो ॥६५४॥

ताहे आगंतूणं राहू गामंति भणति सो देवो।
अहगं चइऊण इतो तुज्ज्ञं मातूए उदरम्मि ॥६५५॥

उववज्जीहं अइरा होहिति अंबेहिं डोहलो अकाले।
अविणिज्जंते तम्मि य किच्छप्पाणा य होहिति तु ॥

अहगं गिरिणीतं बे सब्बोलुय अंबगं करेहामो।
अंबाऽलंभे खि (बे) जजासि दे अंबे देह जादि ग्रन्थं ॥६५७॥

अवभुवगते ससकखे अंबे देजजासि बालभावे य ।
साहूणं चलणे म पाडेजजाही अणिच्छंपि ॥६५८॥

किं वहुणा तह कुज्जा जहऽहं साहुत्तणे दढो होमि ।
संबोहिकारओ खलु लभति अजत्तेण घोहिं तु ॥६५९॥

मूर्गेण अवभुवगते देवो णभिज्ञ सालयं पत्तो ।
चहृण य उववन्नो कुच्छीए मूर्गमाऊए ॥६६०॥

अंबगडोहलजाते अविणिजंतमिम देहहाणीए ।
अहृण परिजणाणं मूर्गो लिहतक्खराणिणमे ॥६६१॥

जदि देह मेऽह गठभं मज्ज्ञ तो अंबगाणि आणेमि ।
देसुत्ति अवभुवगते ससकखमाणेति अंबाइ ॥६६२॥

तो पुणणडोहलाए जातो दिणणो य ताहे से तस्स ।
उत्ताणसायगं तं जतिणो पादेसु पाडेति ॥६६३॥

अतिविस्सरं परोती जाहेवि य पाडिओ उ पादेसु ।
सुहचलणेसु जतीणं मूर्गेणुत्तो तु णेच्छी या ॥६६४॥

धेतुं गीवाए तओ मूर्गेणं पाडिओ रुवे बहुसो ।
परितंतु ततो मूओ णिक्खंतो गतो य दियलोयं ॥

ओहीए दट्टूणं सुविणादिसु घोहिओ जतिण बुज्ज्वे ।
ताहे करेति रोगी देवोवि उ वेजजस्त्रवेण ॥६६६॥

जदि वहति सत्थकोसं भमति मए यावि जदि समं एसो
तो णीरोगु करेमी पडिवण्णो कतो य णीरोगो ॥६६७॥

घेन्तूण तं पयाओ गुरुगं से सत्थकोसगं दावे ।
तं वजजभारगुरुगं वेती ण तरामि वोहुं जे ॥६६८॥

दंसेति साधुरुखं बेति जति णिक्खमाहि तो तेऽहं ।
मुंचामि विमुंचेमि य रोगा पडिवण्ण तो मुङ्को ॥६६९
णिक्खवंते तो तम्मी देवोवि ततो तु सालयं पत्तो ।
कालेणुप्पवइन्तं सघरं संपट्टितो अह सो ॥६७०॥

देवेण पलायंतो दिङ्गो विगुरुन्विऊण तो अडविं ।
काऊं मणुस्सरुखं अह अडविं पंटूठितो तत्तो ॥६७१॥

लवति ततो दुब्बोही किं इच्छासि अप्पगं विणासेतुं ।
जं जासि अडविंहुन्तं देवोऽवि ततोऽणु पच्चाह ॥६७२॥

तं पुण विजाणमाणो णरगादीदुक्खसंकिलेसं तु ।
किं णिग्गंतुं तत्तो पुणरवि दुक्खाडविमतीसि ॥६७३॥

अगणितो तं वयणं सघरं अह आगतो ततो सो तु ।
रोगाणं साहरणं भ्रओ वेजजागमो दिक्खा ॥६७४॥

कालेण केणइ पुणो लिंगं मोन्तूण पट्टितो सगिहं ।
देवेण पुणो दिङ्गो गामपलित्तंतरा कुणति ॥६७५॥

पुणरवि मणुस्सरूपी तणभारेणं तु विसति तं गामं ।
दद्धुं लवे पुराणो किं इच्छासि अप्पणो णासं ॥६७६॥

जं तणभारेण तुमं विसासि पलित्तं ततो लवे देवो ।
एव तुमं जाणंतो जरमरणपलित्तसंसारं ॥६७७॥

पविसंनिच्छासि णासं मुंचसि जं दुक्खलद्वियं दिक्खं ।
अगणिनो वच्चति घरं गतस्स रोगं पुणो कुणति ॥६७८॥

पुणराव नहेव दिक्खा उप्पब्बद्देष्य सघरहुतमिम ।
संपट्टिए अडवीए तस्स पहे वंतरप्पडिमं ॥६७९॥

काउं अच्चणदेवो अच्चितमहितो तु पडनि हेडमुहो ।
पुणरवि समझुवेतुं एहवियच्चिओ सो पुणो पडिनो ॥८०॥

एवं पुणोवि अच्चियमहितो वित बहुसो पडे जाहे ।

लवनि ततो दुव्वोही किं वरठाणे ण ठाए सो ॥८१॥

देवाह जहासि तुमं वरठाणेवि ठवित एधेव ।

पञ्चउज्जं मोन्त्रूणं णरगनरगादंहठाणं पुणरवि य

अभिलससि ॥८२॥

लवनि पुराणो को तुम देवो दंसेति मूगरूबं से ।

देवतं पुञ्चभवं संगारं वावि संभारे ॥ ८३ ॥

तो संभरितुं जातिं संवेगमुवागतो भणति देवं ।

इच्छामो अणुसट्टि जानो थिरो संजमे ताहे । दा ८४

रोगिणि य एस दिक्खा अणादिया रामकणह पुव्वभे
 दा । उद्दायण संबोही पभावती देवसण्णावी । दा ६५
 वच्छ अणुवंधी मणको । दा कण्णाए अजणिओ तु केण-
 इवि । पुत्तो जायति जो तू सो होती अजणकण्णी तु
 णिवति सुतातिं दोन्निवि णिक्खंताहं तु भातुभंडाहं ।
 अण्णद रायसुतो तू णिसाए लोयप्पणो कुणति ६७
 छड्हेहामि पभाते चलणाहो कालपंडियरंतीए ।
 पोग्गलवेदागमण अह णिवयति तेसु वालेसु ॥६८॥
 वीसरिया ते तस्य य सिरोरुहा तम्मि चेव ठाणम्मि ।
 तत्थ य पवित्रिणीओ अहागता गाम गंतुमणा ६९
 अह तीए रायदुहिया तं वंदिउं सा पदेसि अह तम्मि ।
 उवविट्ठ णवरि तीए य मोतुगं सहसमोगाहं ॥६९॥०॥
 लज्जाए सहस घेत्तुं तेसिं जे सुक्कपुग्गलाइणे ।
 गुज्ञम्मि सन्निवेसिय अह सुक्कं जोणिमोगाहं ॥६९॥१॥
 तो गब्भो आभूतो अह पोट्टं वद्धियं पयत्तं च ।
 मुणिया य सुविहियाहिं पुट्टा बेती तु णवि जाणे ६९२
 अतिसयणाणी थेरा य पुच्छता तेहिं सिडु जहवत्तं ।
 होही जुगप्पहाणो रक्खह पं अप्पमादेणं ॥६९॥३॥

जम्मं सङ्घटकुलेसू स वङ्गदितो गोणणाम कत केसी ।
एसा तु अजणकण्णि पञ्चज्ञा होति णायव्वा । दा ॥

षहुजणसम्मतियाए णिकखमणं होति जंबुणामस्स । दा
अक्खायाए जंबू धम्मं अक्खादि पभवस्स ॥६९५॥

संगार मल्लिणाते सत्त णिवा कासि जह उ संगारं । दा
वेषाकरणे सोमिलपुच्छा जह वाकरे भगव । दा ६९६

सयबुद्धा नित्थगरा । दा सोलसहा एस होति पञ्चज्ञा ।
पुच्छा परिसुद्धमिम तु अब्भुवगतं होति पञ्चज्ञा ६९७

गोयरमचित्तभोयण सज्ज्ञायमण्हाण भूमि सिज्जाती ।
अब्भुवगयमिम दिक्खा दव्वादीसुं पसत्थेसुं । दा

लगादिसुत्तरंते अणुकूले दिज्जने अहाजात ।

सथमेव तु थिरहत्थो गुरु जहण्णण निणहड्ढा ॥६९९॥

अन्नो वा थिरहत्थो सामाइग तिगुण अद्वगहण च ।

तिगुणं पादकिखण्णं णित्थारग गुरुगुण वुड्ढा ।

मुंडावण गतं । दा ॥७००॥

फासुय आहारो से अणाहिंडंतं च गाहए सिकखं ।

ताहेव उवट्ठवणं छज्जीवणियं तु पत्तस्स ॥७०१॥

अप्पत्तं अकहेत्ता अणभिगय परिच्छ अतिक्रमे पासे ।

एकेके चउगुरुगा विसेसिया आदिमा चउरो ॥७०२॥

अप्पत्तं तु सुतेणं परियाग उवट्टवेंत चउगुरुगा ।
 आणादिणो य दोसा विराहणा छणह कायाणं । दा ॥
 सुत्तत्थं अकहेत्ता जीवाजीवे य बंधमोकखं च ।
 उवठवणे चउगुरुगा विराहणा जा भणिय पुन्वं । दा ॥
 अणहिगतपुण्णपावं उवट्टविंतस्स चउगुरु होंति ।
 आणादिणो य दोसा मालाए होति दिङ्ठंतो । दा ७०५
 ससरकख दगउल्लगणी पतिठिते हरितबीजमादीसु ।
 होति परिक्खा गोयर किं परिहरती णवा वि त्ति ७०६
 उच्चारादि अथंडिल बोसिर ठाणादि वावि पुढवीए ।
 णादिमादिदगसमीवे खारादीदाह अगणिम्मि ॥७०७॥
 विजण अभिधारण वाते हरिए जह पुढविए तसेसुं च
 एमादि परिक्खत्ता वतदाणमिमेण विहिणा सो ७०८
 दच्वादि पसत्थे वता एकेकं तिगुणणोवरि हेडा ।
 दुविहा तिविहा य दिसा आयंविलणिविगतिगा वा ।
 दा ॥ ७०९ ॥
 पितिपुत्ताणं जुयला दोणिण तु णिकखंत तत्थ एगस्स ।
 पत्तो पिता ण पुत्तो एगस्स तु पुत्तो ण तु थेरो ॥७१०
 ताहे तु पण्णविज्जति दंडियणायं तु कातु भण्णइ तु ।
 मा गेणह असग्गाहं रातिणिओ होति एस पिता ७११

एवं सो पण्णवितो जदि इच्छे तो उबडुवेंती तु ।
 णेच्छेते पंचाहं ठंती दो तिणिण वा पणगा ॥७१२॥
 वथु सभावा सज्ज व जाऽधीतं ताव तं परिच्छंति ।
 एवं रायअमच्चे संजतिमज्जे महादेवी । दा ॥७१३॥
 राया रायाणो वा दोणिण विसमपत्त दोसु पासेसुं ।
 ईसरसेट्टिअमच्चे णियम घडा कुल दुवे खुडे ॥७१४॥
 समयं तु अणेगेसुं पत्तेसु अणभिओगमावलिया ।
 एगतो दुहतो व ठिता समराइणिता जहासण्ण ७१५
 ईसिं अणोयइत्ता वामे पासमिव होति आवलिया ।
 अहिसरणमिभ य वड्डिं ओसरणे सो व अणो वा ।
 दा ॥७१६॥

उवठावियस्स एवं संभुंजणता तहेव संवासो ।
 वितियपदं संवंधी ओमादिसु मा हु बहिभावं ७१७
 भुंजीसुं मए सद्विं इयाणि णेच्छति तु मातु बहिभावं ।
 अहिखायंति च ओमे पच्छन्ने जेण भुंजंति ॥७१८॥
 एमादिणा तु भावं ताहे अप्पत्त अहव पत्तं वा ।
 उवठावेतुं भुंजति अपरिणते चित्तरक्खट्टा ॥७१९॥
 उवठाविए संभुत्ते संवासो एत्थ होति कायब्बो ।
 वितियपए संवसेज्जा अणुबड्डियं पिमेहिं तु ७२०

अण्णत्थ णत्थि ठाओ अहवा होज्जाहि सोऽवि एगामी
 ण य कप्पति एगस्सा संवासो तेण संवासो॥ ७२१॥
 सच्चित्तदवियकप्पो एमेसो वन्निओ महत्थो तु ।
 अच्चित्तदवियकप्पं एत्तो बोच्छं समासेण ॥७२२॥
 आहारे उवहिम्मि य उवस्सए तह पस्सवणए य ।
 सेज्जाणिसेज्जठाणे दंडे चम्मे चिलिमिणी य ॥७२३॥
 अबलेहणिया दंताण धोवणे कण्णासोहणे चेव ।
 पिप्पलग सूति णखाण छेदणे चेव सोलसमे ॥७२४॥
 आहारे खलु दुविहो लोइय लोउत्तरो य णायव्वो ।
 तिविहो य लोइओ खलु तत्थ इमो होइ णायव्वो ७२५
 भायणे भोयणे चेव सुंजियव्वे तहंव य ।
 भायणे तु इमं थेरा गाहासुत्तमुदाहरे ॥७२६॥
 सुवण्णरजने भोज्जं मणिसेले विलेवणं ।
 अविदाही घतमायसे पयं तंबे पाणमंबुं च मिम्मते ॥
 सूपोदणं जवणं तिन्नि य मंसाणि गोरसो जूसो ।
 भक्खा गुललावणिया मूलफलं हरियगं डागो ॥७२८॥
 होइ रसालो य तहा पाणं पाणीय पाणगं चेव ।
 सागं चट्टारसहा णिरुवहतो लोगपिंडो सो ॥७२९॥

सूखगहणेण गहिता वंजणभेदा उ जत्तिया लोए ।
 ओदणगहणेण पुण सत्तविहो ओदणो गहियो ७३०
 जो त् जवणं भण्णनि निन्नि तु मंसाणि जलयरादीणं ।
 गोरसो खीरादीउ मुग्गपडोलादि जूसो तु ॥७३१॥

भक्तविहि उल्लसुक्का गुलकन तह लावणी त
 बोद्धवा । मूलग अल्लगमादिमूलं अंबादि फलगं तु ॥
 हरितग मूलकुदेरगभूयणगादी य होते णायव्वो ।
 डागो य गोरसकओ पजेवणादी बहुविहाणो ॥७३३॥
 दोघतपला महुपलं दहिस्स अद्वादयं मरिय वीसा ।
 खंड तुलादसभागो एस रसात्तृ णिवइजोगो ॥७३४॥

खंड तुलादसभागो दस खंडपला हवंति णायव्वा ।
 ते तम्मि पक्खिवित्ता मञ्चिय णामं रसालोत्ति ७३५
 णां मज्जविहीओ पाणीयं धारपाणियादीयं ।
 दक्खादिपाणगाहं सागेण वंजणा जे तु ॥७३६॥

एवं अट्टारसहा णिरुवहतो दड्हगादिपरिहीणो ।
 ण यउवहम्मति जेणं रसादि छूढेण दव्वेण ॥७३७॥
 परिसुक्कं दाहिणतो दव्वाणि सन्नवाणि वामतो कुज्जा ।
 णिद्रमहुराणि पुच्चं भज्जे अंबं दवंताणि ॥७३८॥

परिसुकं सालणगादि तं गिणह सुहं तु दाहिणकरेण ।
वामेण पाणगादी तेण तयं वामपासम्मि ॥७३०॥

अप्पाइज्जति देहं पुन्वं तृष्णमहुरदव्वेहिं ।
पेतादीहिं णियमा केवइयं तं तु भोत्तव्वं ॥७४०॥

अद्धमसणस्स सव्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए ।
वातपवियारणट्टा छब्बांगं ऊणयं कुज्जा ॥७४१॥

तं पुण एथपमाणं आदी मज्जे तहेव अवसाण ।
केरिसयं भोत्तव्वं तस्स इमं गाहमाहंसु ॥७४२॥

असतामिव संजोगं पण्णा भोयणविहिं उवदिभंति ।
लुकखं दवावसाणं मज्जाविचित्तं महुरमादि ॥७४३॥

असता असज्जणा दुज्जणा य एगट्टिताणि एयाणि ।
तेहिं सम जा मेत्ती संजोगो सो तु णायव्वो ॥७४४॥

गुलमहुरा उल्लावा तेसिं पुन्वं करिंति य पियाइ ।
मज्जे य होंति मज्जा महुरा विगतिं च दाएंति ॥७४५॥

कुव्वंति य भासंति य अवसाणे तारिसाणि जेहिं तु ।
छिज्जाति सव्वं सुकयं एवं किर भोयणं भुंजे ॥७४६॥

आदिए णिद्धमहुरं मज्जा विचित्तं दवलुकख अवसाणे ।
तेण विपागमेत्ती दुज्जणमेत्ती व अवसाणे ॥७४७॥

कुसलाभिहिण्णं पुण तं भोत्तव्वं इमेण विहिणा तु ।
असुरसुरं अचवचवं अदुनमविलंबियं चेव ॥७४८॥

अयमण्णोऽवि विही खलु भोयणजायस्मि होति णाय-
वो । जारिसयण भोत्तव्वं दोसा जे यावि भुत्तस्स
अच्छुणहे लणइ रसं अतियंवं इंदियाईं उवहणति ।
अतिलोगिग्यं च चकखुं अतिणिद्रुं अंजने गहणि ७५०
आहारिष्यस्मि पवं णीहागेण अवस्स भवियव्वं ।
तत्थ ण धारे वेगं दोसा य इसे धरिज्जने ॥७५१॥

मुत्तनिरोहे चकखुं वच्चगिरोहे य जीविगं हणति ।
उड्डणिरोहे कोहं सुकणिरोहे भवे अपुमं ॥७५२॥

तेष्टच्छियधूताए आहरणं तत्थ होइ कायव्वं ।
तेष्टच्छिमते राया पुच्छति पुत्तत्थ णत्थत्ति ! ॥७५३॥

णत्थत्ति अत्थ धूया राया वेती अहिजिज्ज सत्थं ।
पिउसंतिओ य भोगो तह चेव य तीयणुण्णातो ७५४

मच्छरिता विज्जङ्णे वेती किं एस णाहिति वराई ।
भिससत्थं अहवा से परिच्छिउं दिज्ज अह भोगे ७५५

सदावेतुं पुष्टा किमधितं ते त्ति तेसि सा पुरनो ।
तोऽणाए वातुकभ्मं सदेण कतं हसे वेज्जा ॥७५६॥

तो भणति णिवं सा तू एते वेज्जा ण चेव तु णरिंद ॥
ण य जाणंती सत्थं कहंति बेती इमं सुणसु ॥७५७॥

तिणिण सल्ला महाराय ! असिसं देहे पइट्टिता ।
वाउमूत्तपुरीसाणं पत्तवेगं ण धारए ॥७५८॥

णिम्मुहिकता तु वेज्जा तीए सावि य पतिट्टिना तहियं
तम्हा ण धारए वेगं वायातीणं तु सव्वेसिं ॥७५९॥

एवं भुत्ते समाणे जति वातादी पकोब गच्छेज्जा ।
जाणेज्ज तेसि वेलं पच्चूसादी इमं तहियं ॥७६०॥

सिंभो वड्डहति पच्चूस पदोसे पित्तमड्डहरत्तम्मि ।
मज्जंतिए य वाओ वड्डहति पुञ्चावरणहे य ॥७६१॥

तत्थ ण वेज्जो पुच्छिज्जती तु तेसिं तु वेल सच्चेव ।
कुवियाण अवेलाए पच्छे किरिया इमा तेसिं ॥७६२॥

तित्तकड्डएहिं सिंभं जिणाहि पित्तं कसायमहुरेहिं ।
णिदूधुणहेहि य वायं सेसा वाही अणसणाते ॥७६३॥

केरिसए कालम्मी आहारो केरिसो तु पुरिसेण ।
आहारेयव्वो खलु तत्थ इमो वणिणतो सो य ॥७६४॥

सीते उणहं पविसेज्जा उणहे सीयं पवेसए (दव्वे) ।
णिद्वे लुकखं पविसेज्जा लुकखे निद्वं पवेसए ॥७६५॥

जो वाही पिंडेणं समुद्दितो तस्स लुकखकिरिया उ ।
 लुकखेणमुद्दियस्स तु कायब्बा पिंडकिरिया तु ७६६
 एसो तु लोइओ खलु पिंडो तू वणिअो समासेण । दा।
 लौउत्तरिए पिंडे वणिजजाति पिंडणिज्जुत्ती ॥७६७॥
 पिंडे उग्गम उप्पायणेसणा (सं) जोयणा पमाणे य ।
 हंगाल धूम कारण अट्टविहा पिंडणिज्जुत्ती ॥७६८॥
 पुढवाईया भेदा वत्तच्च जहक्कमेण पिंडस्स ।
 गविसणमादीया वि य एसणभेदा य तह चेव ॥७६९॥
 उग्गममादी दोसा सब्बे य जहक्कमेण वत्तच्चा ।
 जह भणिय पिंडजुत्तीइ णवरि इमो पूतिए विसेसो ॥
 संचय कोट्ठग दारुघ डाए तह गोरसे य लोणे य ।
 लंबणेहि हिंग दालिम तह तित्तए चेव ॥७७१॥
 अगडारामे पुत्ते तुंबे फलही तंहेव गाओ य ।
 एतारिसेसमुष्पणे गहणं णणु कस्स केरिसयं ॥७७२॥
 भत्तस्स उवक्खेवो गोरसमादी तु संचतो होति ।
 सो संघट्टा ठवितो भावे अबोच्छणिं अगिज्ज्ञो ७७३
 अत्तद्विय परिसुत्ते कप्पति भावम्मि ताहि वोच्छणे ।
 कह वोच्छज्जजाति भावो सो तू ण अफासुदोसं तु । दा

कोट्ठग तंदुल तिछडा समणद्ठा सिं कडा ण कप्पंति ।
अह दुच्छड मंजयद्ठा आयद्ठोवकखडा कप्पे ७७५

आयद्ठाए दुछडा संजयअद्ठा तिच्छडा कप्पे ।
जदिवि य आयद्ठाए आरंभो होति तेसि तु । दा ७७६

एमेव य दारुसागाइयाइं जाइं अफासुदव्वाइं ।
अत्तद्ठणिइठिताइं कप्पे समणद्ठ णवि कप्पे ॥७७७॥

गोरसहिंग तेल्लादि दालिमे तित्तकडुयदव्वाइं ।
लंबण गुलो य भण्णति संचियमेवादि संघट्ठा ७७८

फासुगदव्वा जे तू अबोच्छिणमिम भावे ण तु कप्पे ।
उवक्खविथा वत्तद्ठा वोच्छिणमावें य कप्पंति । दा

अगडं व खणेज्जाही आरामं वावि अहव रोवेज्जा ।
संजयणिमित्त कोई पाणफलाइं व दाहंति ॥७८०॥

तथ वि संजयजोग्गा संजयद्ठा कया ण कप्पंति ।
अत्तद्ठाए कता पुण कप्पंती तंदुला जह उ ॥७८१॥

पुत्तं जणेज्ज कोई आयरिओ मज्ज अपरिवारो त्ति ।
तेसि सहाओ होहिति पव्वावेडं तु सो कप्पे ॥७८२॥

भायणअद्ठा तुंबीओ वावे फलेही य वथमातद्ठा ।
संजयठाए जा सुत्तं आतद्ठ वियमिम पुण कप्पे ७८३

स्तो संजयठाते आतद्धासुत्तमादिक ण कप्पे ।
जम्हा उ गहणजोग्गो तु संजतद्धाए कारितो ॥७८४॥

संजत अद्धा वियितो आतद्धोवद्धितो य तत्तो य ।
कप्पनि जम्हा य कतो संजतजोग्गो तु आतद्धा ७८५

एवं गावीओ वी कोह किणिज्जाहि संजयद्धाए ।
आतद्धदूढ कप्पे सभणद्धा दूढ णो कप्पे ॥७८६॥

एसो ग्रनिविसंसो भणितो पुच्चं तु पिंडुज्जुत्तीए । दा ।
एत्तो उवहीकप्पे वोच्छामि गुरुवएसेण ॥७८७॥

दुविहो य होति उवही पत्ते वत्थे य ओहुवग्गहिए ।
जिणपिज्जाण नहा वोच्छामि अहाणुपुच्चीए ७८८

पाए उग्गद उप्पायणमणा संजोयणा पमाणे य ।
इंगाल धूम कारण अद्धविहा पातणिज्जुत्ती ॥७८९॥

जह संभध ऐयव्वा पिंडगमेण तु पातणिज्जुत्ती ।
सञ्चत्युग्गप्रमादी जदा जहा जे तु जुज्जंति ॥७९०॥

पातपमाण तु इमं पमाणदारमिम होति वत्तव्वं ।
मज्जंजहणुझोसं वोच्छामि अहाणुपुच्चीए ॥७९१॥

तिणिविहत्यी चउरंगुलं च भाणस्स मज्जमपमाण ।
एत्तो हीण जहणं अतिरेगतरं तु उझोसं ॥७९२॥

उक्तोस तिसामासे हुगाउअद्वाणमागतो साहू ।
 भुंजति एगट्ठाणे एयं किर मत्तगपमाणं ॥७९३॥
 एवं चेव पमाणं अतिरेगतरं अणुगगहपवत्तं ।
 कंतारे दुष्टिभक्ते रोहगमादीसु भइयव्वं ॥७९४॥
 वद्वं समचउरंसं होति थिरं थावरं च वणं च ।
 हुंडं वाताइद्वं भिण्णं च अधारणिज्ञाइ ॥७९५॥
 संठियम्मि भवे लाभो पतिदृथा सुपतिदृष्टिए ।
 णिव्वणे किन्तिमारोगं सव्वणे वणमादिसे । दा ७९६
 वत्थे उग्गम उप्पायणसणा जोयणा पमाणे य ।
 हंगाल धूम कारण अट्ठविहा वत्थणिज्जुन्ती ॥७९७॥
 एत्थ वि य जहासंभव घोसेयव्वाइं सव्वदाराइं ।
 पडलादिपमाणाणि य पमाणदारे समोतारो ॥७९८॥
 गिम्हसिसिरवासासु य पडला उक्तोसमज्ज्ञमजहन्ना
 वणेऽज्ञं कमसो पच्छादा पुरिसि बोच्छामि ॥७९९॥
 एमेव य पच्छादा पुरिसं खेत्तं च कालमासज्ज ।
 तिण्णादी जा सत्त तु परिज्ञणा पाउणेऽज्जाहि ८००
 पुरिसो असहू कालो सिसिरो खेत्तं च उत्तरपहांदी ।
 गिम्हेऽवि पाउणेऽज्जा तारिसियं देसमासज्ज ॥८०१॥

एवं तु उग्गमादिसु सुद्धो सब्बोऽवि एस उवही उ ।
श्रेयव्वो णियतं अहाकडो चेव जहविहिणा ॥८०२॥

असती तिगेण जुन्ना जोगि ओहोवही उग्गग्हितो ।
छेदणभेदणकरणे जा जहिं आरोवणा भणिता ८०३

तिविह असति त्ति जा सा दब्बे काले य होति पुरिसे य ।
दब्बम्मणस्थि पातं ओमोदरिया य कालम्म ॥८०४॥

पुरिसे य उग्गमंतो ण विज्जती एस पुरिस असती तु ।
अहवा अणलं अथिरं अधुवं सतासती तिविहा ८०५

अहवा तिग त्ति असती अहाकडाणं अप्पपरिकम्मं
तस्त्सऽसनि परिकम्मं तं तु विहीए इमाए तु ॥८०६॥

चत्तारि अहागडए दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे ।
तेण परि विमग्गेज्जा दिवड्डमास सपरिकम्मं ॥८०७॥

गुणसदा तिक्रखुत्तं विमग्गियब्बं तु होति एकेवं ।
एवं तु जुत्तजोगी अलभंतो गिणहती ततियं ॥८०८॥

अहवा असिवोमेहिं रायदुट्टे व से गुरुणं वा ।
सेहे चरित्त सावय भए य ततियं पि गिणहज्जा ८०९

असिवादि पुब्बभणिता गुरुवमग्गे गुरु भणिज्जाहि ।
अच्छाहि ताव अज्जो तत्थ तु ते कारण विदंति ८१०

एतेहिं कारणेहिं अहगडवज्जेण दोणह गहिताणं ।
 छेदणमादी कुच्चं जयणाए होति सुद्धो तु ॥८१॥
 णिक्कारणगहणे पुण विराहणा होति संजमायाए ।
 छेदणमादीएसुं जा जहि आरोवणा भणिता ॥८१॥
 नं पुण सपरिकम्मं जयणाए होनि लिंपियन्वं तु ।
 एतेण तु लेसेण लेवगहणं तु वणेऽहं ॥८१॥
 हरिते बीजे चले जुते वच्छे साणे जलट्टिते ।
 पुढवी मंपाड्मा सामा महवाए महिया हिमे ॥८१॥
 एवं लेवगहणं जहकमं वणितं समासेण । दा ।
 ओहोवहुवगगहितं उल्लिंगेऽहं समासेण ॥८१॥
 जिणकप्प धेरकप्पे अज्जाणं चेव ओहुवगगहितं ।
 चोच्छामि समासेणं जहणणं मज्जमुक्कोसं ॥८१॥
 इतं पत्ताबंधो पायड्वरणं च पायकेसरिया ।
 पडलाइं रथत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥८१॥
 तिणेव य पच्छागा रथहरणं चेव होइ मुहपोत्ती ।
 एसो दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥८१॥
 उक्कोसिओ उ चउहा मज्जमग जहणणगोवि चउहा उ
 पच्छादतिगं उग्गहो जिणाण अह होति उक्कोसो ॥८१॥

पठलाणि रथत्ताणं रथहरणं पत्तबंधमज्ज्ञमगो ।
गोचक्षग पत्तदुवणं मुहणनंग केसरि जह्णणो ॥८२०॥

जिणकपियाण एसो सेसाण वि णिगगयाण एसेव ।
थेराण अतिरेगो मत्तो तह चोलपट्टो य ॥८२१॥

उक्कोस जहश्नो तु जे चिय जिणकपियाण ते चेव ।
मज्जिमए अतिरेगो मत्तो तह चोलपट्टो य ॥८२२॥

एसेव चोहसविहो चोलट्टाणमिम णवरि कमदं तु ।
अज्जाण इसो अणो ओहोवहि होति णायव्वो ॥८२३॥

ओगहणांतगपट्टो अद्वोरुग चलणिया य बोद्धव्वा ।
अविभंतर वाहिणीयस्तणी य नह कंचुए चेव ॥८२४॥

उक्कचिलय वेकचिलय संघाडी चेव खंधकरणी य ।
ओहोवहिमिम एते अज्जाणं पणणवीसं तु ॥८२५॥

उक्कोसो अडुविहो मज्ज्ञमओ होति तेरसविहो तु ।
चउह जहश्नो सो चिय जो जिणकप्पे समक्ख्वाओ ॥

पच्छादतियं उग्गह णियंसणवभंतरी य वाहिरिया ।
संघाडी खंधकरणी य अडुहा होति उक्कोसो ॥८२७॥

पत्ताबंधो पडला रथहरणं पादपुंछणं चेव ।
मत्तय कमदगोगगहणंते तह पट्टए चेव ॥८२८॥

अद्वोरुण चलणीया कंचुग ओङ्कच्छ तह विकर्णीय।
एसो तु तेरसविहो मज्जिम उवही तु अज्जाण ॥८१॥

एसो तु ओहउवहि एत्तो सेसो तु होतुवगगहिओ।
संथारपटमादी तु णेगहा होति णायव्वो ॥८२॥

दुविहोवहीवि एसो जहकमं वणिणतो समासेण।दा।
एत्तो उ उवेसणयं बोच्छामि आणुपुव्वीए ॥८३॥

भिसगादिउवेसणयं वासारत्ते उ पाणदयहेतुं।
वेहासट्ठा घिप्पइ तं चिय सावंगपस्सवर्ण ॥८४॥

विस्समणट्ठा थेराण घेप्पती।दा।एत्तो बोच्छ सेज्जं तु
सेज्जा संथारो या एगट्ठं होति णायव्वं ॥८५॥

सव्वंगिया व सिज्जा होति असव्वंगितो तु संथारो।
एगंगिअ णेगंगी परिसाडी अपरिसाडी य ॥८६॥

एतोसिं सव्वेसिं अट्ठहिं दारेहिं मग्गणा होति।
पिंडणिज्जुतिगमेण णेयं जहसंभवं सव्वं।दा ८७

णिसियणहेतु णिसेज्जा रयहरणपमाणओ गहेयव्वा।
किं पुण घिप्पइ साहू भण्णति सुण कारणमिमेहिं ॥८८॥

पुरिसे पुढावि सरकखे पच्छाकम्मे तहेव अचियत्ते।
बाउसपरिहरणाए संथारणिसेज्जणुण्णाता ॥८९॥

राजादी पञ्चद्वयो भूमीए अणंतरं णिवेसंतो ।
विष्परिणमेज्ज तेण संथारणिसेज्जणुण्णाता ॥८३८॥

मीससचित्तधराए अद्वाणणदीसु मा विराहणता ।
उण्हाए पुढवीए तेण णिसिज्जा य संथारो ॥८३९॥

एमेव य ससरक्खे सचित्ते संतरं भवे जयणा ।
सागारियं च इहरा धूलीउगगुंडियसरीरो ॥८४०॥

कज्जेण गिहिणिसेज्जागतस्स बत्थम्मि मइलिए गिहि-
णो। ओफुंसणधोवणादी कारेज्जा पच्छकम्मं तु ॥८४१॥

अचिततं वा सि भवे धूलीउगगुंडितपुते णिविद्धम्मि ।
अहवा वाउसदोसा पप्फोडिंते धुवंते वा। दा ॥८४२॥

ठाणं तिविहं भणितं उड्डनिसीयण तुयट्ट ठाणं च ।
उड्ड काउससगगो णिसीयण णिवेद्ध ठाणं च ॥८४३॥

होति तुयट्ट णिवण्णं पडिलेहपमज्जयाण कायव्वं ।
सेज्जणिसेज्जाणं वा ठाणं अहवावि ठाणं तु। दा ॥

लट्ठी आनपमाणा विलट्ठी चउरंगुलेण परिहीणा ।
दंडउ वाहुपमाणो विदंड ओकच्छगपमाणो ॥८४५॥

दुट्ठपसुसाणसावदविज्जलविसमेसुं उदयमग्गेसु ।
लट्ठी सरीररक्खा तवसंजमसाहिगा भणिता । दा ॥

चम्मपाडितलिय-खलुगवज्ञादी होज्ज चम्मगहा
तु । अथुरणपादरकखा फुडिए तह संधणट्ठादी ॥४७॥
अरिसभगंदलकच्छ उप्पतिगिल्लाति अथुरणं तु ।
दुब्बलपाए चकखू अद्वाणादीसु तलिया तु ॥४८॥
फुडियविविच्छणहंगुलिरकखट्टा खलुकासगा हांति ।
वज्ञाता उ संधणट्टा अद्वाणादीसु लिणाय । दा ॥४९॥
रज्जुमयी पोत्तमयी कंबलभयि तहय दंडकडगमयी ।
पंचविहा चिलमीण तु वणिता एम पुच्चं तु । दा ॥५०॥
उहुबद्धे रथहरणं वासावासासु पादलेहणिया ।
वड उंबरे पिलिकखू तस्स अलम्भमिम चिंचिणीया ॥
उभओ णहसंठाणा सच्चित्ताचित्तकारणा मसिणा ।
सच्चित्तेगेण फुसे पासेणेगेण अच्चित्तं । दा ॥५२॥
कण्णाण सोहणं पुण कण्णाण मलेण संचिणं तु ।
दुकखेज्ज जस्स कण्णा न सुणेज्ज व सो तु गिणहेज्जा
। दा ॥५३॥

पविरलदंतो थेरो सित्थादीणं तु दंतलग्गाणं ।
लेवाड अरतिसारिय रकखट्टा गिणह सोहणयं । दा ॥५४॥
अद्वाणोमादीसुं पिष्पलतो विकरणट्ट कंदाणं ।
माणाहिगवत्थादी पगासमुहभाणकरणट्टा । दा ॥

जुणाण संधर्णद्वा सूई णखसिव्वणं तु कंटाणं ।
उद्धरणद्वा णहाण य छेदणहेतुं गहेयव्वं । दा ॥८५६॥
उच्चारमत्तगादी अणोऽवि य बहुविहप्पगारो तु ।
ओवगगहिओ भणिओ उवगगहद्वा महाणस्स ॥८५७॥
सब्बोऽवि एस उवघाय दोस परिवज्जिओ धरेयव्वो ।
वीसतिधा उवघातो तस्स इमो होति णायव्वो ॥८५८॥
उगम उप्पायण एसणा य पडिभ्लभणा य परिहरणा ।
अचियत्त वतीयारे तहेव परियद्वणा विहिया ॥८५९॥
उगमम्मि य अणाते पामिचे य पवाहणे ।
तेरिच्छया हया चेव नदा तेणाहडेति या ॥८६०॥
अणाणोवहडे चेव मालोहड अरक्षियए ।
क्षते य कारिते चेव बंधणे य विराहणे ॥८६१॥
विवणकरणे चेव एमेता पडिवत्तिओ ।
ऐ पत्तेय उवघाता उवहिस्स तु वीसति ॥८६२॥
उगमेण तु अस्सुखं तहा उप्पायणेसणा ।
उवहिं उवहतं जाणे वोच्छामि परिकम्मणे ॥८६३॥
परिकम्मे चउभंगो कारणे विहि वीतिओ
कारणे अविही ।
(तहओ) णिक्कारणम्मि य विही चउत्थ
णिक्कारणेऽविही ॥८६४॥

गगरदंडी वेलतिग खीलगमादी य होति अविहीउ।
 णिक्कारणाम्मि तीय तु परिकम्मे तम्मि उवघातो ॥८५॥
 भाणस्स वि परिकम्मं णिम्मोयण लेव सिव्वणादीय।
 णिक्कारणमविहीए कुणमाणे होति उवघातो । दा ॥८६॥
 अबिंभतरं च बाहिं बाहिं अबिंभतरं करेमाणो ।
 परिभोगविवचासे उवघातो होति णायव्वो । दा ॥८७॥
 णियगोवाहिपरिभोगं समणुणणाणं ण देति कज्जम्मि।
 जो भंडमच्छरीयत्तणेण उवहिस्स उवघातो ॥८८॥
 वतियारे पडिहारियवत्थं पादं च जो गहेऊणं ।
 पुणेवि तम्मि काले अणपुच्छ धरेत उवघातो ॥८९॥
 लोइय लोउत्तरियं परियद्विय जो तु गिणहती उवहीं।
 उगगमदोस असुद्धं च उवहतं तं तु णायव्वं ॥९०॥
 अणणगणमागतस्स तु जस्स उ उवहिस्स उगगमो ण
 णज्जे । सोऊणं परिभुंजति उप्पायंते य णायम्मि ।
 दा ॥९१॥

पामिच्चं उज्जयगं उच्छिणं चेव होति णायव्वं ।
 लोइय लोउत्तरियं तु उवहतं तं वियाणाहि ॥९२॥
 अणणवहंते असंते दिणे साहुस्स अणण जदि वाहे ।
 तं तु पवाहणदोसा उवही तू उवहतं जाणे ॥९३॥

सुणणा वानरेण व जह रूवगमादि हरितुमाणीतं ।
 दिज्जन्मदिज्जं वा गेणहंतं उवहतं जाणे ॥८७४॥
 अणाणोवहतो खलु वत्थादि अकप्पिणण जो गहिओ
 दा। मालोहडो तु उवही ओलइआ जो तु वेहासा ८७५
 अणरक्खिउत्ति सुणणं उवहिं मोन्तूण जो उ गच्छेज्जा
 भिक्खादीणट्राए सोऽवि य उवहिस्स उवघातो ।
 दा ॥८७६॥

सयमंव करे उवही पिसेज्जाई सोऽवि ओहतो होति ।
 दा। कारेह च अणोणं उवघातो सोवि बोधव्वो ८७७
 वंशति भिणणं अविहीभिणणं च धरेति सोवि उवघातो ।
 सुव्वणणं च दुव्वणणं करेज्ज मा तं तु हीरेज्जा ॥८७८॥
 दुव्वणणं च सुव्वणणं विभूसहेउं तु जो करेज्जाहि । दा।
 उवहि उवघात एते अहवा अणोऽविमे होंति ॥८७९॥
 पंचटु य पण्णरसा सोलस इस चेव होति ठाणाणि ।
 चतारि एकगाइं वारस वीसं च ठाणाइं ॥८८०॥
 दब्बे खेते काले भावे पुरिमे य होंति पंचेव ।
 एतेसिं पंचणहवि पर्स्वणा होति कायव्वा ॥८८१॥
 दब्बे अणलं अथिरं अधुव च तहा अधारणिज्जं च ।
 एतेसुं चउसुंपी गेणहंते भंग सोलस उ ॥८८२॥

अहवा महद्धणाइं वित्ते कले य अचित्तं जं तु ।
 भावे जहा गिलाणो भुंजे अगिलाण तह चेव ॥८८३॥
 पुरिसे असहू तु जहा सहू वि परिभुंजते तहा उवही ।
 रायादी पन्वइओ अहवा पुरिसो हवेजजाही । दा ८८४
 अहवा गारवमुच्छा अचियत्ततिरित्त बाउसत्तं च ।
 पंचेते उवहिम्मी समणेण सयाण कायव्वा । दा ८८५
 जोगमकाउमहागडे जो गेणहति अप्पसपरिकम्म वा ।
 अहवा अमगिऊण अप्पं गिणहं सपरिकम्म ॥८८६॥
 अप्पडिलेहिय गारवमुच्छविभूसा य होनि सत्तमप ।
 अचियत्ते मा मे कोवी छिव्वतुत्ती होति अट्टमप । दा ८८७
 पणरसुगगमदोसा अज्ञोयरभीसजायमेगं तु । दा ८८८
 उप्पायण सोलसगं एसणदोसा य दसगं तु । दा ८८९
 संजोयणा पमाणे इंगाले चेव होति धूमे य ।
 चत्तारि एक्कगा खलु एते ते होंति णायव्वा । दा ८९०
 बारस ठाण इमे खलु वेदणमादी तु होंति छ द्वाणा ।
 आयंकादी छचिय अधरण धरणा य उवघातो ।
 दा ॥८९०॥

बेयणवेयावचे इरियद्वाए य संजमद्वाए ।
 तह पाणवत्तियाए छट्ठुं पुण धम्मचिंताए ॥८९१॥
 आयंके उवसग्गे तितिक्खता वंभचेरगुत्तीसु ।
 पाणदयातवहेउं सरीरवोच्छेयणद्वाए ॥८९२॥

वीसं पुण पुञ्चुत्ता ते चेव य उगगमादिणो होति ।
 एते सन्वे मिलिया णउतिं खलु होति उवघाया ८९३
 आसीतं ठाणसतं जस्स विसोहीए होति उबलद्धं ।
 सो जाणती विसोहीं उवघातं वावि उवहिस्स ८९४॥
 णउतिं उवघाता खलु तत्तियमेत्तावि अणुवघातावि ।
 ए दोणिण वि मिलिता आसीतं होनि ठाणसतं ८९५॥
 एयं चिय आसीयं सयं तु ज्ञिणथेर-अज्जउवहीहिं ।
 गुणिने होइ संखा जहकमेण तु ठाणाणं ॥८९६॥
 दो चेव सहस्राहं सट्टसयं चेव जस्स उबलद्धं ।
 सो जाणती विसोहीं उवघातं वावि जिणकप्पे ८९७
 दो ठाणसहस्राहं पंचेव सयाहं होति वीसाहं ।
 सो जाणती विसोहीं उवघातं वावि थेराणं ॥८९८॥
 चत्तारि सहस्राहं पंचेव सयाहं होति पण्णाहं ।
 सो जाणती विसोहीं उवघातं चेव अज्जाणं ॥८९९॥
 एसो उ सोलसविहो अजीवकप्पो समासतो भणितो ।
 एतो अ मीसकप्पं वोच्छामि अहाणुपुञ्चीए ॥९००॥
 एतो छहिं सोलसहिय दोहिं वि निष्कज्जती य जो
 कप्पो । दुगसंजोगादीओ सन्वो सो मीसओ कप्पो ॥

पञ्चावण मुंडावण सिक्खोवद्देय भुंज संवासे ।
 एते छ णायव्वा आहारुवहादि सोलसयं ॥९०३॥

दुगसंजोगाईया सचित्तअचित्तमीसकप्पाणं ।
 पत्तेयमीसगा वि य णेयव्वा आणुपुच्चीए ॥९०४॥

पञ्चावे मुंडावे पञ्चावे चेव तह य सिक्खावे ।
 पञ्चावे उवटावे पञ्चावे चेव संभुंजे ॥९०५॥

पञ्चावे संवासे एवं मुंडावणा उवरिमेहिं ।
 णेया दुगसंजोगा एवं सेसा वि संजोगा ॥९०६॥

ति चउ पण छक्क जोगा एते सचित्त दवियकप्पमिमि ।
 पत्तेयं संजोगा एत्तो अचित्त वोच्छामि ॥९०७॥

आहारे उवहिम्मि य आहारे तह उवस्समणए य ।
 एवं जा णक्खणता आहारेण चारेज्जा ॥९०८॥

एवं अवसेसासु वि उवधादीएसु उवरि उवरिं तु ।
 णेया दुगसंजोगा जा पच्छिम सूडणहच्छेदो ॥९०९॥

एमेव सेसगा वी तियगाईया वि सञ्चवसंजोगा ।
 णेया जा सोलसगो एते पत्तेय अचित्ते ॥९१०॥

चित्तेतराण दोणहवि एत्तो संजोगतो मुणेयव्वो ।
 मीसगकप्पे णेया दुगमादी सञ्चवसंजोगा ॥९११॥

पञ्चावे आहारं पि देह पञ्चाविएवि उवहिं च ।
 पञ्चावे उवस्समणं एवं णखछेयणं जाव ॥९११॥

एतेण कमेणेवं दुग तिगमादीसु सञ्चसंजोगा ।
 णेयञ्चा जाव पच्छिम बावीसगो होइ संजोगो ९१२

एतेसिं सञ्चेसिं संखाणयणाम्मि आणणोवाओ ।
 पत्तेयमीसगाण य इमो तु कमसो मुणेयञ्चो ॥९१३॥

एगादेगुत्तरिया पदसंखपमाणओ ठवेयञ्चा ।
 गुणगार भागहारा तेसिं हेट्टा उ विवरियं । ठवणा ॥

१	५	३	४	५	६	गु०
६	५	४	३	२	१	भा०
१	६	१५	२०	१५	६	सं०
६४	१२२	२४०	१६७	६०	१२	भं०

पठमं स्तुवं गुणए भागं व हरे हवेज्ज जं लद्धं ।
 तम्मि वि पडिरासितगुणित भाइए जं भवे लद्धं ९१५

एवं ठाणे ठाणे पडिरासिय गुणियभजिय लद्धाइं ।
 एगाईसंजोगाण होंति संखप्पमाणाइं ॥९१६॥

एकाईसंजोगाण होते एवं तु लक्खणं दिष्टुं ।
 एते सञ्चे मिलिता तेसट्टुं होंति संजोगा ॥९१७॥

एकगसंजोगादिसु उप्पज्जंते उ जत्तिया भंगा ।
 तेसि संखाणयणे करणं तु इमं मुणेयव्वं ॥९१८॥

एकगसंजोगादिसु जत्तियमित्ता हवंति ठाणाउ ।
 तत्तियमेत्ता दुवगा ठावेयव्वा कमेणं तु ॥९१९॥

२।२।२।२।२।२॥ २।४।८।१६।३२।६४॥

पडिरासिय पडिरासिय अण्णोण्णेणऽबभसाहि ते
 दुयगा । जावंतिल्लं ठाणं गुणि एवं जा भवे संखा ॥९२०

एकगसंजोगादिसु एकेके भंगसंख तावङ्या ।
 स चिय एकादीहिं पुणरवि संजोग संगुणिता

।२।२।२।२।२।२॥ ॥९२१॥

पत्तेयं पत्तेयं एकगमादीण सव्वजोगाणं ।
 सा होति भंगसंखा जहकमेणं मुणेयव्वा ॥९२२॥

कह भंग भवंतेत्थं भण्णति दिक्खेज्ज अहव बहुआउ ।
 मुंडावणादि एवं दुगचउभंगादि चारणिया ॥९२३॥

पच्चयहेउं तहियं पत्थारो होइ पत्थरेयव्वो ।
 इमिणा उ लक्खणेणं तमहं वोच्छं समासेण ॥९२४॥

भंगपमाणायामो गुरुओ लहुओ य अक्खणिक्खेवो ।
 मत्ता दुगुणादुगुणो पत्थारो होति णिक्खेवो ॥९२५॥

एवं तू पत्थरिए पिच्छसु एकादिए उ संज्ञेगे ।
 जे जत्थ उ णिवडंती पच्चक्खंते तहिं सव्वो ॥९२६॥

छक्कग सोलसगाणं जीवमजीवाण दोणह कप्पाणं ।
एकगजोगादीणं संखमाणं इमं हेति ॥९२७॥

छ्वेव य पण्णरसा वीसा पण्णरस छक्क एको य ।
एकगसंजोगादी छन्दिवह सच्चित्तकप्पमिम ॥९२८॥

सोलम वीसं च सर्य पंचव सयाहं होंति सद्धाहं ।
अद्वारस वीसाहं नेयालं अटुसद्गाहं ॥९२९॥

अद्वेव महस्साहं अटुहियाहं अजीवछटुमिम ।
एकारम य सहस्सा चत्तारि सया तहा चत्ता ॥९३०॥

बारस चेव सहस्सा अद्वेव सया उ सत्तरा होंति ।
अटुमसंजोगमिम वि उक्कमतो एव जावेक्षो ॥९३१॥

सच्चित्तदवियकप्पे तेवट्ठी होंति सब्बसंजोगा ।
पंचसता पणतीसा पण्णट्ठि सुहस्स अचिते ॥९३२॥

सच्चित्तअचित्ताणं एते भणिया तु सब्बसंजोगा ।
पत्तेयं पत्तेयं एत्तो मीसाण वोच्छामि ॥९३३॥

अचित्तदब्बकप्पे संजोग पिहिप्पिहे ठवेऊणं ।
जितकप्पे (क्कग) कमसंजोगगुणित तेसिं फलमिणं तु
छणउनिं संजोगा दुगसंजोगमिम मीसए कप्पे ।
सत्तसया वीसहिंगा नियसंजोगाण बोधब्बा ॥९३५॥

तित्तीसं चेव सता सद्गहिगा तू चउक्कसंजोगे ।
 दस चेव सहस्राइं णववीसहियाइं पंचमए ॥९३६॥

छत्तीस सहस्राइं दो चेव सताइं अद्ग सहियाइं ।
 अडयालं च सहस्रा अडयाला होंति सत्तमए ॥९३७॥

अद्गद्धि सहस्राइं छच्चेव सयाइं होंति चत्तारि ।
 सत्तत्तरिं सहस्रा दो चेव सया भवे वीसा ॥९३८॥

एमेव उक्कमेण वि णवमाउ परेण हुंति बोधव्वा ।
 छणहंती जा सोले छच्चेव पदा मुणेयव्वा ॥९३९॥

एवं पण्णरस य [वीस य] वीसएण पण्णरस छक्क
 एकेण । पत्तेयं पत्तेयं गुणिएण रासिणो मुणसु ॥९४०॥

दोणिण सया चत्ताला अद्गारसया य होंति णायव्वा ।
 अद्ग सहस्रा चउसय ततिए मीसम्मि संजोगा ॥९४१॥

सत्तावीस सहस्रा तिणिण सता चेव होंति णायव्वा ।
 पण्णद्धि सहस्राइं पंचसया वीस अहिया य ॥९४२॥

एकं च सयसहस्रं वीस सहस्रा सयं च वीसहियं ।
 एककत्तारिं सहस्रा लक्खेक्को छसता चेव ॥९४३॥

एककं च सतसहस्रं तेणउइ सहस्र तहय पण्णासा ।
 उक्कमतो सत्तेव य ठाणाइं ततो य पण्णरस ॥९४४॥

तिणि सता तू वीसा दोणि सहस्राइं चउसयज्जुयाइं
 एकारस य सहस्रा दोणि सता चेव णायव्वा ९४५
 छत्तीस सहस्राइं चउरो य सता हवंति णायव्वा ।
 सत्तासीइ सहस्रा तिणि सता चेव सद्धाहिता ९४६
 एकं च सतसहस्रं सद्धि सहस्रा सयं च सद्धी य ।
 दो लक्खा अड्वीसा सहस्र अट्ठेव य सयाइं ॥९४७॥
 दो चेय सयसहस्रा सत्तावण्ण भवे सहस्राइं ।
 चउरो सय अट्ठमए ठाणा सत्तांतिमे वीसा ॥९४८॥
 जह पढमे तह पंचमे जह बीए तह चउत्थए रासी ।
 एककगगुणकारे पुण सोलसमादी तु जावेकको ९४९
 अचित्तदविए कप्पे संजोगा सब्बपिंडिता काउं ।
 जितकप्पेककादीहिं गुणिते फलरासिणो मुणसु ९५०
 तिणे व य सतसहस्रा ठाणंसहस्रा हवंति तेणउति
 दोयसया य दसहिता एककगसंजोगसंगुणिता ९५१
 णव चेव सयसहस्रा तेसीति सहस्र तहय पणुवीसा
 वियसंजोग चउक्के वि एत्तिया चेव णायव्वा ॥९५२॥
 सत्तसय दस सहस्रा तेरस लक्खा य तियगसंजोगे ।
 पंच य पढमसरिच्छा अचित्तपिंडो उ अंतिमए ९५३

जियपिंडेणं पिंडो अजीवकप्पस्स संगुणो णियमा ।
सो होति दब्वपिंडो तस्स उ संखा इमा होति ॥१५४॥

ईयालसतसहस्रा अट्टावीसं भवे सहस्राहं ।
सत्तसया पंचसहिया ठाणाणं मीसकप्पमिम ॥१५५॥

जियअजियमीसगाणं कप्पाणणे वि भंगसंजोगा ।
पत्तेयमीसगा वि य णेयद्वा आणुपुद्वीए ॥१५६॥

पद्वावेक्षो एकं एको अणेगा अणेग एकं च ।
णेगाणेगे य तहा चउभंगा एव एकेगे ॥१५७॥

एवं एकं एकसि एकमणेगेऽवि एत्थ वि तहेव ।
चउभंगो णेयद्वो एकेक्षे छणह तु पंदाणं ॥१५८॥

एकेककसि पद्वावे मुडावेकं तु एककसिं चेव ।
एत्थ उ दुगसंजोगो चउभंगो होति णायद्वो ॥१५९॥

एवं दुततिय-चउपंच-छक्कजोएर्हि जत्तिया जे तृ ।
संजोगा भंगाया ने सव्वे होन्ति णेयद्वा ॥१६०॥

पद्वावे मुंडेगं पद्वावेगं च मुंडणेगे य ।
णेगे एकं च तहा णेगाणेगे य एमेव ॥१६१॥

एमेव सेसगावी दुगतिग-चउपंच-छक्क-संजोगां ।
बुद्धीएऽणुगंतव्वा सव्वेवि जहक्कमेण तु ॥१६२॥

अचिन्ते विय एवं एकको एककस्स देति आहारं ।
एवं उवहीमादिसु सब्बेसु वि होन्ति चउ भंगा ॥९६३॥

दुगमादी संजोगा एत्थंपि तहेव हुंति विण्णेया ।
एमेवेकको एककसि आहारादीणि देजज्ञाहि ॥९६४॥

एवं दुगमादीया णेया एत्थंपि सब्बसंजोगा ।
एवं ता अचिन्ते मीसेऽविय बुद्धिए जोए ॥९६५॥

(एकको पञ्चावेककं आहारादी य देति एत्थवितहेव ।
संजोगा णेयव्वा जावतिया संभवे तत्थ)

एसोतु दवियकप्पो तिविहो वि समासतो समक्खाओ
एत्तो समासतोऽहं वौच्छाभी खित्तकप्पं तु ॥९६६॥

जं देवलोगसरिसं खित्तं णिप्पच्चवाइयं जं च ।
एसो तु खेत्तकप्पो देसा खलु अद्वलव्वीसं ॥९६७॥

गथगिह मगह चंपा अंगा तंह तामलित्ति बंगा य ।
कंचणपुरं कलिंगा वाणारसि चेव कासी य ॥९६८॥

साएय कोसला गजपुरं च कुरु सोरियं कुसट्टा य ।
कंपिलुं पंचाला अहित्ता जंगला चेव ॥९६९॥

बारवती य सुरट्टा भहिल विदेहा य वच्छ कोसंबी ।
णंदिपुरं संदिल्ला भदिलपुरमेव भलया य ॥९७०॥

वयराड वच्छ वरणा अच्छा तह मत्तियावति दसणा।
सोन्तियमती य चेती वीतभयं सिंधुसोवीरा ॥९७१॥

महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य सामपुरि बट्ठा।
सावत्थी य कुणाला कोडीवरिसं च लाढा य ॥९७२॥

सेयविया वि य णगरी केततिअद्वं च आरियं भणितं।
जतथुप्पात्ति जिणाणं चक्कीणं रामकण्हाणं ॥९७३॥

एतेसु विहरियव्वं खेतेसुं साहुभाविएसुं तु ।
जतथ य गुणा इमे तू खेमाईया मुणेयव्वा ॥९७४॥

खेमो सिवो सुभिकखो अप्पप्पाणो उवस्सयमणुण्णो।
एसो तु खेत्तकप्पो (पासंडखेदमुक्को) गामणगर-
पट्टणाइण्णो ॥९७५॥

खेमो डमरविरहितो रोगासिवविरहितो सिवो होति।
पउरण्णपाणदेसो होइ सुभिकखो मुणेयव्वो । दा ९७६

जल्दगा-संखण-मूङ्गपिसुगमसगादिविरहितो जो तु ।
सो होति अप्पपाणो अप्प अभावम्मि थेवे य । दा ९७७

समभूमि-रेणुवज्जिय-रितुक्खमोवस्सया मणुण्णाओ ।
गामणगरा वि य बहू पाउग्गा मासकप्पस्स ॥९७८॥

सज्जणज्जणो य भद्दो जहियं च मणुण्णसाहुजोणीओ
तारिसए खेत्तंमी समणुण्णातो विहारो तु । दा ॥९७९॥

खेमो य सिवो य तहा खेमो सुभिक्खो य एव संजोगा
गेयन्व छसु पदेसुं सत्तसु वा आणुपुन्वीए ॥९८०॥
अहवोदयगिसावदतकर-वालभयविवजिजओ
रमो । णिरवेक्खोवि वि य जहियं समणशुणविदू य
जत्थ जणो ॥९८१॥

एताणि चेव खेमाइयाणि आरीयखेत्तसाहियाणि ।
पुब्बभणियाणि जाणि तु ताइं खलु सत्त उ हवंति ॥
णाणस्स दंसणस्स य चरणस्स य जत्थ णत्थिउवधातो
एसो तु खेत्तकप्पो जहियं च अणायणा णत्थि ९८३॥
उदगभयवुज्ज्ञणादी जह कोंकण-सिंधु-नामलित्तादी ।
णत्थि जहिं अग्गिभयं निराग्गिसाहम्मयगिहा वा ॥
जहियं च सावयभयं सीहादीणं ण विज्जए देसे ।
जहियं च णत्थि चोरा देहुवही-पंथमोसादी ॥९८५॥
वाला उ सप्प गोणसमादी । दां । बोहिगभयं च णत्थि
जहिं । मणसो समाहिकारो सो रम्मो होति णायन्वो ॥
सूरी अणणणगम्मो जत्थ णरिंदो तहिं सुहविहारं ।
साहुगुणे य वियाणति कुणनि य साहृण जो रक्खं ।
दा ॥९८६॥
अहिरण्णसुवण्णेते छज्जीवणिकायसंजमे णिरता ।
जाणति जणो य एवं जत्थ तु साहृण गुणणिहसं । दा ॥

सज्ज्ञाओ जहि सुज्ज्ञति । दा । कुदिट्ठिगिणो ण या
वि जो होति । एसण इत्थी सोही य जत्थ तहियं
णिवासो तु । दा ॥१८९॥

जहितं च अणायतणा न संति के पुण अणातणा
भणिया । साहम्मिभन्नचित्ता मूलत्तरदोसपडिसेवी
एतेहिं जो देसो आइन्नो तह य अन्नतित्थीहिं ।
मच्छङ्घवाहगामा पुलिंददेसा अणायतणा ॥१९०॥
एतारिसम्म खेते अप्पडिबद्धेण विहरियब्बं तु ।
आलंबणाइं केइ तु इमाणि काउं ण विहरंती ॥१९१॥

वसही संथारो भत्त पाण वत्थे पडिगगहे सेहा ।
सङ्घाय पुव्वसंथुय असहहंते य पडिबंधो ॥१९२॥

फासुया एसणिडजा य णिवाया य रितुकखमा ।
एरिसा साहुपाउग्गा वसही दुल्लभडण्णहिं । दा १९३॥

एमेव य संथारा कंबलदब्भादिवत्थुनिष्फन्ना ।
सयणासणा य जहियं सुलभा जोग्गा य साहूणं । दा ।

भत्त सुलभमणुण्णं च एरिसं णत्थ अण्णहिं तत्थ ।
जंगिय-भंगियमादी न हु सुलभा अन्नहिं वत्था १९५॥

पडिगहगावि य सुलभा सेहा यणणत्थ णत्थ खेत्तम्म
अण्णत्थ दुलभा त् तेण तु एत्थं बहुगुणं तु । दा ॥१९६॥

सङ्घा आहारादी दिंति य जोगगाणि संथुता चेव ।
पुरपच्छे दिडभट्ठा य अण्णहिं णत्थि एरिसगा । दा ॥

उद्गवद्भु-मामकप्पेण विहारो तं ण सद्दह इमेहिं ।
संजमआतविराहण वच्चंते गाम अणुगामं ॥१११॥

णाणादीण य हाणी जोगं खेत्तं तु मग्गमाणाणं ।
खेत्ताओवि य खेत्तं संकममाणे धुवमसज्ज्ञाओ १०००

जेणीयत्ते दोसा मासंते परिवसेण ते चेव ।
एवं मासविहोर मण्णंतो बहुविहे दोसे ॥१००१॥

णो सद्दहति विहारं तेण तु ण विहरेति तस्स आणादी ।
मासोवरिं च लहुओ णीयावासे य जे दोसा ॥१००२॥

ते सो पावति सब्बे एतेहालंबणेहिं अच्छंतो ।
किं पांनेणेवं ण विसेसो भण्णती सुणसु ॥१००३॥

णिक्कारणम्मि एवं पडिबंधो कारणम्मि णिहोसो ।
ते चेव अजयणाए पुणो वि सो पावती दोसे १००४॥

कणि पुण कारणाइं जेहिं चिट्ठेज्ज एगठाणम्मि ।
भण्णति पुञ्चुहिद्धा जे खेमसिवादिया दारा १००५॥

तेसि चिय पडिवकखा अकर्वेम असिवतहय दुष्भ-
क्खं । बहुपाणुवस्सओ वा अमणुण्णो जो तु दयमादी ॥

एतेहि कारणेहि एगद्वाणमिम अच्छमाणा उ ।
जदि जयण ण कुब्बंती तोच्चिय णिययादिया दोसा ॥

का पुण जयणा तहियं भणणाति तेहि कारणेहि उ
द्वितस्म । अण्णउवस्सयभिकखादिया तु जयणा मुणे-
यव्वा ॥१००८॥

अकखेममादिएसु वि अकखेत्तेसुं तु कारणवसेण ।
चिट्ठंताणं तू तहियं इमा तु जयणा मुणेयव्वा १००९

अकखेमे वि सति पुरं संबद्धं वावि आसयंती उ ।
अकखेमं च अण्णत्थ तहिं खेमं तो ण णिगच्छे । दा ॥

जइ असिवं तु बहिद्वा ताहे अच्छंति ते तहि चेव ।
दुष्टिभकखे वि ण णींतिय य अहवा सव्वत्थ दुष्टिभकखं

दुष्टिभकखे जयण तहियं अच्छंते वावि जयण तह चेव ।
बहुपाणे आउत्ता चंकम्मंते तु जयणाए ॥१०१३॥

उवस्सएवि आउत्ता कुडमुहभूतीतवावि लकखंति ।
अण्णाए वसहीए ठंति पमज्जति य अभिकखं । दा ॥

जा जत्थ जयण झुज्जति अमणुणे उवस्सयमिम तं
कुज्जा । कयवरसोहणमादी दुरगंधे गंधपकिरंती ।
दा ॥१०१४॥

उदगभए थलगामे थले च वसही तहिं तु गिणहंति ।
 अग्निभए यालबद्धे हम्मियतलगम्मि व वसंति ॥

रोगवहुते अ वत्थाणि वज्जए चोरकिणि ण तु विहरे ।
 सत्यंण याचि गच्छे ठायंति व जत्थ निरवायं । दा ॥

जहियं मावयदोसा तहियं एगाणितो ण गच्छेज्जा ।
 गेण्ह वसहिं च गुत्तं गामसस तु भज्ञश्याराम्मि । दा ॥

विज्जामनादीहिं वाले णीणेति रानो णवि गच्छे ।
 दा। रायं य पण्णविंती साहुगुणभजाणमाणं तु १०१८

जत्थ जणो णवि जाणति साहुगुणे तहिं कहंति साहु-
 गुणे । दा। परिभोग अकालम्मी रक्ति कुञ्चवंति
 सज्जायं । दा ॥१०१९॥

दूरेण कुत्तित्थीए वज्जेती । दा। एसणं च पण्णवए ।
 कुलडा इत्थी चरियाइया य वज्जंति चरणट्टा १०२०

वज्जेज्ज अणायतणा णाणादीणं च जत्थ उवधातो ।
 एवं जहसंभवं तं करेज्ज जयणं णिवसमाणो । दा ॥

एसो तु खेत्तकप्पो उस्सगगववायसंजुनो भणिओ ।
 एतो उ कालकप्पं चोच्छामि जहकमेणं तु ॥१०२६॥

मासं पज्जोस्सवणा बुड्डावास परियायकप्पो य ।
 उस्सगगपडिक्कमणे किनिकम्मै चेव पाडिलेहा ॥१०२३॥

सज्ज्ञायज्ज्ञाणभिक्खे भक्तवियारे तहेव सज्ज्ञाए ।
णिक्खमणे य पवेसे एसा खलु कालकप्पविही ॥

पुब्वं तु मासकप्पो पर्खवितो सो णिसीहणामम्मि ।
णवर्दिं तु इहारुवणा वणिणज्जन्ति मास अतिरेगे १०२५
मासातीतं वसतो वसतीए तीए चेव मासलहुं ।
तह भिक्खायरियाए वीयारे तह विहारे य ॥१०२६॥

परिसाडी संथारे सञ्चेसेतेसु होति मासलहुं ।
चक्षारि य उवधाता संथारे अपरिसाडिम्मि ॥१०२७॥
पंचेते मासिया खलु चाउम्मासं च मिलिय सञ्चेते ।
णवमास मासऽतीए उद्दुबद्धे संवसंतस्स । दा १०२८॥

लहुगा तु वासतीते वसतीए सेस होंति ते चेव ।
भिक्खायरियादीसुं जे भणिता मासतीतम्मि । दा ॥
आरोवणा उ एसा कालदुवे वणिणता अणिंताण ।
एत्तो पञ्जोसवणासामायारिं पवक्खामि ॥१०३०॥

पेहेत्तु वासजोग्गं वहिया अच्छंति वा सुदिक्खंता ।
जे अंतरा उ गिणहे तं सञ्चवं तेसि खेत्तीण ॥१०३१॥
अह पुण वच्चंताणं वासाजोग्गं तु अंतरावासं ।
आरद्धडहरगामे ण पहुच्वनि एगवमहीय ॥१०३२॥

अणोण्णसुट्टिताणं वहवो मागारिया ण नीरंति ।
 परिहरितुं नाहे वज्जे गुरु मागारियं णवरि एकं १०३३
 अविमेस समायारी पज्जोसवणाए वणिणय णिसीहे ।
 सच्चेव णिरवसेसा इमम्मि दारम्मि णायव्वा १०३४
 बुड्हस्म तु जो वासो वड्ही व गतो तु कारणेण तु ।
 एसो तु बुड्हवासो नस्म तु कालो इमो होति १०३५
 अनोमुहुत्तकालं जहण्णमुकोस पुन्वकोडी तु ।
 मोत्तुं गिहिपरियां जं जस्म व आउगं तित्थे १०३६
 मरणे अनमुहुत्तो देसूणा पुन्वकोडि कह होज्जा ? ।
 जो नश्णो चिय समणो असमत्थो विहरितुं जानो ॥
 कदा-विज्जा चरियं लाघवेण तवस्सी, नत्तो तवो देसि-
 तो मिद्विमग्गो । अहाविहिं संजम पालइत्ता दीहाउसो
 बुड्हवासस्म कालो ॥१०३८॥
 विज्जा तु वारमंगं करणं नस्म गहणं मुणेयव्वं ।
 सुतं थार समाओ नत्तियमेत्ता य अन्थे वि । दा १०३९
 यित्तुं सुत्तत्थाहं थार समा देसदंसणं च कतं ।
 चरियं भेतेगद्धं लाघविएणं तु निविहेणं ॥१०४०॥
 उवकरण सरीरिदिय एवं तिविहं तु लाघवं होति ।
 उवकरण इरत्तदुडो धरेति ण य गिणहए अहियं १०४१

संघयणधितीजुत्तो अकिसो ण तु थूरदेहसारीरो । दा
 वस्त्रिसंदिओ तवस्सी । दा । चउत्थमादी तवो चिन्नो॥
 कुब्बवंतेण अछित्ति णाणादी देसिओत्ति मोक्खपहो ।
 दा । सुत्तत्थुवदेसेणं संजमियं संजमेणं च । दा १०४३
 काजण अबोछित्ति बारस वासाइं णिच्चमुज्जुत्तो ।
 दीहाउत्तो तु सूरी पाँडवज्जेन्मुज्जयविहारं ॥१०४४॥
 अबमुज्जयमचयतो अगीयमीसो व गच्छपडिबद्धो ।
 अच्छति जुण्णमहळो कारणतो वावि अन्नोवि १०४५
 जंघाबले व खीणे गेलणे सहायतो व दोबळे ।
 अहवावि उत्तमटुं णिप्फत्ती चेव तरुणाणं ॥१०४६॥
 खेत्ताणं च अलंभे कयसंलेहे व तरुणपरिकम्मे ।
 एतेहिं कारणेहिं बुड्ढावासं वियाणाहि ॥१०४७॥
 केवतियं तु वयंतो खेत्तं कालेण विहरितुं अरिहो ।
 केवातियं अणरिहो (अचयंतो) बलहीणो बुड्ढावासी
 तु ॥१०४८॥

दुन्नि वि दाजण दुवे सुत्तं दाजण सुत्तवज्जं च ।
 एवं दिवड्डमेगं अणुकंपादीसु वी जतणा ॥१०४९॥
 दोणिवि सुत्तत्थाइं दुवेन्नि जो जाति गाउए दोन्नि ।
 जाव तु भिक्खावेला एस तु सपरक्मो थेरो १०५०॥

एमेव अदाऊणं अत्थं अहवा अदातु दोणिं वि तु ।
दो गाउयाइं दोणणी पुण्णाए भिक्खवेलाए ॥१०५१॥

एवं दिवङ्गमेगं च गाउयं तिन्नि होति एकेके ।
गमया तु मुणेयव्वा विहरण अरिहो स थेरो तु १०५२॥

एस सपरक्कमो तू जो पुण दाऊण उभयसुत्तं वा ।
गच्छेज्ज अद्वगाउय सपरक्कमो होति एसोवि १०५३॥

सब्बेते विहरंति एतेसु दुगाउयं दिवङ्गं वा ।
ज्ञे जंति गाउयं चिय तिण्हं पेतेसि बुझ्दाणं ॥१०५४॥

ज्ञेवि य गाउयमङ्गं उभयं सुत्तं च दातु गच्छति ।
तेसणुकंपा तु इमा कायव्वा होति तिविहाओ १०५५

विस्सामण उवकरणे भन्ते पाणे अ लंबणे चेव ।
तं च विजाणति कालं गंतुं वा एति जो जत्थ १०५६

जयणा सुद्वालंभे पणगादी सा तु होति णायव्वा ।
अपरक्कमं तु थेरं एत्तो वोच्छं समासेण ॥१०५७॥

खेतं तु अद्वगाउय कालेणं जाव होनि दिवसो उ ।
खेतेण य कालेण य जाणसु अपरक्कमं थेरं ॥१०५८॥

अणो जस्स ण जायति दोसो देहस्स जाव भज्जणहो ।
सो विहरति सेसो पुण अच्छति मा दोणहवि क्षिलेसो ॥

भमो वा पित्तमुच्छा वा उद्दसासो व खुब्भति ।
 गतिविरिए विऽसंतम्मि एवमादी ण रीयति ॥१०५०॥
 गच्छपरिमाणतो तू सहायगा तस्स होंति कायव्वा।
 सत्तेव जहणेण तेण परं होंति णेगावि ॥१०५१॥
 चउभागतिभागद्वे सब्बेसिं गच्छतो परीमाणं ।
 संतासंतअसंती बुद्धावासं वियाणाहि ॥१०५२॥
 अट्टावीसं जहणेण उक्कोसेण संतगगसो ।
 गच्छं गच्छं समासज्ज चउभागादी विभायए १०५३
 जह होंति अट्टावीसं चउहा गच्छो उ तो विभज्जतितु
 सत्त उ चउभागेण ते दिज्जंती सहाया उ ॥१०५४॥
 पुण्णम्मि मासे तो णिंती सत्त अण्णे उवेंति उ ।
 एवं अर्तिंति णिंति य मास मासम्मि सत्त उ १०५५॥
 एवं दोसा ण होंती तु उवट्टावणादि जे भवे ।
 तेण तु अट्टावीसाए चउभागा विभज्जिता ॥१०५६॥
 अट्टावीसं ऊणा दुहासतीए उ ते हवेज्जाहि ।
 संता असती अगीया बाला बुद्धा अजोगगा वा १०५७
 असंता सतीण पुज्जंति ततिया तेण तिणिणदुणिङ्को।
 भागा उ विभद्धयव्वा हगवीसा चोहसत्तणह ॥१०५८

दो संघाड अड़नी भिक्खं एको य गेणहए उबहिं ।
 ऐर दुवेणीणे सत्तासु जयणेसालित्त (भिक्ख) मादीसु
 बुझवासे जगणा खेत्ते काले वसहीय संथारे ।
 खित्तमिमि णवगमादी हाणी जावेकभागो तु ॥१०७०॥
 धीरा कालच्छेदं करेन्ति अपरक्मा तहिं थेरा ।
 कालं च अविवरीयं करिंति तिविहा तहिं जयणा १०७१
 कालच्छेदो मासं अण्णा वसही तु भिक्खमादीणि ।
 अद्दसु उडुबद्धेमुं चउमासे सेल्लवासासु ॥१०७२॥
 कालं अविवरीयं उडुबद्धे वासवासियं ण करे ।
 वासावासे य तहा उडुबद्धं वावि ण करिंति ॥१०७३॥
 तिविहजयणेत्ति इणमो तिविहणुकंपा तु होइ बुझदस्स।
 जह कायन्वा इणमो तमहं वोच्छं समासेण ॥१०७४॥
 आहारे जयणा बुत्ता तस्स जोगे य पाणए ।
 णियया मउया चेव ल्लविताणेसणादिसु । कालदारं गतं
 काणिटपां आमे पिंडघरे चेव तह य दारुघरे ।
 कडगे कडगलणघरे वोच्छत्ये होंति चउ गुरुगा ।
 कोटिष्ठं वधंतो आलित्तमिमि ण छुझ्यए नेण ।
 काणिटगादिगहणं रक्खइ य णिवातवसही तु १०७७

वसहि णिवेसण साही दूराणयणम्मि जो उ पाउगो।
असती य पडिहारि मंगलकरणम्मि णीणति ।
वसहिति दारं गतं ॥१०७६॥

वसही य अहासंथड चंपगपटो व चम्मरुक्खो वा ।
थिरमउओ संथारो असतीय णिवेसणा ठाणे ॥१०७७॥

असतीइ साहि वागड सग्गामे चेव तह य परगामे ।
कोसद्ध जोयणादी बत्तीसं जोयणा जाव ॥१०८०॥

थिर मउओ अपडिहारी घेत्तब्बो तस्स असति पडि-
हारी । पिउपज्जयादिफलगं मंगलबुद्धी धेरे जं तु १०८१
केइ गिहत्था तं उस्सवाहि अच्चिन्ति ण परिभुंजन्ति ।
तं पणइया तु गिहिणो विंति य एअम्ह मंगलं १०८२
देज्जह नवर छणम्मि अच्चियमाहितं पुणोवि णेज्जाह ।
तं घेत्तूणं फलगं उस्सवदिवसम्मि पेसन्ति ॥१०८३॥

पुण्णंमि अपिपणंती अण्णस्स व बुड्ढवासिणो देंति ।
मोत्तूण बुड्ढवासं आवज्जति चतुलह सेसे ॥१०८४॥

पडियरति गिलाणं वा सयं गिलाणो वि तत्थ वि तहेवा
दा । भावियकुलेसु अच्छति असहाए रीयओ दोसा ।
दा ॥१०८५॥

ओमादी तवसा वा अचएंतो दुब्बलोवि एमेवः दा ।
पडिवन्न उत्तिमझे पडियरगा वावि नण्णिस्सा १०८६

तरुणाणं णिष्फक्ती आततरे चेव होति णायद्वो ।
कालियसुय दिट्ठिवाए तेसिं कालोऽयसुक्षोसो १०८७॥
संवच्छरं व झरए बारसवासाइ कालियसुयस्स ।
सोलस य दिट्ठिवाए एसो उक्षोसतो कालो ॥१०८८॥
बारसवासं गहियं तु कालियं झरति वरिसमेगं तु ।
सोलस भूतावाते गहणं झरणं दस दुवे य ॥१०८९॥
गहणझरण कालियसुते पुव्वगते जदि एत्तिओ कालो ।
आयारकप्पणामे कालच्छेदो तु कतरेसिं ? ॥१०९०॥
आयारकप्पणामं णिसीहं तत्थ मासमुद्गवद्वे ।
वासासु चउभ्मासं एसो कालो तु कतरेसिं ॥१०९१॥
भणिओ थेरेणिस्साणेणं कारणजातेण एत्तिओ कालो
अज्ञाणं पणगं पुण णवगग्गहणं तु सेसाणं ॥१०९२॥
णिम्मवणट्टा एतेसिं चेव एवं तु कारणज्जायं ।
जेहि उ गुणेहिं जुत्ता दिज्जंते ते इमे होंति ॥१०९३॥
जे गिणिहउ धारयिउं च जोग्गा, थेराण ते दिन्ति बिह-
ज्जए तु । गिणहंति तट्टाणठिया सुहेण, किच्चं च थेरसस
कारिंति सव्वं ॥१०९४॥

जह चेव उत्तिमटे कनसंलेहस्स ठाति एमेव । दा ।
 नरुणपडिकमं पुण रोगविमुक्ते बलविवड्डी । दा १०९६
 बुड्डावासातीए कालादी नेण उगगहो निविहो ।
 आलंबणे विमुद्धो उगगहो तक्कज्ज बोच्छेओ १०९७
 जं कारण बुड्डिगतो वासो तहिं कारणे अतीयम्मि ।
 मतिपडिभग्गा जे उ आयरिए उगगहो णत्थि १०९८
 दुविहेवि कालतीते मास चउम्मास उगगहो निविहो ।
 सचित्तादी छिणणे आलंबणे तम्मि छिणणम्मि १०९९
 कारणसमत्ति पुरओ जो अच्छति उगगहे तहिं होति ।
 सचित्तादी निविहं ण तस्म तहियं इमं णातं ॥ ११०० ॥
 आगासकुच्छिपूरो उगगहपडिसेहियम्मि जो कालो ।
 ण हु होति उगगहो सो कालदुगे वा अणुण्णा ओ ११०१
 जह णाम कोइ पुरिसो छाओ आकासकुच्छि पूरिच्छे ।
 ण हु होनि सोवि नित्तो अमुत्तता उवणओ एवं ११०२
 कालदुविति अणुण्णा गिम्हाए जत्थ चरममासो कओ
 अणणक्खेत्तःसतीए तत्थठियाणोगगहो होति ११०३ ॥
 एमेव वासनीते दसराया तिणिण जाव उक्कोसो ।
 वासणिमित्तठिताणं उगगहो छम्मास उक्कोसो ११०४

तक्षजस्ममत्तीए वि रायदुष्टपरचक्ष असिवादी ।
एतेहिं कारणेहिं तु उग्गहो होति तीते वि ॥११०५॥

एतेमु उग्गहेसु आभवणभवविचित्त भाणिए सा ।
अयमण्णो तु पगारो आभवमणाभवंते य ॥११०६॥

मुहसीलणुकंपातट्टिए य संबंधिखवगगेलणे ।
सचित्ते सासिहाए पड्टिए धारणदिसासु ॥११०७॥

तणुयंपि णेचछए दुकखं सुहं वा कंखनी सदा ।
मुहसीलो एस अकखाओ सातागारवणिसितो ॥११०८॥

मुहसीलयाए सेहं कोई पेसेज्ज अण्णसाहूणं ।
पलिमंथं मण्णांतो दुकखं खू सारवेउं जे ॥११०९॥

असहायस्म व देज्जा कोई अणुकंपथाए सेहं तु ।
आयट्टिण व कोई पेसिज्जा धम्मसद्वाए ॥१११०॥

दिज्जा सिणेहओ वा संबंधी अस्स कोइ सचित्तं ।
खमणो सयं व होज्जा खवगस्म व पेसवेज्जाहि ॥११११॥

देह व गिलाणगस्सा वेयावच्छन्नाए असहाए ।
अहवा सयं गिलाणो अवएंतो सारवेउं जे ॥१११२॥

पेसितस्म उ असिहो ससिहो आसि पुण जस्स पेसिओ
तस्स । एवं असंधरेणवि पेसियओ जह गिलाणेण ॥

कह दातु पुणो मग्गति जम्हा सो अप्पभू तु णाणसस।
 तम्हा तस्सायरिओ मग्गति सेज्जंतियादी वा ॥११४॥
 अहवा जाहे सयं चिय सो सेहो जाओ होति गीयत्थो।
 तो जाणति आभव्वो अहयं पुच्छिल्लयाणं तु । दा ॥११५॥
 उड्हवासवुड्हवासे एसो भणितो तु कालकप्पविही।
 परियायकालकप्पं एत्तो बोच्छं समासेण ॥११६॥
 को राइणितो होती? को वावी होति ओमराइणिओ?।
 भण्णति सुणसु विसेसं रायणिय ओमराईणं ॥११७॥
 संजमसेढीअंतो जो उ ठितो सो भवे हु रायणिओ।
 जो बाहिं सो ओमो एवं अतिसेसिता जाणे ॥११८॥
 तम्हा छउमत्थाणं जो पुच्चं ठावितो वएसुं तु ।
 सो होति रायणिओ जो पच्छा सो भवे ओमो ॥११९॥
 सामइयसंजयाणवि सामाइयं जस्स पुच्चमुच्चरियं ।
 सो होती रायणिओ इतरो ओमो मुणेयद्वौ ।
 परियागकप्पत्ति गतं ॥१२०॥
 अद्दुस्सास जहन्नो काउस्सग्गो उ होति बोधव्वो ।
 अड्हसहस्रुक्कोसो अहवा संवच्छरं वावि । दा ॥१२१॥
 पडिकमणं देसिय राइय पक्खिय चउमासि तहय
 वरिसे य । एतेसिं वक्खाणं पुच्चं आवस्सए भणितं ॥

किनिकम्भं कायब्बं काहे कनि वावि होतऽहोरते ? ।
एतेसिं पाणत्तं वोच्छामि अहाणुपुब्बीए ॥११२३॥

पडिकभणे मज्ज्ञाए काउम्भग्गावराह पाहुणए ।
आलोयण संवरणे उत्तिम्भु य वंदणये ॥११२४॥

चत्तारि य पडिकभणे किइकम्भा निणिण होति सज्ज्ञाए
पुब्बंहे अवरणहे किइकम्भा चोइस हवंति ॥११२५॥

सुरुग्गमे जिणाणं पडिलेहणियाए आढवणकालो ।
धेराणऽणुग्गयंभी उवहिणा सो तुलेयब्बो । दारं ११२६
पदमचरिमासु णियमा सज्ज्ञाओ पोरुसीसु दियराओ
शाणं तु अत्थपोरुसि चितियाए तं तु दिवसस्स ।
दारं ॥११२७॥

ततियाए पोरुसीए भिक्खवग्गहणं तु होति कातव्वं ।
सेसं च पमाणादी होइ इमं त् समासेणं ॥११२८॥

एमाणे काले आवस्सए य संघाडेय उवकरणे ।
मत्तग्काउस्सगे जस्स य जोगो सपडिवक्खो ॥११२९॥

भत्टटाणं पि ओहे जह भणितं तहेव होइ एत्थंपि ।
एङ्क वेलं भत्तं रत्तिं च ण कप्पते भोत्तुं । दारं ॥११३०॥

कालस्स पडिक्कमिउं मज्ज्ञप्पहे ताहे होति गंतव्वं ।
वीयारं भोत्तूण व सेस अकालो उ वीयारे । दारं ११३१

चउ संझासु ण कप्पति सज्ज्ञाओ तासिमं तु कायबं।
 पुव्वावरासु दोसु वि काउस्सग्गट्टिता झन्ति ॥११३॥
 दिणमज्ज्ञाए भिकखं जाव अभत्तटितो तु जा साहू।
 राओ मज्ज्ञल्लाओ णिहामोक्खं करेती उ ॥११३॥
 णिक्खमणं खलु सरए पाउसकाले पवेसु पुन्वुत्तो।
 एसो तु कालकप्पो भावे कप्पं अनो वोच्छं। दारं ११३४
 दंसण णाण चरित्ते तव पवयण पंचसमिति तिहिं गुत्तो
 हतरागदोस णिम्मम खमदमणियमट्टिओ णिचं ॥१३५
 अणिगूहियबलवीरितो परक्षमति जो जहुत्तमाउत्तो
 अत्तट्टकरणजुत्तो गुणभावण भावणिक्कपो।
 एयाओ दारगाहाओ ॥११३६॥

रिद्धीहिं कुलिंगीणं ण य देववतीहिं जस्स त् भावो।
 दंसणविगलो जायति दंसणमाराहियं तेण ॥११३७॥
 णाणं दुवालसंगं तं चेव य पवयणं तु संघो वा।
 गहणंभि उज्जतो या रतो व्व तह वच्छलो यावि ॥
 चरणे निच्छुज्जुत्तो मूलगुणेसुं सउत्तरगुणेसुं।
 ण य अतियारं कुणती पच्छित्तेणं व सोहिकतं ॥१३९
 तवबारसंगजुत्तो समितीसाहितो तिगुत्तिगुत्तो य।
 रागदोमणिहंता णिम्ममो णियते शरीरेवि ॥११४०॥

कोहं जिणति खमाए महवमादीहिं सेस कलुसेऽवि ।
 दमाणियमा दोवेकं इंदियणोङ्दिया होंति । दारं ११४८
 णाणादिएहिं अणिगूहितो तु कम्मस्स पिञ्जरट्टाए ।
 उज्जमति परक्कमती घडइत्ति य होंति एगट्टा ॥११४९॥
 जह सुत्ते णिहिट्टो तह कुच्चति जो तु अप्पमाण्तो ।
 सो हु जहुत्ताउत्तो एवं मर्तिमं विघाणेज्जा ॥११५०॥
 अत्तट्टा मोक्खट्टा ण उ इहलोगादि हेउगं कुणति ।
 करणं जोगतिणं जयणाजुत्तो त्ति अववादे ॥११५१॥
 मूलगुण उत्तरे या भावणपणवीम अणिच्चगादी य
 मेत्ती-पमोग-कारुण-मज्ज्ञत्थादीहिं णिक्कंपो । दारं
 एसो उ भावकप्पो अहवा णाणादितो पुणो तिविहो ।
 दंसणपढमं भण्णति णाणचरित्ता तदायत्ता ॥११५२॥
 तो दंसणस्स चेव तु जंहिं पदेहिं तु होति उवधातो ।
 ताइ इमातिं बोच्छं णिक्खमणादीणि तु कमेण ११५३
 णिक्खमण गमणभुंजण सद्दियवयणे य एक्कवायणिए ।
 दंसणणाणाभिगमे रायकुमारे गणहरे य ॥११५४॥
 णिक्खमण वेतमहं अधोवहाएन्नुणा तनो भगवं ।
 एरिसएवि ण दिक्खे णिक्खते जेण साहृणं ॥११५५॥

पूजा सक्काररुयी तेण पवत्तंति कसि वावि जाणंतो ।
तारिसए ण णिकखंतो जेणुदितो होति सक्कारो ११५०

णहु एवं वत्तव्वं सो चिय भगवं तु जाणए एवं ।
णहु भाणुपभा तीरइ खज्जोयपहाहिं अतिसइतुं ११५१

गमणे तुरियं साहू गच्छंती अहो सुदिट्ठभिकखूणं ।
सणियं वयंति णेवं वत्तव्वेवं तु भावेज्जा ॥११५२॥

ते लोगरंजणट्ठा सणियं गच्छे ण धम्मसङ्घाए ।
ण य जुगपेहीते खलु विवरीयं सोहणो भावो ११५३

जं वि कहिंचि सतुरितं तं पि य गेलन्नमादिकज्जेसु ।
गच्छंती तु सुविहिता बहुतरमायं मुणेऊणं ॥११५४॥

भुंजंति चित्तकम्मट्ठितावि सक्कादि बोडियादी य ।
ण तहा साहू एवं भासंते दंसणविरोहो ॥११५५॥

कुक्कुडताए मोणं करेति जणरंजणट्ठताए उ ।
भावेयव्वं एवं साधू पुण णिज्जरट्ठाए ॥११५६॥

जं पि य भासंति जती तंपि य कज्जंमि थोव जयणाए ।
इम मुंच चिट्ठऊ वा गुरुमादीणं च पाउगं । दारं ॥

सक्कयपाढो मरुगादियाण एसा तु देविकी भासा ।
समणाण पागयं तु थीभासाए उवणिवद्धं ॥११५७॥

तत्थ वि सद्विवयणं सद्विया चेव णवरि जाणांति ।
 सब्बेसंऽणुगहट्ठा इतरं थीवालबुड्ढादी ॥११५९॥
 दिट्ठंतो सिणपल्लीणिवाणकरणेण होति कायब्बो ।
 एण कतो अगडो वावि ससोवाण वितिएण ११६०
 ततिएण तलागं तू तत्थऽगडे केयघडियमादीहिं ।
 तीरति उवभोन्तुं जे वितियं दुपदाण अभिगम्मं ११६१
 दुपदचउपदमादी सब्बेसि तलाग होति अभिगम्मं ।
 इय सब्बऽणुगहत्थं सुत्तं गहितं गणहरेहिं ॥११६२॥
 सब्बत्थं वेदसत्थं चरणे करणे य एगवादणियं ।
 विवरीयं समणाणं भावेतो दंसणविराही ॥११६३॥
 तत्थ वि भावेयव्वं सो च्छिय अत्थो तु होति सब्बासि ।
 सामुद्देषंधवादी जह लवणसहाव सब्बे वि । दारं ॥
 दंसणपभावगातिं अहवा णाणं अहिजजमाणं तु ।
 अत्तटपरट्ठा वा जहलंभे गेणह पणहाणी ॥११६५॥
 भिकखुत्ति जं पदम्मी भणितं जं वावि तं णिमित्तेण ।
 गच्छतो किं सेवे ? असद्दहंतो अणाराही । दारं ११६६
 पवज्ज अप्पर्पचम रायसुतस्सा तु दाइगभएणं ।
 राया उ समणुजाणति अंते पडिणीतो सो तेण ११६७

तत्थ वि य फासुभोती सुत्तत्थाइं करेन्ति अच्छंति ।
 जणइत्तु सुतेकेकं अमूढलकखासु इत्थीसु ॥११६॥
 ते रज्जेसुं ठाविय पुणरवि गच्छंति गुरुसमीवं तु ।
 आलोइयणिस्सल्ला कतपच्छिन्नाण तो तेसि ॥११७॥
 संकप्पियाणि पुन्विं आयरियादीपदाणि गुरुणा तु ।
 पच्छागताण ताण य तद्विवसं चेव दिणानिं ११९
 परियायम्मि णिरुद्वे जं दिणतगं तु जो ण सहहनि ।
 सुहसमुदितस्स जं वा कीरति त् रायपुत्रस्स ॥११७॥
 तत्थ वि भावेज्जेयं पत्तिकडाइं तु तेहिं थेराण ।
 रायसुतदिकिखतेण य उडभावण पवयणे होति ११९
 असहुस्स जं च कीरति अज्जसमुद्दस्स चेव गुरुणो तु ।
 एयं असहहंते विराहणा दंसणे होति ॥११७॥
 तत्थवि भावेयव्वं जेणायत्तं कुलं तु तं रक्खे ।
 अण्णस्स वि कायव्वं गिलाणगस्सेस उवदेसो ११४
 इति एस समासेण दंसणकप्पो उ आहितो एवं । दारं
 एत्तो तु णाणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुन्वीए ॥११५॥
 सुत्तुद्देसे वायण पडिपुच्छ परियट अणुपेहा ।
 आयरियउवज्ञाया अह होति तु सुत्तकप्पविही ॥

आयारमादिकातुं सुयं तु जा होति दिष्टिवादो तु ।
 अंगाणंगपविष्टुं कालियमुक्तालियं चेव ॥१७७॥
 तं पुण सब्बं पि भवे संवादसमुद्दियं व णिज्जूहं ।
 एतेयबुद्धभासित अहव समत्तीय होज्जाहि १७८
 ससमयवादं संवादमाह जह केसिगोयमिज्जाती ।
 पण्णवणादसकालिय-जीवाभिगमादि णिज्जूहं ॥
 एतेयबुद्धभासिय इसिभासियमादिं मुणेयब्बं ।
 केवलणाणसमत्तीय भासिता चोहस उ पुब्बा १८०
 एतं सुतं तु जं जन्थ सिक्रिखतं जेण जह तु जोगेण ।
 तं तह चिय दायब्बं एसो खलु अज्ञयणकप्पो १८१
 एयं पुण सुतणाणं वायणजोग्गं तु जारिसं होति ।
 तं वोच्छामी अहुणां सुत्तस्स य लक्खणं जं तु १८२
 जित परिजितं अमिलितं अन्विच्चामेलितं अवाविद्धं
 घोम णिकाह्य ईहिय सुविमग्गियहेउसब्भावं १८३
 पुड विसद सुद्धब्बंजण पद अक्खर संधिकारणमणूणं
 पादपयाणुलोमं णिउत्तसुत्ते च्छि सुतकप्पो ॥१८४॥
 णिपुणं विपुलं सुद्धं णिकाह्यं अत्थनो सुपरिसुद्धं ।
 हितणिस्सेसकरं वुद्धिवङ्गणं फलमुदारजुतं ॥१८५॥

सगणामं व जितं खलु परिजिय हेद्गुवरितो उवरितो
हेड्गा । मिलिते उ धणणातं विचामेलो उ अण्णोण्णं ॥

अज्ञयणुदेसाणं सुत्ते मीसेति कोलिपयसं वा ।
तं चेव य हेद्गुवरिं वाविद्वे आवलीणातं ॥११७॥

घोस उदत्तादीया णिकाह्यङ्कखेव सिद्धिपरिसुद्धं ।
ईहित सयं मतीए विचारितं एव णेव त्ती ॥११८॥

साहम्मय--वेहम्मय-हेतूहिं मणिओ तु सब्भावो ।
जसस तु सुत्तस्स भवे तं होति सुदिष्टसब्भावं ११९ ।

णिस्संदिद्धं फुडं खलु संजुत्तं वावि पुन्वमवरेण ।
विसदं अणिगृहत्थं वंजणसुद्धं स उवयारं ॥११०॥

अत्थुवलद्धी जत्थ उ तं होति पदं तु अकखरा वण्णा ।
संधी संबंधो खलु सुत्ता सुत्तस्स जो कोति ॥१११॥

एतेहिं णूणमहितं पादा तु सिलोगमादिणं होंति ।
गज्जंसि य पदसंखा अणुलोमं जणण पडिलोमं ११२ ।

पुव्विल्लपरिल्लेणं जं ण विरुज्ज्ञति तु तं तहा तहियं ।
अत्थेण जोह्यं तू णिउत्तमेतारिसं होति ॥११३॥

णय-हेतु-वाद भंगिय गणितादी अत्थओ य णिउणं तु ।
वित्थिन्नत्थं विपुलं मूगादीवायणाहिं च ॥११४॥

सुद्धं तु सुगिहीतं अलियादीदोसवज्जितं वावि ।
 अत्थे णिकाइयं खलु णिकाइयं अहव बंधेण ॥११९५॥
 अविरुद्धो अकखरेहिं जससत्थो तह य समयमविरुद्धो ।
 तं अत्थतो विसुद्धं हितं तु इहलोयपरलोये ॥११९६॥
 अहियं सेयकरं तू णिस्सेसकरं तयं मुणेयवं ।
 उप्पत्तीमादीण य बुद्धीण विवद्धणं जं तु ॥११९७॥
 तस्स फलं तु उदारं अव्वावाहं अणोवमं सोक्खं ।
 एसोतु सुत्तकप्पो (दारं) एत्तो वोच्छामि उद्देसं ११९८
 उद्दिसियन्व उवाङ्गिते अणुवाङ्गिते उद्दिसंते चउलहुगा ।
 अणलोइए वि लहुगा तम्हा आलोइ उद्दिसणा ११९९
 आलोयणा य विणए खेत्तदिसाभिग्गहे य काले य ।
 रिक्खगुणसंपदा चिय अभिवाहारे य अट्टमए १२००
 अणणगणागत पुच्छे केवइय सहायगा गुरुणं तु ? ।
 एवं पुड्डो सो विय वदेज्ज एगादिय इमे उ ॥१२०१॥
 एगे अपरिणते या अप्पाहारे य धेरए ।
 गिलाणे बहुरोगे य मंदधम्मे य पाहुडे ॥१२०२॥
 एतारिसं विउसज्ज आगते सोहि होति पुब्बुत्ता ।
 आयारकप्पणामे सीसपडिच्छे य आयरिए ॥१२०३॥

एयदोसविमुक्तं तु आगता लोइए पडिछ्छति तु ।
 आलोयणा तु एसा सेसा दारा जहा वासे ॥१२०४॥
 णवरिं तु कालदारं गुणदारं चेव ईसिभासिस्सं ।
 अंगसुयकखंधाणं उद्देसो सुक्षपकखमिम् ॥१२०५॥
 पण्णत्तिमहाकप्पसुयादि सरदे सुभिकखकालमिम् ।
 णेमित्तियादि पुच्छिय उद्दिसणा होति कायच्चा १२०६
 सेसं कालविहाणं पुन्वुत्तं तं तु होति णायच्चं । दारं ।
 केहिं गुणेहिं जुत्तस्स तु उद्दिसियच्चं ? इमे सुणसु ॥
 अच्चोच्छित्तीसंवेगविणयउववेयवज्जभीरुस्स ।
 पुच्चणहे जोगसमुद्दितस्स उद्देसणाकप्पो । दारं १२०८
 वाइगवाइज्जंते गुणा उ वायणविहिं च वोच्छामि ।
 वायगवादिज्जंते गुणाण दारा इमे होति ॥१२०९॥
 अप्पणो य दहा रक्खा विपुलो य तहाऽगमो ।
 सुयणाणस्स य पूजा जिणाण छिद्देय दुच्छल्लो ॥
 उम्मगं वच्चंतो अप्पा रक्खेज्जते तु णियमेणं ।
 सुणहादिद्धंतेणं सुतवावारोवओगेणं । दारं ॥१२११॥
 उवउत्तस्स तदट्ठे णिज्जरलाभो तवो य विउलो य ।
 डंदियपणिही य तहा पसत्थद्वाणोवओगो य १२१२

जं अण्णाणी कम्मं खवेति बहुयाहिं वासकोडीहिं ।
 तं णाणी तिहिं गुत्तो खवेह उस्सासमेत्तेण ॥१२१३॥
 वारसविहम्मि वि तवे सदिंभतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
 णवि अतिथि णवि य होही सज्ज्ञायसमं तवोकम्मं ।
 । दारं ॥१२१४॥

सुयणाणुवदेसेणं वायंतेणं व गेणहगेणं च ।
 सुतपूजा होति कथा तं च जितं होति वायंते ॥१२१५
 सुतपूजाए य पुणो सुतोवएसेण य वटमाणेणं ।
 वायंतमहिजज्ञते आणा उ कथा जिणिंदाणं । दारं ॥
 सुयणाणुवदेसेणं वायंतो गेणहतो य पंतेहिं ।
 ण चइज्जती छलेउं वंतरमादीहिं देवेहिं । दारं ।
 वायणगुणा तु एते समासनो वणिता मए कमसो ।
 वायणविर्हिं तु एत्तो वोच्छामि अहाणुपुञ्चीए ॥१२१८
 अत्ताण परिस पुरिसं हिनैणिसिसय परिजितं जितं
 काले । दिट्ठत्थं फुडवंजण णिव्वावण णिव्वहणसुखं ॥
 तवुसी गंधियपुत्तो रणणो रथणघरिए दओभासे ।
 देवीआभरणविही दिट्ठता होंति आयरिए ॥१२२०॥

अत्ताणं तु तुलेत्ता सत्तो मि ण वत्ति वायणं दातुं ।
जाणेज्जा पुरिसे वि य जो घेत्तुं जत्तियं तरति १२२१
बहुयं घेत्तु समत्ये बहु देंती अप्प गेणहते अप्पं ।
विचामेलणदोसो अतिबहुते तस्स दिज्जंते । दारं ॥
परिणाम अपरिणामा अतिपरिणामा य तिविह पुरि-
सा उ । णाऊणं छेदसुतं परिणामगे होति दायबं ।
। दारं ॥१२२३॥

इहपरलोगे य हितं । दारं । अणिस्सियं जं तु णिज्जर-
द्ठाए । ण तु वाए गारबेण आहारादी तदट्ठाए । दारं ॥
उक्कइतोवहयं परिजियं तु जिय एव अगुणयंते वि ।
दारं । कालित्ति कालियादी कालो जो जस्स तं तहियं ॥
जस्स वि जाणति अत्थं दिट्ठत्यं तं तु भण्णती सुत्तं ।
दारं । फुडवियडवंजणं तू वयणविसुद्धं मुणेयन्वं ।
। दारं ॥१२२४॥

तं होती णिववणं जो वाएंतो तु ल्हादि उवघा
(प्पा) ए ।
णिववहणसुत्तमेयं जो अकिखत्तो उ णिववहति १२२७
तउसारामी तउसे पुव्वं ण पलोए आगते कह (ह) ए ।
जाव पलोए ताव तु केह विपरिणत अणहिं गेणहे ॥

एवं जो आयरिओ पुट्ठो संतो वि चिंतयति अत्थं ।
 विष्परिणमिउं तस्स तु सीसा वच्चति अण्णत्थ १२२९
 जह मुल्लअणाभागी आरामी सो तहिं तु संबुद्धो ।
 तह णिज्जरअणभागी आयरिओ होति एवं तु १२३०
 जेण पुण पुञ्चदिट्ठा तउसा आरामिण होति तहिं ।
 सो देति लहुं तउसे मुल्लस्स य होति आभागी १२३१
 एवं आयरिणं जेणत्थो पुञ्चिंतिओ होति ।
 सो वाएति लहुं लहुं णिज्जरभागी य हो एवं । दारं ॥
 एमेव गंधिपुन्ते जाणमजाणे य गंधभाणे तु ।
 आभागी अणाभागी उवसंघारो वि य तहेव । दारं ॥
 सेणियणिवस्स हत्थी तंतुयमच्छेण गहिओ जलमज्ज्ञे
 सिरिघरिओ दओभासं मग्गिओ ण वि जाणे कत्थ
 कओ ? ॥१२३४॥

जा मग्गति ता हत्थी पडिओ रणा विणासितो
 घरिओ । वितिओ मग्गितो दिणमिम तकखणा
 मोचिते पूया । दारं ॥१२३५॥

एमेवायरियमिम वि उवसंघारो तहेव कायव्वो ।
 चिंतणसमवाकरणे णिज्जरलाभे अलाभे य । दारं ॥

रणो दो देवीओ पेस्सल्ली वल्लभी य एहायंति ।
 पेस्सल्ली हारावे आभरणे वल्लभीए उ ॥१२३७॥

जह चेडी आभरणं आवासे तह इमं पि णायन्वं ।
 उवसंधारो तह विय आयरिए होति कायन्वो । दारं ॥

एवं ता वाएंतो भणितो अहुणा पडिच्छगं वोच्छं ।
 जारिसगुणेहिं जुत्तो वाएयन्वो तु सो होति १२३९
 अणुरत्तो भत्तिगतो अतिंतिणो अच्चवलो अलुद्धो य ।
 अववक्षिखत्ताऽऽउत्तो कालण्णू पंजलिउडो य १२४०
 मंविगगो महविओ अमुती अणुयत्ततो विसेसण्णू ।
 उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साधू १२४१
 जो तु अवाहज्जंतो ण रुज्जती जह ममं ण वाएइ ।
 सो होई अणुरत्तो । दारं । भत्ती पुण होइ सेवा उ ।
 दारं । ॥१२४२॥

मज्जन न देइ त्ति त जो तिंबुरुकठं व तडतडे दिवसं ।
 न य आहाराईसु तदभावो अतिंतिणो एसो । दारं ॥

गइठाणभावभासाइएहिं नवि कुणइ चंचलं तं तु ।
 गाणंगणिओ न भवे अचंचलो सो मुणेयन्वो । दारं ॥

आहारादुओसं जो लदूधूणं तयं न अत्तडे ।
 एस न लुद्धो (दारं) वकखेवणा तु सहादिविसएसु ॥

लीहालेष्टुगमादी जो य पढंतो ण करेति वक्खेवं ।
अव्वक्रिखत्तो एसो आउत्तो अणण्णमणसो उ । दारं ॥
आहारादीकाले कालण्ण होति उवणयंतो उ (दारं) ।
सुत्तत्थं गिणहंतो कुण (इ) अंजलि पंजलिकडो उ ॥
संविग्गो दव्वे मिगो भावे मूलुत्तरेसु तु जयंतो (दारं)
महाविओ जो अमाणी (दारं) अमुई विसमत्तणे वि
जो ण सुए । दारं ॥ १२४८ ॥

आगारहंगितेहिं णाउं हियइच्छतं उवविहेति ।
गुरुवयणं चऽणुलोभे एसो अणुवत्तओ णाभं । दारं ॥
जाणति तु जो विसेसं हिताहितादीण सो विसेसण्ण ।
णवि होति णिविसेसो समचंदणलोष्टुचिकखल्लो ।
दारं ॥ १२५० ॥

उज्जुत्तो उ अणलसो (दारं) अपरितंतो तु थूलभद्र
इव (दारं) । सुत्तत्थणिज्जराओ मोक्खो वा
इच्छयत्थो तु (दारं) ॥ १२५१ ॥

पुच्छणकप्पो अहुणा जातिं पुच्छेज्ज संकियादि तु ।
तातिं भण्णति इणमो अहक्कमं आणुपुब्बीए ॥ १२५२ ॥
पदमक्खरमुद्देसं संधी सुत्तत्थतदुभयं चेव ।
घोसणिकाइत ईहित सुविमग्गितहेतुसब्भावं ॥ १२५३ ॥

पदमादी जा घोसो बुत्तत्था होंति एते सव्वेवि (दारं)।
 हिययस्मि णिकाएडं पुच्छति उ णिकाइयं एवं (दारं)॥
 पुब्वावरेण ईहित एय मए एव होति ण व होति ? (दारं)।
 हेतूहिं कारणोहि त सुविमग्गिय एव तु मए त्ति (दारं)॥
 सव्वभावो अत्थो खलु संदिद्धाइं तु पुच्छते ताति (दारं)।
 एयाइं विय कमसो परियद्वे चेव अणुपेहे (दारं) १२५६
 अहुणा तु अहीयव्यं केरिसयाणं समीवे समणेणं।
 आयरियउवज्ञायाणं तमहं वोच्छं समासेणं १२५७
 उग्गम उप्पायण एसणाए णिरवेकखो णीयपडिसेवी।
 सुते अदिङ्गसारो आयरिओ ण कप्पती सो तु १२५८
 उग्गम उप्पायण एसणाइ सावेकखो णितियपरिवज्जी
 सुत्तम्मि दिङ्गसारो आयरिओ कप्पती सो उ ॥१२५९॥
 सुत्तस्स सारो अत्थो सो दिङ्गो जेण होति बुद्धीए।
 सो होति दिङ्गसारो आयरिओ तू मुणेयव्वो ॥१२६०॥
 एमेव उवज्ञाओ गुणेहिं जुत्तो तु होति णायव्वो।
 एतेसिं तु सकासे सुत्तत्था होति धेत्तव्वा ॥१२६१॥
 आयरियउवज्ञाया णाणुण्णाया जिणेहिं सिप्पटा।
 णाणे चरणे जायावग त्ति तो ते अणुण्णाता (दारं)॥

एसो तु णाणकप्पो जहक्कमं वणिणतो समासेणं ।
 एत्तो चरित्तकप्पं बोच्छामि अहाणुपुब्वीए ॥१२६३॥
 जम्हा चरिज्जते तू चरियं वा तेण तो चरित्तं तु ।
 ते पुण अप्पडिसेवे सुद्धमसुद्धं तु पडिसेवे ॥१२६४॥
 पडिसेवणा तु दुविहा दप्पे कप्पे य होंति णायव्वा ।
 एतेसिं तु विभासा जह भणिय णिसीहणामम्मि ॥
 एसो चरित्तकप्पो छविहकप्पो य एस अक्खाओ ।
 सत्तविहकप्पमेत्तो बोच्छामि अहक्कमेणं तु ॥१२६५॥
 ठितमठितजिणे थेरे लिंगे उवही तहेव संभोगे ।
 एसो तु सत्तकप्पो णेयव्वो आणुपुब्वीए ॥१२६६॥
 ठियमठितकप्पाणं होति विसेसो इमो मुणेयव्वो ।
 पुरपच्छमाण च ठिओ अठिओ पुण मज्जमजिणाणं ॥
 कतिठाणेहिं ठितो खलु ठितकप्पो होति तू मुणेयव्वो? ।
 कइहि उ अठितकप्पो ? ठिताठितो होति बोधव्वो ॥
 दसठाणठितो कप्पो पुरिमस्स य पच्छमस्स य जिण-
 स्स । कतरे दस ठाणा तू ? भण्णाति आचेलगाइ इमे ॥
 आचेलुक्कुद्देसिय सेज्जातर रायपिंड कितिकम्मे ।
 वत जेडु पडिक्कमणे मासं पज्जोसवणकप्पे ॥१२७१॥

एतेहिं दसहिं ठितो ठितकर्पणो होति तू मुणेयव्वो (दारं)
चउहिं ठितो छहिं अठितो अठितकर्पणो पुण हमेहिं ॥

सेज्जातरपिंडे या कितिकम्मे चेव चाउजामे य।
राइणिय पुरिसजेह्वो चउसु वि एतेसु होति ठितो १२७३
आचेलुककुहेसिय णिवपिंडे चेव तह य पडिकमणे।
मासं पज्जोसवणा छप्पेने अणवडिना कर्पणा ॥१२७४॥

दुविहो होति अचेलो संताचेलो असंतचेलो य।
तित्थकर असंतचेला संताचेला भवे सेसा । दारं ॥

दुविहो होति अचेलो पडिमाचेलो नहा परिज्जुणो।
पडिमाचेलो दुविहो सावेकखो चेव णिरवेकखो १२७५
णिगिणो अचोलपट्टो णिरविकखो सो भवे अचेलो उ।
णिगिणो सचोलपट्टो साविकखो सो पुण अचेलो ॥
णिगतवसणो णिवसणो अवसणो अचेलो य अकडि-
पडो य। पडिमाचेलस्सेए नामा एगडिया होति १२७६
उग्गम उप्पायण एसणाए जदि होति अपरिसुद्धाहं।
मोल्लगरुयाणि ताणि तु अपरिज्जुणाहं चेलाति १२७७
उग्गमउप्पायणएसणाए जदि होति सुपरिसुद्धाहं।
मोल्ललहुयाणि ताणि उ परिज्जुणाहं तु चेलाहं १२७८

एतो सावज्जाहं चेलाहं संज्मोवधातीणि ।
 वज्जेत्ता विहरंतो होइ अचेलो अपरिजुण्णो ॥१२८१
 णिगगहियरागदोसो अणवज्जेहिं अहापरित्तेहिं ।
 अप्पेहि वि विहरंतो होति अचेलो उ परिजुण्णो ॥
 णिरुवहतलिंगभेदे गुरुगा कप्पट्य कारणज्जाते ।
 गेलन्न-रोग-लोष सरीरविवेग य किनिकम्मे ॥१२८३॥
 असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा ।
 आगाहे अण्णालिंगं कालक्रखेवो व गमणं वा ।

अचेलत्ति गतं ॥१२८४॥

सालीघतगुलगोरसणंवसु वल्लीफलेसु जातंसु ।
 दणट्टकरणसङ्घाआहाकम्मे णिमंतणता ॥१२८५॥
 आहा अहे य कम्मे आयाहम्मे य अत्तकम्मे य ।
 तं पुण आहाकम्मं णायव्वं कप्पती कस्स ? ॥१२८६॥
 संघस्स पुरिमपच्छिममणाणं तह य चेव समणीणं ।
 चतुरो उवासगाणं पच्छासण्णायगागमणं ॥१२८७॥
 संघस्स मज्जिश्चमे पच्छिमे य समणाण तहय समणीणं ।
 चतुरो पडिस्सताणं पच्छासण्णायगागमणं ॥१२८८॥
 उज्जु य जड्हा सन्वे पुरिमा चरिमा य वक्कजड्हा तु ।
 तम्हा तेसिं संक्रखणट्ट सन्वं पडिक्कुट्टं ॥१२८९॥
 अवगतजड्हा मज्जिश्चमसाहू तह चेव ते परिणंमाति ।
 कप्पाकप्पं दंसिय तेसिं वज्जं पडिक्कुट्टं ॥१२९०॥

पुरिमाण दुन्विसोज्ज्ञो चरिमाण दुरणुपालओ कप्पो
मज्ज्ञो विसुद्धचरणो एवं कप्पोऽणुगंतव्वो ॥१२९१॥
आयरिए अभिसेगे भिकखुम्मि गिलाणगम्मि भयणा
तु । तिकखुत्तो अडविपवेस चउ परियद्वे तओ
गहणं ॥१२९२॥

असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा ।
अद्वाणे गेलन्ने आहाकम्मं तु जयणाए ॥१२९३॥
जदि सव्वे गीतत्था ताहे आलोयणागहे भणिता ।
अह होति मीसगजणो पायच्छित्तं तवोकम्मं १२९४
चउरो चउत्थभन्ते आयामेगासणे य पुरिमङ्गे ।
णिन्वितिं दायव्वं सतं च पुब्बोग्गहं कुज्जा १२९५
संघस्सोहविभागो समणा समणी च कुलगणस्सेवा
कडमिह ठिते ण कप्पति अठितकप्पे जमुदिस्स १२९६
आयरिए अभिसेगे भिकखुम्मि गिलाणगम्मि भयणा
तु । अडविपवेसे असती तियपरियद्वे ततो गहणं ॥
तित्थगरपडिकुट्ठो आणा अणणाय उग्गमो ण सुज्ज्ञो ।
अविमुत्ति अलाघवया दुल्लभसेज्जा विउच्छेदो १२९८
दुविहे गेलन्नम्मि णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरिय पदोसे भए य गहणं अणुण्णायं १२९९
तिकखुत्तो सकखेत्ते चउहिसिं जायणम्मि कडजोगी ।
दव्वस्स य दुल्लभता सागारियसेवणा दव्वे (दारं) ॥

मुद्देष मुद्दभिसित्ते मुदितो जो होति जोणिसिद्धो तु ।
अभिसित्तो य परेहिं सयं व भरहो जहा राया १३०१
ईसरतलवरमाडंविएहिं सेट्ठीहि सत्थवाहेहिं ।
णितेहिं अलिंतेहि य वाघातो होति साहुसस ॥१३०२॥
लोभे एसणघाने संका तेणे चरित्तभेदे य ।
इच्छंतमणिच्छंते चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥१३०३॥
अणे वि होंति दोसा आइणे गुम्मरयण इत्थीओ ।
तण्णस्साए पवेसो तिरिक्खमणुया भवे दुड्डा १३०४
दुविहे गेलन्नाम्मि वि णिमंतणा दब्बदुल्लभे असिवे ।
ओमोदरिय पओसे भए य गहणं अणुण्णातं (दारं) ॥
पहं अब्भुट्टाणं कितिकम्मं अज्जसेवियमुदारं ।
कायव्वं कस्स व केण वाचि काहे व कतिखुत्तो १३०६
विणओ सासणे मूलं । गाहा (आ० १२२८) ॥१३०७॥
जम्हा विणयाति कम्मं । गाहा (आ० १२२९) ॥१३०८॥
पुन्वामेव य विणओ । गाहा ॥१३०९॥
आयारविणयकप्प गुणदीवणा अत्तसोहि उज्जुभावो
अज्जव मद्व लाघव तुट्टी पलहायक्करणं च ॥१३१०॥

लहुओ गुरुओ मासो लहुगा गुरुगा भवे चउम्मासा।
 खुडुग भिक्खू वसभे आयरिए अदु व विवरीयं १३१॥
 जदिखुत्तो जदिवेलं णिक्खमए णिक्खमितु वादेति।
 ततिखुत्तो तं वेलं सब्बे गुरुणो समुट्टनि ॥१३२॥
 वसहीय भिन्नमासो काह्यभूमीय मासियं लहुयं।
 चत्तारि य सुकिलया ओंगाहं तस्स वहियाग १३३॥
 भिक्खू वसभायरिया अज्जा उवासगा य इत्थीओ।
 वादी राया संघो राया संघो उभयओ वि ॥१३४॥
 लहुओ गुरुओ मासो लहुगा गुरुगा भवे चउम्मासा।
 छम्मासा लहुगुरुगा छेदो मूलं तह दुगं च ॥१३५॥
 वंदण चिति किहकम्मं पूयाकम्मं च विणयकम्मं च।
 कायव्वं कस्स व केण वावि काहे व कहखुत्तो १३६॥
 कति ओणगं ॥ गाहा ॥ (आ० १११८) ॥१३७॥
 सेढी समतीताणं कितिकम्मं जे य होति सेढिगता।
 सेढीउ बाहिराणं कितिकम्मं होति भद्रयव्वं १३८॥
 आयरियउबज्ञाए पवित्ति पत्तेयबुद्ध पुच्चधरे।
 केवलणाणधरम्मि य कायव्वं णिज्जरड्डाए ॥१३९॥

सेहीठाणे सीमाकज्जे चत्तारि बाहिरा होंति ।
सेहीठाणे दुगभेदयाए चत्तारि वीभइया ॥१३२०॥

पत्तेयवुद्ध जिणकपिधया य सुद्धपरिहारिया अहालंदा ।
ऐ नउरो दुगभेदयाए कज्जेसु बाहिरगा ॥१३२१॥

अंतो वि होति भयणा ओमे आवण्ण संजती सेहे ।
बाहिंयि होति भयणा अतिवालग वायए सीसे १३२२
हेढ्ठाणाठितो वि हु पावथणि गणठिताए अवरम्मि ।
कड्झोर्गी ज (स) न्निसेवति आदि णियंठो व सो
पुज्जो १३२३

संकिणवराहपदे अणाणुतावी य होति अवराहे ।
उत्तरगुणपडिसेवी आलंबणवज्जिओ वज्जो ॥१३२४॥

गच्छपरिक्खणट्टा अणागतं आउवायकुसलस्स ।
एत्तो गणाहिपतिणो सुहसीलगवेसणा भणिता १३२५

दुविहे कितिकम्मम्मी वाउलिया मो णिसट्टवुद्धीया ।
आदिपडिसेघियम्मी उवरि आलोअणा बहुला १३२६

मुक्खधुराए । गाहा (आ० ११३८) ॥१३२७॥

वायाए णमुक्कारो । गाहा (आ० ११३९) ॥१३२८॥

एतानि अकुच्चवंतो । गाहा (आ० ११४०) ॥१३२९॥

परियाव महादुक्खे मुच्छामुच्छे य किञ्चल्पणे य।
किञ्चुस्सासे य तहा समोहते चेव कालगते ॥१३३०॥

चत्तारि छच्च लहु गुरु छेदो मूलं च होति बोधव्वं।
अणवद्वप्पे य तहा पावति पारंचियं ठाणं ॥१३३१॥

परियाग परिस पुरिसं खेत्तं कालागमं च णात्ूणं।
कारणजाते जाते कितिकम्मं होति कातन्वं ॥१३३२॥

दंसण णाण चरित्तं तव विणयं जत्थ जित्तियं जाणे।
जिणपण्णत्तं भत्तीय पूअए तं तहा भावं ॥१३३३॥

सावज्जजोगविरति त्ति संजमो तेण होति एगविहो।
रागद्वोस निरोहो त्ति तेण दुविहो मुणेयव्वो ॥१३३४॥

मणवयकायजोगाण णिरोहो तेण होति तिविहो तु।
कोहमाणमायलोभुवरतो त्ति चउहा मुणेयव्वो ॥

पंचवत इंदियाणि य ते पंचह रातिविरति छक्काया।
वत-काय-अकप्पादी अड्डारसहा मुणेयव्वो ॥१३३६॥

जोगे करणे सन्ना इंदिय भोम्मादि समणधम्मे य।
अड्डारससीलंगसहस्र संजमो होइ णायव्वो ॥१३३७॥

कितिकम्मं पि य दुविहं अब्भुद्ठाणं तहेव वंदणयं।
समणेहि य समणीहि य जहकम्मं होति कायव्वं ॥

सब्बाहिं संजतीहिं कितिकम्मं संजताण कायब्बं ।
पुरुसुत्तरिओ धम्मो सब्बजिणाणं पि तित्थम्मि ।
दारं ॥१३३॥

पंचज्ञामो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स ।
मज्जिमयाण जिणाणं चाउज्जामो भवे धम्मो १३४०
पुरिमाण दुव्विसोज्ज्ञो चरिमाणं दुरणुपालओ कप्पो ।
मज्जिमयाण जिणाणं सुविसोज्ज्ञो सुरणुपालो य ॥

पुब्बं तु उवट्टविओ जस्स वा सामाइयं कयं पुब्बं ।
सो होती जेड्डो खलु जो पच्छा सो कणिड्डो तु १३४२
पुब्बोवड्डो जेड्डो होई त्ती एत्थ होति पच्छा तु ।
उवठावणा तु कतिहिं ठाणेहिं? इमा भवे दसहा १३४३
ततो पारंचिता बुत्ता अणवृट्टप्पाति तिण्ण तु ।
दंसणम्मि य वंतंमि चरित्तंमि य केवले ॥१३४४॥

अदुवा चियत्तकिच्चे जीवकायं समारभे ।
सेहे दसमे बुत्ते जस्सुवठावणा भणिता ॥१३४५॥

अहवा पारंचेको अणवृट्टप्पो य होति एको तु ।
दंसणवंतो ततिओ चरित्ते य चउत्थओ होति १३४६

पंचमो चियत्तकिञ्चो सेहो छटो य होति बोद्धव्वो ।
 एसो य छविहो खलु चउविहो वा इमो अण्णो ॥
 दंसणमिम य वंतमिम चरित्तमिम य केवले ।
 चियत्तकिञ्चे मेहे य उबट्टप्पा तु आहिया ॥१३४८॥
 दंसण चरित्तवंते पारंचणवट्टनो पि पविसंति ।
 तो जेणं भवंती तु एवं सेसा भवे चतुरो ॥१३४९॥
 दंसणवंते य तहा जीवणिकाया य जो समारभती ।
 उठावणाए भयणा एतोसिं होति दोणहंपि ॥१३५०॥
 अणाभोएण मिच्छत्तं संकंते सम्मतं पुणरागते ।
 नमेव तस्स पच्छित्तं जं सम्मं पडिवज्जती ॥१३५१॥
 आभोगेण उ मिच्छत्तं संकंते सम्मतं पुणरागते ।
 जिणथेराण आणाए मूलच्छेज्जं तु कारए ॥१३५२॥
 छणहं जीवणिकायाणं अप्पज्जो तु विराहतो ।
 तिविहेण पडिकंते मूलच्छेज्जं तु कारए ॥१३५३॥
 छणहं जीवणिकायाणं अणप्पज्जो तु विराहतो ।
 आलोह्य-पडिकंतो सुद्धो हवति संजतो ॥१३५४॥
 जीवणिकायारंभे दंसणवंते य भणिय पच्छित्तं ।
 नं देइ सुत्तविहिणा अन्नह देंते इमे दोसा ॥१३५५॥

अपायच्छत्ते य पच्छत्तं पच्छत्ते अतिमत्तया ।
 धम्मस्मासायणा तिव्वा मग्गस्स य विराहणा १३५६
 उस्मुत्तं ववहरंतो कम्मं बंधति चिक्कणं ।
 मसारं च पवड्हेति मोहणिज्जं च कुब्बति ॥१३५७॥
 उम्मग्गदेसणाए मग्गं विपडिवादए ।
 फर्मोहेण रंजंतो महामोहं पकुब्बति । दारं ॥१३५८॥
 सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छमस्स य
 जिणस्स
 मज्जमयाण जिणाणं कारणजाए पडिक्कमणं । दारं ॥
 दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चेव थविरकप्पो य ।
 एकेको य दुविहो अठिनकप्पो य ठितकप्पो । दारं ॥
 पञ्जोसवणाकप्पो होति ठितो अट्टितो च थेराणं ।
 एमेव जिणाणं पी कप्पो ठिनमाट्टितो होति ॥१३६१॥
 चाउम्मासुक्कोसो सत्तरि राइंदिया जहणेणं ।
 ठितमट्टितमेगतरे कारणवच्चासि तङ्णतरे । दारं १३६२
 ठितमट्टितो तु कप्पो एसो मे वणिओ समासेणं ।
 अह एत्तो जिणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुब्बीए १३६३
 गच्छामि य णिम्माया थेरा जे मुणितसव्वपरमत्था ।
 अग्गह अभिग्गहे वा उवेंति जिणकाप्पियविहारं ॥

णवपुष्टिव जहणेणं उक्तोसेणं तु दस असंपुणा ।
 चोहसपुव्वी तित्थं तेण तु जिणकप्पण पवज्जे १३६५
 वद्वरोसभसंघयणा । दारं सुत्तसस्त्थो तु होति परमत्थो
 संसारसभावो वा णाओ तो मुणितपरमत्थो १३६६
 दोहग्गह ततियादी पडिमाहिग्गहण भत्तपाणस्स ।
 दोहिं तु उवरिमाहिं गेणहते वत्थपाताइ ॥१३६७॥
 दव्वादभिग्गहा पुण रयणावलिमाविगा व बोधव्वा ।
 एतेसु विदितभावा उवेंति जिणकप्पियविहारं । दारं ॥
 परिणाम जोग सोही उवहिविवेगो य गणणिकखेवो य
 सेज्जासंथारविसोहणं च विगतीविवेगं च ॥१३६९॥
 गणहरठवणं च तहा अणुसद्धी चेव तह य सीमाणं
 सामायारी य तहा वत्तव्वा होति जिणकप्पे ॥१३७०॥
 अणुपालिओ य दीहो परियाओ वायणा वि मे दिणा ।
 अब्मुज्जयाण दोणहं उवेमि कतरं णु ? परिणामो । दारं ॥
 सेहणिमित्तं जोगाण भावणा सा इमा तु पंचविहा ।
 तव सत्त सुतेगत्ते बले य तह पंचमा होति ॥१३७२॥
 एतेसिं तु विभासा उवरिं भणिहिति मासकप्पम्मि ।
 दारं
 सेसाइं दाराइं बोच्छामि समासतो इणमो ॥१३७३॥

पुञ्चवहिस्स विवेगं काउं गेणहति अहाकडं उवहिं ।
 अभिगंहियमेसणाहिं उप्पादेयं सयं चेव । दारं १३७४
 गणसणा स करेती जो जहिं ठाणठितो तु पुञ्चमिम् ।
 तं तत्थेव ठवेती गणणिकखेवं च इत्तरियं ॥१३७५॥
 सेज्जाए अपरिभुत्ते ठायति तहियं तु एगदेसम्मि । दारं
 संथारं उप्पादे अहाकडं एसणविसुद्धं । दारं ॥१३७६॥
 विगतीओ य ण गेणहति गेणहति भक्तं च सो अलेवाडं ।
 दारं । इय भावित हु जाहे ताहे ठवती गणहरं तु ॥
 गणहर गुणसंपण्णं बामे पासम्मि ठावइत्ताणं ।
 चुण्णातिं छुहति सीसे सचित्तादी य अणुजाणे ।
 दारं ॥१३७८॥

ठावेऊण गणहरं आमंतेऊण तो गणं सव्वं ।
 तिविहेण खमावेती सबालबुद्धाउलं गच्छं ॥१३७९॥
 संवेगजणियहासा सुत्तथविसारता पयणुकम्मा ।
 चिंतेति गणं धीरा णिंता वि हु ते जिणाणाए ॥१३८०॥
 णिद्धमहुराति सेसं परलोगहितं गुरुण अणुरूवं ।
 अणुसट्टिं देंति तहिं गणाहिवतिणो गणस्सेवं ॥१३८१॥
 तवणियमसंपउत्ता आवस्सगझाणजोगमळीणा ।
 संजोगविष्पओगे अभिगग्हा जे समत्थाणं ॥१३८२॥

सुपत्ते णिसिरंतेहिं गणो वी चिंतिओ भवति सो उ।
दारं । णिद्वाए दिट्ठीए आलोए तं गणं सन्वं । दारं ॥

वायाए महुराए आसासे । दारं । अपरिसेसणिस्सेसं ।
दारं । गुरुअणुरूब जहरिहं सवालबुड्ढाति राइणिए ।
दारं ॥१३८॥

तवो होति बारसविहो दुंह णियमो इंदिओ य णोइंदी।
आवास सामायारी बोधव्वा चक्रवाला उ । दारं १३८

सुत्तत्थझाणजोगे अल्लीणा तेसु होह जुत्ताउ ।
मव्वे वि य संजोगा णियमा उ य विष्पओगंता ।
दारं ॥१३९॥

तह उवही उप्पायण दव्वादीया अभिग्गहा जे तु ।
सति सामत्थे तेसु वि मा हु पमायं करेज्जाऽणु १३७

अहवा अभिग्गहा तृ कुण्णति जिणा य जे समत्थाय ।
दारं । एवं सासेत्तु गणं ताहे गणहारि अप्पाहे १३८

गणसंगहुवग्गहरकखणे तुमं मा हु काहिसि पमादं ।
ठितकप्पो हु जिणाणं गणधरपरिवाडिया गच्छे ॥

मज्जाररसियसरिसोवमं तुमं मा हु काहिसि विहारं ।
गणासेहिसि दोणिण वि अप्पाणं चेव गच्छं च १३९०

बङ्गंतओ विहारो जिणपणन्तो दुवालसंगम्मि ।
जह जिणकपियपरिहारियाण सेसाण वि तहेव ॥

परिवङ्गमाण सङ्गो जह जिणकप्पो तहा करेज्जासी।
अकरेंतमप्पणा त्रूण ठवे अण्ण इमं णातं ॥१३९२॥

जो सगिहं तु पलित्तं अलसो तु न विज्ञवे पमाएणं ।
मो न वि सद्वियव्वो परघरदाहप्पसमणम्मि ॥१३९३॥

णाणं अहिजिज्जं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
ण चएति जो धरेतुं अप्पाण गणं ण गणहारी ॥१३९४॥

णाणं अहिजिज्जं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
चोएति जो धरेतुं अप्पाण गणं स गणहारी ॥१३९५॥

णाणं अहिजिज्जं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
ण चएति जो ठवेउं अप्पाण गणं ण गणहारी ॥१३९६॥

णाणं अहिजिज्जं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता ।
चोएति जो ठवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥१३९७॥

णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि ।
ण चएति जो ठवेउं अप्पाण गणं ण गणहारी ॥१३९८॥

णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि ।
चोएति जो ठवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥१३९९॥

एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वणिणता सुत्ते ।
 लोगसुहाणुगताणं अप्पच्छंदा जहिच्छाए ॥१४००॥

लोयसुहं सदादी विसया तेसिं तु जे भवे रत्ता ।
 अप्पच्छंदा ते ऊ विहारो ते सऽणुण्णातो ॥१४०१॥

उग्गमउप्पायण-एसणाउ चरित्तस्स रक्खणद्वाए ।
 पिंडं उवहिं सेज्जं सोहेतो होति सचरित्ती ॥१४०२॥

सीतावेति विहारं सुहसीलक्तेण जों अबुद्रीओ ।
 सो णवरि लिंगसारो संजमसारम्मि णिस्सारो १४०३

तित्थगरो चउणाणी सुरमहितो सिज्जियव्वय धुवम्मि
 अणिगृहियबलवीरिओ तवोवहाणम्मि उज्जमाति ॥

किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं ।
 होति ण उज्जमियव्वं सपच्चवायम्मि माणुस्से ? १४०५

संखित्ता विव पवहे जह वड्ढति वित्थरेण पवहंती ।
 उदधिं तेणं च णदी तह सीलगुणेहि वड्ढाहि १४०६॥

कुणमप्पमाय आवस्सएहिं संजमतवोवहाणेहिं ।
 णिस्सारं माणुस्सं दुल्लभलाभं वियाणित्ता ॥१४०७॥

तिव्वकसायपरिणता परपरिवादं च मा करेज्जाहे ।
 अचासायणविरता होह सदा संजमरता य ॥१४०८॥

सुस्तुसगा गुरुणं चेइयभत्ता य विणयजुत्ता य ।
सज्ज्ञाए आउत्ता साहूण य बच्छला पिचं ॥१४०९॥

एस अखंडियसीलो बहुसुतो य अपरोवतावी य ।
चरणगुणसुष्टुप्य त्ति य धण्णाणयरीति घोसणं ॥

बाढं ति भाणिऊणं एवं णे मंगलं ति जंपंता ।
आणंदअंसुपादं सुंचंति गुणे सरंता से ॥१४११॥

कतरे गुणा उ तस्सा जे सुसरंतेसु तस्स ते सीसा ॥
भण्णति इणमो सुणसू ते भण्णांते समासेण ॥१४१२॥

सब्बस्स दायगाणं समसुहदुक्खाण णिष्पकंपाणं ।
दुक्खं खु विसहितं जे चिरप्पवासो गुरुणं तु १४१३
सीलडृढ गुणडृढेहि य बहुसुएहि य अपरोवतावीहिं ।
पवसंतेहिं मएहिं य देसा ते खंडिया होंति ॥१४१४॥

अणुसट्ठिं दाऊणं ताहे पसंत्थमिम तिहिसुहुत्तमिम ।
अहसन्निहितं संधं असतिगणं तं समाहूय ॥१४१५॥

जिणवरपादसमीवे पडिवज्जे गणहराण व समीवे ।
चोहसपुढवे तह चेतिए य असती य बडमादी १४१६
थामावहारविजदा काउं गहणं व गाहणं चेव ।
मुत्तत्थज्ञरियसारा गेणहंति अभिग्गहे धीरा ॥१४१७॥

जिणकप्पियपाउग्गा अभिगगहा गेणहती ण अण्णा तु
 जिणकप्पो केरिसस्सा कप्पनि पडिवज्जिउ ? सुणमु ॥
 कप्पे सुत्तत्थविसारथस्स संघयणविरियजुत्तस्स ।
 एतारिसस्स कप्पनि पडिवज्जिउ होति जिणकप्पो ॥
 जिणकप्पे संघयणं भणितं पढमं तु होति णियमेण ।
 विरियं तु भण्णनि धिती तीए जुतो वज्जकुद्दुममो ॥
 कोति पुण ण पडिवज्जे सो पुण णियमा उ कारणेहिं तु ।
 काणि पुण कारणाणि य ? इमाइं नाइं णिसामेह ॥
 देहस्स दुब्बलत्तं आयरियाणं च दुल्लभपसादा । दारं ।
 रोगपडिवंध ण सहनि सीउण्हादी अ पडिभोगी ॥
 सुत्तथाणि वि धेत्तुं दुब्बलदेहो उ तं ण चाएति । दारं ।
 गुरुणं च अणणुकूलत्तणेण णाराहिओ सूरी १४२३ ॥
 आयरिया अपसन्ना सुतप्पसायं उ ते ण कुवंति ।
 णाहीतं तेण सुतं जावइएणं तु पज्जत्तो । दारं ॥ १४२४ ॥
 सोलसविहरोगाणं अहवा गाहं अभिहुएणं तु ।
 णाधीतं होज्ज सुतं ने य इमे वणिणता रोगा ॥ १४२५ ॥
 कासे सासे जरे दाहे जोणीसूले भगंदरे ।
 अरिसा अजीरए दिट्ठी सुछसूले अकारए ॥ १४२६ ॥

पोडशा रोगाः

अच्छीवेयण तह कणवेयणा कंदु कौटुम्बिकादगउर्मा
एने ने सोलस वी समासतो वणिता रोगा । दारं ॥

अणो पडिवंधेण गुरुकुलवासं ण चेव आवसती ।
तेण णाहिज्जति ऊ के पुण पडिवंधिमे गुणसु १४२८
सो गामो सा वड्या तं भत्तं भइओ जणो जत्थ ।
एताइं संभरतो गुरुकुलवासं ण रोएति ॥१४२९॥

सङ्कारो सम्माणो पूजड मे भोइओ तहिं गामे ।
आयरिओ महतरओ परिस्ता मे तहिं सङ्कढा १४३० ॥
सच्छंदुठाणणिवज्जंणस्स सच्छंदगहितभिक्खस्स ।
सच्छंदजंपियस्स य मा मे सन्तु विएगागी ॥१४३१॥

एतेहि ऊ अभागी सीताइणं ण देति तु उरं तु ।
तो णाहिज्जति सो ऊ गुरुकुलवासं असेवेतो १४३२

एतेहिं (ण) पडिवज्जे अणुसंदिं दारिधं परिस्तमत्तं ।
का पुण सामायारी जिणकप्पे होतिमा साउ १४३३
खेते काल चरित्ते तित्ये परियाग आगमे वेदे ।
कप्पे लिंगे लेस्सा गणणे झाणे यज्ञभिग्गहे ॥१४३४॥

पव्वावण मुंडावण मणसा वणो वि से अणुग्धाता ।
कारणणिष्पटिकम्मे भत्तं पंयो य ततियाए ॥१४३५॥

एसो जिणकप्पो खलु समासतो वण्णितो सविभवेणं।
दारं। एत्तो उ थेरकप्पं समासओ मे णिसामेहि ॥४३६॥

तिविहम्मि संजमम्मि उ बोधव्वो होति थेरकप्पो तु।
सामइय-छेदपरिहारिए य तिविहम्मि एयम्मि ॥४३७॥

ठिय अट्ठिए व कप्पे सामाइयसंजमो मुणेयव्वो ।
छेदपरिहारिया पुण णिंयमा उ हवंति ठितकप्पे ॥४३८॥

एतेसु थेरकप्पो जह जिणकप्पीण अगगहो दोसु ।
गहणं चऽभिगग्हाणं पंचहिं दोहिं च ण तह इहं ॥

बाले बुड्ढे सेहे अगीतत्थे णाणदंसणप्पेही ।
दुब्बलसंघयणम्मि य गच्छपइणेसणा भणिता ॥

जहसंभवं तु सेसा खेत्तादि विभासियव्व दारा तु।
उवरिं तु मासकप्पो वित्थरतो विभासते तोसिं ।
दारं ॥ ४४१ ॥

इति एस थेरकप्पो एत्तो बोच्छामि लिंगकप्पं तु।
तहियं तु लिंगकप्पो इणमो जिणकप्पे भवती तु ॥

रुद्धणहक्कखणिगिणो मुंडो दुविहोवही जहणो सिं।
एसो उ लिंगकप्पो णिव्वाघातेण णेयव्वो ॥४४३॥

रथहरणं मुहपोत्ती संखेवेणं तु दुविह उवही तु ।
वाघातो विकितलिंगो अरिस पमेहे कडिपद्धो ॥४४४॥

दुविहा अतिसेसा वि य तेसि इमे वणिता समासेणं ।
 वाहिर अद्विभतरगा तेसि विसेमं पवक्खामि १४४५
 वाहिरगो सरीरस्सा अतिसेसो तेसिमो उ बोधव्वो ।
 अङ्गिहपाणिपाया वइरोसभसंघयणधारी ॥१४४६॥
 अद्विभतरमतिसेसो इमो उ तेसिं समासतो भणिओ ।
 उगही विव अकखोभा सूरो इव तेयसा जुत्ता १४४७
 अद्वावण्णसरीरा वइगंधो ण भवते सरीरस्स ।
 खनमवि ण कुच्छते सिं परिकम्मं ण वि य कुद्वंति ॥
 पाणिपडिग्गहधारी एरिसया णियमसो मुणेयव्वा ।
 अतिसेसा वोच्छामि अणेवि समासतो तेसिं १४४९
 दुविहो अतिसेम तेसिं णाणातिसओ तहेव सारीरो ।
 णाणातिसओ आहिमणपञ्चव तदुभयं चेव ॥१४५०॥
 आभणियोहियणाणं शुतणाणं चेव णाणमतिसेसो ।
 तिवली अभिणवच्चा एसो सारीरमतिसेसो ॥१४५१॥
 रयहरणं मुहपोत्ती जहणोवहि पाणिपत्तयस्सेसो ।
 उक्षोस निषिण कण्या रयहर मुहपोत्ति पणगेतं १४५२
 णवहा पडिग्गहीणं जहणमुक्षोस होति बारसहा ।
 तेसिं वयाणिंदिय अतिरेगो पातणिज्ञोगो ॥१४५३॥

उव्वद्वृण ग्रंसणमज्जणा य णहणयणदंतसोभाय ।
 एते उवधाता खलु भवन्ति जिणलिंगकप्पस्स १४५४
 उव्वद्वृणाइयाति उवकरणं चेव थेरकप्पीणं ।
 भइयच्चो लिंगकप्पो गेलणादीहिं कज्जेहिं ॥१४५५॥
 कज्जम्मि गिलाणादिसु उव्वद्वृणमाइया अणुण्णाया ।
 दुगुणो चउगुणो वा कारणतो होति उवहीउ १४५६
 रूढणह कक्खणियणो मुँडो दुविहोवही समासेण ।
 एसो तु लिंगकप्पो कारण विवचा सित्तण्णतरो १४५७
 लोय खुरकत्तरी य व मुँडं तिविहं तु होति थेराणं ।
 असिवादिकारणेहिं कज्जविवज्जास लिंगस्स १४५८
 णिरुवहतलिंगभेदे गुरुगा कप्पति य कारणज्जाते ।
 गेलण्णरोगलोए सरीरवेयावदियमादी ॥१४५९॥
 वासत्ताणेणावि हु भेदो लिंगस्स तं अणुन्नातं ।
 चाउम्मासुक्रोसं सत्तरि राङ्दिय जहन्नं ॥१४६०॥
 एयं तु दव्वलिंगं भावे समणत्तणं तु णायच्चं ।
 को नु गुणो दव्वलिंगे ? भण्णति इणमो सुणसु वोच्छं ॥
 सक्षार वंदण णमंसणा य पूजा कहणा य लिंगकप्पम्मि
 पत्तेय बुद्धमादी लिंगे छउमत्थ तो गहणं ॥१४६१॥

वत्थासण सक्षारो वंदण अब्भुद्धणं तु णायन्वं ।
 पणिवादो तु णमंसण संतगुणुक्तिणा पूया ॥१४६३॥
 दद्धूण दन्वलिंगं कुञ्चतेताणि हंदमादी वि ।
 लिंगमिम अविज्जंते ण पणजती एस विरओत्ति १४६४
 कहेंतो समणलिंगे ण धम्मं नू सम्मातो भवे ।
 अलिंगं बेंति तं कीस जाणंतो ण करे तुमं ? ॥१४६५॥
 पत्तेयवुद्धो जाव उ गिहिलिंगी अहव अणणलिंगी उ ।
 देवा वि ता ण पूएंति मा पुज्जं होहिति कुलिंगं ॥१४६६॥
 ण य ण पुच्छति कोती केरिसओ होति तुज्ज्ञ धम्मोत्ति ।
 ण य सलिंगविद्धूणं छउमत्थो जाणे विरओत्ति १४६७
 एसो तु लिंगकप्पो अहुणा वोच्छामि उवहिकप्पं तु ।
 जो जसस भवे उवही जिणथेराणं जहाकमसो १४६८
 ओहे उवग्गहे या दुविहो उवही तु होति णायन्वो ।
 ओहोवही तु तिणहं ओवग्गहिओ भवे दोणहं १४६९
 जिणकप्पे थेरकप्पे कप्पातीते य तिणहमोघो उ ।
 थेराणमुवग्गहिओ साहूणं संजतीणं च ॥१४७०॥
 वारस चोइस पणुवीस णव य एक्को य णिरुवही चेव ।
 जिण थेर अज्जपत्तेयवुद्धतित्थकरतित्थकरे १४७१

पाणीपडिगगहीया पडिगगहधारी य होंति जिणकप्पे।
 थेरा पडिगगहधरा कप्पादीया तु भइयव्वा ॥१४७२॥
 वियतियचउक्कप्पणए णव दस एक्कारसेव बारसगं ।
 एते अट्ठ विकप्पा उवहिम्मिवि होंति जिणकप्पे १४७३
 अहवा दुगं च पणगं उवहिस्स तु होंति दोणिं वि
 विकप्पा पाणीपडिगमहियाणं अपाउय सपाउयाणं च
 रयहरणं मुहपोत्ती एयं दुयगं अपाउयंगाणं ।
 रयहरणं मुहपोत्ती तिणिं य पच्छाद इतरेसिं १४७५
 उग्गहधारीणं पि य दुविहो उवही समासतो होति ।
 णवविह दुवालसविहो अपाउय संपाउयाणं च १४७६
 पत्तं पत्ताबंधो पातदृठवणं च पातकेसरिया ।
 पडलाइं रयत्ताणं च गोच्छओ पातणिडजोगो १४७७
 रयहरणं मुहपोत्ती णवहा एसो अपाउअंगाणं ।
 इयरेसिं एसेव य अतिरेगा निणिं पच्छागा १४७८
 एते चेव दुवालस मत्तउ अतिरेग चोलपट्टो य ।
 एसो य चोदसविहो उवही खलु थेरकप्पम्मि १४७९
 अज्जाणं एसेव य चोलत्याणम्मि णवरि कमढं तु ।
 अतिरेग अंगलग्गा इन्ने तु अण्णे मुण्णेयव्वा ॥१४८०॥

उगगह णंतग पढो अङ्गोरुग चलणिया य बोद्धव्वा ।
अबिभतर बाहिणियंसणी यतह कंचुए चेव ॥१४८१॥

उक्तच्छय वेक्तच्छय संघाडी चेव खंधकरणी य ।
ओहोवहिम्मि एते अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥१४८२॥

सत्तय पडिग्गहम्मि रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती ।
एसो तु णव विकप्पो उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥१४८३॥

एगो तित्थगराणं णिक्खममाणाण होति उवही उ ।
तेण परं णिरुवहि ऊ जावज्जीवाए तित्थगरा ॥१४८४॥

जिणा बारसरूवाइ थेरा चोहसरूविणो ।

अज्जाणं पण्णवीसं तु अतो उड्ढं उवगगहो ॥१४८५॥

एसो उवहीकप्पो समासतो वणिणओ जहाकमसो । दा
संभोगकर्त्तमहुणा समासतो मे णिसामेह ॥१४८६॥

संभोगपरूपणता सिरिघर सिवपाहुडे य संभुत्ते ।
दंसणणाणचरित्ते तवहेतुं उत्तरगुणेसु ॥१४८७॥

ओह अभिग्गह दाणगगहणे अणुपालणाय उववाए ।
संवासम्मि य छटो संभोगविही मुणेयव्वो ।

पडिदार गाहा ॥१४८८॥

उवहि सुय भन्तपाणे अंजलीपग्गहे इय ।

दावणा य निकाए य अबमुद्धाणेत्ति आवरे ॥१४८९॥

कितिकम्मस्स य करणे वेयावच्चकरणे हय ।
 समोसरणसन्निसेज्जा कहाए य पबंधणा ॥१४९०॥
 उग्रम उप्पाएसण निवेय परिकम्मणा य परिहरणा ।
 मंजोगविहिविभत्ता उवहिम्मि वि होंति छट्ठाणा ॥
 वायण पुच्छणा पद्धिपुच्छ चिंत परियट्टणा य कहणा य
 मंजोगविहिविभत्ता सुतठाणे होंति छट्ठाणा ॥१४९१॥
 उग्रमउप्पाएमण लोयण संभुंजणा णिसिरणा य ।
 मंजोगविहिविभत्ता य भत्तडाणे वि छट्ठाणा ॥१४९२॥
 वंदिय पणमिय अंजलि गुरुआलोवे अभिगगहि णिसे-
 ज्जा । मंजोगविहिविभत्ता अंजलिकम्मे वि छट्ठाणा ॥
 सेज्जोवहि आहारे सीसगणा अणुप्पयाण सज्जाए ।
 मंजोगविहिविभत्ता दावणाए वि छट्ठाणा ॥१४९५॥
 सेज्जोवहि आहारे सीसगणाऽणुप्पदाण सज्जाए ।
 मंजोयविहिविभत्ता निमंतणाए वि छट्ठाणा ॥१४९६॥
 अबसुट्टासण अंजलि किंकर अबभासकरणमविभत्ती ।
 संजोगविहिविभत्ता अबसुट्टाणे वि छट्ठाणा ॥१४९७॥
 सुत्तायाम सिरोणय सुद्धाण सुत्तवज्जियं चेव ।
 संजोगविहिविभत्ता कितिकम्मे होंति छट्ठाणा ॥१४९८॥

आहार उवहिमत्तग अहिगरण विओसणा य सुयस-
हाए । संजोगविहिविभत्ता वेयावचे वि छटाणा १४९९

वास उडु अहालंदे पुहुत्तसाहाराणोग्गहित्तिरिए ।
युड्डावासोसरणे छटाणा होति पविभत्ता ॥१५००॥

परियट्टणाणुओगे वागरणे पाडिपुच्छणा य आलोए ।
मंजोगविहिविभत्ता सण्णिसेज्जाए छटाणा ॥१५०१॥

वादो जप्पवितंडा पयणिण्याऽणीच्छया कहा होति ।
मंजोगविहिविभत्ता कहापबंधे य छटाणा ॥१५०२॥

रागेण दोसेण अण्णाणमविरईयमिच्छत्ते ।
कोमामालोआसवदारेहिं तू रातीभोयण छटेहिं ॥

अविरयस्स बावत्तरिविहो । एसा बावत्तरी दोहिं
गुणिता रागदोसेहिं चोयालंसतं । अण्णाणातीहिं
॥२१६॥ कोहादीहिं ॥२८८॥ आसवदारेहिं ॥३६०॥
रातीभोयणछटेहिं ॥४३२॥

बारस य चउव्वीसा छत्तीसा य अड्यालमेव सट्टी य ।
बावत्तरीउ एसो संजोयविही मुणेयव्वो ॥१५०४॥

बारस य चउव्वीसा छत्तीसऽड्यालमेव सट्टी य ।
बावत्तरी विगुणिता चोयालसतं तु संजोगा ॥१५०५॥

वारस य चउब्बीसा छत्तीसउडयाल चेव सद्ठी य ।
 बावत्तरी छगुणिया चत्तारि सता उ बत्तीसा १५०६
 जससेते संजोगा उवलद्वा अत्थतो य विणाता ।
 सो जाणती विसोही उवधायं चेव संभोगे ॥१५०७॥
 जससेते संजोगा उवलद्वा अत्थतो य विणाता ।
 णिज्जहिउं समत्थो णिज्जूदे यावि परिहरिउं १५०८
 सरिकप्पे सरिछंदे तुल्चरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
 आयएज्ज भत्तपाणं सएण लाभेण वा तुस्से १५०९
 सरिकप्पे सरिछंदे तुल्चरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
 साहूहिं संथवं कुज्ज णाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥१५१०॥
 ठितकप्पम्म दसविहे ठवणाकप्पे य दुविहमण्णतरे ।
 उत्तरगुणकप्पम्म य जो सरिकप्पो स संभोगे १५११
 सत्तविहकप्प एसो समासतो वणितो सविभवेण ।
 एत्तो दसविहकप्पं समासओ भे णिसामेहि ।
 सत्तविहो कप्पो समत्तो ॥ १५१२ ॥
 कप्पपकप्पविकप्पे संकप्पुवकप्प तह य अणुकप्पे ।
 उकप्पे य अकप्पे तहा दुकप्पे सुकप्पे य ॥१५१३॥
 गच्छाओ णिगगताणं जिणकप्पियमादियाण कप्पो तु
 तं च समासेण अहं उल्लिंगेहामि इणमो तु ॥१५१४॥

पिंडेसण पाणेसण उग्गह उद्दिष्ट भावणा चेव ।
 बारस य भिक्खुपाडिमा एवमादी भवे कप्पो १५१६
 पिंडेसण पाणेसण पंचुवरिमया सभिग्गहेगा य ।
 सेसासु य अग्गहणं सेज्जोग्गह उवारिमा दोसु १५१७
 उद्दिष्टित्ती हेट्ठा जिणकप्पविही तु जो समक्खाओ ।
 खेत्ते काल चरित्ते इच्छाइ तहेव उ इहद्वंपि ॥१५१७॥
 पणुवीस भावणाओ महत्त्वयाणं तु होंति पंचणहं ।
 बारस अणिच्चतादी तवसुत्तादी य पंचेव ॥१५१८॥
 एताहिं भावणाहिं भावेत्ती ते उ णिच्चमध्याणं ।
 सब्बेवि गच्छणिगत वेरग्गपरायणा वीरा ॥१५१९॥
 बारस भिक्खुपाडिमा आदिग्गहणेण लंदिया चेव ।
 तह सुद्धपारिहारी सब्बोऽवेसो भवे कप्पो ॥१५२०॥
 णिच्छय णिरास णिम्बम णिरहंकार परभट्ट इहजोगी ।
 चत्तसरीर कसाया इंदियगामा य णिग्गहिया १५२१
 जं चउण एवमादी सब्बणयविहाण आगमाविसुद्धं ।
 कप्पोत्ति णाणदंसण चरित्तगुणमावहं जाणे १५२२
 णिच्छयमतिणो णिच्छयणयद्विता ण उडिता तु वव-
 हारे । अहवा विणिच्छतो तू णाणादीयं भवे ततियं ॥

णासंसइ इहलोयं परलोगं वा वि एस तु णिरासो । दारं
 णिम्ममता तु ममत्तं ण करेती अवियदेहे वि १५२४
 ण करेइ अहंकारं एरिसओ अहंति उत्तमगुणोघो । दारं
 गेन्वाणं परमट्ठो तस्साहणता तु दृढजोगी ॥ १५२५ ॥
 णिप्पडिकम्मसरीरो चत्तसरीरो उ होति णायव्वो ।
 णऽवणेतऽच्छमलादि वि खंतिखमो उज्ज्ञयकसाओ ।
 सोइंदियमादीसु य विसयपयारेसु सहमादीसु ।
 ण उवेनि रागदोसे इंदियगामा य णिगगहिया (दारं)
 स्ववणया वी दुविहा णाणे करणे य हांनि बोधव्वा ।
 स्ववणयाणंऽपेश्यं भतं तु जो सुदृष्टितो चरणे १५२८
 कप्पो णामं भण्णति जो आवहती हु णाणमादीणि ।
 बुड्हिं वा वि करेती सव्वो सो होति कप्पो तु १५२९ ॥
 कप्पो उ एस भणितो अहुणा एत्तो पकप्प बोच्छामि ।
 उस्सारकप्पमादी जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥ १५३० ॥
 उस्सारकप्प लोगाणुओग पढमाणुओग संगहणी ।
 मंभोग सिंगणाइय एवमादी पकप्पो तु ॥ १५३१ ॥
 आयारदिद्विवादत्थजाणए पुरिसकारणविहणू ।
 मंविगमपरितंतो अरिहति उस्सारणं काउ ॥ १५३२ ॥

कारणे अहिंगते य पडिवद्वे संविग्गे य सलद्विए ।
 अवट्रिणि य पडिबुजशी गुरु अमुदी जोगकारए १५३३
 गच्छो य अलद्वीओ ओमाणं चेव अणहियासो य ।
 गिर्हणो य मंदधम्मा सुद्धं च गवेसए उवहिं १५३४
 एषहिं कारणेहिं उस्सारायारिहो उ वोधवो (दा) ।
 उस्सारो दिद्विवादे धम्मकही गंडियणिमित्तं १५३५
 उस्मान्कप्प एसो समासओ वणिओ मए एवं ।
 लोगाणुओ गमेत्तो वोच्छामि अहं समासेण ॥१५३६॥
 मेहावीसीसम्मी ओहामिय कालगज्जथेराणं ।
 मञ्जन्ननिषण अह सो खिंसंतेण इमं भणितो ॥१६३७॥
 अतिवहुतं तेऽधीतं णथ णातो तारिसो मुहुत्तो उ ।
 जन्थ घिरो होति सेहो णिकखंतो अहो ! हु वोदत्तं ॥
 तो एवं छउमत्थं भणितो अह गंतु सो पतिद्वाणं ।
 आजीविसकासंमी सिकखति ताहे णिमित्तत्थं १५३९
 अह तम्म अहीयम्मी वडहेट्ठ णिवेट्ठ अणणय
 क्यानि । साताहणो णरिंदो पुच्छइमा तिणिण
 पुच्छाओ ॥१५४०॥
 पसुलेंडि पढमताए बितिय समुदे व केत्तियं उदयं ? ।
 ततियाए पुच्छाए महुरा य पडेज्ज व ण वत्ति ? १५४१

पढमाए वामकडगं देति तहिं सतसहस्रसमुल्लं तु ।
 वितियाए कुंडलं तू ततियाए वि कुंडलं वितियं १५४१
 आजीविया उवद्वित गुरुदक्षिखण्णं तु एत अम्हं ति ।
 तेहिं तयं तू गहिनं इयरोचित कालकज्जं तु ॥१५४३॥
 णटमिम तु सुत्तम्भी अत्थमिम अणट्टे ताहे सो कुणति ।
 लोगणुजोगं च तहा पंढमणुजोगं च दोऽवेते ॥१५४४॥
 बहुहा णिमित्त नहियं पढमणुओगे य होंनि चरियाइ ।
 जिणाचक्षिदसाराणं पुच्छभवाइ णिवडाइ ॥१५४५॥
 तो काजणं तो भी पाडलियुत्तं उवद्वितो वंघं ।
 वेनि कनं मे किंची अणुगगहडाए तं सुणसु ॥१५४६॥
 तो संघेण णिसंतं सोतूण य से पडिच्छितं तं तु ।
 तो तं एडाठेनं तूणगरम्भी कुसुनणाभम्भि ॥१५४७॥
 एमादीणं करणं गहणं णिज्जूहणा पकप्पो तु ।
 संगहणीण य करणं अप्पाहाराण तु पकप्पो ॥१५४८॥
 संभोगो संगहुवग्गहटता य वच्छल्लपीति बहुमाणो ।
 साहारणकुलगणसंघठवण अणतिक्कमणमेव ॥१५४९॥
 सुत्तत्थतदुभयादीहिं संगहो वग्गहो य भत्तादी ।
 वच्छल्ल गुरुगिलाणे एवमादीसु जहकम् सो ॥१५५०॥

एगत्थ भोयणेण पीती भवति क्षभाण जिमित त्ति ।
 पहुमाणं पिय कुब्बति सहायगत्तं च तेणेव ॥१५५१॥
 केह अलद्विमंता ण लभंति सलद्विया चिय लभंति ।
 जं लद्वं सामणणं संभोगमित्तो उ इच्छंति ॥१५५२॥
 कुलगणसंघत्थेरा मज्जायाओ ठवेंति हिंडंता ।
 जह सकुले परिताणो णत्थी उवसंपया चेव ॥१५५३॥
 कुलगणसंघट्वणा जाओ य कताओ नहिं तु थेरेहिं ।
 कुलवट्टुमज्जाता विव ताओ य णतिक्षमिज्जंति १५५४
 कज्जेसु सिंगभूतं कज्जं तू सिंगणाइयं होति ।
 तं चेनिसाहुसंजति होज्जाहि सगच्छपरगच्छे ।

संभोगकप्पो गतो ॥१५५५॥

तं पुण होज्जाहि कृतं कोति भणेज्जाहि संजति जतिं
 वा । मज्ज्वेस दुवक्खरओ कहंति सो पुच्छितो आह ॥
 कीतो मे व पइडो हाउं वा आणिओ धरेतो वा ।
 दारे वासे जातो अहवा राजा इव पलावी ॥१५५६॥
 अमिऊणं घन्तुं दासाणि करेउ अहव लोभेउ ।
 वथासणमादीहिं तु नत्थ पमादो ण कायव्वो १५५८
 गच्छस्स रक्खणट्टा चारित्तिते अवस्स कायव्वं ।
 इहरा तू मज्जाता गच्छस्स तु फेडिया होति १५५९

आणाए जिर्णिदाणं अणुकंपाए य चरणजुत्तामं ।
 परगच्छे व सगच्छे सब्बपयत्तेण कायव्वं ॥१५६०॥
 अणवत्थवारणद्वा उच्छृदिट्ठंततो कुसीले वि ।
 लिंगं अणुम्मुयन्ते जीवठिय अबुद्रधम्मो य ॥१५६१॥
 अणुसद्वी धम्मकहापण्णविओ जदि न मुचती पावो
 ताहे अतीसत्तीए इमाङ् कुज्जा तु करणाणि ॥१५६२॥
 अंतद्वाणी ओसोवणी य पासायकंप वेतालं ।
 अभिओग थंभ संकम आवेसण वेयणकरी य ॥१५६३॥
 अंतद्वाणं काउं हरंति ओसोवणं च काऊणं ।
 वेतालमुट्ठवेडं भेसांति तगं अमुचंतं ॥१५६४॥
 अभिओग वसीकरणं विज्जासंकामणं तु अण्णत्थ ।
 थंभस्स कंपणं वा आवेसेतुं व भेसांति ॥१५६५॥
 माहमियवच्छल्लं कुणमाणेण तु एव कत होड ।
 अण्णे य गुणा उ इमे हवंति ते मे णिसामेह ॥१५६६॥
 मिच्छत्ता सम्मत्तं सम्मदिट्ठी चरित्तओ लंभं ।
 चरित्तिते थिरत्तं मलणा य पभावणा नित्ये ॥१५६७॥
 तम्हा साहुणिमित्तं सब्बपयत्तेण एव कायव्वं ।
 अहुणा चेतिणिमित्तं जं कायव्वं तगं वोच्छं ॥१५६८॥

चोदेहु चेतियार्ण खेत्तहिरण्णे व गामगावादी ।
 लग्नंतस्स व ज्ञतिणो तिकरणसोही कहं णु भवे ? ॥
 भण्णाति एत्थ विभासा जो एयाइं सयं विमग्नेज्जा ।
 तस्स ण होती सोही अह कोति हरेज्ज एयाइं ॥१६७०॥
 तथ करेत उवेहं जा सा भणिता तु तिगरणविसोही ।
 सा य ण होति अभक्ती य तस्स तम्हा णिवारेज्जा ॥
 सव्वत्थामेण तहिं संघेण होति लग्नियव्वं तु ।
 सचरित्तअचरित्तीण उ सच्चेसिं एव कज्जं तु १६७३
 तथ पुण कयादि णिवो अण्णात्थ हवेज्ज तथ उ वयंता
 लिंगत्थेहिं समयं का मज्जादा भवे तहियं ? ॥१६७४॥
 भत्ते पाणे सयणासणे य सेज्जोवही य सज्ज्वाए ।
 वायणपडिच्छणासु य सुहसीले अत्तसंहारो १६७४
 जहियं तु सावयादी कोति करेज्जाहि संघभन्तं तु ।
 तहियं तु ण गेणहेज्जा ण य वस उहिद्ध सेज्जासु ।
 पाणगभन्नादीसुं ण य संघाडो ण या वि ते सुन्ते ।
 बोहिंनि आसणे वि य ण जयंती एत्थ तु उवेसो १६७६
 सेज्जा वेवं उवहिं ण देंति गेणहंति वा ण संघाडं ।
 सज्ज्वायं पि ण गिणहे ण पडिच्छे चोदए वावि १६७७

मोद्दुं राउलकज्जं उवदेसं वा सुएज्जऽहव एवं ।
 अण्णतथ उदासीणो एसो खलु भत्तसंथारो ॥१६७८॥
 परिवारं देंति तहिं राजकुले विण्णवेंति ते चेव ।
 जदि वा होज्ज समत्थो मनेज्जा सो सर्यं चेव १६७९
 पुण बंधवहादिसु उद्वणचरित्तभंसरोहे वा ।
 णिरलंबणो समत्थो ण करेति तहिं विसंभोगो १६८०
 कोई वहबंधादी साहूण करेज्ज अहव देवकुलं ।
 पाडेज्ज पडिभंगं च करेज्जा कोति पडिणीओ ॥
 अहवा वि णिमित्तं तू अकहेमाणो तु कोइ रुमेज्जा ।
 णिरलंबणभगिलाणो ओरसविज्जादिसु समत्थो ॥
 जदि णेच्छति मोदेतुं तमसंभोयं करेति तो समणं ।
 परितावणादि जं ते पावेती तं च पावइय ॥ १६८३॥
 केवहयं पुण कालं बंधादिगताण नेसि समणाणं ।
 कायव्यं तु मनिमता भण्णति इणमो णिसामेह १६८४
 भज्जायसंपउत्ते चिरमवि कायव्यमपरितंतेण ।
 मज्जायविष्पहृणो सउवालंभं सतिं करणं ॥१६८५॥
 जदि अवराहे गहितो भण्णति मोएमो जदिपुणो ण
 करे । परिसगमब्मुवगते लोदंडं पच्चुवालंमे १६८६

इहपरलोगं चहउं कुब्वनेतारिसाणि जे इहतिं ।
 ते पर्वनेताहं परे य लोए दुहसताहं ॥१५८७॥
 एवं उवालभेत्ता मोदेउं जादि पुणो करेमाणो ।
 घेष्येज्ज उदासीणं हवेज्ज ते वाहि (रि) या समणा
 एवं तु समासेणं एस पक्ष्यो मए समक्खातो (दारं) ।
 एतो तु समासेणं बोच्छामि विकल्पमहुणा उ १५८९
 अतिरेणं परिकम्मण तह भंडुप्पायणा य बोधव्वा ।
 एमादि विकल्पो तू तत्थइरेगे इमं होति ॥१५९०॥
 एगेण अलेवकडं कल्पो संघाड़लेवग पक्ष्यो ।
 तिष्पभिहं तु विकल्पो मत्तगभोगो घडणद्वाए १५९१
 पादेगेण अलेवं गेणहे जिणकाप्पिया तु सो कल्पो ।
 धेराण दोणिण पादा संघाडेणं च हिंडंति ॥१५९२॥
 तत्थेगपडिग्गहए भत्तं लेवाडगंपि गेणहेति ।
 एगत्थ दबं मत्तग दोणहं पी रित्तग कल्पो ॥१५९३॥
 तिष्पभितिं हिंडंती णिक्कारण मत्तएसु वा गेणहे ।
 सो होति विकल्पो ऊ तत्थ य सोही इमा होति १५९४
 जदि भोयणमावहती ततिमासा जाति दिणा उ आणेती
 तावहया चउमासा वितियाए रोवणा भणिया १५९५

समर्णीण तिण्ह कप्पो चतुपंचण्हं भणितो पक्पो उ।
 तेण परेण विकप्पो एत्तो उवहिं तु वोच्छामि १५९६
 तिण्ण तु भणिता कप्पा अतरंता विपत्तिणा
 पक्पपविही । उप्पायगवज्जाणं तिठाणारोवणा
 भणिता ॥१५९७॥

गणणाए पमाणेण य उवहिपमाणं दुहा मुणेयव्वं ।
 गणणाए जिणाणं तू एको दो तिन्नि वा कप्पा १५९८

दो रघणी संडासो सोत्थीओ वावि होति आयामो ।
 रुंदा दिवड्हहत्थं एयपमाणप्पमाणं तू ॥१५९९॥

दो खोमिओण्ण एको थेराणं तिन्नि होति गणणाए ।
 आयामायपमाणा दुहत्थ अद्धं च विच्छिन्ना ॥१६००॥

एसो उ भवे कप्पो पक्पो उ गिलाणए गुरुणं वा
 चतु सत्त वा वि पाउण माणऽतिरित्तं च धरेज्जा ॥
 कारण पक्पो होती विकप्पो णिक्कारणे मुणेयव्वो ।
 उप्पायगो पवित्री सावतिरेगं धरेज्जाहि ॥ १६०१॥

गणणाए पमाणेण व गच्छट्टाए तु तं पमोन्तूणं ।
 जो अन्नो अतिरेगं धरेइ सोधी तु तस्स इमा १६०२॥
 चाउम्मासुककोसो मासियमज्जे य पंच य जहणे ।
 तिविहम्मि वि उवहिम्मि अतिरेगारोवंणा भणिता॥

अतिरेग उवहिदारं संखेवेणोदितं अह इआर्णि ।
 परिकम्मदार वोच्छं अपपरिकम्मो जिणाणुवही १६०५
 कारणविही पक्ष्पो थेराणं अविहिए विक्ष्पो उ ।
 परिकम्मणा उ एसा भंडुप्पायं अतो वोच्छं १६०६॥
 गाहग गहणं गेज्जं जहासंखेणिमे तु णायव्वा ।
 पुरिसे पडिमा उवही तिणिण तिगा भावसुद्धाइ १६०७
 गाहगो गीयत्थो खलु पुरिसो णियमेण होति
 णायव्वो । उद्दिडुमाइयाहिं गहणं पडिमाहिं भणियं तु ।
 घेत्तव्वो उवही खलु तिणिणत्ताहार उवहिसेज्जत्ति ।
 तिणिण वि तिविसुद्धाइ उगगममादीहिं णियमेणं ॥
 एगेण चेव गहणं क्ष्पो दोहिं भवे पक्ष्पो तु ।
 तिष्पभिति तु विक्ष्पो भत्ते पाणे तहा उवही १६१०
 आदितिएण तु गहणं वितियट्टाणम्मि अब्भणुण्णातं ।
 हंदि परिकर्णाणज्जो सुहाकरो सव्वसाहूणं ॥१६११॥
 आदित्ति होति क्ष्पो तिगंति आहार उवहि सेज्जा तु ।
 गहणं तु होति तिविहं उगगममादी तिगविसुद्धं १६१२
 वितियट्टाणपक्ष्पो तत्थ वि तिगसुद्धमेव घेत्तव्वं ।
 असती य अणुण्णातं पणहाणीए असुद्धं पि ॥१६१३॥

केण पुण कारणेण गच्छे असुद्धं पि उग्गमादीहिं ।
 घेष्यति ? भण्णति सुणसू कारणमिणमो समासेण ॥
 रयणाकरो व्व जम्हा उ आगरो होति सव्वसोक्ष्वाणं
 णाणादीण य पभवो ततो उ मोक्षवो उ तो रक्ष्वे ॥
 आइण्णता महाणो कालो विसमो सपक्ष्वओ दोसा।
 आदितिगभंगगेण गहणं भणितं पक्ष्पमिम् १६१६
 तियतिक्कंतपमाणे अणुवासो चेव कारणनिमित्तं ।
 परिकम्मण परिहरणे उवही अतिरित्तगपमाणो ॥
 गच्छो सबालवुड्हो गिलाणसेहादिएहिं आदिणो।
 एसो व महाणो तू तस्स तु दुलभं तिगविसुद्धं १६१८
 कालो विसमो दुष्टिभक्ष्वमादिदोसा सपक्ष्वओ उ
 इमे । पासत्थादी बहवे ओमाणंतो तओ होति १६१९
 अहव असंविग्गादी जह महुराकोद्वल्लगा केह ।
 मायाए उग्गमंती सड्हा अपि कोवि नवि जाणे ॥
 एतेहिं कारणेहिं अलंभे आइतिगभंगगहणं तु ।
 आदितिगमुग्गमादी भंगो तू भंसणा होति ॥१६२१॥
 कारणतो तिविहंपी माणं तू अतिक्लमेडज उ कदादि।
 किं पुण तिविहं माणं ? भण्णति हणमो णिसामेह ॥

हवती पमाणपमाणं खेत्तपमाणं च कालमाणं च ।
 एतं तिविहपमाणं अतिक्षमो तेसिमो होति ॥१६२३॥
 अतिरेगपमाणेण तिष्ठ परेण पि णाम गेणहेज्जा ।
 खेत्तओ अतिक्षमो तू परतो वि दुगाउया मग्गे १६२४
 कालपमाणा तिक्षमे कुज्जा पाउरणगं अकालेवि ।
 वसती कालातीतं असिवादणुवासणं एयं । दा १६२५
 परिकम्मणमविहीए बलियट्टदुब्बलंमि कुज्जाहि ।
 दुल्भलंभे सीतेण अदिओ उणिणयं पंतो ॥१६२६॥
 अतिरित्तपमाणं वा धारिज्जति कारणेहिं एएहिं ।
 सो सब्बो पक्ष्पो तू णिक्षारणओ विक्ष्पो उ १६२७
 संक्ष्पो उ इदाणि सो य पसत्थो य अप्पसत्थो य ।
 एतेसि दोणहं पी परूबणा होतिमा कमसो ॥१६२८॥
 दंसणनाणचरिते अणुपालण पसत्थणोपसत्थो उ ।
 हंदियविसयकसाएसु अप्पसत्थो उ संक्ष्पो १६२९
 दंसणपभावकाहं सत्थाहं कहमहं अहिज्जेज्जा ।
 जो चिंते(ई)यं एसो संक्ष्पो दंसणे होति । दा १६३०
 णाणतियारं ण करे कहं च णाणं अहं अहिज्जेज्जा ।
 इति णाणे चारिते सुख्खचरितो कहं होज्जा ? ॥१६३१॥

उत्तर उत्तरिणहिं व चारित्तमुणेहिं कह णु विहरेज्ञा।
 एसो उ चरित्तमी संकप्तो सत्थगो भणिओ । १८३॥
 सद्वादिइंदियतथाण पत्थणा तह य रागगमणं तु ।
 कोहादिकसायाण य अज्ञप्तं होति अपसत्थं १८४॥
 एसो खलु संकप्तो एत्तो बोच्छामहं तु उवकप्तं ।
 उवकप्तती करेति उवणेइ व होति एगट्टा ॥ १८५॥
 भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण व उवगगहं कुणति ।
 उवकप्तपति गुणधारी उवकप्तं तं वियाणाहि १८६॥
 खुहिओ पिवासिओ वा सीतभिभूतो व ण तरती
 पढिउं । तस्स करेति उवगगह पडंत कुहुस्स वा थूणा ॥
 जो उप्पाए समाहिं चउच्चिवहं णाणदंसणे धरणे ।
 तत्तो य तवसमाहिं तस्स खमे णिज्जरा होइ १८७॥
 भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण उवगगहियदेहो ।
 जो कुणति सि समाहिं तस्सावरणं हणति दाता ॥
 भत्तस्स व पाणस्स व उवकरणस्स व उवगगहकरस्स।
 जो कुणति अंतरायं तस्सावरणं पवड्हेति ॥ १८९॥
 एसुवकप्तो भणितो एत्तो बोच्छं अहं तु अणुकप्तं ।
 अणुसद्वो तू तहियं पच्छाभावै मुण्णयब्बो ॥ १९०॥

णाणचरणङ्गद्वयाणं पुव्वायरियाण अणुकितिं कुणइ ।
अणुगच्छइ गणधारी अणुकप्पं तं वियाणाहि ॥

गुणसयसहस्रकलियाण गुणुत्तरतरं अभिलसंताणं ।
जे खेत्तकालभावा आसज्जा जोगहाणी भवे १६४२
गुणसयकलिओ (सं) जमो मोक्खो य गुणोत्तरो
मुणेयव्वो । सामायारी हाणी तु जोगहाणी मुणेयव्वा ॥
खेत्ताणःसती अद्वाण उच्चखेत्तम्मि काल दुभिक्खे ।
भावे गेलन्नादिसु सुद्वाभावे उ जदसुद्वं ॥१६४४॥

गेण्हेज्जाहारादी णाणादीसू व उज्जमण कुज्जा ।
अणसणमादी व तवं अकरेमाणस्स साहुस्स १६४५
एगंतणिज्जरा से जह भणिता सासणे जिणवराणं ।
जोगणियत्तमतीणं सुहसीलाणं तवो छेदो ॥१६४६॥

सुहसीलदुड्सीला तेसिं अष्कासु गेण्हमाणाणं ।
जं आवज्जे तहियं तवं च छेदं च तं पावे ॥१६४७॥

उक्कप्पो उ इदाणिं उड्डं कप्पावि होति उक्कप्पो ।
अहवावि छिन्नकप्पो उक्कप्पो अहवण अवेतो १६४८
उगमउण्यायणएसणासु णिरवेक्खा कंदमूलफले ।
गिहिवेयावडियासु य उक्कप्पं तं वियाणाहि ॥१६४९॥

णामणि थंभणि लेसणि वेताली चेव अङ्गवेताली ।
 आदाणपाडणे सु य अण्णेसु य एवमादीसु ॥१६५०॥
 तसएर्गिदियमुच्छण संसेहममच्छमरणमहिओगे ।
 रोहाऽहव्यनतह बंभदंडथंभे य अगणिस्स १६५१
 णामणि रुखफलाहं पडिमाणं देउलाण थूभादी ।
 थंभणि पदमवि ण चलति लेसणि लंसति अंगाह ॥
 विणिद्विट्ठाण य आणणि अहव णिलुक्कावणम्मि
 वेताली । उट्टविऊण णिवातो नक्खण एसऽद्वेताली ॥
 गढभाण आदाण करेति तह साडणं च गढभाण ।
 अभिजोग वसीकरणे विजजाजोगादिहिं कुणति ॥
 विच्छिगमच्छिगभमरे मंडुक्के मच्छए तहा पक्खी ।
 सम्मुच्छावेमादी जो जोणीपाहुडेणं च ॥१६५५॥
 पसु उहविउं जागं आहव्यन मंत रोहकम्मे य ।
 कोहादि बंभदंडो थंभणि अगणिस्स मंतेण ॥१६५६॥
 एमादि अकरणिज्जं णिक्कारणे जो करेति तू भिक्खू ।
 सव्वो सो उक्कप्पो एत्तोऽकप्पं तु वोच्छामि ॥१६५७॥
 णिक्किव णिरणुक्कंपो पुप्फफलाणं च साडणं कुणति ।
 जं चण्ण एवमादी सव्वं तं जाणसु अकप्पं ॥१६५८॥

जो उ किवं ण करेती दुकखत्तेसुं तु सब्बसत्तेसु ।
 णिरवेक्खो रीयादिसु पवत्तर्ह णिक्किवो सो तु १६५९
 सहसा य पमाएण व परितावणमादि बिंदियादीण ।
 काऊण णाणुतप्पइ णिरणुक्कंपो हवइ एसो ॥१६६०॥
 सत्तट्टमठाणेसू सट्टाणा भेवणाए सट्टाण ।
 गच्छागाहांमि उ कारणंमि वितियं भवे ठाणं १६६१
 सत्तट्टमठाणाहं उक्कप्पो चेव तह अकप्पो य ।
 ते णिक्कारणसेवी पावनि सट्टाणपच्छित्तं ॥१६६२॥
 पत्तंमि कारणे पुणं रायदुट्टादियम्मि आगाहे ।
 जयणाए करेमाणो होति अकप्पो ठिति ट्टाणे १६६३ ॥
 दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्चकालपासत्थो ।
 णिच्चं च णिदिओ पवयणम्मि तं जाणसु दुकप्पं १६६४
 दुकप्पविहारीणं एगंतासायणा य बंधो य ।
 आसायणा य बंधेण चेव दीहो तु संसारो ॥१६६५॥
 दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्तो ।
 णिच्चं पसंसिओ पवयणांमि तं जाणसु सुकप्पं १६६६
 सुकृत्पविहारीणं एगंताराहणा य मोक्खो य ।
 आराहणाइ मोक्खेण चेव छिणो य संसारो
 दसकप्पो समत्तो ॥१६६७॥

वुत्तो दसविहकप्पो अहुणा वीसतिविहं तु वोच्छामि।
 तस्स तु दारा इणमो संगहिया तीहिं गाहाहिं १६६८
 कप्पेसु णामकप्पो ठवणाकप्पो य दवियकप्पो य।
 खेत्ते काले कप्पो दंसणकप्पो य सुतकप्पो ॥१६६९॥
 अज्ज्ञयण चरित्तामि य कप्पो उवही तहेव संभोगो।
 आलोयण उवसंपद् तहेव उद्देसणुण्णाए ॥ १६७० ॥
 अद्वाणंमि य कप्पो अणुवासो तह य होति ठितकप्पो।
 अड्डियकप्पो य तहा जिणथेर अणुवालणा कप्पो॥
 जो चेव दवियकप्पो छविहकप्पंमि होति वकखाओ।
 सो सेव णिरवसेसो जो य विसेसोऽत्थ तं वोच्छं॥
 एस पुण तिविहकप्पो अहव इमं भावकप्पमज्ज्ञयणं।
 सच्च वा सुतणाणं दायच्चं केरिसे होति ॥ १६७३ ॥
 सुपरिच्छियगुणदोसे सेलघणादीहिं तू परिच्छाहिं।
 सुविसोहितमिच्छमले उंडयभोमादि णातेहिं १६७४
 सच्चंपि य सुयणाणं सुत्तत्थो सङ्घटिए ण तु असङ्घी।
 अह पुण को परमन्थो विसेसओ पवयणरहस्सं?॥
 पवयणरहस्समेताणि चेव भण्णति छेदसुत्ताणि।
 ताणि ण दायच्चाणि भण्णति सुत्तामि को दोसो ? ॥

अप्यं पि य तं बहुगं अरहस्समपारधारए पुरिसे ।
 दुग्गतगमाहणे विव जह बहरगहीरगादीयं ॥१६७७॥
 जह फेल्लमाहणेण रत्थाए बहर हीरतो लद्धो ।
 सो अण्णस्स दरिसिओ तेण वि अण्णस्स सो सिड्हो ॥
 एवं परंपरेण रण्णो कण्णं गतो तु सो ताहे ।
 ताहे दंडितो रण्णा हडो य सो बहरहीरो से १६७९
 एवं अपरिणयस्सा किंची अववादकारणं सिड्हं ।
 सो कहयति अण्णोसिं परंपरेण चरणणासो ॥१६८०॥
 तम्हा परिच्छिङ्गं देयं विहिसुत्तबद्धपेदस्स ।
 परिणामगस्स जतिणो ण तु देयं अपरिणामस्स ॥
 दवियकप्पो समहिगतो ण भणिय जं हेडु तं भणामि
 ति । सो भणनतीं विसेसो इणमो वोच्छं समासेण ॥
 दव्वं तु गेणिहयव्वं सुखं गविसिय गवेसणा दुविहा ।
 अविहीय विहीए या अविहीय इमं सुणेयव्वं १६८३
 दव्वाणि जाणि काणिति गहणं लोए उवेंति साहूणं ।
 तेसि तु संभवं मग्गमाणे ण तु साहते अत्थं १६८४
 अविहीय दोस पिंडुवहिसेज्जसज्ज्ञायणिक्खमपवेसो ।
 णवकहगदुयचउक्के एते सव्वेण पावेंति ॥१६८५॥

साली तुंबीमादी आहारे फलिहमादि उवहिंमि ।
 रुक्खवा पुण सेज्जडा एमाधिगमो हु भावूण ॥ १६८६ ॥
 एताहं पुच्छिअणं कथं पङ्णणाणि ? तहिं नहिं गच्छे ।
 अविहिगवेसण एसा जह भणिया पिंडजुत्तीए १६८७
 आहारोवहिसेज्जाण णाणदव्वेहिं होति णिष्फक्ती ।
 वेसणमिरिए पिष्पलि अंल्लगघततेल्लगुलमादी १६८८
 हिमवंते पिष्पलीओ मलए मारिचाण होति णिष्फक्ती ।
 हिंगुस्स रमढविसए जीरगमादी य जो जत्थ १६८९
 मा अम्हं अट्टाए गावो कीता हढा व दृढा वा ।
 फलमादी मा रुक्खो व रोविनो अम्ह अट्टाए १६९०
 एमादि विमगंतो पभवं णाणादियाण परिहाणी ।
 तह वत्थपातसेज्जाण मरेति सो अंतरा चेव १६९१
 एवं सो हिंडन्तो भत्तं पाणं च ठाणमुवहिं च ।
 जह उग्गमे उ कह वा सज्जायं कुणतु हिंडन्तो ? ॥
 जो णिकखमणपवेसे कालो भणिनो तु वासउडुबद्दो ।
 दुचउकं उडुबद्दे विहारो हेमनगिम्हासु ॥ १६९३ ॥
 णवमो वासावासे एसो कण्ठो जिणेहिं पण्णत्तो ।
 एयदस संखमाणं बोच्छामि अहं समासेण ॥ १६९४ ॥

वोण्णि सया चत्ताला उडुबद्धे एत्तिओ विहारो तु ।
 वासासू पण्णासा पणगं पणगं हसति एगं ॥१६९७॥
 पुरपच्छिमज्ज्ञाणं सव्वेसिं एस काल वोच्छेओ ।
 णिचं हिंडतेणं विराहितो होनि सो णियमा १६९८ ॥॥
 नम्हा खलु उपपत्ती ण एसियव्वा तु तेसि दव्वाणं ।
 जससटा णिप्फण्णं तं गंतुं एसते मतिमं ॥१६९९॥
 अनिबहुय दुल्धभं वा णातुं दव्वकुलदेस भावे य ।
 एउत्तिसु द्वमसु द्वं ताहे गहणं अगहणं वा १७००॥
 अहवा पुझो भण्डजा समणादिकयं व अहव णिकिख-
 तं । पक्खित्तं वावि भवे तत्थ उदारा इमे हेंति ॥
 समणे समणी सावयसाविगसंबंधि इड्डि मामाए ।
 राया तेणे पक्खेवे या णिक्खेवयं कुज्जा ॥ १७०० ॥
 इमए दूभगे भद्वे समाणे छणणे य तेणए ।
 ण य णाम ण वत्तव्वं दुट्ठे रुट्ठे जहा वयणं १७०१
 एतेसिं दाराणं विभास भणिता जहा य कप्पंमि ।
 सच्चेव णिरवसेसा णायव्वा सव्वदव्वेसु ॥ १७०२ ॥
 जं पुण जत्थाइण्णं दव्वे खित्ते य होज्ज काले य ।
 तहियं का पुच्छा तू जह उज्जेणीए मंडेसु ॥१७०३॥

एमेव माहमासे किसराए संखडीए का पुच्छा ? ।
 विच्छिण्णे व कुलंमी बहुए दव्वांमि का पुच्छा ? १७०४
 तम्हा तु गहणकाले मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
 सोहेज्जा दव्वस्स तु ण मूलओ तस्स उप्पत्ती १७०५
 कीते पामिच्चे छेज्जए य णिष्फत्तिओ य णिष्फण्णे ।
 कज्जं णिष्फत्तिययं समाणिते होति णिष्फण्ण १७०६
 कंडितकीतादीया तंदुलमादी तु होज्ज समणद्धा ।
 णेष्फत्ती सा तु भवे आयद्धा फासुणिष्फण्णं १७०७
 तं होति कप्पणिज्जं जं पुण समणद्ध होज्ज णिष्फण्णं
 तं तु ण कप्पति एत्थं च चोदओ चोदए हणमो १७०८
 णिष्फत्तिओ य णिष्फण्णओ य गहणं तु होज्ज
 समणस्स । णिष्फत्तिओ असुद्धे कहं णु णिष्फण्णते
 सोहा ? ॥१७०९॥

एवं गवेसियव्वे किं एगट्टाणगं परिच्चत्तं ? ।
 भण्णति अफासुदव्वे ण चेव गहणं तु साहूणं १७१०
 तो तेण साहूणं किं कज्जं होहति तू विगष्णेण ।
 अण्णंपि य एगकुले ण हु आगरो सव्वदव्वाणं १७११
 तिकड्डुयमादीयाणं सव्वदव्वाण सं भवेगकुले ।
 ताणि तु गवेसमाणे हाणी सच्चेव णाणादी १७१२

तम्हाऽप्पं परिहर अप्पप्पविवज्जतो विवज्जति हु ।
 अप्पप्पं सःहेतो विवज्जति ण तं च साहेति १७१३॥

णिष्फक्ती समणट्ठा समणट्ठा चेव जं तु होइ णिष्फक्नं ।
 गहितं होज्ज जयन्तेण तत्थ सोही कहं होति ? १७१४

सुयणाणपमाणेण उ उवउत्तो उज्जुयं गवेसंतो ।
 सुद्धो जदि वावणो खमओ इव सो असढभावो ।

जो पुण मुक्कधुराओ णिरुज्जमो जदि वि सोउ
 णावणो । तह वि य आवणो वि य आहाकम्मं
 परिणओब्ब ॥ १७१६ ॥

एयस्स सोहणट्ठं अहवा अणणंगि अणणए एत्थ ।
 कारगसुत्तं इणमो तमहं वोच्छं समासेण ॥ १७१७॥

अंगंगि वि विनियए ततियगमि जे अतथकुसल
 जिणदिट्ठा । एतेसु जुत्तजोगी विहरंतो अहाउयं बुज्ज्ञे
 अंगगहणापढमं आयारो तस्स वितियसुतखंधे ।
 तस्स वि बीयज्ज्ञयणे उद्देसे तस्स ततियांमि ॥ १७१९॥

जत्थेयं सुत्तं खलु सेय उवस्से ण होज्ज सुलभो उ ।
 अहवा वि तईए त्ती अज्ज्ञयणंमि तहज्जंगि ॥ १७२०॥

तस्स वि ततिउद्देसे आदीसुत्तंगि जं समक्खायं ।
 जदि संकमो असुद्धो ताहं जयणाए जुत्तो उ १७२१

देसूर्यन्पि हु कोडिं अच्छंतो सो विसुज्ज्ञती णियमा ।
 तम्हा विसुद्ध भावो सुज्ञति णियमा जिणमयंमि ॥
 बाहिरकरणे जुत्तो उवओगमहिट्ठिओ सुनधराण ।
 जं दोस समावण्णो वि णाम जिणवयणतो सुद्धो ॥
 दव्वेण य भावेण य सुद्धमसुद्धे य होति चतुभंगो ।
 ततिशो दोसु विसुद्धो चउत्थतो उभयह असुद्धो ॥
 वितिओ भावविसुद्धो दव्वविसुद्धो य पढमओ होति ।
 अहवा वि दोसकरणं दव्वे भावे य दुविहं तु १७२५
 भावविसुद्धाराहको दव्वतो सुद्धो य होतःसुद्धो य ।
 जे जिणदिट्ठा दोसा रागादी तेहिं ण उ लिघे १७२६
 एते सामण्णतरं कीयादी अणुवउत्तो जो गिणहे ।
 तट्टाणगावराहे संषड्डियमोवराहाणं ॥ १७२७ ॥
 आवण्णे सट्टाणं दिज्जति अह पुण बहुं तु आवण्णो ।
 तहियं किं दायव्वं ? भण्णति इणमो सुणह वोच्छं ॥
 तहियं किं दायव्वं ? तबो व छेदो तहेव मूलं वा ।
 कत्थेदं भणितंती भण्णति तु णिसीहणामंमि १७२९
 वीसतिमे उद्देसे मास चउम्मास तह य छम्मासं ।
 उग्धायमणुग्धातं भणियं सव्वं जहाकमसो ॥ १७३० ॥

एसो तु दवियकप्पो जहककमं वणिणओ समासेण ।
एतो उ खेत्तकप्पं बोच्छामि गुरुवएसेण ॥ १७३१ ॥

आदी छक्कणिथत्ती तु वणिणना जंमि जंमि खेत्तामि ।
एतेसि सणिणकासे सालंबो मुणी वसे खेत्ते ॥ १७३२ ॥

छविवहकप्पो आदी तहिं जारिसगा णिसेविया खेत्ता ।
अक्खेमअसिवभादीण कप्पती तारिसेवासो १७३३ ।

खेमादि अलब्बमंतो पडिकुट्टेहिं पि वसति जयणाए ।
दुयभादी संजोगा वक्खाणं सणिणकासस्स ॥ १७३४ ॥

अक्खेमे असिवंमि य असिवं वज्जे वसेज्ज अक्खेमे ।
तहिं उवहिविणासो असिवे पुण जीवणासो तु ॥ ३५

एवं ओमादीसुं संजोगा तिगचउक्कमादीया ।
वसियध्वं जेसु जंहा तमहं बोच्छं समासेण ॥ १७३६ ॥

कडजोगिसन्निकासे बहुतरर्गं जत्थुवग्गहं जाणे ।
थोवर्नारियं च हार्णिं तत्थणणयरे दुविहकाले ॥ १७३७ ॥

एतेसामण्णतरे आलंबणावरहिओ वसे खेत्ते ।
कालदुयावराहे संवाद्यमोवराहाणं ॥ १७३८ ॥

संवाद्यपाथराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा ।
आयारपकप्पे जं पमाणणेमाण चरिमांमि । दा. १७३९

एसो उ खेत्तकप्पो अहुणा बोच्छामि कालकप्पं तु ।
जावाउतं तु झीणं अणुपाले ताव सामणणं ॥१७४०॥

गीतसहाओ विहरे संविग्गेहिं व जयणजुक्तो उ ।
असती विमग्गमाणो खेत्ते काले इमं माणं ॥१७४१॥

पंच व छ सत्त सत्ते अतिरेगं वा वि जोयणाणं तु ।
गीतत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१७४२॥

एक्कं व दो व तिणिण व उक्कोसं वारसेव वासाहं ।
गीतत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपग्नितंतो ॥१७४३॥

पंच व छ सत्त सत्ते अतिरेगं वा वि जोयणाणं तु ।
संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१७४४॥

एक्कं व दो व तिणिण व उक्कोसं वारसेव वासाहं ।
संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१७४५॥

संविग्गो गीयत्थो भंगचउक्के उ पढमसुवसंपा ।
असती ततियबितिए चउत्थगंणो उ उवसंपे ॥१७४६॥

उक्कमओ खलु लहुगो चउरो लहुगा चउत्थभंगामि ।
जससट्टा उवसंपद तं णात्थि चउत्थभंगामि ॥१७४७॥

एतेसिं तु अलंभे एगो थामावहारमकरेतो ।
विहरेज्ज गुणसमिद्धो अणिदाणो आशमसहाओ ॥४८

कालंमि संकिलिष्टे छक्कायदयावरो वि संविग्गो ।
 जयजोगीण अलंभे पणगण्णतरेण संवासो ॥१७४९॥
 पणगण्णतरं पासत्थमादिभंगे चउत्थए जयणा ।
 जथ वसंती ते तू ठानि तहिं वीसु वसहीए ॥१७५०॥
 तेसि णिवेदेऊणं अह तत्थ ण होज्ज अण्णवसहीउ ।
 ण वहेज्ज वा उदंतं वसेज्ज तो एकवसहीए १७५१
 अपरीभोगोगासे तत्थ ठितो तू पुणो वि य जएज्जा ।
 आहारमादिएहिं इमेण विहिणा जहाकमसो ॥१७५२॥
 आहारे उवहिंमि य गेलणागाढकारणे वा वि ।
 यामावहारविजढो असती जुत्तो ततो गहणं ॥१७५३॥
 आहार उवहिमादी उप्पादे अप्पणा विसुद्धं तु ।
 असती सतलाभस्सा उ जो तेसिं साहुपक्खीओ ५४
 सो तु कुलाइं पुच्छिज्जती उ दाएति वा वि सो तेसिं ।
 तहवी अलभंतो तू जतती पणहाणि जा लहुगा १७५६
 संविग्गपक्खसहीओ ताहे उप्पादएज्ज सुद्धं तु ।
 असती पणहाणीए जहन्तु अप्पे पडिग्गहगं ॥१७५८॥
 तह असती तब्भायणमाणीयं गेणहती तहिं चेव ।
 णियगेवि पडिग्गहगे गेणहति पासत्थपायाउ । दा. ॥

उवहिं पुराणगहितं अप्पपरिभुत्तं तु गेणहतीतेसि ।
 असती तत्त्वरं पीयदिय गिलाणो भवे तत्थ १७५८
 तत्थ वि जहज एवं असती सव्वंषि से करेजितरे।
 अहवा ते वि गिलाणा हवेज ताहे करे सो वि १७५९
 एतत्थं इच्छज्जनि गच्छो अणोऽण जं तु साहजं ।
 कीरनि ण पमाओ खलु तम्हा गेलन्ने कायव्वो १७६०
 दीहो व भडहतो वा कम्मोदइओ हवेज आतंको ।
 मडहो अदिग्घरोगो तविवरीओ भवे इतरो १७६१
 कालचउके वी खलु कायव्वं होनि अप्पमत्तेण ।
 उदुवद्वे वासासु य दियराओ चउक्कमेतं तु ॥१७६२॥
 जिणवयणभासियंभी णिज्जर गेलचकारणे विउला ।
 आतंकपउत्रताए कनपडिकहया जहणेण ॥१७६३॥
 जह भमरमहुयरिगणा णिवयंती कुसुमियंभि वणसंदे
 हय होनि णिवहयव्वं गेलन्ने कहयवजहेण ॥१७६४॥
 सयमेव दिट्ठपाढी करेति पुच्छंन जाणगा वेजजे ।
 वेज्जाण अट्टगं पुण णायव्यमिणं समासेण ॥१७६५॥
 संविग्गमसंविग्गे दिट्ठत्थे लिंगि सावए सणणी ।
 अस्सणिण सणिण इतरं परतित्थियकुसलतेइच्छं १७६६॥

पद्मिणमलबभमाणे वत्थु ठवेयव्वगं भवे किंचि ।
 तथं तु भणेज्ज कोती सुकंतु ठवे दवे दोसा ॥१७६७
 संसत्तं पि सुकखं (कं) तू अणिद्वं च सुसाहगं ।
 सुसारत्थं तगं होति इतरे दोसा वहू इमे ॥१७६८॥
 णिद्वे दवे पणीए अपमज्जणयाण तक्कणायरणा ।
 एते दोसा जम्हा तम्हा तु दवं ण ठावेज्जा ॥१७६९॥
 भण्णति जेणं कज्जं तं ठावेज्जा तहिं तु जयणाए ।
 आयंकविवच्चासो चतुरो लहुगा य गुरुगा य ॥१७७०॥
 जं सेवियं तु किंचि गेलन्ने तं तु जो तु पउणो वि ।
 आसेवते तु साधू रसगिद्वो सेलओ चेव ॥१७७१॥
 तंशोलपत्तणातेण मा हु सेसा वि तू विणासिज्जा ।
 णिज्जूहंती तं तू मा अण्णो वी तहा कुज्जा । दा. ॥
 कालकप्पाहिगारे तू पत्थिए होति सोवि तस्सरिसो ।
 कालविकप्पणो वी असिवादीओ मुणेयव्वो ॥१७७३॥
 असिवे ओमोदरिए रायदुडे पवादिदुडे वा ।
 आगाहे अण्णालिंगे कालक्खेवो व गहणं वा ॥१७७४
 असिवे जदि जतिपंता लिंगविवेगेण तक्खणं गच्छे ।
 सव्वत्थ वा वि असिवे कालक्खेवो विवेगेण ॥१७७५॥

ओमेऽवेवं कुज्जा पवादिदुद्गेण बुद्धिणा णातं ।
 तस्थ वि य अण्णलिंगं गिहिलिंगं वा वि भासेज्जा ॥१७७५॥
 एयं चिय आगाढं अहवा देहस्स जा तु वावत्ती ।
 णिन्विसयाणत्ताण व भत्तस्स णिसेहणा चेव १७७६
 एतेसामण्णतरं अणगाढालंबणो णिसेवेज्जा ।
 तद्वाणतावराहे संवद्वियमोवराहाणं ॥१७७७॥
 संवद्वियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं च ।
 आयारपकप्पे जं पमाणणिम्माण चरिमंमि ॥१७७८॥
 एसो तु कालकप्पो एत्तो वोच्छामि दंसणे कप्पं ।
 सद्वहणलक्खणं तू जिणोवदिड्डेसु भावेसु ॥१७८०॥
 उवरतछक्कायस्स वि आयरियपरंपरागते अत्थे ।
 आगाढकारणेसुं सद्वहसु णिसेवणं तत्थ ॥१७८१॥
 छक्काए सद्वहिउं हणमण्ण पुणो वि सद्वहेयव्वं ।
 आगाढमणागाढे आयरियव्वं तु जं तत्थ ॥१७८२॥
 दव्वे खेते काले भावे पुरिसे तिगिच्छ असहाए ।
 एतेहिं कारणेहिं सत्तविहं होति आगाढं ॥१७८३॥
 एगादीया बुड्ढी एगुत्तरिया य होति दव्वाणं ।
 ओमत्थगपरिहाणी दव्वागाढं वियाणमाहि ॥१७८४॥

जंपेति पुणो वेज्ञो सचित्तं दुल्भभं च दब्बं वा ।

अप्पडिहणंतो अच्छति उद्दिसितं जाव सो ठाति ॥

जाहे उद्दिडहाणी ताहे ओमत्थहाणीए भणाति ।

अम्हे करेमो जोगगं अलंभं एयस्स किं कुणिमो १७८६

एवं तु हावयंता खेत्तं कालं च भावमासज्ज ।

ता जूहंती जाव तु लंभे जंसिं तु दब्बाणं ॥१७८७॥

अह पुण लभेज्ञ एवं अवस्समेतेहिं कज्ज दब्बेहिं ।

एतं दब्बागाढं तहिं जए पणगहाणीए ॥१७८८॥

खेत्तागाढं इणमो असती खेत्ताण मासजोग्गाणं ।

असिवं वा अणणत्था पणीय वा होज्ज रुद्धा तु १७८९

आयरियादि अगारग अहवा अणणत्थ सावता होज्ज ।

अंतर जहिं च गम्मति वाला तह तेणखुभियं वा ॥

एतेहिं कारणेहिं खेत्तागाढंभि एरिसे पत्ते ।

अच्छांति असढभावा एगक्खेत्ते वि जयणाए १७९१

कालस्स वा वि असती वासावासं वियारणा णात्थि ।

एतेहिं कारणेहिं कालागाढं वियाणाहि ॥१७९२॥

वासा जोगगं खेत्तं पडिलेहेतुं तु कालो ण पहुत्तो ।

बच्चांताण व अंतर वासं तू णिवडितुं पयत्तं ॥१७९३॥

डहरं वंतरखेत्तं ताहे तं चेव पुव्वखेत्तं तु ।
 गंतुं वसती वासं समतीते वीतदसरातं ॥१७९४॥

अतिउकडं व दुकखं अप्पा वा वेदणा ज्ञवे आउं ।
 एतेहिं कारणेहिं भावागाहं वियाणाहि ॥१७९५॥

अच्चुकडसूलादी अहिडङ्गाइ तु वेदणा अप्पा ।
 तत्थऽग्नितावणादी देहच्छेदोवगाहादी ॥१७९६॥

जंमि विणटे गच्छस्स विणासो तह य णाणचरणाणं
 एतेहिं कारणेहिं पुरिसागाहं वियाणाहि ॥१७९७॥

तस्स त सुद्धालंभे जावज्जीवं पि होतऽसुद्धेणं ।
 कायव्वं तू णियमा पुरिसागाहं भवे एतं ॥१७९८॥

जेण कुलं आयत्तं तं पुरिसं आयरेण रक्खेज्जा ।
 ण हु तुंष्वंमि विणटे अरया साधारगा होंति ॥१७९९॥

संजोगदिङ्पाही फासुग उवदेसणासु जो कुसलो ।
 एतारिसस्स असती णायव्व तिगिच्छमागाहं ॥१८००॥

मज्जण तूलि विभासा असणे पाउरणए य पाणे य ।
 केवडियाण पयाणे अण्णह चित्तो गिलाणो वा ॥१८०१॥

होज व सहायरहितो अव्वत्ता वा वि अहव असमत्या ।
 एय सहायागाहं तम्हा तु मुणी ण विहरेज्जा ॥१८०२॥

जावंति पवयणंमी पडिसेवा मूलउत्तरगुणेसु ।
ता सत्तसु सुद्धेसू सुद्धमसुद्धा असुद्धेसु ॥१८०३॥

आगाढमणागाढे एवं जं जत्थ होति करणिज्ञं ।
तं तह सहहमाणे दंसणकप्पो हवाति एसो ॥१८०४॥

एसो दंसणकप्पो अधुणा सुतकप्पमो तु वोच्छामि ।
जे तस्स होन्ति विधयो अहिज्जए जेण वा विधिणा ॥

शुविहंमि आगमंमी सुत्ते अत्थे य जे जहिं भावा ।
सुतमसुत्तकडाणं पवित्थरं ताण अत्थं ॥१८०५॥

वित्थरो णाम सुर्त्तमि गहिए अत्थो तु दिज्जती ।
मुत्ते अहिज्जियव्वे तु मज्जादा तु इमा भवे १८०७

पडिलेहण काऊणं सज्ज्ञायं पट्टवेतु बडादी ।
आयरियादिणिसेज्जं करेति पच्छा य सज्ज्ञायं १८०८

पोहसि सातं झायं(काउं)चारिमाए पढियपत्तपडिलेहे ।
ताहे तु अत्थपोरुसि इभिणा विहिणा करेती तु १८०९

काउस्सगे वक्खेवणा य विकहा विसोत्तिया पयतो ।
बबुद्धाणे वा कोलणा य अक्खेव साहरणा १८१०

अणो विय सुतकप्पो सोयव्वं मंडलीय रायणिए ।
अणुओगधम्मताए कितिकम्मं होति कायव्वं १८११

वक्खातो सुतकप्तो एत्तो वोच्छामि अज्ञयणकप्तं ।
 दायव्व जेण विहिणा जगगुणजुत्तस्स वा तं तु १८१२
 जोए परियाए अणरिहे य अरहे य विणयपडिवणे ।
 सुत्तथतदुभएसुं जे अज्ञयणेसु अणुभागा १८१३
 जस्सागाढो जोगो तं आगाढेण चेव दायव्वं ।
 अणगाढे अणगाढं एत्तों वोच्छामि परियागं ॥१८१४॥
 जं संखपरीमाणं भणितं सुत्तंभिं तिवरिसादीयं ।
 तं तेणं माणोणं उहिसियव्वं भवे सुत्तं ॥१८१५॥
 खुड्डियाविमाणपविभत्तिमादि दीहे विय तू परियाए ।
 ण वि दिज्जती अणरिहे अणरिहे तू इमे होंति १८१६
 तिंतिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुब्बलचरित्ते ।
 आयरियपारिभासी वामावटे य पिसुणं य ॥१८१७॥
 आदीअदिड्भावे अकडसामायारिए तरुणधम्मे ।
 गविवत पइण्ण गिणहइ छेदसुते वजिजते अत्थं १८१८
 डहरो अकुलीणो च्चिय दुम्मेहो दमगमंदबुद्धि त्ति ।
 अविअप्पलाभलद्वी सीसो परिभवइ आयरिए ॥
 सोवि य सीसो दुविहो पव्वावियतो य सिक्खओ चेव
 सो सिक्खतो वि तिविहो सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥

एतोसिं अणरिहाणं जे पडिवकवा तु होंति सब्बोसिं ।
परिणामगा य जे तू ते अरिहा होंति णायव्वा १८२१
एतारिसे विणीते सुते अत्थे य जत्तिया भेदा ।
अज्ञायणुहेसेसु य ते सब्बे असेसिए देज्जा ॥१८२२॥

एसज्ञायणे कप्पो एत्तो बोच्छं चरित्तकप्पं तु ।
जे तु विहाणचरित्ते वतेसु गुश्लाघवं चेव ॥१८२३॥

पंचविहंमि चरित्तंमि वणिता जे जहिं अणूभावा ।
एसो चरित्तकप्पो जहक्कमं होति विणेओ ॥१८२४॥

सामाइयादि पंचहं अणूभागा तेसि जत्तिया भेदा ।
वतपंचगंमि कतरं भारियरं लहुतरं कं वा ॥१८२५॥

सब्बगुरुगी आहिंसा तीसे सारकखण्ड सेसाणि ।
बंभव्यं च तत्तों तत्तो अदत्तं मुसं तत्तो ॥१८२६॥

सब्बलहुओ परिग्गहो सक्को वथादिरागणिगहणं ।
लोगे पुण गुरुगतरो सब्बेसि भवे मुसावादो ॥१८२७॥

काऊण वि संवरणं मुसब्बज्जाणं तु सब्बभंगे वि ।
ण भवति पइण्णलोवो तेण मुसं भारितं लोए १८२८

जह तेणगा उ केती अचयंता मुसितु भिच्छुगविहारं ।
णियडीया बेंति धम्मं सुणेमु अह भिच्छुगे ते उ १८२९

सोउं मिच्छुवतारा विणयं काऊण भिच्छुए आह ।
 अजजप्यभिति अम्हं बुद्धो सत्था वते देह ॥१८३०॥
 मुसवज्जा चाएमो धारेमो गेणिहउं वते तेणा ।
 वीसत्थभिच्छुगाणं मुसितु विहारं समादत्ता ॥१८३१॥
 भिच्छु लवंति तेण घेत्तुं सिकखाखयाणि मा अज्जो ।
 भंजह लवंति तेणा ण हु पच्चक्खाय मुस अम्हे ॥१८३२॥
 गुरुलाघववक्खाणं एवं तू सोहिकारणाभिहितं ।
 पत्तंमि कारणंमि उ लहुयतरं पुच्च सेवेज्जा ॥१८३३॥
 काणि पुण कारणाणि जेसु तु पत्तेसु जयणपडिसेवा ।
 भणगइ ताणि इयाइ किंत हं भे समासेणं ॥१८३४॥
 गच्छाणुकंपयाए आयरियगिलाणआवतीए य ।
 पडिसेवा खलु भणिता एते खलु कारणा ते उ ॥१८३५॥
 बोहियतेणादीसुं गच्छस्सट्टा णिसेवणा होनि ।
 आयरियाण व अट्टा विभासवित्थारओ एत्थं ॥१८३६॥
 णाउं तुंबविणासं अरगा साहारगा ण एवं तु ।
 आयरियस्स विणासे गच्छविणासो धुवं एवं ॥१८३७॥
 आगाढे गेलने कंदाति विभास आवती चउहा ।
 दव्वावति खेत्तावति काले तह भावओ चेव ॥१८३८॥

एतेहिं कारणेहिं अप्पत्तेहिं तु जो तु सेवेज्जा ।
सुहसीलयाए जो उ आवज्जति ण वि य सुज्ञाति हु ॥

जापुण पत्ते कारणी जयणा आसेवणं करेज्जाहि ।
तस्स चरित्तक्षिसुद्धी जह भणति जिणो हि तं इणमो ॥

गच्छाणुकंपयाए आयरियागिलाण आवदि विदिणे ।
जत्थेव य पडिसेहो सचरित्तासेवणा तत्थ ॥१८४१॥

पुरिमस्स पञ्चमस्स य मञ्ज्ञमगाणं तु जिणवार्दाणं।
आसेवणा य सचरित्तया य अत्थेण अणुगम्मो १८४२

वयभंगं पि करेतो जह सचरित्ती कहं तु अत्थेण ।
अणुगंतव्वं एयं भणति आगाढकारणतो ॥१८४३॥

जे के अवराहपदा किणहा सुक्का भवे पवयणंमि ।
णिघरिसपरिच्छणाए दुगठाणेण मुणेयव्वा ॥१८४४॥

पडिसेहोऽणुणा वा पायच्छित्ते य ओहणिच्छइए ।
ओहेण उ सठाणं अत्थविरेगेण वोगडियं ॥१८४५॥

हिंसादवराहपदा किणहे अणुघाति सुक्किला लहुगा ।
णिघरिसपरिच्छणा खलु जह कणगं तावणि हिंसेसु ॥

एवं परिच्छज्जणं आयवयं गच्छमावती जं तु ।
णित्थारयंमि पत्ते जयणाए णिसेव सचरित्ती १८४७

दुष्टाणा मूलूत्तर दप्ते अजए य होति पडिसेहो ।
कप्ते जयणाणुत्ता जो पुण णिककारणा सेवे ॥१८४८॥

पायच्छित्तं पावति तं दुविहं ओहियं च णेच्छइयं ।
ओहं तु जमावणं तं दिज्जति तांमि सद्गाणं ॥१८४९॥

णिच्छइयं अत्थेणं वीमंसित्ता उ दिज्जती जं तु ।
एयं अत्थविरेगं वोकडियं छच्चिवहं इणमो ॥१८५०॥

कस्स कहं कहिं तं वा कदिया णु कम्मि केच्चिरं होति ।
छद्गाणपदविभत्तं अत्थपदं होति वोगडियं ॥१८५१॥

कस्सति गीतागीतस्स वा वि कह जयण अजयणाए वा
कहिं अद्गाण वसंते कदियाणु सुभिक्खदुष्टिभक्षे ॥

अहवा दितराओ वा कम्हि ती कारणे व इतरे वा ।
कम्हि व पुरिसज्जाते आयरियादीण अण्णतरे ॥१८५३॥

केच्चिर कतिवारे खलु केवहकालं व सेवियं होज्जा ।
एवं छद्गाण एयं सुद्गासुद्धे असुद्धितरे ॥१८५४॥

संघयणधितिजुताणं साहूण अरहं तु दिज्जए तत्थ ।
असहू अथिरादीणं दिज्जदि चाएति जं वोहुं ॥१८५५॥

सोतूण कप्पियपदं करेति आलंबणं मातिविहृणो ।
रहस्सं च अणरहस्सं करेति मातिसूयओ पुरिसो ॥१८५६॥

माइडाणविमुक्तो अकपियं जो तु सेवने भिकखू ।
 तं तस्स कपितपदं मायासहिए चरणभेदो ॥१८५७॥
 एसो चरित्तकप्तो एत्तो बोच्छामि उवहिकप्पं तु ।
 सो पुण पुव्वाभिहितो ओहुवगगह जुत्तओ चेव ॥
 जो तु विसेसो एत्थं तं णवरि हहं अहं तु वकखामि ।
 सुदुगगमादीएहिं धारेयव्वो जहाकमसो ॥१८५९॥
 फासुयमफासुए यावि जाणए या अजाणए ।
 ओहोवहुवगगहिते धारणा कस्स केच्चिरं ॥१८६०॥
 जदि फासुवही कारणि गहिओ तू जाणएण तो धारे ।
 जो जुण्णो अजुण्णो विहु अट्टपकुव्वे छुब्भति हु ॥
 फासुगो अजाणएण कारणगहिओ धरेज्जते ताव ।
 जावण्णो उप्पण्णो ताहे तु विर्गिचए तं तु ॥१८६२॥
 अह पुण अफासुओ तू जाणगगहिओ तु कारणे होज्जा ।
 जदि गीतत्था सब्बे तो धारेती तु जा जिणा १८६३
 अगीतविमिस्सेहिं अणुप्पणांमि तं विर्गिचंति ।
 अह पुण अफासुओ तू कारणगगहितो अगीतेण १८६४
 उप्पणे उप्पणे अणांमि विर्गिचती तु सो ताहे ।
 एवं चतुभंगेण धारणता वा परिद्वयणा ॥१८६५॥

सो पुण दुविहो उवही वत्थं पातं च होति बोधवं।
वत्थं तु बहुविहाणं पाता पुण दो अणुणाता १८६५
चोदेती पंचणहं किण वि एगो पडिगगहो होति।
तो दो एकेक्षस्स तु भण्णति ण पहुपपए एवं ॥१८६६॥
तो चउनिणह दुवणहं अहवा एकेक्षस्स एकेक्षं।
भण्णति पाहुणगादिसु ताहे किं काहितेक्षेण ? १८६७
अप्पा परो पवयणं जीवणिकाया य चत्त होंतेवं।
वारत्तगदिङ्गो तम्हा दो दो तु घेत्तव्वा ॥१८६८॥
भण्णति जदेवं तेणं जिणकप्पी एगपातओ कम्हा ?।
भण्णति कारणमिणमो सुणसू जेणेगपादो तु १८६९
संगहियकुच्छि जसपेहिय अप्पाहारे चियत्तदेहे थ।
णासण्णेऽणावाए णातिनिरुद्रे ठवियभाणं ॥१८७०॥
तिवली अभिणवचो कंकणगहणी य संगहियकुच्छी
जोयणमवि गच्छेज्जा सण्णाडो थंडिलस्सऽसली ॥
जसकारि पवयणस्सा जेण अजसो होति तं तु ण
करेति। पग्धहियएसणाहिय ण थावि सुलभो से
आहारो ॥१८७१॥

तेणपरं वच्च से ता गच्छति जाव सारियं णत्थि ।
ण य वाहा उपपज्जति चत्तं च सरीरगं तेण १८७५
णसाणं जाति थंडिल्लं णावातं णियमेण तु ।
विच्छिणं दूरमोगाढं सब्बदोस विवज्जयं ॥१८७६॥
णिकिखप्पिपाडिगहगं वोसिरितुं णेयसो तु णिल्लेवे ।
एतेण कारणेण जिणकप्पित एगपातो तु ॥१८७७॥
पातदुगस्स तु गहणे कारणमेतं समासतोऽभिहितं ।
अहुणा तु चोदयंती किं घेष्पति वत्थमतिरेगं ? १८७८
किं तीहिं ण पहुष्पेज्जा एकेणाछादणा पकप्पंमि ? ।
गच्छ सकारणे च्छि य वोच्छेदकरो पसंगस्स ॥१८७९॥
चोदेती किं तिणहं गहणं ऊणेहिं जं ण संथरति ।
भणती एकेणावि हु संथरति पुणाह तो सूरी ॥१८८०॥
छादणतो णासणतो ऊणेण कंता भवे पकप्पस्स ।
मा हु पसंगविवङ्गी ऊणऽहितं तेण वारेति ॥१८८१॥
गच्छो सकारणोत्ती गिलाण बुड्डे य बालमसहादी ।
तेसद्वा अतिरेगं घेष्पति मा हांज्ज दुलभंति ॥१८८२॥
सीताभितावियाणं मा हू णाणादियाण परिहाणी ।
होज्जाहि तेण गेणहनि संथरती जावदीएण ॥१८८३॥

जदि एयविष्पूणा तवणिवमगुणा भवे णिरवसेसा।
आहारमादियाणं को णाम परिग्रहं कुडजा ॥१८४॥

पंचमवतोवधातो चोदेती वत्थमादिग्रहणमिम ।
एगव्वतोवधार वातो पंचणह वि भताणं ॥१८५॥

एवं तु चोदियंभी बनि गुरुण उ परिग्रहो सो तु ।
संजमगुणावकारा उवधाति परिग्रहो होनि ॥१८६॥

जंमि परिग्रहियंभी तसथावरधातणा पवत्तनि ।
गहणे गहिते धरणे सो णाम परिग्रहो होति १८७

गहणे पुरकम्मादी गहिते पुण हाँनि पच्छकम्मादी ।
धरणं अप्पाडिलेहा कीरति मुच्छा त जा तत्थ १८८

जंमि परिग्रहियंभी तसथावरसंजमा पवत्तनि ।
गहणे गहिते धरणे सो ऊ ण परिग्रहो होति १८९

रागादिविराहिओ तू आहारादीण जं कुणति भोगं ।
ण हु सो परिग्रहो तू तो किं गुरुमादिणं पूया १९०
कीरति आहारादीहिं ? भणनि भणिता तु णियमसो
सा तु । तित्थंकरेहिं चेव तु तेण उ सा कीरए तेसि ॥

तो किं पूयाहेतुं पवत्तयंतीह नित्थगरतित्थं ? ।
अह कम्मक्खयहेतुं पुढो एवं इमं आह ॥१९१॥

आहारउवहिं पूजादिकारणा । ण तु परुवितं तित्थं ।
 णाणचरणाण अड्डा तित्थं देसिनि तित्थकरा ॥८९३
 तित्थं चउहा संधो तस्स य देसेनि णाणमादीणि ।
 तित्थमरणामगोत्तम्स खयट्टा अविय सामद्वा ॥८९४
 णाणे चरणे गुणकारगाणि आहारउवहिमादीणि ।
 एतेण अणुण्णाना तहिं ठिताणं तु तो पूजा ॥८९५॥
 एसो उवहीकप्पो वणिण्यओ वित्थरं पमोत्तूण ।
 संभोगकप्पमेत्तो वोच्छामि अहं समासेण ॥८९६॥
 एव्वभणितो विभागो संभोगविहीय दोहिं ठाणेहिं ।
 दोसु वि पसंगदोसा सेसे अतिरेगपण्णवए ॥८९७॥
 दसविह सत्तविहेहिं पुञ्चुत्तेतेहिं दोहिं ठाणेहिं ।
 दोसु वि पसंगदोसा ण भुंजए अण्णसंभोई ॥८९८॥
 जम्हा तु ण णज्जंती उग्गममादी उ जे भवे दोसा ।
 एतेण अपरिभोगो अमणुण्णे होति बोधद्वा ॥८९९
 जं तत्थ ण पत्तं तू तमहं वोच्छामि एतमतिरेगं ।
 जे तु गुणा संभोगे ते वणणेऽहं समासेण ॥९००॥
 अणुकंपा संगहे चेव लाभालाभं वि दाहया ।
 दावहवे य गेलन्ने कंतारे अंचिए गुरु ॥९०१॥

वालादणुकं पणटा असहू अनरंत संगहटा ए ।
 केति सलद्धि अलद्धी तसि साहिल्यटा ए ॥१९०३॥
 उप्पन्ने अहिगरणे काहिंति वित्तसणं तु अविदाही ।
 ण य गच्छे बाहिभावो उप्परओऽहंति परिभूतो १९०४
 मज्जं अणेकभाणो त्ति काउ मा एस पेच्छती पुर्विं ।
 जत्थ उ कुले महल्ले लब्धनि भिक्खा महल्लीओ १९०५
 तम्हा उ दवदवस्सा पुर्विं गच्छामहं तु तं गंहं ।
 एते उ परिहरेत्ता दोसा हु भवंति सं भोगे ॥१९०६॥
 गेलण्णेण व एतस्स हिंडितुं आणियं तु अणेहिं ।
 तो खाइ यडसहुवगगो कंतारं आणितसहाहिं ॥१९०७॥
 एमेव अंचिए वी गुरु वि गेणहति तु अण्णमण्णस्स ।
 एको पुण परितम्मति बाहिरभावं वि गच्छेज्जा ॥
 एते उ एवमादी संभोगंमि उ गुणा भवंती उ ।
 तम्हा खलु कायद्वो संभोगो गुणणिणएण समं ॥
 एताइं ठाणाइं जो तु सहू होंतओ पमादेति ।
 अणे आणेति ती घेत्तूणं जं व तं केती ॥१९०९॥
 सेसाणुपालणटा तो तं उम्मंडलीं करेती उ ।
 जदि आउद्वति जुज्जति ताहे मेलिज्जति पुणो वि १९१०

अह पुण चोइजंतो बहुसो णाउद्वै उ तं दोसं ।
सति लाभलद्विजुत्तो णिज्जूहंतीउ तं ताहे ॥१९११॥

अह मंदलाभलद्वीण य जोगं जुज्जनी अहत्थामं ।
सो हि खरंटेऊणं मेलिज्जह मंडलीए तु ॥१९१२॥

किं कारण णिज्जूहणा जं गुणुत्तरधराणं ।
ण करेती वच्छलं तेण उ णिज्जूहणा तस्स ॥१९१३॥

एवं आयरिएण उ जोगो सव्वस्स चेव गच्छस्स ।
बोढव्वो दिङ्गंतो गएण इत्थं इमो होनि ॥१९१४॥

जह गयकुलसंभूओ गिरिकंदरविसमकडगदुग्गेसु ।
परिवहति अपरितंतो णियगसरीरुगगते दंते ॥१९१५॥

तह पवयणभत्तिगओ साहम्मियवच्छलो असहभावो
परिवहति अपरितंतो खेत्तविसमकालदुग्गेसु ॥१९१६॥

जदि एकभाणजिमिता गिहिणो वि य दीहमेत्तिया
होंति । जिणवयण वाहिब्भूता धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥

किं पुण जगजीवसुहावहंण संभुंजिऊण समणोणं ।
सक्का हु एकमेको णीयओ विव रक्खितुं देहो ? ॥१९१८॥

केरिसयं संभुंजे केरिसयं वा वि तूण संभुंजे ।
भन्नह उगगमसुद्धं भुंजे असुद्धं ण भुंजेज्जा ॥१९१९॥

चोदे आहारादी उगगमादी असुद्ध मा भुजे ।
जं पुण अपेहणादी कालादीहिं उवहयं तु ॥१९२०॥

तं पुण सुद्धोवहिणा मा समयं एळहिं तु बंधेज्ञा ।
संघासेणं तस्स उ उवघातो मा हु सुद्धस्स ॥१९२१॥

भणन्ति सुद्धस्स जती संघासेणं तु होति उवघातो ।
सुद्धेण असुद्धस्स वि पावति सुद्धी तवमएण ॥१९२२॥

अह उवघातो त्ति मतं संफासेण उ मना विसोही ते ।
णणु ते हच्छामेत्तं ण य हच्छामेत्तओ सिद्धी ॥१९२३॥

उवघातो विसोही वा णन्थिअ जीवस्स भावतो एसो ।
उवघातो विसोही वा परिणामवसेण जीवस्स ॥१९२४॥

तस्सेव पसत्थस्स उ परिणामस्स अह रक्खणद्वाए ।
कीरति संभोगविही गच्छपमोत्तेण मा गच्छे ॥१९२५॥

संभोगकप्पदारं एवं खलु वर्णितं मए एवं ।
आलोचणकप्पविहिं एतो वोच्छं समासेण ॥१९२६॥

दुविहपडिसेवणाए दोठाण दुयागताण ठाणाणं ।
जस्से व तु अहिमुहतो आलोएज्ञा तदद्वाए ॥१९२७॥

दप्पिया कप्पिया चेव दुविहा पडिसेवणा ।
दप्पियाए उ दो ठाणा मूले तह उत्तरे चेव ॥१९२८॥

कपिषयाए चि एमेव दो ठाणा उ वियाहिता ।
जयणा अजयणा चेव एकेक्षा य वियाहिता ॥१९२९॥

जस्से व अभिमुहो त्ती जं चेव य कातु विहरते पुरतो ।
आयरिय उवज्ञाया तस्सेव उ तं तु आलोए १९३०॥

अहवा जं जह सेविन मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
पाणतिवातादीसु य वतेसु तं तं तहालोए ॥१९३१॥

अहवा मोक्खाभिमुहो मोक्खद्वाए तु अट्टकम्माणं ।
अणलोइए ण मुंचति कम्हा हणमो णिसामेहि १९३२

जदि विय तवगुणजुत्तो होति भणुस्सो अणुद्वरिय
सल्लो । ण करेति दुक्खमोक्खं सल्लुद्वरणे पि जाति-
यव्वं ॥१९३३॥

तं पुण केरिसगस्सं तु वियडेयव्वं तु? जाणतो जो तु ।
अविजाणते ण कप्पति अजाणतो जो अगीयत्थो ॥

पायच्छित्तमयाणंतो ठाणे ठाणे अहाविहिं ।
आलोयणाए उवसंपयाए ण हु होति पाउग्गो १९३५
किं कारणं ण याणति सोहिं साहुस्स सोहिकामस्स ।
ठाणे ठाणे पुढवादिएसु मूलुत्तरे वावि ॥१९३६॥

पाणतिवातादीसु य कारणणिक्कारणे य जयणाए ।
आलोयण गुणदोसदारिसणेण हु होति पाउग्गो १९३७

गुण अणिगृहियमादी दोसा पुण गृहणादीया होंति ।
एते ण याण अगीतो तम्हा उ इमस्स पालोए १९३८
पायच्छित्तं विथाणंतो ठाणे ठाणे जहाविहिं ।
आलोयणाए उवसंपयाए सो होति पाउग्गो ॥१९३९॥

पडिसेवणाऽतियारे दुविहे काले पबंधवोच्छेदो ।
एक्केक्क छक्कएण आलोयण मा पडिच्छाहि ॥ १९४०॥
पडिसेवणाऽतियारा दुविहा मूलगुण उत्तरगुणे य ।
पडिसेवणकालो वि य दुविहो उद्भवद्व वास य १९४१
अब्बोच्छित्तणपबंधं तविवरीयं तु होने वोच्छित्तणं ।
बयछक्ककायछक्काकपपादी छक्कमेककं ॥ १९४२॥
अकप्पादी छक्कमिणं अकप्प गिहिभायणं च पालयं-
को । तत्तो य गिहिणिसेज्जा होति सिणाणं च सोभा-
य ॥१९४३॥

एतेसिं छक्कगाणं एक्केक्कं जं तु होति आवण्णो ।
तं तं आलोए तहा पच्छित्तं या वि आयरिओ १९४४
आलोयणववहारो संवासि पवासिया उ अवराहा ।
संवासिया उ गच्छे पवासिया कारणगतस्त १९४५
अहवा जा अणवट्टो ता संवासिं तु होंति अवराहा ।
पारंची पावासी पवसति गच्छा उ जेणं तु ॥१९४६॥

पंचविहो सज्ज्ञाओ दाणगगहणमि भयिओ संचासो ।
 पावासिए ण दिजजति ण य गहणं होति कायच्चं ॥
 आवण्णगपरिहारि य अणवटे चेव दोणहडवेतेसिं ।
 ण वि दिजजति ण वि घेष्पतं सेसाणं दाण गहणं च
 आलोअणाए कप्पो एसो भणिओ मए समासेणं ।
 उवसंपताए कप्पं एत्तो उ समासओ बोच्छं ॥१९४९॥
 दुविहंमि आगमंमि उ पस्तवणा चेव आयरणता य ।
 पण्णवणगहण अणुपालणाए उवसंपदा होति १९५०
 आगमहेउं उवसंपदा उ स य आगमो भवे दुविहो ।
 सुतं अत्थो य तहा पारगते तत्थ उवसंपा ॥१९५१॥
 दो आयरिया पारग कत्थउ उवसंपदा तहिं कुज्जा ?
 जो णिउणतरं भासति अह णिउणं दो वि भासति ॥
 सामायारी पडिलेहणादि जो तत्थ आगरावेति ।
 दोसु वि समुज्जतेसू जो तहियं धम्मकहिओ उ १९५३
 ता विय हु सिक्कियच्चा सज्ज्ञायस्सेव जेण तं अंगं ।
 दोसु वि धम्मकहीसुं जा तहियं गाहगो होति १९५४
 गाहणसत्तीजुत्तेसु दोसु वी कत्थ होइ उवसंपा ।
 अतरं असहुवर्गं विसंसओ जो उ पालोति ॥१९५५॥

एतेसु विमिटुनरो अणाहिंतोऽरिहाति उवसंपेण ।
 इतरो होनि अजोग्गो जदि विय सा होनि गीयन्थो॥
 जो उ असांविग्गं पुण पण्णवणाकोविदो त्ति काऊणं ।
 उवसंपज्जाति बालो तस्य इमं होंनि दोसा उ १९५७
 सीहमुहं वग्घमुहं उयहिं च पलित्तगं च जो पविसे ।
 असिवं ओमोदरितं धुवं सि अप्पा परिचित्तो १९५८
 तह चरणकरणहीणं पासत्थे जो उ पविसने भिक्खू ।
 जयमाणे उ पज्जहिउं सो ठाणे परिचयति निणि॥
 एमेव अहाञ्छेदे कुसील ओसन्नमेव संसक्ते ।
 जं निणि परिचयंती णाणं तह दंसण चरित्तं १९५९
 कं पुण उवसंपज्जे ? नन्थ इमे गच्छ होंति चत्तारि ।
 एगो देति लएइ य बिनिओ देती ण गेणहति तु १९६१
 ततिओ ण देति गेणहनि ण य देति ण गेणहती चउत्थोउ
 पढमे उवसंपज्जइ सेसा उ तओ णऽणुण्णाया १९६२
 बिनिए णिज्जरलाभं ण लभनि गेलण्णादिक्जजेसु ।
 ततिए गिलाण कारण अद्ववस्थे मरणदोसा ॥१९६३॥
 दोणि वि चउत्थे दोसा होनि अवत्थू य नेण तो तम्हा
 पढमामि जे गुणा खलु हवानि ने मे णसामेह ॥१९६४॥

भत्तोवहिसयणासण दाणगगहणे य एकमेकस्स ।
हुण्गिलाणे कनकारिए व अणतिक्कमो जोऽत्थ १९६५
जो पुण ते दूसेंतो करेति उवसंपदं असुद्धेसु ।
तिठाणगाभिलासी हवइ तु वोसटुनिट्राणो ॥१९६६॥

किंण ठिओऽसि नहिं चिय ? पुट्टो जंचेति तस्समे दोसा
अप्पयसज्ज्ञायादी णत्थ य ते यावि जाति तस्स १९६७
जं दोसं आभासति तं दोसं अप्पणा समावज्जे ।
जो वि पडिच्छति तं तू सो वि य तं चेव आवज्जे ॥

गच्छस्स जोवसंपे असुद्धमावज्जनी तगं सोतुं ।
जो पुण पडिच्छमाणो अविणीयादीहिं दोसेहिं १९६९
दूसेउंण पडिच्छति ण संनि ते यावि तस्स जदि दोसा
ताहे जं सो वश्तीं तं तं दोसं अप्पणा वज्जे ॥१९७०॥

जं च असुद्ध पडिच्छति रागेण तस्स जे भवे दोसा ।
वोसटुनिगट्टाणादि ते तु सो अप्पणा यावे ॥१९७१॥
अरुहा अणरुहा उवसंपदा य भणिता तु होति दोऽवेते
अयमण्णो तु अणरिहो सूरी उवसंपदाते तु १९७२
आहारे उचहिं मि य पगासणा होति अणरिहमसङ्घे ।
एंतणिज्जरट्टी संविगगजणांमि उहेसो ॥१९७३॥

आहार उवहिसेज्जा लभिहामी तेण संगहं कुणती ।
होहामि वा पगासो लोए ण ऊ णिज्जरट्टाए ॥ १९७४ ॥

एए होंति अणरिहा तिनिणिचलचित्तमादिणो जे य
अहवा वि मंदसङ्क्षेप आकड्डिविकड्डिए वा वि १९७५

जो पुण इमेहिं पंचहिं ठाणेहिं वादे सो भवे अरुहो ।
संगहुधगगहिणज्जरसुनपज्जवजातऽवोचिछती ॥

तस्य पुण णिज्जरट्टा वाएंतस्य णियमेण सूरिस्स ।
आहारावहिपूजा पगासणा चेव भवती तु ॥ १९७७ ॥

विणएणाहारादी उक्कोसा तस्य होंति दायव्वा ।
काले कालणुरूव्वा जे वावि स भावअणुरूव्वा ॥ १९७८ ॥

उच्छृष्टसरीरो तु जइ वि य सो मंडलीय भुंजति तु ।
तह विय मत्तगगहणं स्त्रीसपडिच्छेहिं कायब्बं १९७९

एस अणुधम्मता हू जह गोनमसामि सामिणो गोणहे ।
हिंडंतस्य पुण इमं तस्य उ दोसा भवन्ती उ ॥ १९८० ॥

वाते पित्ते गण लोए कायकिलेसे अर्चितता ।
मेढी अकारए बाले गणचिंता टूठी वादिणो १९८१

एतेसिं दाराण वकखणुवर्दि वितिज्जउद्देसे ।
ववहारे भणिणहिती वित्थरतो इह समासेण १९८२

भर्तीए तु गुणाणं पगासणा तस्म तेहिं कायव्वा ।
 एतारिसो महप्पा उज्जुत्तो अणजजकालीओ १९८३
 पामाखहारविजढो तवसंजमसुडिओ जियकसाओ ।
 बहुसुत बहुआगमिओ भर्तीए पगासए एवं।दा. ॥

एसुवसंपदकप्पो बोच्छं उद्देसकप्पमहुणा उ ।
 उहिसण वायण स्ति य पाढणया चंब एगडा ॥१९८५॥

सुत्तथतदुभयाहं पवायने ताव जाव संधाणं ।
 बहुपच्चवाययाए विजडे भजियं तु संधाणं ॥१९८६॥

संधाणमंतगमणं असिवादी पच्चवायणेगविहा ।
 विजडेत्ती णिकिखत्ते जोगे भइओ पुणुकखेवो १९८७
 जति कारणेण केणति णिकिखत्तो तो सि उकिखव पुणो
 वि। अह दप्पा णिकिखत्तो तो णउ उकिखप्पती
 मुज्जो ॥१९८८॥

उहिडंभि य अंगे सुतखंधंभि य तहेव अज्ञयणे ।
 आसज्ज पुरिस कारण निट्ठणे होति पडिसेहो १९८९
 अंगादी उहिडे पुरिसं दट्टूण अपरिणामादी ।
 अच्छति वसद्वरादिहं अविणीयादी व णाऊणं १९९०
 ताहे णिकिखप्पति तू तिट्ठाणे जं तु भणित पडिसेहो ।
 तं सुत्तमथतदुभय एतेसिं तिणिण पडिसेहो १९९१

एसुदेसणकप्यो अहुणा वोच्छं अणुप्ताकप्यं तु ।
कम्ही काले गहणं वत्थादीणं अणुण्णातं ॥१९१॥

वत्थं पादगहणे वासाशसेसु णिगगमो सरदे ।
तिगणणगसत्तगदुगाउयांमि अप्पोदगं जागे ॥१९२॥

वत्थादीणं गहणं णाणुण्णातं तु होति वासासु ।
वासादीय परेण दुम्रसे अणणे उ गेणहंति ॥१९३॥

तेसि पुण णेनाणं सरदे जदि दोणह गाउयाणं तो ।
दगसंघटजहणेण तिन्नि पंचव मज्जमगा ॥१९४॥

सत्तेव उ उक्कोसा गिम्हंमी तिन्नि पंच हेमते ।
वासासु य सत्त भवे परेण खेत्तं गणुण्णातं ॥१९५॥

अप्पोदगति मग्गा जं तं रीयासु वणितं पुविं ।
तं अद्वद्वे जोयणे दगघटा जाव सत्तेव ॥१९६॥

वत्थं पातगगहणे णवसंथरणांमि पढमठाणांमि ।
एत्तो वनिकमम्मि तु सट्टाणासेवणा सुद्वी ॥१९७॥

पढमं ठाणुससग्गो नेणं तू नवसु होति खेत्तेसु ।
वत्थादीणं गहणं नत्थेव य होति उ विहारो ॥१९८॥

णवठाणातिकमे पुण भवई सट्टाणतो विसुद्धो तु ।
किं पुण तं सट्टाणं अववादो असति तो होति २०००

अवबाएणं गहणं उस्सगो चेव होति सो ताहे ।

गिणहंतस्स तु कारणि सुद्धी तह चेव बाधव्वा २००१

जह गेणहंतुस्सगे सुद्धी उवहिम्स एव वितिएणं ।

गेणहंतस्स विसुद्धी सट्ठाणं एवमक्खायं ॥ २००२ ॥

अहवा वि इमे अणे णव उ ठाणा वियाहिता ।

द्रव्यादीयाउ इणमो बोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २००३ ॥

दव्वे खेत्ते य काले य वसही भिक्खमनरे ।

सज्जाइए गुरु जोगी एते ठाणा वियाहिता ॥ २००४ ॥

दव्याणाऽहारादीणि जादि तु सुलभाइं तंमि खेत्तंमि
खेत्तं विच्छिन्नं खलु वत्तं सुणेतगगणस्स ॥ २००५ ॥

पत्तण परियट्टनी सुणेति अत्थं गणो तु बालादी ।

तस्स पहुचति खेत्तं आहारादीहिं संथरणं ॥ २००६ ॥

काले तनियाए वेला वसही जोगगा तु भिक्खसुलभांति
ण विगिट्ठमंतरा तं सज्जाओ सुज्जन्ति जहिं च ॥

सुलभं आयरियाणं जोगं जोगीण सुलभ पाउगं ।

एते ते णव ठाणा जहिं उस्सगेण गहणं तु ॥ २००८ ॥

उस्सगेण विहारो संथरमाणाण णवसु खेत्तेसु ।

तो सव्युग्घादुवही णव पेल्ले यावि दगघदे ॥ २००९ ॥

णवि दूरे गच्छन्ती णवगस्स असंभवे वितियठाणं ।
दगघटे बहुए वी पेल्ले दूरं पि गच्छेज्जा ॥२०१०॥

दुल नमि वत्थपादे ऊणहिएसुं पि णवसु गच्छेज्जा ।
एमेव विहारो वि हु खेत्ताणःसनी मुणेयव्वो २०११

आलंबणे विसुद्धे दुगुणं तिगुणं चतुर्गुणं वा वि ।
खेत्तं कालातीयं समणुण्णातं पक्षपंमि ॥२०१२॥

एस अणुण्णाकप्पो अहुणा अद्वाणकप्प वोच्छामि ।
जेहिं च कारणेहिं अद्वाणं गम्पते इणमो ॥२०१३॥

असिवे ओमोदरिए रायदुदूठे भए च आगाठे ।
देसुठाणे अपरक्मे य अद्वाणतो पणगं ॥२०१४॥

उद्दहरे सुभिक्खं अद्वाणपवज्जनं तु दप्पेणं ।
दिवसादी चउलहुगा चउगुह्गा कालगा हौंनि २०१५

उगगम उप्पादण एसणाए जे खलु विराहने ठाणे ।
तं णिप्पक्षणं तस्स उ पायच्छित्तं तु दायव्वं ॥२०१६॥

पुहवी आऊ तेऊ चेव वाऊ वणस्सति तसा य ।
णंतेसु परित्तेसु य जं जहिं आरोवणा भणिता ॥

लहुओ गुरुओ लहुया गुरुया चत्तारि छच्च लहुया य ।
छगुरु य छेदो मूलं अणवद्धप्पो य पारंची ॥२०१८॥

असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाहे ।
 गीतत्था मज्जत्था सत्थस्स गवेसणं कुज्जा ॥२०१९॥
 कालमकाले भोती णातूण य अहिवति अणुण्णवणा ।
 भिच्छुयमिच्छाहिट्ठी धम्मकहाए णिमित्ते य २०२०
 सनुय समिए संखडि पत्थयणे खलु तहेव पोगगलिए ।
 धम्मकह णिमित्तेण वसहा पुण दब्बलिंगेण २०२१
 सत्थे पंथे तेणे पंचविहो उगगहो य दब्बाणं ।
 सुन्नगगामे दब्बगगहणं जयणाए गीतत्था ॥२०२२॥
 तुवरे फले य पत्ते गोमहिसे सूयरा य हत्थी य ।
 आयवमणायवे च्चिय जयणाए जाणगे गहणं २०२३
 पिपलगसूति आरि गणकखच्चणतलियपुडगवज्ज्ञे य ।
 कत्तिय कत्तरि सिंक्रग संवट्टग लाउए चेव ॥२०२४॥
 वातियपित्तियसिंभियगुलिगाणं अगदसत्थकोसे य ।
 जं चउणु वगगहकरगं गेणहह अद्वाणकपणंमि २०२५
 सीहाणुगा य पुरतो वसभाणू मगगतो समणेंति ।
 पंथे तंपिय जंता धरेंति जा अद्वपञ्जत्ती॥ २०२६ ॥
 दंडियमिच्छाहिट्ठीसमुदाणणिवारणं च णिच्चिवसए ।
 सारुविसणिभहग वसभा पुण दब्बलिंगेण ॥२०२७॥

उवकरणचरित्ताणं विलोवणा सरीरलोयणागाहे ।
 धम्मकहणिमित्तेण पुलागकज्जेण आगाहे ॥ २०२८॥
 असिवादिकारणेहि अद्वाणपवज्जनं अणुण्णातं ।
 उवकरणपुव्वपडिलेहिएण सत्थेण दंतव्वं ॥ २०२९॥
 वच्चवंताणं असहू कोत्ति ण तरिज्ज गंतु शदेहि ।
 अपरकमे तु ताहे तवियं तु इमे वि मग्गेज्जा ॥ २०३०॥
 एथकखुरे य दुखुरे दुपए अणुबंधि तह य अणुरंगा ।
 अह भद्रेभिजायति असती अणुसट्टिमादीहि ॥
 एगखुरा आसाती दुखुरा उद्वादि दुपय जड्डादी ।
 अणुबंधी लकडादी अणुरंग पिसी तु बोधव्वा २०३२
 एतेसि पुव्वुवट्ठ खुरादि जानित्तु सिद्धपुत्तादी ।
 असती य खुड्डतो वा लिंगविवेगेण कड्डानि तु २०३३
 आवासियंभि सत्थे तस्सेव तरंपि अप्पिण्णति पुणो ।
 अह भणति गता संता अपेज्जाह त्ति भम एवं ॥
 ताहे पच्छकडादी चारेदी तेसि ब्रसनिउ खुड्डो ।
 लिंगविवेगं काउं चारेती जा गता ठाणं ॥ २०३५॥
 एवं दुखुरादीसु वि जयणा जा जत्थ सा तु कायन्वा ।
 सुत्तथजाणएणं अप्पाबहुयं तु पायव्वं ॥ २०३६॥

एतेसामण्णतरं अणगाढालंबणे णिसेवेज्जा ।
 तटाणगावराहे संवद्वियमोऽवराहाणं ॥ २०३७ ॥
 संवद्वियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा ।
 आतारपकप्पे जं पमाणणिम्माणचरिमंभि ॥ २०३८ ॥
 अद्वाणकप्पो एसो अहुणा अणुवासणाए कप्पं तु ।
 बोच्चामि गुरुवदेसा अणुगगहट्टा सुविहियाणं २०३९
 अणुवासंभि तु कप्पे पण्णवग पहुच्च बहुविहा अत्था ।
 अणुवासियाए पगतं सुद्धा य तहा असुद्धा य २०४०
 अणुवासत्थे बहुहा उड्डवासे वसण अहव असिवादी ।
 बुद्धादीवासो वा अहवां अणुवसणमणुवासो २०४१
 वसितं पुणो वि वसती अणुवासिगवसहि सामहर्गा
 सण्णा । तीयहिगारो एतथं सा होज्जा सुद्धऽसुद्धा वा ॥
 पट्टीवंसादीहिं वंसगकडणादिएहिं तह चेव ।
 होति असुद्धा वसही मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥ २०४३ ॥
 कालहुम्यातिरित्तं अविसुद्धासुं च तासु वसमाणो ।
 पावति पायच्छित्तं मोन्तूणं कारणमिमेहिं ॥ २०४४ ॥
 असिवे ओमोदरिए रायदुडे भए व आगाहे ।
 गेलन्ने उत्तिमट्टे चरित्त सज्जातिए असती ॥ २०४७ ॥

वाहिं सव्वत्थऽसिवं तत्थ सिवं तेण कालदुयगंमि ।
 पुणे वि ण णिगगच्छे अणुपच्छाभाव अणुवासी ॥
 आलंबणे विसुद्धे सुत्तदुतं परिहरे पयत्तेण ।
 आसज्ज तु परिभोगं भयणा पडिसेवसंकमणे २०४७
 असिवादीहिं वसंते सुद्धाए वसहीए वसे साहू ।
 सुद्धा वसतीए जततीं विसोहि कोडीए पुन्वं तु २०४८
 भयणत्तिय जं भणियं पुढ्वप्पत्तरात्थ जे उ जे दोसा।
 ते ते पुन्वं सेवे संकमणेऽवी हमा भयणा ॥ २०४९ ॥
 अप्पाबहुं तुलेतुं जत्थ गुणा तू भवेज्ज बहुतरगा ।
 गच्छं गच्छंताण व तं चेव तहिं करेज्जा उ ॥ २०५० ॥
 असिवादिणिट्ठिए पुण अवक्खेवेण संकमे तत्तो ।
 सत्थं तु पडिच्छंतो जह अच्छे तत्थ सुद्धो उ ॥ २०५१ ॥
 एतऽण्णतरविहूणं अणुवासिय जे तु अणुवसे कप्पं ।
 कालहुयावराहे संवद्यमोऽवराहाणं ॥ २०५२ ॥
 संवद्यियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा ।
 आयारपकप्पे जं पमाण णिम्पाणचरित्यंभि ॥ २०५३ ॥
 अणुधासियाए कप्पो एमेसो वणितो समालेण ।
 ठितकप्पमो तु तत्तो वोच्छामि गुरुवदेसेण ॥ २०५४ ॥

गच्छाणुकंपयाए सुत्तत्यविसारए य आयरिए ।
 आगाहे पढमसंजतो ओवगगहिए पकप्पदुए ॥२०५६॥
 गच्छो जदि हीरेज्जा आयरियं वा विवायए कोई ।
 एरिसए आगाहे जस्स उ जा होति लद्धी उ ॥२०५७॥
 सो तं मा पणदेती पढमणियंठो पुलागलद्धीओ ।
 गच्छोवगगहेउं कारण पकप्पाठिअङ्गुण्णा ॥२०५८॥
 तुपए त्ति साहुसाहुणि तदटहेउं तु एव मूलगुणे ।
 भणिता सेवा एसा सीसो पुच्छाति उ अह इणमो ॥
 जह कारणंमि भणिया मूलगुणेसुं तु एव पडिसेवा ।
 तह होज्ज कारणंमी पडिसेवा उत्तरगुणे वि ॥२०५९॥
 गुरुयतरएसु एवं मूलगुणेसुं तु जदि भवेऽणुण्णा ।
 उत्तरगुणेसु तत्तो लहुयतरेसुं ततोऽणुण्णा ॥२०६०॥
 ठियकप्पेसो भणितो अहुणा वोच्छामि अट्टियं कप्पं ।
 संखेवर्पिंडियत्थं जह भणियमणंतनाणीहिं ॥२०६१॥
 वथे पायगगहणे उक्कोसजहन्नगंमि अठिओ तु ।
 ठियमट्टिते विसेसो पर्खवितो संपकप्पांमि ॥ २०६२ ॥
 वत्थाणि य पाताणि य मज्जमातित्थंकराण कप्पांमि ।
 पहुमोल्लाण वि गेणहति अठियकप्पो समक्खाओ ॥

मोळुगरूवं पि वत्थं अट्टारसपणितरूवग जहन्नं ।
 एत्तो ग सयसहस्रं उक्तोसमोळुं तु णायव्वं ॥२०६४॥
 ऊणगअट्टारसगं वत्थं पुण साहुणो अणुण्णातं ।
 एत्तो वनिरित्तं पुण णाणुण्णातं भवे वत्थं ॥२०६५॥
 जिणथेराणं कप्पं अहुणा वोच्छामि आणुपुव्वीए ।
 जं जत्थ जहा निवयति समासओ तं तहा सुणसु ॥
 जिणथेराणं कप्पो जम्हा उ दृठितंमि अठिए चेव ।
 ठित अदृठितकप्पाणं जम्हा अंतरगता एते ॥२०६७॥
 जो तु विसेसो एत्थं तं तु समासेण णवरि वक्खामि ।
 जिणथेराणं कप्पे जिणकप्पे ता इमं वोच्छं ॥२०६८॥
 कुयसत्तए तियचउक्कगस्स अद्वद्वएगछेदेण ।
 अवि होज्ज कालकरणं पुणरावत्ती ण विय तेसिं ॥
 पिंडेसणा उ सत्त उ हवंति पाणेसणा दु सत्तेण ।
 चतु सेज्ज वत्थ पाते तिणोते चउक्कगा होंति ॥२०७०॥
 दोणाऽदिमा उ सत्तसु अवणेतुं सेस उवरिमा पंच ।
 अद्वद्व होंति छेदे दो दो अवणे चउक्केसु ॥ २०७१॥
 गेणहंति उवरिमासु तत्थ अवि घेतु अण्णतरिंयाए ।
 हेडिलासु ण गेणहंति जादि वि करे कालकिरियं तु ॥

अणभिगगहेण ण वि ता गेणहंति विही उ एस जिणकपे
 अहुणा उ थेरकपे बोच्छामि विहिं समासेण २०७३
 गहणे चउव्विहंमि वितिए गहणं तु परमजत्तेण ।
 जं पाणबीयरहितं हवेज्ज तरमाणए सोही ॥२०७४॥
 गहणं चउव्विहं पी वत्थं पातं च सेज्जआहारो ।
 एतेसिं असतीए गहणं पढमं तु बीयस्स ॥ २०७५ ॥
 वितियं पातं भण्णति किं कारण तस्स गहण पढमं तु
 तेण वि ण बोडियपडिमा गिहि मायणभोगो हाणी य ॥
 अहवा चउव्विहं तु असणादी तत्थ होज्ज गहणं तु ।
 तत्थ तु वितियं पाणं तस्स तु गहणं पढमताए २०७७
 असतीय फासुयस्सा तससहिए कंद बीयसहिए वा ।
 किं कारण तेण विणा आसुं पाणकखतो होज्जा २०७८
 तरमाणो गेणहती सुद्धं अतरो पेल्ले तह संथारे ।
 संथरंतो तु गेणहंतो पावति सद्गाणपच्छितं २०७९
 सत्त दुए दसए वा अणेगठाणेण वा भवे गहणं ।
 एतो निगातिरित्तं गच्छे गहणं तु भइयव्वं ॥२०८०॥
 पिंडेसण पाणेसण सत्त दुगे तं तु होति णायव्वं ।
 दसंगं एसणदोसा णेगहाणुगगमे दोसा ॥ २०८१ ॥

एत्तो तिगातिरित्तं उग्गमउप्यायणेसणासुद्धं ।
 भजियन्ति कप्पति ती तस्सऽसतीए असुद्धं पि ॥
 एसो तु थेरकप्पो बोच्छं अणुवालणाए कप्पं तु ।
 अणुवालिंति सुविहिता गच्छं विहिणा उ जेणं तु ॥
 परियद्वी परियद्वंतओ य दुविहो पुणो वि एकेको ।
 उवसग्गखेत्तकाला वसेण अज्जाण परिवद्वी ॥२०८४॥
 परियद्वियव्वयं खलु परियद्वी चेव होति एगदठं ।
 समणा समणीओ वा दुविहं परियद्वियव्वं तु ॥२०८५॥
 समणपरियद्वुविहो आयरिओ बीयओ उवज्ञाओ
 संजतिपरियद्वो पुण तिविहो तु पवत्तणी तइया ॥२०८६॥
 समणिपरियद्वुविहा विहिपरियद्वी य अविहिए चेवा
 जतिणि परियद्वियव्वा णियमेणं कारणेणिमिणा ॥
 ताओ बहूवसग्गा तेणादिदुसंचरणि खेत्ताणि ।
 कालवसेण य संपति जायति लोगस्स पंतत्तं ॥२०८८॥
 तम्हा सव्वपयत्तेण रक्तिखयव्वा उ ताओ णियमेण ।
 ण वि सतिरा मोत्तव्वा मा होज्जा तासि तु विणासो ॥
 संविगग्नीतपरिणतो तासिं परियद्वओ अणुन्नाओ ।
 होति पुण अणरिहो खलु परियद्वी तू इमो तासिं ॥

अबहुस्सुते अगीयत्थे तरुणे मंदधम्मिए ।
 कंदप्पि सीलणद्वाए अविही दाणे य गहणे य २०९१
 बहुस्सुतगीत जहण्णो आवासगमादि जाव आयारो
 ते अगगीतऽबहुस्सुत तिष्ठ समाणारतो तरुणे २०९२
 जो उज्जोग्ण ण कुणति चरणे सो होति मंदधम्मे तु ।
 अणिहुयउल्लावादी सरीरकुविओ य कंदप्पी २०९३
 णिक्कारणे अणद्वा संजतिवसही तु वच्चए जो तु ।
 णिक्कारणमविहीए जो देती गेणहती वावि ॥ २०९४ ॥
 एयारिसे तु अज्जाणं परियद्वी तु ण कप्पति ।
 कारणोहिं इमेहिं तू गम्मति अज्जाणुवस्सयं ॥ २०९५ ॥
 उवस्सए य गेलणे उवही संघपाहुणे ।
 सेहट्ठवणुद्देसे अणुण्णा भंडणे गणे ॥ २०९६ ॥
 अणप्पज्ञ अगणी आज वीयारे पुत्तसंगमे ।
 संलेहण वोसिरणे वोसद्वाणे ठिते तिहिं ॥ २०९७ ॥
 अरिहो अणारिहो यावि परियद्वी एवमाहिओ ।
 अहुणा पवर्त्तणी तासिं अजोगा तु इमा भवे २०९८
 वासगगामविहारे वीयारादेकदीहिया ।
 अजुत्तोवहि अणाउत्ता अप्पछंदा य काहिता ॥ २०९९ ॥

पडिणीय थद्र सुहसीला गिहिवेयावचकारिता ।
 संसत्त ठवियभत्ता य बाउसी अप्पणद्विया ॥२१००॥
 अणायतणगवेसी य छणंगाणं पलोइया ।
 जा यऽणण एवमादी अज्जा स णाणुकद्विया २१०१
 आहारे उवहिंमि य गृतीए सयणासणे सरीरे य ।
 भासाए बाउसाणं जा जहिं आरोवणा भणिना २१०२
 बासावासं वसति तु एकिया तह य गामऽणुगगामं ।
 दूडजजती वियारं विहारभिकखादि एका य ॥२१०३॥
 दीहं करति गोयरदोच्चमुक्तससगाणि मगंती ।
 चित्तलियादिणियंसण अजुत्तउवही भवति एसा ॥
 इरियाभासेसणादाणणिकखवे णिसिरणे अणाउत्ता ।
 अणपुच्छाए गच्छति जत्थिच्छाए य सच्छंदा २१०५
 गेहेसु गिहत्थाणं गंतूण कहा कहेति काहीया ।
 तस्यादि अहिपडंते अणुजाणति जा तु सा पडिणी ॥
 थदा जच्चादिमयादिएहिं सुहसीलदुट्टसील त्ति ।
 सिद्धवणबंधणमादेसु वेदावचं गिहीण करे ॥२१०७॥
 उक्तसवत्थपत्तादिएहिं संसत्त भावसंसत्ता ।
 अहवा वि गिहत्थेसुं पाउरणादीसु अंविभत्ती २१०८

भत्तं वा पाणं वा णिक्खिवती शाउसा उ धुवति ।
 अभिक्खं तु हत्यपादे कक्खंतरगुज्जमादीणि २१०९
 सणिणहिसंणिचए चेव कुणति जा अप्पणो अणद्वाए ।
 अप्पं वा वि अणद्वा संचयं जा य करणं तु ॥२११०॥
 जंतादिसाल तह बद्धकोट्ट एमेव सोल ठाणाणि ।
 जा गच्छति एतेसुं अणायतणगवेसिता सा तु ॥
 गुज्जंगाणि पलोए अप्पणो अहवावि जा तु पुरिसाणं ।
 उक्कोसगमाहारं एसति उवहिं च उक्कोसं ॥ २११२ ॥
 गच्छति सविलाषगती सयणिज्ज सतूलियं सविब्बोयं ।
 उबद्देति सरीरं सिणाणमादी व जा कुणति ॥२११३॥
 भमुहुक्खेवादीहिं सविकारं भासती य सविलासं ।
 एमादि अणरिहा तू पच्छित्तं वा वि सद्वाणं २११४ ॥
 तथ पुण नाव इणमो पच्छित्तं भन्नए समासेणं ।
 देतगधरेतगाणं अगीतमादीणि दोणहं पि ॥२११५॥
 अष्टुस्सुते अगीतत्थे णिसिरिज्ज गणं तु अहव धारेज्जा
 तहेवसियं तस्स तु मासा चत्तारि भारियया २११६॥
 सत्तरत्तं तवो होति ततो छंदो पहावती ।
 छेदेण छिन्नपरियाए त नो मूलं तओ दुगं ॥२११७॥

एकेकं सत्तदिणे दातुं तवेऽतिच्छिए ततो छेदो ।
 जत्तो तवो अराद्वो पणगादिकडो व जहिं केनि १८
 तुल्ला चेव य ठाणा तवछेदाणं भवन्ति दोणह पि ।
 पणगादि पणगवड्ही दोणह वि छम्मासनिट्वणा १९
 किं कारणं ण कप्पति गणहरो अबहुससुतो अगीनत्थो
 भण्णति सो पचिलत्तं जयणं च ण जाणए कातुं २०॥
 दिट्ठंनो णट्टेण अजाणमाणेण जाणएणं च ।
 काप्पद्वो एत्थ इणमो परूत्रणा तस्समा होते २१॥
 गेयंमि अहिणवंमि य सरसंचारण कुहरणासुं च ।
 कुणति विवचासं खलु जह णट्टमसिक्किखतो णट्टो ॥
 तह कुणति विवचासं अग्गीतो सञ्चकरणजोगेसुं ।
 सुत्तत्थमजाणंतो णाणे तह दंसण चरित्ते ॥२२२३॥
 जह णट्ट गीतवाह्यविजाणतो जुंजए समं तालं ।
 सुत्तं तु विजाणंतो तह कुणनी सम्मकरणं तु २२२४॥
 किं पुण सो न वि जाणइ जं कुणनी सञ्चवहिं विवचासं ।
 भण्णति सुणसू इणमो जं कुणनी सो विवचासं २२२५
 ठाण णिसीय तुयट्टण पेहण पण्फोडणे तहा सयणे ।
 भसासुद्रगहणे जे अणे परूवियां ठाणा २२२६

उवदिसिउं ण वि याणति सामायार्इं तु ठाणमादीयं ।
 अज्ञावि जा अगीता ण जाणए सावि तह चेव २१२७
 अप्पछंदिओ लुद्धो परिभूतो य पत्थिओ ।
 बहुलोहमोहसणो अज्ञावग्गो दुरण्कड्हो ॥२१२८॥
 पाएणमप्पछंदा महग्घदाणेण लोभित अकिञ्चं ।
 कुञ्चन्ति छगलिया विव परिभूताओ य सच्चस्स । दा. ॥
 मंसादिपेसिया विव संजतिवग्गो हु पत्थणिज्जो तु ।
 षिज्ञाइयदिट्टीसुं बहुसुं बहुमोहसन्नाओ ॥ २१३० ॥
 मज्जायविप्पहृणे मज्जायाए य संपउत्तंमि ।
 पडिसेहो अणुणणा य मग्गधर विलोमता चतुरो २१३१
 जम्हा तु दुपरियद्धो अज्ञावग्गो उ तेण पडिसेहो ।
 परियद्धणे अज्ञाणं मज्जाया विप्पहृणस्स ॥ २१३२ ॥
 मज्जायसंपउत्तो अज्जापरियद्धओ अणुणणाओ ।
 परियद्धए अजोगो उवट्टिए चतुरुर्ग सोही ॥२१३३॥
 मग्गधरो आयरिओ सो पुण सिद्धिलेइ जो तु मज्जातं ।
 तस्मुवदेसो कीरति मज्जायाए दढो होति ॥ २१३४ ॥
 उपदेससार पडिसारणा य तेण पर तिण्ण मासलहुं ।
 छंद अवदमाणं अप्पछंदं विवज्जए ॥ २१३५ ॥

दिट्ठंता य इमेसि पढमा मासलहुगादि दिज्जन्ति ।
 छगणोल्लपट्टरुचण अवराहे सूरिसु कमण ॥ २१३६ ॥
 आयरणे उवदेसो अकप्पपडिसेवणे य उवदेसो ।
 विगहादिपमाएसु य मा वट्टह एम उवदेसो २१३७
 णिहाइपमादाइसु सहं तु खलियस्स सारणा होति ।
 णणु कहित ते पमादा मा सीदसु तेसु जाणन्मा ॥
 तहिशसं वीए वा सीदंतो बुच्चए पुणो तहयं ।
 अण्ण वेल ण सज्ज्ञ भिक्खणणादीहिं संसत्तं २१३९
 फुलबक्खे अचियत्तं गोणो तु दिओ व मा हु ऐलेज्जा ।
 सज्ज्ञं अतो ण भण्णति एसणचित्तं नतो सारे २१४०
 भण्णति दिणुवदेसो तुज्ज्ञं विनियं च सारितऽम्हेहिं ।
 एगवराहो ते सहो विनिय पुण ते ण विसहामो २१४१
 ताहे पुणोऽवराहे कथंमि पच्छित्तं देति मासलहुं ।
 भण्णइ य सुणेहेत्थं दिट्ठंनं तेणएणं तु ॥ २१४२ ॥
 गोणादिहरणगहिओ सुक्को य पुणो सहोढ संगहितो ।
 उल्लोल्लछगणहारी ण मुचती जायमाणो वि ॥ २१४३ ॥
 पुणरवि कतावराहे मासलहुं चेव देति से सोही ।
 भण्णति घट्टिज्जन्तं चुक्कत्थं दुट्ठतह तुभंपि ॥ २१४४ ॥

पुणरक्षि अवरद्धंभी मासो चिय तेसि दिज्जते दंडो ।
 पाणो सो संवत्तो अतिरुचियकुंकुमं ततियं ॥२१४५॥

तेण पर णिच्छुभणं कुलगणथेरादि तस्स कुव्वंति ।
 अयमण्णो वी णीयमो भण्णति तू जस्सिमे दोसा ॥

अप्पछंदियलुद्धं गिलाणं दुपाडिजगगणं ।
 वामं सगव्विनं णच्चा संवासो वि ण कप्पति ॥२१४७॥

उम्मगगदेसणाए संतस्स य छायणाए मग्गस्स ।
 मग्गधर उवालंभे मासा चत्तारि आरियया॥२१४८॥

आयरियाणं छंदे ण वट्टनी अप्पछंदिओ सो उ ।
 आहारादुक्कोसं लद्धं अत्ताहि लुद्धो तु ॥ २१४९ ॥

ज्ञो तु गिलाणो अपत्थं मग्गति सो होति दुपाडिजगगो तु
 गयसु भणिनो वच्चति वच्चत्ति य ठाति वामो सो २१५०

जच्चादिमादिएहिं करेति गव्वं तु परिभवति अण्णं ।
 णाणादीया मग्गो पर्ख्वणा अण्णहा तेसिं ॥२१५१॥

णाणादिसु सीदंतो ण सुद्धमग्गं तु जो पर्ख्वेह ।
 एसो मग्गच्छेदो वड्हयती दीहसंसारं ॥ २१५२ ॥

एतेसिं तु विधेगो मग्गधरा खलु कुलादिया थेरा ।
 तेहिं उवलद्धाणं उवट्ठिताणं गुरु चतुरो (मासा) ॥

वालाणं बुद्धाणं भिक्खुमादीण चेव सब्वेसि ।
 संखेवेण महत्थो उवदेसो कीर्ह इणमो ॥ २१५४ ॥
 कप्पे सुत्तत्थविसारएण थामावहारविजदेण ।
 भत्तादिलंभडलंभे सक्कारजदेण होयववं ॥ २१५५ ॥
 कप्पेंति थेरकप्पे सुत्तत्थविसारएण साहूण ।
 सब्वत्थेसू सबलं ण गृहियववं समत्थेण ॥ २१५६ ॥
 आहारमादिएहिं दट्टुं धीयारमादिपुज्जंते ।
 साहू अपुज्जमाणे ण एव भणसा विचिंतेज्जा ॥ २१५७ ॥
 पूइज्जंती अजया वयं तु सब्वणु मगगमोदिणा ।
 हा कह णु ण पुज्जामो ण करं मणदुक्कडं एवं ॥ २१५८ ॥
 सक्कारपुरक्कारे परीसहे तू अहियासिओ एवं ।
 जूरंते णऽहियासिओ तम्हा सुभणेण होयवयं ॥ २१५९ ॥
 वीसइविहकप्पो तू एसो खलु वणितो समासेण ।
 वायालकप्पमहुणा गुरुवएसेण वोच्छामि ॥ २१६० ॥
 दब्बे भावे तदुभयकरणे वेरवणमेव साहारो ।
 णिठ्बेस अंतर णयंतरे य ठित अट्टिते चेव ॥ २१६१ ॥
 ठाण जिण थेर पज्जुसणमेव सुत्ते चरित्तमञ्जयणे ।
 उद्देस वायण पांडिच्छणा य परियद्वषुप्पेहा ॥ २१६२ ॥

जातमजाते चिणमचिणे संधाणमेव चयणे य ।
उववाय णिसीहे या ववहारे खेत्तकाले य ॥२१६३॥

उवही संभोगे लिंगकप्प पडिसेवणा य अणुवासे ।
अणुशालणा अणुन्ना ठवणाकप्पे य बोधव्वे ॥२१६४॥

एतेसिं तु पदाणं पत्तेय परूवणं पवक्खामि ।
तहियं तु दव्वकप्पो इणमो तु समासतो होति २१६५
पंचण्हं असणादीणं पणुवीसति हि भवे विसोहीउ ।
अहवा वि उ चउहसिया एत्तो तिगवड्डिया सोही ॥

असणं पाणं वत्थं पातं सेज्जा य पंच एतेसिं ।
सुख्षी पणवीसतिया उगगम तह एसणाए य ॥२१६७॥

सुतणाणपमाणेण उ गहियमसुखे वि होइ सुख्दो तु ।
अहवा वि तु छहसया सोलस उप्पायणा दोसा ६८॥

एएसिं सब्बेसिं हणपयणक्रिणादिणवहिं कोडीहिं ।
कनकारिताणुभोदित एसा तिगवड्डिता सोही ॥६९॥

दंसणणाणचारित्ते तवपवयणसच्च समिति तिहिं गुत्तो
हतरागदोसणिम्ममखमदमणियमाहितो णिच्चं ॥७०॥

तदुभयकप्पो अहुणा एते चिय दव्वभावकप्पात ।
दोणिण वि मिलिया एते तदुभयकप्पो इमो सो य ॥

आहारे अटुचिहे सेज्जोवहि पंचपंचगविसोही ।
 दंसणचरित्तगुत्तो तवसमितिगुणेहिं सो होति २१७२
 असणादीतो चउहा उवकारि चउचिवहो य तसेव ।
 एसटुचिहाहारो परुवणा तसिसमा होति ॥२१७३॥
 असणं तु ओदणादी तदुवकारी उ खीरकुसणादी ।
 पाणं तु पाणमेव तु कप्पूरादी तु उवकारी ॥२१७४॥
 खाइम फलाइयं तू सुत्ता (णठा) दी होति तदुवकारीतु ।
 साइम तंबोलादी चुणणादी तदुवकारी तु ॥२१७५॥
 एवं आहारादी उगमउपपायणेसणासुद्धं ।
 उपपाए दंसणादीहिं जुत्तो अहवा तंदट्टाए ॥२१७६॥
 विरतीय अविरतीया विरयाविरतीय तिविहकरणं तु
 एकेकं होति दुहा ओहे य अभिगगहे चेव ॥२१७७॥
 विरती करणं ओहे पंचेव महव्वता भवती तु ।
 होति अभिगगहकरणं पिंडविसुद्धादिऽणेगविहं २१७८
 अहवा ओहे संजमो विभागतो होति सत्तरसभेदो ।
 अविरति असंजमोहे अडारस अभिगगहे इणमो ॥
 पाणतिवाते मोसे अदत्त मेहुण परिगगहे चेव ।
 कोहमाण मायलोभे पेज्जे दोसे तहा कल्हे ॥२१८०॥

अबभक्त्वाणे पेसुण अरतिरइ चेव मायमोसे य ।
मिच्छादंसणसल्ले अट्टारस अभिगग्हे एस ॥ २१८१ ॥

विरताविरतीए पुण ओहेण अणुव्वता भवे पंच ।
उत्तरगुणा अभिगग्हि हवंति सिक्खावता सत्त ८२

एथं पुण आहिगारो विरतीकरणेण होति दुविहेण ।
जह तेसु अतीयारो ण होति तह ऊ पयतियवं ८३

उज्जामरक्तिखयाणं महव्वताणं कनो हवति पीला ।
भण्णति आहारादिहिं निहिं पीडा होतऽसुद्धेहिं २१८४

उज्जम उज्जोयो खलु एतेण रक्तिखयाण तु वयाणं ।
पीला उवघातो खलु भवति कहं पुच्छती सीसो ८५

भण्णति आहारोवहिसेज्जा एतेहिं तिहिं असुद्धेहिं ।
उगमदोसादीहिं तु पीला संजायति वयाणं २१८६

तम्हा उ उगमादीहिं विसुद्धाहारमादिया कज्जा ।
वेरमणकप्प एसो एत्तो साहारण बोच्छं ॥ २१८७ ॥

सेज्जुवहिज्जाय आहारमेव साहार तह य अणुकंपा ।
आदिपणगं तु तुलं भइयं अणुसासणाए तु ॥ २१८८ ॥

सेज्जुवहिज्जाय आहार पसिद्धा एते होति चत्तारि ।
साहारणकप्पो पुण मूलगुणा उत्तरगुणा य २१८९

साहारण त्ति किं पुण सेज्जादुप्पादगाण सव्वेसिं ।
 सामन्नगुणा ते ऊ तम्हा साहारणं जाण ॥ २१९० ॥
 आदिपणगं तु तुल्लं ति जाण सेज्जाति जाव साहारं ।
 ठियमठियाण दोणह वि एते खलु होंति तुल्ला तु १
 अहवादिपणग मूलगुण पंचेते होंति दोणह तुल्ला तु ।
 समणाण व समणीण व तम्हा साहारणं जाणे १२
 भइयमणुसासणं ती अणुकंपणुसासणत्ति एगढा ।
 कोइ कदाइ अणिउणो ण तरति अणुसासणं काउं ॥

सुहभारियत्तणेण होति विसुद्धो य अंतरप्पा से ।
 तस्स वि होंति बताईं पंच वि साहारणाईं तु ॥ २१९४ ॥
 आणा तित्थगराणं सामणा संजताण सव्वेसिं ।
 सुहुमे वि तप्पमाए अणुसासणयं क्रुणति जो तु १५
 तेण अणुकंपिता णिच्छएण जम्हाऽणुसड्हिनो होंति ।
 तसऽणुसड्हऽणुकंपा एगढा होंति णायव्वा ॥ २१९६ ॥
 साहारकप्प एसो अहुणा वोच्छामि णिव्विसणकप्पं ।
 जह णिव्विसंति समणा सम्मं तु गुरुवएसेण २१९७ ॥
 णाणं च दंसणं वा तहा चरित्तं च समितिगुर्तीओ ।
 एकासीतिपदेहिं णिव्विस णिव्वेसणाकप्पो २१९८ ॥

छन्दिवह कष्पादीया बायालंता उ पंचवी एते ।
मेलीणा उ भवंती एक्कासीति भवे भेदा ॥ २१९९ ॥
णवरं छन्दिवहकपे वीसइकपे य णामठवणाओ ।
मोत्तुं सेसा सब्बे एक्कासीति तु मेलीणा ॥ २२०० ॥
एते सब्बे संमं णिन्दिवसमाणस्स णिन्दिवसणकपो ।
एतेसिं पुण कतरो महड्डितो होति सब्बेसिं २२०१
सब्बे वि हु चरणविसोहिकारगा तह वि अत्थ हु
विसेसो ।
सद्दहणाऽचरणाए भइतं पुण पालणाए तु ॥ २२०२ ॥
सद्दहणाकपो या आयरण। चेव दो पहाणतरा ।
अहवा सद्दहण चिय सद्दहितुं जो ण आयरनि २२०३
भइयमणुपालण त्ति य सद्दहिऊणं पि ण तरती कोई ।
अणुपालेतुं अज्ञा तम्हा खलु सो ण पद्वावे २२०४ ॥
णिन्दिवसणकपो एसो एत्तो वोच्छामि अंतराकप्प ।
संखेव पिंडियतथं गुरुखएसं जहा कमसो ॥ २२०५ ॥
पंचट्टाणमसंखा बारसगं चेव तिणिण वि तियाणं ।
अज्ञात्थणाणकरणट्टयाए सो अंतराकप्पो ॥ २२०६ ॥
सामादि संजतादी पंचह चरणं तु तेसि एकेकं ।
संजमठाणमसंखा एकेके तत्थ ठाणंमि ॥ २२०७ ॥

होंति अणंता चारित्तपञ्चवा ताणऽसंखगुणियाणि ।
 एकं संजमकंडग कंडगसंखा य छट्ठाणा ॥ २२०८ ॥
 छट्ठाणाऽसंखेज्ञा संजमसेढी तु होति वोधवा ।
 सामाइय-छेदसंजमठाणा गंतुं असंखेज्ञा ॥ २२०९ ॥
 परिहारि-संजमठाणा ताहे लगगंति ते वि तु असंखा ।
 गंतूण होंति छिन्ना ताहे तत्तो पुणो परतो ॥ २२१० ॥
 वड्डांति जा असंखा सामाइ-छेदसंजमट्ठाणा ।
 सामादि-छेदठाणा ताहे छिन्ना हवंती उ ॥ २२११ ॥
 तो सुहुमरागठाणा ते वि असंखेज्ञ गंतु वोच्छन्ना ।
 तस्स अपच्छिमठाणा अणंतगुणवड्डांतं णियमा ॥
 एकं परमविसुद्धं होति अहक्खायसंजमट्ठाणं ।
 पंचमसंख त्ति गतं बारसगं बारपांडमाओ ॥ २२१३ ॥
 सुद्धपरिहारचतुरो अणुपरिहारि वि णवमकण्ठितो ।
 एते तिणिणतिया खलु एतेसिं एकमेकस्स ॥ २२१४ ॥
 अंतरसंजमठाणा होंति असंखा तु तेसि सन्वेसि ।
 होति दुविहा तु सोही करणे अज्ञात्यतो चेव २२१५
 ता दोवी कायवा णाणट्ठाए सुतोबउत्तेण ।
 एसो अंतरकण्ठो णयकण्ठमियाणि वोच्छामि २२१६ ॥

सब्बेसिं पि णयाणं आदेसणयंतरं पि सट्टाणे ।
एस णयंतरकप्पो पुब्बगतविसालमादीसु ॥२२१७॥
सब्बे वि णेगमादी आदिससति जो णयो तु साऽऽदेसो ।
णयतो अणो वि णओ णयंतरं होति णायब्बं ॥१८॥
सट्टाणे सट्टाणे सब्बे बलिया हवंति सव्विसते ।
एसो णयकप्पो तू पुब्बगतंभी समक्खाओ ॥२२१९॥
उप्पादपुब्ब विसालं तं आई काउं सब्बपुब्बेसु ।
भणितो उ णयविभागो एत्थं चोदेति अह सीसो ॥
कम्हा कालियसुत्तेण णया तु समोयरंति हु कहं वा ।
णयविगल होति साहण मोक्खस्स तु भण्णति सुणाहि
णयवज्जिओ वि हु अलं दुक्खक्खयकारओ
जतिजणस्स ।
चरणकरणाणुओगो तेण उ पढमं कतं दारं ॥२२२२॥
आयारपकप्पधरो कप्पब्बवहारधारतो अज्जो ।
णयसुत्तवज्जिओ वि हु गणपरियद्वी अणुण्णाओ २३॥
पच्छित्तकरण अणुपालणा य भणिता उ कप्पब्बवहारे ।
एतेण अत्थधारी गणधारी जो चरणधारी ॥२२२४॥
अज्जो ती आमंतण णिहेसे वा णयस्स मुत्ताइं ।
जातिं तु दिङ्गिवाते पच्छित्तं दिज्जते तह उ ॥२२२५॥

तेहिं विणा वि जाणति आयारपक्षधारओ जम्हा।
 तम्हा तु अणुण्णातो गणपरियद्वी तु सो णियमा॥
 करणाणुपालयाणं तु पज्जवकसिणं समासओ णाणं।
 करणाणुपालणदुतं पज्जवकसिणं भवे तिविहं ॥२७॥
 दुतिपण छक्कणयंतरेसु सोलस हवंति ठाणाहं।
 करणद्वाण पसत्था करणद्वाणा उ अपसत्था ॥२२८
 एयाहं ठाणाहं दोहिं वि गाहाहिं जाहं भणिताहं।
 तेसि पर्खवणमिणमो समासतो होति बोधव्वं ॥२९॥
 करणं तु किया होति पडिलेहणमादि सामयारी तु।
 तं पालिज्जति णाणेण तं च दुविहं मुणेयव्वं ॥३०॥
 पज्जवकसिणसमासो पज्जवकसिणं तु चोहस तु पुव्वा।
 सामाइयं पक्षपो होति समासो मुणेयव्वो ॥२२३॥
 पज्जवकसिणं तिविहं सुते अत्थे व तदुभए चेव।
 एमेव समासो वि हु तेहिं पालिज्जए चरणं ॥२२४॥
 तस्स णएहिं मग्गण ते उ समासेण होंति दुविहा तु।
 दव्वद्विपज्जवद्विय णया उ अविसेसियविसिट्टा ३॥
 वण्णादि समुदियं तू दव्वद्वी दव्वमिच्छते णियमा।
 तं चेव पज्जवणओ दव्वाइविसेसियं इच्छे ॥२२५॥

अहवा वि तिणिं वि णया दव्वाद्वित पञ्जवद्वित गुणद्वी
पञ्जायविसेस चिय सुहुमतरागा गुणा होंति ॥३५॥
एगुणकालगादिसु परिसंखगुणद्वितो तु णायव्वो ।
दव्वाओ गुणाणन्ने गुणा विसेसत्ति एगद्वठा ॥२२३६॥
आदिल्ला तिणिण णया एको वितिओ य होति उज्जु-
सुओ ।

सद्वादितिणिण वेक्षो तिन्नि णया होंति एवं वा २२३७॥
अहवा वि णिगमसंगहववहारुज्जुसुए होंति चतुरेते ।
सद्वण्य तिणिण एको पंच णया होंति एवं तु ॥२२३८॥
अहवा वि होउज छक्कं णेगमो संगाहिगो असंगाही ।
संगहिगो संगहं तू ववहारपविड असंगाही ॥२२३९॥
तम्हा तु संगहणओ ववहारो चेव होति उज्जुसुत्तो ।
सद्वो य समभिरुढो एवंभूतो य छक्क णया ॥२२४०॥
एते पुण सब्बे वी दुग तिग पण छक्क मेलिया संता ।
सोलस नयंतराइं समासओ होंति एयाइं ॥२२४१॥
जदि कुणति दवियकप्पं एतेहि णयंतरेहिं तु विसुद्धं ।
करणठाणपसत्था ते खलु होंति मुणेयव्वा ॥२२४२॥
अकर्ते अपसत्था कप्पे स णयंतरे समक्खाओ ।
फृप्पे ठितमठिए पुण बोच्छामडहुणा समासेण २२४३

संघयणवज्जिओ विहु दुकखक्खयकारओ पणगजाओ।
 संघयणसमग्गस्स वि अजातचतुरो अमोक्खाए ४४
 पंच उ महव्वताइं पणगं तेसि तु जो करे पयत्तं।
 जाओ जो णिष्फण्णो अजातो णियमा अणिष्फण्णो॥
 ठियमाटिए व कप्पे संघयणेणावि जो विहीणो तु।
 सो कुणति दुकखमोक्खं, जो पुण ण करे पयत्तं तु॥
 पंचसु महव्वतेसुं संघतणेणं तु जदि वि संपण्णो।
 सो चतुगतिसंक्षारे भमती ण य पावती मोक्खं॥
 अहुणा उ ठाणकप्पो उद्धठाणादिओ मुणेगव्वबो।
 ठियकप्प संजतस्स विऽणुण्णाओ आटितस्सा वि॥
 एवं जिणकप्पो वि हु ठियकप्पे अटिए यऽणुण्णाओ।
 एमेव थेरकप्पो ठितमठिते होतिऽणुण्णातो ॥ २२४९॥
 पञ्जूसवणाकप्पो सुत्ते कप्पो तहा चरित्ते य।
 अज्ञयणुदेसंमि य कप्पो तह वायणाए य २२५०
 कप्पो पडिच्छणाए परियद्वऽणुपेहणाए कप्पो य।
 ठितमटिएसु दोसु वि एते सव्वे भवे कप्पा ॥२२५१॥
 जातमजाओ अहुणा दोणिण वि एते समं तु वच्चन्ति।
 जातं णिष्फण्णं ति य एगदृढं होति णायव्वं २२५२

जातमजातं करणं जाते करणे गती तिहा छिणा ।
अज्ञाते करणंमि उ अण्णतरीतं गतीं जाह ॥२२५३॥

जायं खलु णिप्फणं सुत्तेणऽत्थेण तदुभएणं च ।
चरणे य संजुत्तं वतिरित्तं होति अज्ञातं ॥ २२५४ ॥

जातकरणेण छिणा णरगतिरिक्खा गती उ दोणिं
भवे ।

अहवा तिहा उ छिणा णरगतिरिक्खामणुस्सगती ॥
देवेसु वि तिणिण गती छिणा वेमाणिएसु उववत्ती ।
उसु वि गतीसु गच्छति अण्णतरि अजातकरणेण ॥

एसो जातमजाते कप्पोऽ भिहितो इदाणि वक्खामि ।
आइणमणाइणे कप्पं तु गुरुवदेसेण ॥ २२५७ ॥

आहारचतुक्के करण फ्रासणे खेत्तकालउवगरणे ।
आइणे आइणं तविवरीए अणाइणं ॥ २२५८ ॥

आहारचतुक्कं खलु असणादीयं तु होति णायवं ।
करण आयरणं तू तस्स तु जं जत्थ आइणं २२५९

पिसितं सिंधुविसए दातिं पुण उतरावहाइणं ।
तंबोलं दमिलेसुं एमादी खेत्तमाइणं ॥ २२६० ॥

काले दुविभक्खादिसु पलंबमादी तु सञ्चमाइणं ।
उवगरणे आइणं वोच्छामि अतो समासेण २२६१

सिंधू आउलियाहाँ काला कप्पा सुरट्ठविसर्वंमि ।
 दुगुल्लादि पुंडवद्धणि भरहट्टेसुं च जलपूरा ॥२२६३॥
 एवं जत्थाइण्णं तहियं तू कप्पती तु आयरिउं ।
 इतरत्थ कारणंभी फासणगहणं च परिभोगो २२६४
 आइणो चतुवर्गो ण य पीलाकारओ पवयणस्स ।
 ण य मङ्गलणा पवयण नाइण्णं आयरे कप्पं २२६४
 आहार उवहिसेज्जा सेहा चतुवर्गो होनि पायव्वो ।
 पवयणपीलुवथानो पिसियाहं सज्जाराइ त्ति ॥२२६५॥
 चोदेइ का महलणा ? भण्णति पडिसेहियाणि ज सेवे ।
 सा होति मङ्गलणा तू जो पुण सुपरिष्टिओ चरणे ॥
 तण्णातु सलाहेनि वण्णति गुणेहिं एस जुत्तो त्ति ।
 सुदुकरे अप्पहितं जो पुण करणे अजुत्तो उ २२६६
 तं दट्टुं संदेहो उप्पज्जति किण्ण एस सच्छंदो ?
 आओ ण उवएसो एरेसओ देसिओ सप्रए ॥२२६८॥
 आह जिणकप्पियाण वि आइण्णं किंचि अतिथ अह
 णत्थ !
 भण्णति ण अत्थी किं पुण आयरे जिणकप्पिताइण्णं ॥
 आहार उवहिदेहे निरवेक्खो णवरि णिज्जराषेही ।
 संघयणविरियजुत्तो आइण्णं आयरति कप्पं २२७०

दंसण णाण चरित्ते तवे य तह भावणा सु समिती सु ।
 छण हं पि निष्पगारं सद्दहे संधाण साहणता २२७१
 सद्दहति सम्मदंसण आयरति पर्खवणं च कुणमाणो ।
 संधाणकप्प एसो एवं सेसाण वी णेयं ॥ २२७२ ॥
 संधाणकप्प एसो भणितो तु समासतो जिणकखातो ।
 संखेवसकुदिट्ठं एत्तो बोच्छं चरणकप्पं ॥ २२७३ ॥
 आहारउवहिसेज्जा तिक्रणसोहीए जाहिं परितंतो ।
 पगहितविहाराओ तो चवती विसयपडिबद्धो २२७४
 कोति विसेतं बुज्ज्ञति पसत्थठाणा अहं परिभद्धो ।
 अंधत्तणं कोई ण बुज्ज्ञए भंदधम्मता ॥ २२७५ ॥
 दवे भावे अंधो दवे चकखूहिं भावे ओसणणो ।
 संविग्गतं ण रोयनि णितियाण पहाणमिच्छन्तो ७५
 जुत्तो जुत्तविहारी तं चेव पसंसते सुलभबोही ।
 ओसणणविहारं पुण पसंसए दीहसंसारी ॥ २२७६ ॥
 आहारोवहिसेज्जा णीयावासे वि तिक्रणऽविसोही ।
 तह भावंधा केई इमं पहाणं लि घोसन्ति ॥ २२७८ ॥
 णीयादि विहरं मि वि जदि कुणती णिगगहं कशायाणं ।
 तस्स हु भवते सिद्धी अवितहसुत्ते भणियमेयं ७९ ॥

बहुमोहे वि हु पुर्विं विहरिता संबुद्धे कुणति कालं ।
 सो सिज्जन्नति अवि य इमे पुरिसज्जाता भवे चतुरो ॥
 णाणेण संपन्नो णो तु चरित्तेण एत्थ चतुभंगो ।
 तेणेसेव पहाणो एवं भासंति णिद्रम्मा ॥२२८१॥
 तम्हा तु ण एताइं कुज्जा आलंबणाइं मतिमं तु ।
 कुज्जा हि पसत्थाइं हमाइं आलंबणाइं तु ॥२२८२॥
 तित्थगराणं चरितं चरितं कसिणंगपारगाणं च ।
 जो जाणति सद्दहती ओसणणं सो ण रोएति २२८३
 धुवसिज्जितव्वगंमि वि तित्थगरो जदि तवंमि
 उज्जमति । किं पुण तवे उज्जोगो अवसेसेहिं ण कायव्वो
 चोहसपुव्वी कसिणंगपारगा तेसि जो उ उज्जोगो ।
 तं जो जाणति सो खलु संविगगविहारसद्दहतो २२८५
 एमादी आलंबण काउं संविगगतं न रोएति ।
 को पुण ओसणणत्तं रोएती ? भणणती हमो तु २२८६
 सुत्ततथतदुभए अकडजोगि ओसणणयरोयओ होज्जा
 अहवा दुग्गहियत्थो अहवा वी मंदधमत्ता ॥२२८७॥
 अणाणि यङ्कडजोगी दुग्गहियत्थो तु जो ण
 अववादो । गहिओ ण वि उस्सगगो गहिते वा
 मंदधममो-उ ॥२२८८॥

तो रोए ओसण्णो इति एसो वणिओ चरणकप्पो ।
उववादकप्पमहुणा वोच्छामि जहक्कमेणं तु ॥ ८९ ॥

अंचहिं ठाणेहिं वियद्विऊण संविग्गसङ्घयाजुत्तो ।
श्रेष्ठभुजजतं विहारं उवेह उववायकप्पो सो ॥ ९० ॥

उववयणं उववाओ पासत्थादी य पंच ठाणा तु ।
सु विविहं तु वद्वितो वियद्विओ होति णायव्वो ॥

संवेगसमावण्णो पच्छा उ उवेति उज्जयविहारं ।
एस उववायकप्पो णिसीहकप्पं अतो वोच्छं ॥ ९२ ॥

ष्टुहा णिसीहकप्पो सद्वण्डणुपालणा गहणसोही ।
सद्वणा वि य दुविहा ओहणिसीहे विभागे य ९३

ओहे त्ति हत्थकम्मं कुणमाणे रोगमूलिया दोसा ।
णेहणमादि विभागे अहवोधो होति उस्सग्गो ९४

अववादो तु विभागो सद्ववंडपेतं तु सद्वहंतस्स ।
सद्वणाए कप्पो होइ अकप्पो पुण इमो हु ॥ २२९५ ॥

मिच्छत्तस्सुदएणं ओसण्णविहारताए सद्वणा ।
गणहरमेरं ओहं ण सद्वहती जो णिसीहं तुं २२९६

ओसण्णाण विहारं सद्वहती सुविहताण गणमेरं ।
ण तु सद्वहती जो खलु एस अकप्पो तु सद्वणे ९७

जाणि भणिताणि सुत्ते पुञ्चावरबाहिताणि वीसाए।
 ताणि अणुपालयंतो सञ्चाणि णिसीहकप्पो तु २२९८
 सुत्तत्थतदुभयाणं गहणं बहुमाणविणयमच्छ्रेरं ।
 चोद्दसपुञ्चिणिबद्धो पकप्पगहियंभि गणधारी ॥९॥
 तिविहो य पकप्पधरो सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव ।
 सुत्तधरमोक्तु तइओ बिंतिओ वा होति गणधारी २३००
 तिगपणग पणग छक्कं अट्ठग णवगं च जस्स उवलद्धं ।
 ठवणाकरणं दाणं च सो हु सोही वियाणाहि ॥२३०१॥
 णाणादीणं तियगं पणगं ववहारो होति पंचविहो ।
 वितिशपणगं पंच वता छक्कं पुण होति छक्काया ॥२॥
 आलोयणारिहगुणे अट्ठ तु अहवा विसोहि अट्ठविहा
 आलोयणतादीयं मूलं तं जाणती जो तु ॥ २३०३॥
 आलोयणमादीयं अणवट्ठं तं तु णवविहं होति ।
 पारंचितं तमहवा दसविह होती चसदेण ॥ २३०४॥
 ठवणा रोवण करणं सफला मासा करेन्तु जो जाणे ।
 सो होति दाण अरिहो तञ्चिवरीतो अणरिहो तु ॥५॥
 किह पुण तं दायव्वं पायच्छित्तं तु पुच्छए सीसो ।
 भणन्ति इमेण विहिणा दायव्वं तं जहाकमसो ॥६॥
 ओहेण तु सट्ठाणं सट्ठाणविभागता पवित्थारो ।
 पच्छित्तं पुरेसहेतू किंति ण संती चरणमादी २३०७

ओहे सद्वाणं ति य जह चउगुरु होति रायपिंडमि ।
 सद्वाणविभागे पुण ईसरमाई मुणेयव्वो ॥ २३०८ ॥
 जह वा करकम्ममिय ओहेण होति मासगुरुयं तु ।
 होति विभागपसंगो दिव्वादीओ मुणेयव्वो ॥ २३०९ ॥
 पुरिसज्जातं णातुं च दिज्जए जं च जारिसं वत्थुं ।
 गुरुमादिबलिय दुब्बलहट्टगिलाणादि जं जोगं २३१०
 हेउ कारण णिक्कारणे य जयणादिसेवियं जह उ ।
 चोदेति किं णिमित्तं पच्छित्तं दिज्जते सुणसु २३११
 पायच्छित्ते असंतंमि चरित्तं तु न चिट्टए ।
 चरित्तंमि असंतंमि तित्थे णो सचरित्तया ॥ २३१२ ॥
 तित्थंमि असंतंमी णेव्वाणं तु ण गच्छती ।
 णेव्वाणंमि असंतंमि सव्वा दिक्खा निरत्थिया १३
 एवं णिसीहकप्पो चतुहा तू चणितो समासेण ।
 ववहारकप्पमहुणा गुरुवएसेण वोच्छामि ॥ २३१४ ॥
 ववहारे कोति भिक्खू सच्चित्तणिवायणिद्वमहुरेहिं ।
 ववहरती ववहारं वितहं सो संघमज्जंमि ॥ २३१५ ॥
 कोह वहुस्सुय भिक्खू अपुव्वणगरंमि किंचि ववहारं ।
 णाएण छिंदित्ता वत्थव्वेहिं पमाणकतो ॥ २३१६ ॥

अह पच्छा सचित्तं खुड्हाई तस्स केणाई दिणणं ।
 वसही पाउरणं वा वरऽम्ह पक्खं ववहरेत् २३१७
 घयतिल्लादी णिंद्रं खंडगुलादीहिं वा वि संगाहितो ।
 सच्चाहिं एहिं ताहे ववहरए पक्खवातेण ॥ २३१८ ॥
 दुष्टववहारेण को तु णिसेहेज्ज तो वदे संघो ।
 एतद्वा संघमेलो कीरति इणमो य संपत्तो ॥ २३१९ ॥
 अण्णो तहिं तु गीओ संघसमत्तीय तिणिण वाराओ ।
 उच्चारे सिद्धपुत्तो तत्थ य भेरा इमा होति ॥ २३२० ॥
 शुद्धांमि संघसदे धूलीजंघो वि जो ण एज्जाहि ।
 कुलगणसंघसमाए लग्गति गुरुए व चउमासे ॥ २३२१ ॥
 जं काहिनि अकज्जं तं पावति सति बले अगच्छतो ।
 अण्णाइया व ओहावणादि तसिं च जं कुज्जा २३२२
 सोज्जण संघसदं धूलीजंघे वि होति आगमणं ।
 धूलीजंघणभित्तं ववहारो उवटितो होति ॥ २३२३ ॥
 सोज्जण संघसदं धूलीजंघो उ आगतो संतो ।
 वितहं ववहरमाणे साहू समएण वरेइ ॥ २३२४ ॥
 णिंद्रं महुरं णिवातं कितिकम्मं विजाणएसु जंपेतो ।
 सचित्ते खेत्तमीसे अत्थधर णिहोड दिसहरणं २३२५

भिकखु य मुसावादी ववहारे तद्यगंमि उद्देसे ।
 सुत्तं उच्चारेती अह बहुपक्खा इमं होति ॥२३२६॥
 रागेण व दोसेण व पक्खगग्हणंमि एकमिक्षस्स ।
 कज्जंमि कीरमाणे किं अच्छति संघमज्ञत्थो २३२७
 रागेण व दोसेण व पक्खगग्हणेण एकमेक्षस्स ।
 कज्जंमि कीरमाणे अण्णो वि भणेतु ता कोइ २३२८
 कुलगणसंघट्ठवणं इहं ण याणामि देसिओ मि अहं ।
 अण्णेण वि ता केणति कप्पति इह जंपितुं किंचि २९
 संघेण अणुण्णाए अह जंपति सो तहिं गुणसमिद्धो ।
 ववहारणीतिकुसलो अणुमाणंतो तयं संघं ॥२३३०॥
 संघो महाणुभावो अहं च वेदेसिओ इहं भंते ।
 संघसमितिं ण जाणे तं भे सव्वं खमावेमि ॥२३३१॥
 देसे देसे ठवणा अण्णा अण्णा य होति समितीय ।
 गीतत्थेहऽभिण्णातं वेदेसिओऽहं ण जाणामि २३३२
 अणुमाणंता एवं ताहे अणुण्णाए जंपए इणमो ।
 परिसा ववहारीण य इमे गुणे तू समासेण ॥२३३३॥
 परिसा ववहारी वा मज्ञत्था रागदोसणिद्युया य ।
 जदि होंति दो वि पक्खा ववहरितं तो सुहं होति

बुत्ते वडन्थधरेण जदिउ ववहारिणो तु जंपेज्जा ।
 णूं तुम्हे मणगह मज्ज्ञं सन्विक्कवयणं नि ॥२३३॥
 सेसा तु मुसावादी सच्चपरिभट्टगा तु किं सच्चे ।
 भणनति सुहेण एन्थं भृतत्थभिणं समासेण २३४॥
 ओसण्णचरणकरणे सच्चववहारता दुसहहिया ।
 चरणकरणं जहंतो सच्चववहारतं पि जहे ॥२३५॥
 जहिया अणेण चत्तं अप्पणयं णाणदंसणचरितं ।
 तहया तस्स परेसुं अणुकंपा नत्थि जीवेसु ॥२३६॥
 भवसयसहस्रदुलहं जिणवयणं भावओ जहंतस्स ।
 जस्त न जायं दुक्खं न तस्स दुक्खं परे दुहिए ॥
 आयारे वद्धंतो आयारपरुद्वणे असंकियओ ।
 आयारपरिभट्टो मुद्दचरणदेसणे भद्धओ ॥२३८॥
 तित्थगरे भगवंते जगजीववियाणए निलोगगुरु ।
 जो न करेइ पमाणं न सो पमाणं सुनधराणं २३९॥
 तित्थगरे भगवंते जगजीववियाणए निलोगगुरु ।
 जो उ करेति पमाणं सो उ पमाणं सुनधराणं ॥४०॥
 संघो गुणसंघातो संघो य विशेषाओ य कमाणं ।
 रागदोसविमुक्तो होति समो यव्वसाहूणं ॥२३१॥

परिणामियबुद्धीए उववेओ होति समणसंघो तु ।
कज्जे पिच्छितकारी सुपरिच्छितकारओ संघो ॥४४॥

एकासि दुवे व तिणिण व पेसविए ण एह परिभवेणं तु ।
आणातिकमणिजजूहणा तु आउद्ववहारो ॥२३४५॥

आसासो वीसासो सीतघरसमो य होति मा भाती ।
अम्मापीतिसमाणो संघो सरणं तु सव्वेसिं ॥४६॥

सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वाण सोगगतिं णेति ।
जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२३४७॥

सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वावि ते इहं लोगं ।
जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२३४८॥

सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघा ण सोगगतिं णेंति ।
जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥१३४९॥

सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघो व एति इहलोए ।
जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२३५०॥

सीसे कुलिच्चए गणिच्चए व संघिच्चए च समदरिसी ।
ववहारसंथवेसु य सो सीतघरोवमो संघो ॥२३५१॥

गिहसंघातं जहितुं संजमसंघाततं समुवगम्म ।
णाणचरणसंघातं संघाएंतो हवति संघो ॥२३५२॥

णाणचरणसंघातं रागदोसेहि जो वि संघाते ।
 सो संघाए अबुहो गिहिसंघातमिम अप्पाण ॥२३५॥
 नाणचरणसंघातं रागदोसेहि जो वि संघाए ।
 सो भमिही संसारं चतुरंतं तं अणवयग्गं ॥२३६॥
 दुक्खेण लभति बोहिं बुद्धो वि य ण लभते चरित्तं तु ।
 उम्मग्गदेसणाए तित्थगंरासायणाए य ॥२३७॥
 उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायणाए मग्गस्स ।
 वंधाते कम्मरयमलं जरमरणमण्तरं घोरं ॥२३८॥
 पंचविहं उवसंपद णाऊणं खेत्तकालपञ्चज्ञं ।
 तो संघमज्जयारे ववहरियवं अणिस्साण ॥२३९॥
 णिदगिसिणं तत्थ इमे तगरा णगरी य सोलसायरिया ।
 अणणायणाकारी वत्थङ्गववहारी अडु इमे ॥२३१॥
 मा कित्ते कंकडुयं कुणिमं पक्कुत्तरं च वच्चाइं ।
 वहिरं च गुंठसमणं अंबिलसमणं च निद्रमं ॥२३१॥
 कंकडुओ विव मासो सिद्धिं ण उवेति तस्स ववहारो ।
 कुणिमणिहो व ण सुज्जन्ति दुच्छेज्जो एव वितियस्स ।
 पक्कुल्लाव भयातो कज्जंषि ण सेसतं उदीरेति ।
 पादेण आउत्तिय उत्तर सोवाहणेण तु ॥२३१॥

रोमंथयते कज्जं वच्चादी णीरसं विवऽसणेत्ति ।
कहिते कज्जे संते वहिरो व भणाति ण सुतं मे ॥६२॥

मरहड्लाडपुच्छा केरिसया लाड गुंठ ! साहिसं ।
पावारभंडिछुभणं दसियागणणं पुणो दाणं ॥२३६३॥

गुंठादि एवभादीहिं हरति मोहेत्तु तं तु ववहारं ।
अंबफहसेहिं अप्पो ण णेति सिद्धिं च ववहारो २३६४

एते अकज्जकारी तगराए आसि तंमि उ जुगंमि ।
जेहिं कया ववहारा खोडिज्जंतऽण्णरज्जेसु ॥२३६५॥

इहलोगांमि अकित्ती परलोगे दुगगती धुवा तेसिं ।
अणणाए जिणिदाणं जे ववहारं च ववहरंति ॥६६॥

बत्तीसं तु सहस्रा गच्छो उद्घोसओ य उसभांमि ।
षहगच्छुवगगहकरा इत्तियमित्ताण जत्थ संथरणं ॥

कित्तेहं पूमित्तं धीरं सिवकोङ्कुतिं च अज्जासं ।
अरहणणगं धमणणगं ग्वंदिलगोविंददत्तं च ॥२३६८॥

एते उ कज्जकारी तगराए आसि तंमि उ जुगंमि ।
जेहिं कता ववहारा अक्खोभा अण्णरज्जेसु ॥६९॥

इहलोगांमि य कित्ती परलोए सुगगती धुवा तेसिं ।
आणाए जिणिदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥२३७०॥

तहियं पुण केरिसएण जंपियव्वं तु होति समणेण ।
 भण्णति सुणसू इणमो जारिसएण तु वांतव्व २३७१
 पारायण समत्ते थिरपरिवाडी पुणो वि संविगग्ना ।
 जो णिग्गतो विदिणे गुरुहिं सो होति ववहारी ७२
 मूलपारायण पढमं विताय वहु भेतिमं ।
 ततियं च णिरवसेसं जादि सुज्ञनिगाहगो २३७२॥
 सुत्तत्थो खलु पढमो विताओ णिज्ञुत्तमीसओ
 भाणिओ । नइओ य णिरवसेसो एस विही होति
 अणुओंग ॥२३७४॥

पडिणीय संदधम्यो जो णिगाओ अप्पणो सकम्पेहिं
 ण हु होति सो खणाण असमत्तो दसणिग्गमणे ७३॥
 आयरियादेसाऽवारिएण सत्ये गुणगुणिनसरिएण ।
 तो संघमज्ञयारे ववहरियव्वं अणिस्साए ॥२३७५॥
 आयरिय अणादेसा वारिएण सच्छंदबुद्धिरइएण ।
 सच्चित्तखित्तमीसे जो ववहरती ण सो धन्नो ॥२३७६॥
 सो अभिमुहेति लुद्धो संसारकडिल्लगंमि अप्पाण ।
 उम्मग्गदेसणाए तित्थगरासायणाए य ॥ २३७८॥
 उम्मग्गदेसणाए संतस्स छायणाए मग्गस्स ।
 उम्मग्गदेसगस्सा मासा चत्तारि भारियया ॥२३७९॥

परिवार वुड्डधम्मकह वाद खमए तहेव णेमित्ती ।
 विज्ञा राइणिया इड्डिगारबो अट्ठहा होति ॥२३८०॥
 एमादिगारवहिं अक्कोविया जे तु तत्थ भासेज्जा ।
 ते वत्तव्वा इणमो ण तुज्ज्ञभागो इहं बोत्तु ॥२३८१॥
 बहुपरिवारो भण्णइ जयपरिवारेण हाज्ज कज्जं तु ।
 तद परिवारं देज्जसु वुड्डो पुण भण्णई इणमो २३८२
 लोगेण जत्थ समयं ववहारगयं तु तत्थ होज्जाहि ।
 तत्थ तुमं जंपेज्जसु धम्मकही भण्णति इमं तु २३८३
 जहियं धम्मकहाएं कज्जं तहियं तुमं भणेज्जासि ।
 वादी जत्थ तु वादिष्पओयणं तत्थ भासेज्जा २३८४
 समगो भण्णति इणमो देवयकज्जं जहिं भवेज्जाहि ।
 असिवादिकारणेहिं तत्थ तुमं तं करेज्जासि ॥२३८५॥
 विज्ञासिद्धो भण्णति विज्ञाए जत्थ संघकज्जंसि ।
 कज्जं होज्ज करेज्जसु राइणिओ भण्णति इमं तु ॥
 वेले कितिकम्मस्स उ अणुवद्वंताण वंदणं अम्हं ।
 कुज्जाहि तुमं गंतुं इह पुण गीयस्स विसओ तु ॥
 ण हु गारवेण सक्का ववहरितुं संघमज्ज्ञयारंसि ।
 णासेति अगीयत्थो अप्पाणं चेव गच्छं च ॥२३८८॥

णासेइ अगीयत्थो चतुरंगं सब्बलोगसारंगं ।
 णटुंमि उ चतुरंगे ण हु सुलभं होति चतुरंगं ॥२३८॥
 थिरपरिवाडीहिं बहुस्सुएहिं संविगगणिसिसय करेहिं ।
 कज्जंमि भासियब्बं अणुओगे मंधहत्थीहि ॥२३९॥
 मादी य मुसावादी वितियं ततियं वयं च लोबेति ।
 आवी च पावजीषी असुतीलित्ते कणगदंडे ॥२४०॥
 आभवते पच्छित्ते बवहारो समासतो भवे दुविहो ।
 दोसु य पणगं पणगं आभवते अहीकारो ॥२४१॥
 अचितो अचितो य मीसओ खेत्तकालणिप्पणो ।
 पंचविहो बवहारो आभवतो तु णायब्बो ॥२४२॥
 सेहंमि तु सचितो अचितो हवति वत्थमादी उ ।
 मीसो सभंडगाणं खेत्तमि तु गाममादीहिं ॥२४३॥
 णगरादि दसाखिते पुण वसहीए तत्थ मगणा होति ।
 कालं उदुवासालु य आभवणा होति णायब्बा ॥२४४॥
 अहवाऽऽभवतमणो उवसंपयवेत्तकालपवज्जा ।
 णाऊण संघप्रज्ञे बवहरिवब्बं अणिस्साणं ॥२४५॥
 सुत दुह दुकखे खेत्ते मग्गे विणए य पंचहा होति ।
 मन्वावि य एथाओ सुयणाणमणुपपवत्तीओ ॥२४६॥

जथु तु सुतोवसंपद तथु तु सब्बा हवंति एयाओ।
अहवा सुतोवदिट्ठाण तु सेच्छाए हवंतेया ॥२३९॥

गुरुसीसपडिच्छाणं तिष्ठ वि को कस्स किञ्चुवकरेति ।
वेयावच्च गम्भागम काले चिंतादि दब्बे य ॥२४०॥

सीसो आयरियस्स तु वेयावच्चं तु कुणति जा जीयं ।
जहिं गच्छति तहिं वच्चति पेसेह व जथु तहिं जाति ॥

कजं समाणइत्ता एती लद्धि व सब्बमप्पेति ।
कायब्बुवग्गहो तू णाणादीएहि गुरुणावि ॥२४०॥
दब्बे सचित्तादी लाभौ सीसस्स जो तहिं होति ।
सो वि य जावज्जीवि सब्बा गुरुणो तु आभवति ॥

कुणती पाडिच्छो वि तु वेयावच्चं तु असणमादीहिं ।
बच्छ य एमाणेणं कालेणं रोयती जाव ॥२४०३॥

गेणहइ वा जाव सुतं ता कुणनी सब्बमेव पाडिच्छो ।
एतो दब्बे बोच्छं जं आभवती तु पाडिच्छे ॥२४०४॥

जं होति णालबद्धं अभिसंधारेतगं तगं एति ।
संदेसदिणगं वा णामे चिंधे य काले य ॥२४०५॥

बलीऽणंतर संतर अणंतरा छज्जणा इमे होति ।
माया पिया य भाता भगिणी पुत्तो य धूया य ॥

मातुं माया य पिता भाता भगिणी य एव पितुणो वि।
भाउं भगिणीणाऽवच्चा धूता पुत्राण वि तदेव
परं परवाह्यि एसा ॥२४०७॥

जदि एतमिधारेती पाडिच्छगं ने पाडिच्छगमन्सेव ।
अह णो अमिधारेती सुतगुरुणो तो उ आभव्वा २४०८
संगारो पुव्वकओ पच्छा पाडिच्छओ तु सो जाओ ।
तेण णिकेदेयवं उवाङ्गिया पुव्वसेहा मे ॥२४०९॥

एवतिएहिं द्रिणेहिं तुज्ञ सगासं अवस्स एहामो ।
संगारो एव कतो चिंधाणि य तेसि चिंधेह ॥२४१०॥

कालण य चिंधेहिं य अविसंवादीहिं तस्स गुरुणिहरा ।
कालंमि विसंवादै पुच्छज्जति किं ण आओ सि ११

संगारयदिवसेहिं जदि गेलणादि दीवयति तो तु ।
तस्सेव अह तु भावो विपरिणतो पच्छ पुण जातो ॥

तो होति गुरुस्सेव तु एवं सुतसंपदाए भणितं तु ।
सुहदुकखुवसंपणो एतो लाभं पवक्वामि ॥२४१३॥

बट्टु भम सुहदुकखे अहमवि तुज्ञं तु एव सुखसंपे ।
पुरपच्छसंथुया ऊ सो लभती जे य बावीसं ॥२४१४॥

सुहदुकखसंपदेसा एतो खेत्तोवसंपदं वोच्छं ।
खेत्तोगगहो सकोसं वाघाए वा अकोसं तु ॥२४१५॥

पत्ते उग्गह साहारणे य वासे तहेव उडुबद्धे ।
 सब्बदिसासु सकोसं णिव्वाघातेण पत्ते उ ॥२४१६॥
 अडविजलतेणसावदवाघाते एगदुगतिचतुसुं वा ।
 होज्ज अकोसो उग्गहो अधुणा साहारणं वोच्छं १७॥
 साहारण होज्जाही पडिलेहण पुब्बपच्छणिगगमणे ।
 पुन्वं पच्छा पत्ते आयरिए वसभ अज्जासु ॥२४१८॥
 दुगमादीगच्छाणं पडिलेहगणिगगताण समगं तु ।
 पत्ता खेत्तं एसो पढमभंगो मुणेयव्वो ॥२४१९॥
 समगं णिगगम एके पच्छा पत्ता य वितियओ भंगो ।
 एच्छा णि गय पुब्बं पविट्ठा पच्छा य दुहतो वि २०॥
 पढमगभंगे जो खल्लु पुर्विं तु अणुण्णवेंति ते खेत्ती ।
 समगं पुणऽण्णुविए सामण्णं होति दोणहं पि ॥२४२१॥
 वितियगभंगे दप्पेण पुर्विं पत्तां उ जदि णऽणुण्णवंते ।
 [परेसि] असदाण य अणुण्णवेंताण खेत्तं तु ॥२४२२॥
 पुणिगगता कहं पुण पच्छा पत्ता उ ते हवेज्जाहि ।
 गेलन्नखमगपारण वाघातो अंतर हवेज्जा ॥२४२३॥
 गेलन्ने बाउलाणं तु खेत्तमण्णस्सणो दए ।
 णिसिद्धो खमओ चेव तेण तस्सण लङभती ॥२४२४

अंतरवाघाएणं पच्छा पत्ताण पुष्टिव जे पत्ता ।
 असदेहिं अणुण्णवितं पुष्टिवं पत्ताण तं खेत्तं ॥२४२५॥
 अह समग्रमणुण्णविए काउ पमादं पितो उ साहारं।
 एवं तु वितियभंगो अहुणा तद्यंमि बोच्छामि ॥२६॥
 पच्छावि पत्तियाणं सभावसिग्धगतिणो भवे खेत्तं।
 एमेव य आसणे दुरङ्घाणा व पत्ताणं ॥२४२७॥
 भंगे चउत्थगंमी पुन्वाणुण्णाए असदभावाणं ।
 पदमभंगसरिच्छा आभवणा तथ णायव्वा ॥२४२८॥
 पुन्वगहिओ वि उग्गहो होति गिलाणट्टताए जहियवो
 अह होज्जा संथरणं कालक्खेवो दुपक्खेवि २४२९॥
 पुन्वट्टितखेत्तीणं जदि आगच्छे गिलाणट्टताणे ।
 जदि दोणह असंथरणं तो णिग्गमो खेत्तियाणं तु ३०
 अह दोणह वि संथरणं दोणिण वि अच्छंति जा
 गिलाणो उ ।
 एते य दोणिण पक्खा अहवा समणा य समणीओ ॥
 गिलाणं उवही किच्चा भत्तोवहि लुद्धताऽविहिग्गहितं
 पेल्लंती परखेत्तं साहंमियतेणिया तिविहा ॥२४३२॥
 उवही णियडी माया गिलाणणिस्साए विज्जाणाणे वि
 छंडुत्तु एंति खेत्ते भत्तोवहिलुद्धताए उ ॥२४३३॥

लब्धंति सुंदराइ गिलाणणियडीए एंति तां तत्थ ।
इते वि गिलाणो त्ती काउं तओ णेंति खेत्ताउ २४३४
तेसुं तु णिग्गएसुं सच्चित्तादी उ तिविह जं गेणहे ।
तं तेसि होति तेण्णं पच्छित्तं चेव तिविहं तु ॥२४३५॥

जे पुण असंथरंता एंति तहिं तेसिमा भवे मेरा ।
आयरियवसभअज्जाण चेव वोच्छं समासेण २४३६
अच्छंति संथरे सव्वे वसभो णीती असंथरे ।
ज्ञत्थ तुल्ला भवे दोवि तत्थिमा होति मग्गणा २४३७
णिप्फण्णतरुणसेहे जुंगितपादच्छणासकरकणा ।
एमेव संजतीण णवरं बुङ्डीसु णाणत्तं ॥२४३८॥

परिवार अणिप्फण्णो अच्छति णिप्फण्णतो तु णिग-
छे । अच्छंति बुङ्ड तरुणा यं णिंति सेहे असेहिल्ले ॥
अच्छंति जुंगिया तू णिंतियरे अहव जुंगिता दोवि ।
तस्थाइल्ला अच्छे अच्छे समणीण तरुणीओ ॥२४४०॥
समणाण य समणीण य अच्छंती संजतीओ णियमेण
जेण बहुपच्छवाता अणुकंपा तेण समणीण ॥२४४१॥

संथरे भत्तसंतुट्टा तस्स लाभंमि अप्पभू ।
जुंगियमादीएसु य वयंति खेत्तीण ते जेसिं ॥२४४२॥

दुयमादीगच्छाणं वेत्ते साहारणं मि वसियव्वे ।
अप्पत्तिय पडिसेहताए मेरा हमा तत्थ ॥२४४३॥
अतिथ बहुवसभगाभा कुदेसणगरोवमा सुहविहारा ।
बहुगच्छुवगगहकरा सीमच्छेदेण वसियव्वं ॥२४४४॥
आयरिय उवज्ज्ञाया दुहिं तिहिं सहिया तु पंचओ
गच्छो ।
एव तु गच्छा तिणिण उडुबद्धे संथरे जत्थ ॥२४४५॥
वासासुं तिचउजुना आयरिय उवज्ज्ञ सत्तओ गच्छो
एव तु गच्छा तिणिण तु वासासुं संथरे जत्थ २४४६
कालदुगंमि वि एवं जहणणयं होति वासखेत्तं तु ।
वत्तीसं तु सहस्रा गच्छो उक्षोस उसभम्मि २४४७
बहुगच्छुवगगहकरा एत्तियमेत्ताण जत्थ संथरणं ।
ऊणा अणुवगगहिता सीमच्छेदं अतो वोच्छं २४४८
तुबम्डतो भह वाहिं तुज्ज्ञ सवित्तं मधेतरं वावि ।
आगंतुय यत्थव्वा थीपुरिसकुलेसु व विसेसो २४४९
सेसे सकोसजोयण मूलणिवंभे अणुम्मुयंतेण ।
माचिचत्ते अचिचत्ते भीसे विय दिणकालंमि २४५०॥
सेसत्ती णिस्माहारणंमि मूलवेत्तं अणुम्मुयंतेण ।
होति सकोसं जोयण दिसविदिसासुं तु सव्वत्तो ॥

एवं खेत्तओ एसो कालओ उद्गुष्ठि होति मासो तु ।
वासासु चउम्मासो एवति कालो विदिणो तु २४५२

एवति कालविदिणं पुणे णिक्कारणंमि तेण परं ।
ण तु उग्गहो विदिणो मोत्तूणं कारणभिमेहिं २४५३
असिवादिकारणंहिं कुविहडतिरेगे वि उग्गहो होति ।
जा कारणं तु छिणं तेण परं उग्गहो ण भवे २४५४
जदि होति खेत्तकप्पो असती खेत्ताण होज्ज बहुगावि ।
खेत्तेण य कालेण य सब्बस्स वि उग्गहो णगरे २४५५

सति लंभे खेत्ताणं जोगगाणं जो तु जत्थ संथरति ।
सो तहितं संचिक्खे खेत्ताण असती पुण बहूंवि ५६
एगत्थ उ गामादिसु जहियं तू संथरंति तहिं अच्छे ।
सब्बेसि तहिं उग्गहो साहारण होति जह णगरे ॥

एसा खेत्तुवसंपद पुरपच्छासंथुए लभति एत्थ ।
तह मित्तवयंसा या जं च लंभे सुत्तोवसंपन्नो २४५८
मग्गोवसंपदाए मग्गं देसेति जाव सो तस्स ।
लभती दिड्डाभट्टादि जो य लाभो पुरिष्ठाणं ॥२४५९॥
विणओवसंपदा पुण कुब्बति विणयं तु जो तु रायणिए
सब्बं तस्साभवती जो उ उबट्टायती तस्स ॥२४६०॥

उवसंपद इच्छेसा पंचविहा वणिता समासेण ।
 खेत्तामि परे खेत्ते णिकखामिओ जो तु होज्जाहि ॥
 काले उदु वासं वा वसिऊणं णिग्गताण जो अण्णो ।
 पढमवित्तियदिवसेसू णिकखामे कालओ एमो ॥२४६२॥
 इच्छेसो पंचविहो ववहारो आभवंतिओ णामं ।
 पच्छित्ते ववहारो जह दसमुद्देस ववहारि ॥२४६३॥
 अहुणा तु खेत्तकाला ते वि तु तत्थेव भणित ववहारे ।
 जं तत्थ उ तस्सेसं तमहं वोच्छं समासेण ॥२४६४॥
 दुविहे विहारकाले तिविहा सोही उ उवहिभत्ताण ।
 दिणो जतंत सोही अविदिणद्वाए आवणो ॥२४६५॥
 उदुबद्वे वासासु य विहारकालो य होति दुविहेसो ।
 उग्गम उप्पायण एसणा य एसा तिविह सोही ॥२४६६॥
 उदुबद्व मास वासासु होति चतुरो विदिणकालो तु ।
 एत्थ जयंता जदि वि तु आवज्जे तह वि सुद्धा तु ॥२४६७॥
 मासो चतुमासा पुण संवसमाणा तु तत्थ अनिरितं ।
 लग्गंति जयंता वि हु किमु अजयंता उ किं चण्णं ॥
 उदुबद्व वासवासं अणुवसमाणो असुद्ध भत्तुवही ।
 आयरियप्पमाणा गुणप्पमाणं च समणाणं ॥२४६९॥

उगगममादीदोसा असेवमाणो वि सो तु आवण्णो ।
जम्हा दोसायतणं उरंमि थावेत्तु संवसति ॥२४७०॥
कत्थेयं भणियन्ति य भण्णति आयरिएण किमायारे ।
आयारपकप्पे तू आयारि भवंतु आयारी ॥२४७१॥
जे भिक्खू णितियवासं वसइत्ती एत्थ भणिय सुत्तंमि ।
एयं पमाण उभये अतिरित्ते या वि जे दोसा २४७२
जदि पुण बहिता हाणी तहिं वड्डहि गुणाण तत्थ अच्छं-
ति । के पुण गुणादि भणिता भण्णति णाणादिया
होति ॥२४७३॥

कालातीते दोसा दव्वक्खओ होति अच्छमाणाणं ।
तम्हा उ ण चिट्ठेज्जा अतिरित्तं दुविहकालंमि ॥२४७४॥
णिह्यअणुकंपाए गिहिणं तो णाम ण वसहा तुव्वभे ।
भण्णति ण होति एवं मा साधूणं चरणभेदो २४७५
चोदेताहारादिसु सुज्ज्ञे तेसू वि णाम जं तीए ।
तत्थ ण चिट्ठह तण्णाम णिह्यत्तेण गहियाणं २४७६॥
मा पाविहिंति धम्मं गिहिणो साहूण फासुदाणेणं ।
इय णिह्यता अहवा इहलोगणुकंपता तेसिं ॥२४७७॥
मा दव्वक्खओ होही अणुवासे णिच्च साधुदाणेणं ।
इय अणुकंपिहलोए भण्णति ण तु एवमादीहिं २४७८

मा होज्ज चरणभेदो पुण्णातीतंमि संवसंताणं ।
अतिचिरसंवासेण सिणेहमादीहिं दोसेहिं ॥२४७९॥
एसो उ कालकप्पो एवं वक्खाणिओ समासेण ।
अहुणा हु उवहिकप्पं गुरुवदेसेण वोच्छामि २४८०
उवगिणहति उवकारं करेति उवहीयतेण उवही तु ।
किं कारणं तु उवही उद्दिसिओ भण्णती सुणसु २४८१
जीवाणऽणुग्रहद्वा एवं खलु वणितो इहं तित्थे ।
कातूणऽणुग्रहपदं पडिणीयपदे अभावो तु ॥२४८२॥
रसयादणुकंपद्वा अगणीमादीण ल्लेव रक्खद्वा ।
असहृणऽणुकंपद्वा य उवहीग्रहणं जिणा बेति ॥
आह जहणुग्रहद्वा वत्थादीग्रहण देसियं समये ।
तो असहृणं कम्हा थीपरिभोगो णऽणुण्णाओ २४८३
भन्नति पवित्रि कम्हिऽवि कम्हिवि पुण होति
अपवित्रि उ ।
संजमपडिणीयत्ता मेहुणमादीण णाऽणुण्णा ॥२४८४॥
नाणचरणट्ठिताणं उवगगहं कुणति णाणचरणाणं ।
आहार उवहिसेज्जा तेण उ उवहित्तणं बेति ॥२४८५॥
जस्स पुणोवहिग्रहिता उवघायकरी तु तस्स उवघातो ।
कह उवघाय करेती अतिरित्त गहो य मुच्छा य २४८६

संथरमाणो गेणहति अतिरित्तं उवहि जो भवे समणो ।
वण्णादिजुते मुच्छति इडाहारे धुवस्सेवं ॥२४८॥

एतेसु अणिद्वेसु य जो दुस्सति से करेति उवघातं ।
णाणादीणं तिष्ठं तम्हा ते बज्जिए हेतू ॥२४८॥

जो जत्थ जदा जहियं उवही परिभोगओ अणुण्णाओ
सो तत्थ अणतिचारो अणुण्णाए चरणभेदो २४९
जह सिंधूओ कप्पो ओराला उण्णिया अणुण्णाया ।
पिसियादीण य गहण खीरादीणं चउणुण्णातं ॥

अतिहिमदेसे य तहा कारणियगयाण सिसिरकालंमि ।
परिभुंजंताण य को विवाद चरणे अणुवघातो २४९१

लाडविसयादिएसुं एतेसिं चेव भोक्तु पडिसेहो ।
पडिसिन्द्रे परिभोगं कुणमाणो भंजती चरणं ॥२४९२॥

णाणंपि तु सो भिंदइ उवदेसं जेण ण कुणती तस्स ।
जं णाण पुब्बदंसण दंसणभेदो वि तो तेणं ॥२४९३॥

णिवदिकिखतमनरंतादिएसु कज्जेसु होति परिभोगो ।
समणुण्णाओ कसिणादियाण इहरा अणुवभोगो ॥

एसो उ उवहिकप्पो अहुणा संभोगकप्प वोच्छामि ।
तस्स पसाहणहेउं गाहासुत्तं इमं आह ॥२४९५॥

ण वि रोगा ण वि दोसा संभोगविही तु वणितो सुत्ते ।
 णाणचरणद्विताणं भणियं सुतणाणपुरिसेहि २४९६
 रागेण संभुंजाति सिणेहओ तेहि सद्वि मम पीती ।
 जच्चादणुवसमेण व दोसेणेवं ण संभुंजे ॥२४९७॥
 णाणचरणे रथाणं एसुवदेसो उ वणितो सत्था ।
 तं गणहरेहि गहितं तो ते सुतणाणपुरिसा उ २४९८
 किं कारणं अणुणा संभोगविही तु एस साहूणं ।
 भन्नइ नाणाईं परिवड्ढी एव होहिति तु ॥२४९९॥
 अणोणणस्स सगासे णाणमहीहिति जं च तं गहिता ।
 होहिति थिरा चरणे काहिति गिलाणकिचं च २५००
 जादि संभोगगुणा ते ता सब्बे कीस ण परिभुंजंति ।
 भणिति सरिसऽहिगेहिं व संभोगो ण पुण हीणेहि ॥
 अत्थ पुण केइ पुरिसा तिगं तिगेणं पमाय कुञ्बति ।
 आहार उवहिसेज्जा जत्तो संभुंजणावंधो ॥२५०२॥
 आहारादीतियगं उग्गममादी असुद्धगहणेणं ।
 जे कुञ्बति पमायं तेसिं संवासदोसेण ॥ ३ ॥
 अणुमोदणपञ्चिहओ मा वंधो होहिति ति तेणं तु ।
 ण वि कीरति संभोगो ते वि य चगिता वरं होता ४

णणु रागदोसियत्तं संभुजणे एगएगऽसंभोगे ।
 भण्णति ण रागदोसा सुणसू जं कारणं एत्थं २५०५
 संभुजणा विसुद्धा उवगगहं कुणति णाणचरणाणं ।
 संभुजणा असुद्धा चरित्तभेदं वियाणाहि ॥ २५०६ ॥
 भोगेण पमाएणं तद्वासाणं तु होति समणुण्णा ।
 एवं चरित्तभेदो किं पुण सो कुब्बति पमादं ॥ २५०७ ॥
 पूयारसपडिबद्धो सुद्ध असुद्धं करेति संभोगं ।
 अहवा वि अजाणंतो संभोगविहीए गुणदोसे २५०८
 पूजाहेतु पमादी सेवति रसहेतुगं च तस्सेवी ।
 णाणा दिसुद्धकपं कुणति असुद्धं तु सो एवं ॥ २५०९ ॥
 वारस मूलपदा खलु संभोगविहीय वणिता सुन्ते ।
 जत्तो पावादाणं भणितं दुड्डाण उक्खेवो ॥ २५१० ॥
 उवहिसुतभत्तपाणे अंजलीपगगहे इय ।
 वायणा य णिकाए य अब्भुड्डाणे त्ति यावरे ॥ २५११ ॥
 कितिकम्मस्स य करणे वेतावच्चकरणे इय ।
 समोसरण सञ्चिसेज्जा कहाए य पबंधणे ॥ २५१२ ॥
 एते वारसभेदा संभोगविहीय तू समक्खाता ।
 पावादाणं तेसु तु इमेहिं ठाणेहिं णायवं ॥ २५१३ ॥

रागदोसाणुगतो जो संभोगं तु पालए पत्तं ।
 सो दुड्हो णायव्वो तस्मुक्खेवो विसंभोगो ॥२५१४॥

अहवा वि हमेहिं तू कारणेहिं णियमा भवे विसंभोगो
 संभोगविहिं जो तू विवरीयं आयरेज्जाहि ॥२५१५॥

उवरिममज्ञमहेड्हिम संभोगद्धाणगं निहा विभए।
 पडिसेहे पडिसेहो समणुण्णो होति समणुण्णो २५१६

उवरिमएत्ति अहागड मज्ञमगा होति अप्परि-
 कम्मा। सपरिकम्मा हेड्हिम संभोगविही निहा एसो॥

अहाकडा मिलति अहाकडेसुं भत्तं च पाणं तह धोवणं
 वा । अहाकडा गच्छति हेड्हिमेसुं ण हेड्हिमा छुब्ब
 अहाकडेसु ॥२५१७॥

मज्ञमिता हेड्हिमते छुब्बाति ण तु हेड्हिमा उवरिमेसुं।
 एसो निविहो तु भवे संभोगविही समासेण २५१९

पडिसेहे पडिसेहो सपरिकम्मं तु होति पडिश्वद् ।
 तस्स पुणो पडिसेहो उवरिल्लो मेलणा जाउ २५२०॥

पडिसेहो हेद्दुवारिं उवरिल्लो हेड्हिम अणुण्णातो ।
 अह पडिसेहि अणुण्णा होति इमा तू मुणेयव्वा २५२१

जो पडिसिद्धं एयं आयरती तस्स होति पडिसेहो ।
 पडिसेहो विवेगोत्ती अवितहकरणे अणुण्णा उ २५२२

केरिसएणं तु समं संभोगो तेसि होति कायव्वो ।
 अहवा वि ण कायव्वो भण्णति इणमो णिसामेहि ॥
 ण वि एस मंदधम्मे ण गिहत्थेसुं ण चेव अज्जासु ।
 बावत्तरी विभत्तोऽवितरे पडिसेहणं जाणे ॥ २५२४ ॥
 दिज्जति घेष्पति य तहा केसिंची दिज्जए ण घेष्पति तु
 णवि दिज्जति घेष्पति तू णवि दिज्जति णवि य
 घेष्पति तू ॥ २४२५ ॥

संविग्गसंजयाणं दिज्जति घेष्पइ य पढमभंगो तु ।
 संजतिवर्गे दिज्जति णवि घेष्पति कारणे वितिओ ॥
 गिहिअण्णनित्थयाणं णवि दिज्जति घेष्पती उ णवरं
 च णवि दिज्जति णवि घेष्पति पासत्थादीण सव्वोसिं ॥
 बावत्तरी विभत्त त्ति एस बारसविहो तु संभोगो ।
 शहिं गुणितो बावत्तरिं संभोगाणं मुणेयव्वा ॥ २५२८ ॥
 बावत्तरी तु एसा दुगतिगच्छउपचछक्कसंगुणिता ।
 जावइय हाँति भेदा तेसु विसुद्धेसु संभोगो ॥ २५२९ ॥
 पडिसेहो असुद्धेसुं कप्पो संभोग एस वकखाओ ।
 अहुणा तु लिंगकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ २५३० ॥
 जो पुर्विं वकखाओ जिणथेराणं तु दोणह वी कप्पो ।
 रुढ णहक्कखमादी सो चेव इहं पि णायव्वो ॥ २५३१ ॥

इति एसो लिंगकप्पो वोच्छं पडिसेवणाए कप्पं तु ।
 जारिसयं सेविज्जति सुद्धमसुद्धं समासेण ॥२५३६॥
 गहणपरिभुंजणाए णिव्वाघाते तहेव वाघाते ।
 वाघाते दुयगहणं णिव्वाघाते य नियगहणं ॥२५३७॥
 पडिसेवणा उ दुविहा गहणे परिभुंजणे य णायव्वा ।
 एकेक्षा वि य दुविहा णिव्वाघाते य वाघाते ॥२५३८॥
 वाघातंभी सुद्धं गेणह असुद्धं च एतदुयगहणं ।
 परिभुंजती वि एवं णिव्वाघातंमि वोच्छामि २५३९
 उगममादीसुद्धं गेणहति परिभुंजती य नियमेत ।
 अह को पुण वाघातो पस्त्वणा तस्तिमा होति २५४०
 असिवे ओमोदरिए रायहुटे भए व आगाढे ।
 छकायदुगमुवादाय वाघाते णिव्वघाते य ॥२५४१॥
 सुद्धमसुद्धं व जहिं अहवा सच्चित्तमीसर्ग वा वि ।
 एतेसिं दोणहं तू वाघाते गहण भोगे य ॥२५४२॥
 णिव्वाघाए छणह वि अच्चित्ताणं तु गहणकायाणं ।
 गहियस्त य परिभोगो नस्सेव य होति कायव्वो ३०
 परिभोगे वाघातो गहिते पच्छा तु होज्ज तं णात ।
 जह आहाकम्मं ती ताहे य तयं ण परिभुंजे २५४०

वाघाते सेवंतो अकिञ्चमेयं तु चिंतए साहू ।
होति तहा णिज्जरओ जो पुण इणमो समायरति ॥

पूजारसपडिबद्धो ओसण्णाणं च आणुयत्तीय ।
चरणकरणं णिगूहति तं जाणऽणुयत्तियं समणं ४२॥

पूजारसहेउं वा बेती जह किञ्चमेव एयं तु ।
मा मे ण देहिति पुणो जह एसोऽकिञ्चकारीति ४३

अहवा ओसण्णाणं तु अणुयत्तीय बेति को दोसो ।
आहाकम्मादीसुं णवरं मा कीरउ सयं तु ॥ २५४४ ॥

सो गूहति चरणादी एवं तुच्छं खु तस्स सामणं ।
तम्हा तु परुबेज्जा सुद्धं मग्गं तु किं चऽणणं २५४५

णिस्साणपदं पीहति अणिस्स विहरंतयं ण रोएति ।
तं जाण मंदधम्मं इहलोगगवेसगं समणं ॥ २५४६ ॥

अहवा उम्मग्गो खलु णिस्साणं तं तु पीहए जो तु ।
तस्स तु छेदसुतत्थं ण कहे दोसा इमे तहियं ४७॥

पञ्चमहव्वतभेदो छक्कायवहो य तेणऽणुण्णाओ ।
सुहसीलऽवियत्ताणं कहेइ जो पवयणरहस्सं २५४८॥

पडिसेवकप्प एसो अहुणा वोच्छं अणुवासणाकप्पं ।
अणुवास मासकप्पो वासावासो इमेसिं तु ॥२५४९॥

जिण-थेर-अहालंदे परिहरिते अज्ज मासकप्तो उ ।
खेत्ते कालमुवस्सयपिंडगगहणे य णाणत्तं ॥ २५५० ॥

एएसिं पंचणह वि अण्णोण्णस्स उ चतुपदेर्हिं तु ।
खेत्तादीहिं विसेसो जह तह वोच्छं समासेण २५५१
णत्थ उ खेत्तं जिणकपियाण उद्गुबद्ध मासकालो तु ।
वासासुं चउमासा वसही अममत्त अपरिकम्मा ५२
पिंडो तु अलेवकडो गहणं तू एसणाहुवरिमाहिं ।
तत्थ वि काउमभिगगह पंचणह अण्णतरियाए ५३॥

थेराण अत्थ खेत्तं तु उगगहो जाव जोयण सकोसं ।
णगरे पुण वसहीए विकाले उद्गुबद्धि मासो तु २५५४
उस्सगेण भणिओ अववाएणं तु होज्ज अहिओ वि ।
एमेव य वासासु वि चतुमासो होज्ज अहिओ वि ॥

अममत्त अपरिकम्मो उवस्सओ एत्थ भंग चउरो उ ।
उस्सगेण पढमो तिणिण उ सेसाववादेण ॥ २५५६ ॥

भत्तं लेवकडं वाऽलेवकडं वा वि ते उ गिणहंति ।
सत्तहि वि एसणाहिं सावेकखो गच्छवासा त्ति २५५७
अहलंदियाण गच्छे अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु ।
णवरं कालविसेसो उद्गुवासे पणग चतुमासो २५५८

गच्छे पद्मिवद्धाणं अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो ।
 उगगहो जो तेसिं तु सो आयरियाण आभवति २५६९
 एगवसहीए पणगं छब्बीहीओ व गाम कुब्बंति ।
 दिवसे दिवसे अणणं अडंति वीहीइ णियमेणं २५६०
 परिहारविसुद्धीणं जहेव जिणकप्पियाण णवरं तु ।
 आयंबिलं तु भत्तं गेणहंती वासकप्पं च ॥२५६१॥

अज्ञाण परिगगहियाण उगगहो जो तु सो तु आयरिण
 काले दो दो मासा उडुबद्धे तासि कप्पो तु ॥२५६२॥

मेसं जह थेराणं पिंडो य उवस्सओ य तह तासिं ।
 सो सब्बो वि य दुविहो जिणकप्पो थेरकप्पो य ॥

जिणकप्पि-अहालंदी-परिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो ।
 थेराणं अज्ञाण य बोधब्बो थेरकप्पो उ ॥२५६४॥

दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चव थेरकप्पो य ।
 णिरणुगगहो जिणाणं थेराण अणुगगहपवत्तो २५६५

उडुवास कालतीते जिणकप्पीणं तु गुरुग गुरुगा य ।
 होंति दिणंमि दिणंभी थेराणं ते च्चिय लहूओ २५६६

तीसं पदावराहे पुढो अणुवासियं अणुवसंतो ।
 जे जत्थ पदे दोसा ते तत्थयगो समावणे ॥२५६७॥

पण्णरसुगगमदोसा दस एसणदोस एते पणुवीसं ।
संजोयणादि पंच य एते तीसं तु अवराहा ॥२५६॥

एतेहिं दोसेहिं जदि असंपत्ति लग्गती तह वि ।
दिवसे दिवसे सो खलु कालातीते वसंतो तु ॥२५६॥

वासावासपमाणं आयारे उ पप्माणितं कप्पं ।
एयं अणुम्मुयंतो जाणसु अणुवासकप्पं तु ॥२५७॥

आयारपकप्पंमी जह भणियं तीति संवसतो वि ।
होति अणुवासकप्पो तह संवसमाणऽदोसा तु ॥२५७॥

दुविहे विहारकाले वासावासे तहेव उडुबद्धे ।
मासातीते अणुवहि वासातीते भवे उवही ॥२५७॥

उडुबद्धिएसु अडसु मासातीतेसुं तत्थ वासण तु कप्पे ।
घेत्तूणं उवही खलु वासातीतेसु कप्पति तू ॥२५७॥

वासउडु अहालंदे इत्तिरि साहारणे पुहुत्ते य ।
उगगह संकमणं वा अण्णोण्णसकासऽहिज्ञंते ॥२५७॥

वासासु चउम्मासो उडुबद्धे मासो लंद पंच दिणा ।
इत्तिरिओ रुक्खमूले वीसमणट्टा ठिताणं तु ॥२५७॥

साहारणा तु एते समद्धिताणं बहूण गच्छाणं ।
एकेण परिगगहिता सव्वे वोहित्तिया होति ॥२५७॥

संकमणणमणणस्स सकासे जदि तु ते अहीयंते ।
 सुत्तत्थतदुभयाइं संधे अहवावि पडिपुच्छे ॥२५७७॥
 ते पुण मंडलियाए आवलियाए व तं तु गेणहेज्जा ।
 मंडलियमहिज्जंते सच्चित्तादी तु जो लाभो ॥२५७८॥
 सो तु परंपरएण संकामनि ताव जाव सद्धाण ।
 जहियं पुण आवलिया तहियं पुण अंतरे ठाति २५७९
 ते पुण ठित एक्काए वसहीए अहवं पुष्फकिणा तु ।
 अहवा वि तु संकमण दब्बस्सिसणमो विही अण्णो ॥
 सुत्तत्थतदुभयविसारग्याण थोवे अ संततीभेदे ।
 संकमणदब्बमंडलि आवलियाकप्पअणुवासा २५८१
 पुब्बद्धिताण खेत्ते जदि आगच्छेज्ज अण्ण आयरिओ ।
 बहुसुय बहुआगमिओ तस्स सगासांमि जति खेत्ती ॥
 किंचि अहिज्जेज्जा ही थोवं खेत्तं च तं जदि हवेज्जा ।
 ताहे असंथरंता दोणिण वि साहू विसज्जेंति ॥२५८३॥
 अण्णोणणस्स सगासे तेसिं पिय तत्थ विज्जमाणाण ।
 आभवणा तह चेव य जह भाणियमणंतरे सुत्ते ८४
 एवं णिव्वाघाते मास चतुम्मासितो उ थेराण ।
 कप्पो कारणतो पुण अणुवासो कारणं जाव २५८५

एसऽणुवासणकप्तो अहुणा अणुपालणाए कप्तं तु ।
संखेव समुद्दिठ्ठं वोच्छामि अहं समासेण ॥२५८६॥
मोहनिगिच्छाए गते णट्टे खेत्तादि अहव कालगते ।
आयरिए तंमि गणे पीलादीरक्खणद्वाए ॥२५८७॥

को उ गणी ठवणिज्जो भणणति जति तस्स कोति
सीसो तु । सुत्तत्थतदुभएहिं णेम्माओ सो ठवेयव्वो ॥
असतीय तस्स ताहे ठवेयव्वा कमेणिमेणं तु ।

पञ्चज्ज द्रुले णाणे खेत्ते सुहदुक्खिव सुतसीसे २५८९
गुरुगुरु गुरुणं तू वा गुरुसज्जलओ द्व तस्स सीसोवा
पञ्चज्ज एगपक्खी एमादी होइ णायव्वो ॥२५९०॥

असतीए द्रुलिच्चो वी तस्सऽसतीए सुएगपक्खीओ ।
खेत्ते उवसंपणे तस्सऽसतीए ठवेयव्वो ॥२५९१॥

सुहदुक्खिवयस्स असती तस्सऽसतीए सुतोवसंपणां
एवं तु वियाण तहिं सीसांमि तु मग्गणा णतिथ १२

पाडिच्छगणधरे पुण ठविए तहियं तु मग्गणा इणभो ।
सुत्तत्थमहिज्जंते अणहिज्जंते इमे विभागा ॥२५९३॥

साहारणं तु पढये वितिए खत्तांमि तनिए सुहदुक्खे ।
अणहिज्जंते सीसे सेसे एक्कारस विभागा ॥२५९४॥

पुञ्चुदिद्वगस्स उ । १ । पच्छुदिद्वं पवाययंतस्स ।२।
 संवच्छरंमि पढमे पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ॥२५९७॥

पुञ्चं पच्छुदिद्वं पडिच्छए जं तु होति सच्चित्तं ।
 संवच्छरंमि वितिए तं सब्ब पवाययंतस्स ॥२५९८॥

पुञ्चं पच्छुदिद्वं सीसंमि तु जं तु होति सच्चित्तं ।
 संवच्छरंमि पढमे तं सब्ब गणस्स आभवति ।४। ॥

पुञ्चुदिद्वगणस्सा ।५। पच्छुदिद्वं पवाययंतस्स ।६।
 संवच्छरंमि वितिए सीसंमि तु जं तु सच्चित्तं ॥२५९९॥

पुञ्चं पच्छुदिद्वं सीसंमि तु जं तु होति सच्चित्तं ।७।
 संवच्छरंमि लनिए तं सब्ब पवाययंतस्स ॥२६००॥

पुञ्चुदिद्वं गच्छे ।८। पच्छुदिद्वं पवाययंतस्स ।९।
 संवच्छरंमि पढमे सिसिसणिए जं तु सच्चित्तं ॥२६००॥

पुञ्चं पच्छुदिद्वं सिसिसणिए जं तु होति सच्चित्तं ।
 संवच्छरंमि विनिए तं सब्ब पवाययंतस्स ।१०। ॥१॥

पुञ्चं पच्छुदिद्वं पडिच्छियाए उ जं तु सच्चित्तं ।
 संवच्छरंमि पढमे तं सब्ब पवाययंतस्स ।११। २६०२

बेत्तुवसंपायरिओ सुहदुक्खी चेव जाति तु संठविओ ।
 कुलगणसंघिच्चो वा तस्स इमो होति उ विवेगो ॥२६०३॥

संवच्छराणि दुणिण उ सीसंमि पडिच्छयम्मि तद्विवसं
 एवं कुलिच्चय गणिच्चे संवच्छर संघ छम्मासा २६०४
 तत्थेव य णिम्माए अणिगगए निगगए हभा मेरा ।
 सकुले तिणिण तियाहं गणदुग संवच्छरं संघे २६०५
 ओमादिकारणेहिं दुम्मेहत्तेण वा ण णिम्मातो ।
 काऊण कुलसमायं कुलधेरे वा उवद्वेति ॥२६०६॥
 णव हायणाहं ताहे कुलं तु सिकखावए पयत्तेण ।
 ण य किंचि तेसि गिणहति गणो दुगं एग संघो उ ॥
 एवं तु दुवालसहिं समाहिं जदि तत्थ कोनि णिम्मातो ।
 ता णिंति अणिम्माए पुणो कुलादी उवद्धाणा २६०८
 तेणेव कमेणं तू पुणो समाओ हवंति वारस उ ।
 णिम्माए विहरंती इहर कुलादी पुणोवद्धा ॥२६०९॥
 तहवि य वारसमाओ णिम्माओ सो सि गणधरो होनि
 तेण परमङ्गिम्माते इमा विही होनि तेसि तू २६१०
 छत्तीसातिक्कने पंचविहवसंपदाए तो पच्छा ।
 पत्तं उवसंपादे पव्वज्ज तु एगपक्खंमि ॥ २६११॥
 पव्वज्जाए शुतेण य चतुभंगो होनि एगपक्खंमि ।
 पुव्वाहितवीसरिए पढमासति ततियभंगेण २६१२

सब्बस्स वि कायवं णिच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा
काले सभावममते गारबलज्जाए काहिंति ॥२६१३॥

एसऽणुपालणकप्पो अहुणाऽणुण्णातो णंदिसुत्तेहिं ।
सिद्धो अणुण्णकप्पो णवरेगद्धाणि वोच्छामि २६१४

किमणुण्ण कस्सऽणुण्णा केवतिकालं पवत्तिगाऽणुण्णा ।
आयरियत्त सुतं वा अणुण्णववइ जं तु साऽणुण्णा ॥

यस्स त्ति सीसस्स तु गुरुणजुत्तस्स होयऽणुण्णा उ ।
केवति काल पवित्री आदिकरेणुसभसेणस्स २६१५

एगद्वियाणि तीय उ गोण्णाइं हवंति णामधेज्जाइं ।
वीसं तु समासेण वोच्छामि ताणिमाइं तु ॥२६१६॥

अणुण्णा उण्णमणा णमण णामणि ठवणा पभाव
णा वियारे । तदुभयहिय मज्जाता कप्पे मग्गे य

णाए य ॥ २६१८॥

संगह संवर णिज्जर थिरकरणमछेद जीत बुड्ढिपयं ।
पयपवरं चेव तहा वीस अणुण्णाए णामाइं ॥२६१९॥

अणुण्णववइत्तऽणुण्णा उण्णामिय ऊसियं ति उण्णमणी
गिहिसाधूहिं णमिज्जति तम्हा ऊ होति णमण त्ति ॥

सुतधम्मचरणधम्मे णामयती जेण णामणी तम्हा ।
ठविओ आयरियत्ते जम्हा ऊ तेण ठवणं ति २६२१

ठवितो गणाहिवत्ते होति पभूतेण पभवो सव्वेसिं ।
णाणादीणं होती पभवो पभूहृत्ति एगद्वा ॥ २६२२ ॥
आयरियात्ते पभविते तेण वियारा उ दिज्जनि
गणो से ।

तदुभयहियं ति भण्णति इहपरलोगे य जेण हितं ॥
गणधरमेर धरेती जम्हा ऊ तेण होति मज्जादा ।
करणिज्जो कप्पो त्ति य कप्पो गणकप्प समणेणं ॥
णाणादि मोक्खमग्गो सो तंमि ठितो त्ति तो भवति
मग्गो । जम्हा उ णायकारी णाओ वा एस तो णातो ॥
दब्बे भावे संगहो दब्बे आहारवत्थमादीहिं ।
भावे णाणादीहिं तु संगिणहति संगहो तेण ॥ २६२६ ॥
दुविहेण संवरेण इंदियणोइंदिएहिं जम्हा तु ।
अप्पाण गणं च तहा संवरयति संवरो तम्हा २६२७
गणधारणमगिलाए कुणमाणो णिज्जरेह कम्माइ ।
अणो य णिज्जरावे तम्हा तू णिज्जरा होति २६२८
वातेरिता लता इव पकंपमाणाण तरुणमादीणं ।
होति धिरावद्वंभो तरुव धिरकरण तेण तु ॥ २६२९ ॥
जम्हा तु अवोच्छित्ती सो कुणती णाणचरणमादीणं ।
तम्हा खलु अच्छेदं गुणप्पसिद्धं हवति णामं २६३०

तित्थकरेहि कथमिणं गणधारीणं तु तेहि सीसाणं ।
तत्तो परंपरेण आयमिणं तेण जीयं तु ॥२६३१॥

वड्डह णाणचरणे गणं तु तम्हा उ तेण वुड्डिपदं ।
पवरं पहाणमेतं सब्बेसिं रायदेवाणं ॥२६३२॥

इति एसऽणुण्णकप्पो जहाविही विषिणतो समासेणं ।
ठवणाकप्पं एत्तो वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२६३३॥

तिविहो ठवणाकप्पो कुले गणे चेव तह य संघे य ।
एतेसिं पर्ववणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२६३४॥

कुलथेरेणं गणेण व जा मेरा ठाविता भवे णियमा ।
सो कुलठवणाकप्पो एव गणे होति संघे य ॥२६३५॥

केरिसया पुण थेरा कुलगणसंघाण होति तु पमाणं ? ।
भण्णाति सुणसू इणमो जेहिं गुणेहिं तु ते जुत्ता ॥

कप्पाकप्पविहिणू सुत्तत्थविसारदा सुतरहस्सा ।
जे चरणकरणजुत्ता ते सुद्धणयाण तु पमाणं २६३७

कप्पाकप्पविहिणू सुत्तत्थविसारदा सुतरहस्सा ।
जे चरणकरणहीणा ते सुद्धणताण भइयव्वा २६३८

नेतव्वा खलु कज्जा असती चरणट्टियाण थेराणं ।
हीणो वि सुयसमिद्धो मज्जत्थो होति तु पमाणं ॥

कह पुण ठाविज्जंते ते उ पमाणं तु तेसु ठाणेसु ? ।
 कुलगणसंघा थेरा भण्णति इणमो णिसामेहि २६४०
 हच्छाकारणिउत्तो पियधम्मो निणह कोइ एकनरो ।
 सो होति तिगत्थेरो तिगचरित वियाणतो धीरो २६४१
 णातूण गुणसमिद्धं जोगं तु कुलादिथेरठाणस्स ।
 कातूणिच्छाकारं कुलादिणो वेंति तो इणमो ॥२६४२॥
 तुब्जे होह पमाणं कुलधेरा थेरठाणजोगं तु ।
 एवं तु कुलादीहिं तिगथेरा तू ठविज्जंति ॥२६४३॥
 तिगचरितं जाणइ च्चि चरितं मज्जतत्त्वर एगद्वा ।
 तं तु तहाविहि जाणति निणहं पि कुलादिठाणाणं ॥
 पासत्थोसण्ण-कुसीलठाणपरिक्खतो दुपक्खे वि ।
 सो होति तिगत्थेरो तिगथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥२६४५॥
 पासत्थादीठाणे ण वट्टती एस रक्खओ होति ।
 अहवा सति सद्वाए पासत्थादी वि पालेति ॥२६४६॥
 परिहुज्जंते रागादिरक्खते साहुसाहुणि दुपक्खे ।
 अहवा अप्पाण परे तिगथेरो संघथेरो तु ॥ २६४७ ॥
 एसो तु तिगत्थेरो तिगथेरगुणेहिं होति संपण्णो ।
 अहुणा वीसुं वीसुं कुलादिथेरे पवक्खार्म ॥२६४८॥
 चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा कुलप्पहाणो तु ।
 सो होति कुलत्थेरो कुलचरितवियाणओ धीरो २६४९

पासत्थोसण्णकुसीलठाणपरिक्खतो दुपक्खे वि ।
 सो होति कुलत्थेरो कुलधेरगुणेहिं उववेदो ॥ २६५० ॥
 चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा गणप्पहाणो तु ।
 सो होति गणत्थेरो गणचरियविद्याणओ धीरो २६५१

पासत्थोसण्णकुसीलठाणपरिक्खतो दुपक्खे वि ।
 सो होति गणत्थेरो गणधेरगुणेहिं उववेतो ॥ २६५२ ॥
 चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा जुगप्पहाणो तु ।
 सो होति संघथेरो सीतघरसमो पुरिससीहो २६५३ ॥
 एसो तु मूलसंघो आपुच्छण-गमणकरणकज्जेसु ।
 हितसुहणिससेसकडो कुलगणसंघप्पणो चेव २६५४

दंसणणाणचरित्ते जा पुढ्बपरूपणाऽयरणया य ।
 एसो तु मूलसंघो तिविहा थेरा करणजुत्ता ॥ २६५५ ॥
 पुढ्बं पि परूपेज्जा आयारादीसु वणितचरित्ते ।
 तं सम्ममायरंतो हवति तु संघो तहा थेरो ॥ २६५६ ॥

जो सो हीणचरित्तो अण्णस्सऽसतीत पुढ्बभणितो तु ।
 कुलधेरादि ठविज्जति तस्सुवदेसो इमो होति ॥ २६५७ ॥
 होज्ज वसणसंपत्तो सरीरमायंकता असहओ वा ।
 चरणकरणे असत्तो सुद्धं मग्गं परूपेज्जा ॥ २६५८ ॥

वसणं वाजीमादी सूलजरादी तु होइ आतंको ।
 धितिसारीरबलेणं हीणो असहू मुणेयच्चो ॥ २६५९ ॥
 एतेहिं कारणेहिं अकप्पपडिसेवणं करंतो वि ।
 सुद्धं मग्ग पर्स्वे अप्पाण हिया अतो एत्तो ॥ २६६० ॥
 कप्पपणयस्स भेदा सोच्चा णच्चा तहेव घेत्तूणं ।
 चरणकरणे विसुद्धे आयरणपर्स्ववणं कुणह ॥ २६६१ ॥
 आयरियसगासातो सोच्चा णच्चा य घेत्तुमत्थेणं ।
 हितते ववत्थवेतुं आयरणपर्स्ववणा कुज्जा ॥ २६६२ ॥
 कप्पपणगस्स भेदो पर्स्वविओ मोक्खसाहणट्टाए ।
 जं चरिऊण सुविहिता करेति दुक्खंक्खयं धीरा २६६३
 पंचविह सुत्तकप्पाण विभासा वित्थरं पमोत्तूणं ।
 गहिता सीसहियट्टा अव्वोचित्तट्टया चेव ॥ २६६४ ॥
 [गाहगगेण पंचवीससयाइं चउहत्तराइं २६७४
 सिलोयगगेणं बत्तीस सयाणि दसअट्टसहियाइं]
 सन्वसुयसमूहमयी वामकरगगहियपोत्थया देवी ।
 जक्खकुहंडीसहिया देतु अविग्रं भणंताणं ॥

महत्पञ्चकल्पभाष्यं

संघदासक्षमाश्रमणविरचितं समाप्तम् ।

शुद्धि पत्रकम्

पूळम्	पञ्चितः	अशुद्धम्	शुद्धम्
३	१६	वायण	वायणय
४	१७	परिहाणी	परिहाणीं
७	१	परिच्छित्तू	परिच्छित्तू
७	११	चम्मपट्टेति	चम्मए पट्टै
८	२	एमे ता	एमेता
८	९	सिरिकहि	सिरिखहि
८	३२	पिंड माईं	पिंडमाईं
९	१०	गगहपट्टो	गगहपट्टा
९	१५	तूणयतो	ऊण कण यं
९	१५	तुन्हारूपहिं कि (जं) विष्प	तम्हा उ किज्जए
११	१६	तो	तु
१४	१	जहति	जहंत
१५	२	चउसुंपि	चऊसुंपि
१५	१७	अवहारो	अवराहो
१६	१६	यारमादो	यारमादी
१७	७	मूले	मूलं
१८	३	विराहणा	विराहणे
१८	१७	वित्ती	वत्ती

१९	१३	कप्प	कपिष
२०	७	इयाणि	इय णातुं
२१	१३	बोधव्वो	बोधव्वो
२४	४	रुब्बति	रुव्वति
२५	१०	गुरुगो	गुरुगो तवो
२५	११	तवो अहो	अहो
२५	१७	तद्विवसो	तद्विवसे
२६	५	मग्गमाणा	मग्गमाणे
२६	५	राहवत्त	राहमत्त
२६	१२	मूलावराहिणी	मूलावराहिणी
२७	३	वहारी	वहारी जह
२७	१७	मेहो	मेहा
२७	१९	वावत्ती	ठावेति
२८	१३	एववादी	पवंचादी
२९	७	वूढो	वुढ़ो
३०	५	जंबुणामपिता	जंबुणा सपिता
३०	७	या	य
३१	४	गाहो	गाहे
३१	७	मणा	मणो
३१	१३	णपुंसे	णपुंसं
३२	५	दिड्डि	दिड्डी
३२	१०	वच्छे	वथि
३४	१५	रुसियाहिं	रुसियाही

३५	२	धारेतु णचाहे	धारेतुं ण चयइ
३५	११	साविल	आविल
३६	८	किलियं	किलिवं
३६	९	किलियस्स	किलिवस्स
३७	२	वाथंडिओ	वाथण्हिओ
३७	३	स	सि
३७	११	बुदओ	उदओ
३७	१७	गालियदोसा	गालिय दो
३८	४	तो सेवि	पडिसेवि
३८	६	पव्वावेहा	पव्वावेहा
३८	१४	कहि छुभमति	कहिं छुभमति
३९	१०	कुसहाप	असहाप
३९	१२	णेते	णिते
४०	११	माणं	माणे
४०	१५	णिसियणे	णिसियणे
४१	३	कं चिच्छो	किंचिच्छो
४१	६	पतेहिं	जह पतेहिं
		दिक्खितोऽहं	दिक्खितो
४१	१३	बुङ्हं व गम्मि	बुङ्हंचगम्मि
४१	१५	इहं	इहं
४१	१६	समयति	समयंति
४१	१७	होउती	होउत्ती
४२	४	मम्मण	मम्मण

४२	१६	उड्डुसास	उड्डुसास
४३	२	गलभोय	गलओय
४३	४	६८९	३८९
४३	६	करजणडू	करणजडू
४४	१७	कीचा	कीचो
४५	९	थिराय	छिराय
४८	९	मोऽइय	मोचिय
५१	२	यंडुड	पदुडु
५१	८	सेज्जिय	सज्जिय
५२	२	पुरिसो	सरिसो
५२	५	दट्टो	दहो
५२	८	पिसाइप	पिसार्यीते
५२	१०	दट्टोसी	दहोसी
५४	२	पुण्णो च	पुण्णो व्व
५५	९	वितिय	बितिय
५६	११	दिता त	दि ततो ड
५७	६	कालोवत्ते	कालो घत्ते
६०	५	स्वेहस्सा	सेह दोसा
६१	१७	सुविणा णाणं	सुविणणाणा
६१	१८	सण्णित्ति	सण्णित्ति
६२	१	पच्छा	वच्छा
६२	२	अजणय	अजणिय
६२	३	सुरा भायि	सुराऽभय

६२	७	चिंतेति	चिंतांति
६२	१०	थेरी	थेरीं
६३	४	गाहि इच्छिओ	गाहिइत्यओ
६४	३	कुवितो	कवितो
६४	७	लिहितक्खराणि	लिहितक्खरा अणि
६५	१०	णिज्जाते	णिज्जंते
६७	४	कारवेसु	कारवेमु
६७	११	सुविणा	सुविणे
६८	१	मुसुगारो	मुसुगारे
६८	५	वऽवच्चं	वऽवच्चं
६८	१६	च	व
६९	१८	रु पुच्छणा वाह	रुपुच्छणावाह
६९	१८	वाहेति	वाहेति
७१	१	आधावेत्ता	आधावेत्ता
७२	११	बुज्ज्वेज्जा	बुज्ज्वेज्जा
७२	१३	राहू गामंति	साहू समायति
७२	२	चलणे म	चलणेसुं
७३	८	णमे	णमो
७३	९	मेऽह	मेय
७४	८	वइत्तूं	वइतुं
७४	१६	वेज्जा	विज्जा
७५	७	हुतस्मि	हुतस्मि
७५	१३	उ एमेव	ओऽवि ण रमेसि

७२	१४	ण णरगनरगादहठाण	णरगादहठाण
७५	१४	पुणरवि य	पुणवि
७६	२	देवसण्णावी	देवसण्णती
७७	३	सम्मति	सम्मुति
७७	११	सुच्चरंते	सु तूरंते
७७	११	अहाजात	अहाजातं
७८	१८	एस पिंता	एसवि ता
८०	१४	पाणमंबुं	पाणसुंहं
८१	५	सुक्का	सुक्खा
८२	१	परिसुक्खं	परिसुक्खं
८२	१६	जिज्ञाति	जिज्ञाति
८३	२	अदुत	अददुत
८३	१३	अहिज्जिऊ	अहिज्जिऊ
८३	१८	वातुकम्मं	वातकम्मं
८४	९	पच्चूस	पच्चूसे
८५	१२	लंबणणेहि	लंबणणेहे
८५	१८	सो तू ण	सोतूण
८६	३	तिच्छडा	तिच्छडा ण
८७	२	जम्हा उ गहण जोग्गो	जम्हा गहण अजोग्गो
८७	१४	जदा	जहा
८९	३	जुत्ता	जुत्तो
८९	८	संतासती	संतासती
८९	१०	परिकम्मं	अपरिकम्मं

१२	१६	साहु	सा तु
१३	३	अद्वाणणदीसु	अद्वाणादीसु
१४	५	विधिच्छिणि	विधिश्चणि
१४	१०	पिलिक्खू	पिलिक्खू
१५	१	सिव्वणं	खव्वणं
१५	१०	हया	हए
१५	१६	परिकम्मणे	परिकम्मणे
१६	१५	उज्जयं	उज्जुयं
१८	११	भीसजाय	भीसजाय
१९	८	होइ स	होइम
१००	७	उचरिमेहि	दुचरिमेहि
१००	१२	णक्खणता	णख्लेदणता
१००	१७	मुणेयव्वो	मुणेयव्वा
१०१	४	बावीसमो	बावीसमो
१०२	८	विवरियं	विवरिया
१०२	२०	सव्वो	सव्वे
१०३	१२	अश्चिते	अश्चित्ते
१०३	१५	पिहापिहे	पिहापिहे
१०४	२	वीसहियाइं	वीसहिया य
१०४	३	सहियाइं	आहियारहं
१०५	२	णायव्या	णायव्वा
१०५	७	चेय	चेव
१०६	८	एक्को	एक्केक्के

१०६	१६	जोगे	जोगो
१०७	४	पक्सि	पक्सिं
१०९	१७	महिल	मिहिल
१०७	१८	संदिला	संदिला
१०८	१४	संखण	संखणग
११०	१	कुदिट्ठि	कुदिट्ठा
११०	९	विहरंती	विहरंति
१११	६	संकममाण	संकमणे
११२	१२	भण्णती	भण्णति
११२	२	णियादिया	णियादिया
११२	९	णिगच्छे	णिगच्छे
११३	३	अवत्थाणिव	अ पुच्छा णिव
११३	१८	बुद्धावास	बुद्धावास
११४	१५	पेहेचु	पज्जु
११७	१०	तिविहाओ	तिविहाउ
११८	२	व॒संतम्भि	व॒संतम्भि
११८	१७	असंता सतीण	संतासंतीए
११९	१४	छविता	छवेता
११९	१६	वोच्छत्थे	वोच्चत्थे
१२०	१०	उस्सवाहि	उस्सवादि
१२१	११	थेरेणिस्सा	थेरेण समा
१२१	१३	एवं	एयं
१२२	२	पडिकमं	पडिकमं

१२२	७	मास	मासे
१२२	७	उगगहो तिविहो	उगगहे छिण्णे
१२४	३	जाओ	जाव
१२४	१०	एवं अतिसेसिता	एयं अतिसेसितो
१२५	१६	भत्तटुण	भत्तटीण
१२६	१५	उज्जतो	उज्जुतो
१२७	६	जहुत्ताउत्तो एवं	जहुत्तो साहू नूण
१२७	१७	एन्नुणा	एन्नुणा
१२८	२	ण णिक्खतंतो	णिक्खतंतो
१२८	८	जुगपेहि ते	जुगपेहाए
१२८	८	सोहणो	साहुणो
१२८	१२	विरोहो	विरोही
१२८	१७	मरुगा	गुरुगो
१२९	१४	जहलंभे	जहलंभ
१३०	९	भावज्जेवं	भावेज्जेवं
१३६	१	तुलेच्चा	तुलेती
१३६	९	वाए	वाइ
१३६	१८	तउसारामी	तउसारामे
१३८	१४	त जो	न जो
१३८	१६	चंचलं तं	चंचलेतं
१४०	६	विय	चिय
१४०	१८	जायावग	जोयावग
१४२	६	विवेग	विवेगे

१४३	१९	वज्जं	वज्जं च
१४५	७	इत्थीओ	इत्थीए
१४६	१६	उज्जुभावो	उज्जुभावो
१४७	१६	सेढीउ बाहि	सेढीयबाहि
१४७	२	भेदयाए	भेदपाय
१४७	४	दुगभेयाए	दुगदुगभेया
१४७	१२	परिक्खणद्वा	परिरक्खणद्वा
१४७	१३	एत्तो	एसा
१४८	११	मणवयकाय	मणवयणकाय
१४८	१३	रातिविराति	स्वरातिविरति
१४९	१०	पच्छा	पुच्छा
१५०	५	पि	वि
१५०	६	तो-सेसा	ते-एसा
१५२	५	पडिमाहिगगहण	पडिमाउभिगगहण
१५२	७	माविगा	मादिगा
१५२	१५	सेह	सोहि
१५३	२	उप्पादेयं	उप्पादें
१५३	३	ठाणठितो	ठाणटृठितो
१५५	४	णातं	णाडं
१५५	१०।१४।१८	चोपति	चापति
१५६	३	लोयसुहं	लाहसुयं
१५७	१६	पुञ्चे	पुञ्ची
१५८	१०	पडिभोगी	पडिभागी

१५८	११	घेतुं	घेतुं
१५९	८	मे	से
१६०	१८	पंथो	पंथो
१६०	५	संज्ञमो	संज्ञओ
१६०	१०	गच्छपद्धणेसणा	गच्छं पह णेसणा
१६१	६	अक्खोभा	अक्खोभो
१६१	१५	जहणोवाहि	जहणोवाहि
१६१	१८	वेयाणिंदिय	वेयाणिं चिय
१६२	१०	कज्ज	कुज्ज
१६३	५	समणलिंगे ण	समणलिंगेण
१६३	५	सम्मातो	सम्मतो
१६६	५	पुच्छणा	पुच्छण
१६७	५	परिच्छणा	परिच्छणा
१६७	७	पद्धणिया	पद्धणिया
१६७	९	अण्णाणमवि	अण्णाणावि
१६७	१२	रागदोसेहिं	रागदोसेहिं
१६८	८	आयपञ्ज भत्तपाणं	आयत्ति भत्तपाणं
१६९	१३	दढजोगी	दढजोगी
१६९	१७	ण उट्टिता	उट्टिता
१७०	४	दढजोगी	दढजोगी
१७१	१३	छउमत्थं	सउमच्छं
१७१	१५	अण्णय	कण्णया
१७२	१२	पइठितं	पइठितं

१७४	४	जीवठिय अबुद्द	जीवठियऽबुद्द
१७४	१२	भेसंति	भेसंति
१७४	१६	चरितठिते	चरितठिते
१७६	१	सुपज्ज	सुपज्ज
१७६	४	सो	तो
१७७	२	पावंतेताइं	पावंतेताइं
१७७	१४	कप्पो	पक्पो
१७७	१७	भोयण	भायण
१७८	१४	कारण	कारणे
१७९	१५	तिगंति	तिगंतिग
१७९	१३	सेज्जा तु	सेज्जाओ
१८०	५	दोसा	दोसो
१८०	१३	असंविगगादी	असंविगगादी
१८०	१४	उगगमती	उगगमती
१८०	१४	अपि कोवि	अविकोवि
१८१	१३	पस्त्थणोपस्त्थो	पत्थणा पस्त्थो
१८२	१३	भन्तेण	भन्तेण
१८२	१३	उवकरणेण	उवकरणेण
१८३	१७	णिरवेक्खा	णिरवेक्खो
१८४	५	रुक्खफलाइं	रुक्खफलाइं
१८४	१३	उद्विडं	उद्विडं
१८५	१०	अकप्पो	एकप्पो
१८७	२	हीरगादीयं	हीरगादीया
१८७	१५	काणिति	काणिति

१८९	१३	समाणे	समणे
१९०	५	कीते	किच्चे
१९०	६	णिप्फत्तियर्यं	णिप्फत्तिमयं
१९१	१	तम्हाऽपपर्यं	तम्हपपर्यं
१९१	८	वि य	व्यि य
१९१	१०	सोहण	साहण
१९३	५	तहिं	तह
१९५	१३	पुच्छज्जती	पुच्छज्जते
१९६	५	इच्छज्जति	अच्छज्जति
१९६	९	कालचउक्के वी	कालचउक्के वा
१९६	१६	णायव्यमिणं	णायव्यमिणं
१९७	५	णिद्वे दवे	णिद्वोदए
१९७	५	अपमज्जणयाण	अपमज्जणपाण
१९७	८	विवच्चासो	विवज्जासे
१९७	१३	होति सोवि	होतिमोवि
१९७	१४	कप्पणो	कप्पनो
१९७	१५	रायहुडे	रायहुडे
१९८	४	णत्ताण	णत्तीण
१९८	१५	तिगिच्छ	तिगिच्छ
१९९	५	च	च
१९९	१८	पयत्तं	पायं
२००	५	अहिडक्काइ	अहिडक्काई
२०१	६	तस्स	तत्थ
२०१	८	सुत्तम	सुत्तम

२०१	९	वित्थरो-तु	वित्थरो-ऊ
२०१	१०	तु	ऊ
२०१	१६	कोलणा य	कालणाय
२०२	१४	वज्जिते	वज्जेण
२०३	१०	कं	किं
२०३	११	अहिंसा	यहिंसा
२०६	१	मूलूत्तर	मूलुत्तर
२०६	१५	साहूण	सहूण
२०७	११	फासुगो	फासुगे
२०७	१४	जिण्णा	जिण्णो
२०८	११	पेहिय	पगहिय
२०९	१४	वारेति	धारेति
२१०	१०	धरणं	धरणे
२१२	८	परिहरेत्ता	परिहरिया
२१२	१२	वि	व
२१४	१२	पमोत्तेण	पसत्तीइ
२१७	३	परिहारि य	परिहारिए
२१७	१६	जा	जो
२१८	१७	तो	सो
२२०	७	वापंतस्स	वाइंतस्स
२२०	१३	ह	ऊ
२२०	१६	बाले	बाले
२२०	१६	वट्टी	वट्टी

२२२	११	पुर्वि	पुर्विं
२२३	१०	वत्तंत	वत्तेंत
२२४	१४	तं	वि य
२२५	१०	देसुठाणे	देसुढाणे
२२६	६	अपरक्रमे	अपरक्रमो
२२७	१०	अणुवासत्थे	अणुवासत्थो
२२८	११	अवक्खेवेण	पुञ्चक्खेवेण
२२९	५	मा पणदेती	न पमादेती
२३१	१	गेण्हति	गेण्हेति
२३२	५	मंदधम्मे	मंदधम्मो
२३३	९	एयारिसो	एयारिसो
२३४	१४	तिँहि	तहि
२३५	१७	विहारे	विहारेसु
२३६	३	गवेसी	गवेसा
२३७	४	मादी अज्जा स	मादी य अज्जा सा
२३८	१	उ धुवति	उ जा धुवति
२३९	२	अराढ्हो	आराढ्हो
२४०	१४	अज्जोगो	अज्जोगे
२४१	१७	लहुं	लहुं
२४२	४	सज्ज्व	सज्ज्वं
२४३	५	जगगण	जगगणं
२४४	२	सो होति	सोहेति

२४३	४	अभिगग्नि	आभिगग्नि
२४६	१०	ठाणा	ठाणा
२४६	११	एकवं	एकं
२४७	७	आई	आई
२५१	१५	उत्तरा	उत्तरा
२५८	१०	तवे	तवे
२५५	१०	ओह	ओहे
२५५	११	रोग	रोग
२५६	४	णिबद्धो	णिबद्धे
२५८	१५	सोऊण	सोऊण
२६०	४	सुहेण	सुणेह
२६२	६	णाकारी	णायकारी
२६३	१४	धमण्णग	धम्मण्णग
२६६	१३	णगरादि	णगरा
२७०	१६	गिलाण	गिलाण
२७०	१८	छँडुचु	छँडुचु
२७१	१२	यं	यं



